रा.शै.अ.प्र.प.

वार्षिक रिपोर्ट

2022–2023

रा.शै.अ.प्र.प.

वार्षिक रिपोर्ट

2022–2023

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

जनवरी 2024
पौष 1945
PD 3H RPS

© राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् 2024

प्रकाशन प्रभाग में सचिव, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नई दिल्ली 110 016 द्वारा प्रकाशित तथा गीता ऑफसेट प्रिंटर्स प्रा. लि., सी–90, एवं सी–86, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया, फेज–I, नई दिल्ली–110 020 द्वारा मुद्रित।

आमुख

मुझे राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के कार्यान्वयन में अत्यंत गौरव और अपार संतुष्टि के साथ, रा.शै.अ.प्र.प. की इस उल्लेखनीय वार्षिक यात्रा का विवरण साझा करते हुए खुशी हो रही है क्योंकि वर्ष 2022–23 के दौरान न्यायसंगत और उच्च गुणवत्ता वाली विद्यालयीन और अध्यापक शिक्षा प्राप्ति हेतु सतत प्रयास किया गया है। एन.ई.पी. 2020 के अनुरूप, रा.शै.अ.प्र.प. ने राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.) के विकास की शुरुआत की है, जिसमें प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.), विद्यालयीन शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा जैसे प्रक्षेत्र शामिल हैं। इस प्रयास का उद्देश्य राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और विभिन्न हितधारकों के साथ निकटता से सहयोग करते हुए, भारतीय लोकाचार में निहित उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करना, 21वीं सदी के कौशलों को बढ़ावा देना, मानवाधिकारों के प्रति प्रतिबद्धता पैदा करना, संधारणीय जीवन शैली को बढ़ावा देना और वैश्विक नागरिकता का पोषण करना है।

वर्ष 2022–23 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट में विद्यालयीन पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, पूरक पाठमालाओं, शिक्षक संदर्शिकाओं और शैक्षिक पत्रिकाओं सहित प्रमुख प्रकाशनों का व्यापक अवलोकन प्रदान किया गया है। इसके अतिरिक्त, इसमें विविध क्षेत्रों में फैली अनुसंधान गतिविधियों पर प्रकाश डाला गया है जैसे कि आई.सी.टी., समावेशी शिक्षा, डिजिटल और गैर-डिजिटल विकास कार्यक्रम, अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और उमियम (मेघालय) में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) में नवीन एकीकृत सेवाकालीन कार्यक्रम और क्षमता निर्माण कार्यक्रम, जिसमें अल्पावधि के साथ-साथ दीर्घकालिक पाठ्यक्रम भी हैं। रिपोर्ट में योग ओलंपियाड, कला उत्सव और राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी जैसे विस्तार कार्यक्रमों के साथ-साथ रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के सदस्यों विदेश दौरे तथा शिक्षाविदों, शिक्षकों और विद्यार्थियों के रा.शै.अ.प्र.प. आगमन से जुड़े महत्वपूर्ण अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रमों पर भी प्रकाश डाला गया है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने इस पूरे वर्ष के दौरान, शिक्षा के क्षेत्र में नवीनतम ज्ञान और सर्वोत्तम शैक्षिक अभ्यासों का प्रसार करने के साथ-साथ अध्यापकों और छात्र-छात्राओं के सामने आने वाली विभिन्न कठिनाइयों का समाधान करने के लिए विविध आवश्यकता आधारित अनुसंधान परियोजनाएँ शुरू की हैं। प्रमुख कार्यक्रमों, जैसे निष्ठा— नेशनल इनिशिएटिव फॉर स्कूल हेड्स एंड टीचर्स होलिस्टिक एडवांसमेंट (स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र प्रगति के लिए राष्ट्रीय पहल) 1.0, 2.0 और 3.0 का प्रदर्शन अध्यापकों, प्रधान अध्यापकों/प्रधानाचार्यों और अन्य हितधारकों की जरूरतों को संबोधित करते हुए स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण प्रदान करने में उत्कृष्ट रहा है। भारत के राष्ट्रीय आकलन नियामक, परख (समग्र विकास के लिए प्रदर्शन, आकलन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण) से सर्वेक्षण, मानकों और योग्यता आधारित मूल्यांकन के माध्यम से विद्यार्थी आकलन को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने की उम्मीद है।

विद्यार्थियों और अध्यापकों दोनों के मानसिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. के मनोदर्पण प्रकोष्ठ द्वारा मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों की सतर्कता से निगरानी की जाती है, सरोकारों को सक्रिय रूप से संबोधित किया जाता है और मानसिक स्वास्थ्य एवं मनो-सामाजिक कल्याण के विभिन्न पहलुओं को पूरा करने के लिए एक मजबूत सहायता प्रणाली स्थापित की जाती है।

बुनियादी स्तर पर अध्यापकों को महत्वपूर्ण संसाधन प्रदान करने के रुप में विभिन्न अवधारणाओं हेतु अध्यापन सामग्री मुक्त एक बॉक्स 'जादुई पिटारा' को शुरु करके एक महत्वपूर्ण पहल की गई है। रा.शै.अ.प्र.प. समान और समावेशी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टीवी चैनल, दिशा, ई-पुस्तकें, आई.सी.टी. वेबिनार, भारतीय सांकेतिक भाषा वीडियो पाठ, डेज़ी प्रारूप में पुस्तकें आदि जैसी पहलों के माध्यम से शैक्षिक प्रौद्योगिकी को आगे बढ़ा रहा है।

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में रा.शै.अ.प्र.प. का योगदान महत्वपूर्ण है जिसमें डिजिटल संसाधनों के अलावा विविध व्यावसायिक पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम एंव पाठ्यपुस्तकों का प्रकाशन करना, पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा के लिए दिशानिर्देश निर्धारित करना, अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करना और स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन की सुविधा के लिए राष्ट्रीय सम्मेलनों की मेजबानी करना शामिल है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने स्कूली शिक्षा में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व को पहचानते हुए, ज्ञान के आदान-प्रदान और विशेषज्ञता साझा करने को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न देशों और संस्थानों के साथ सक्रिय रूप से समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर किए हैं।

मैं रा.शै.अ.प्र.प. के सभी संकाय सदस्यों की उनकी अटूट प्रतिबद्धता के लिए हार्दिक सराहना करता हूँ, विशेष रुप से वर्ष 2022–23 के दौरान, जहाँ हितधारकों के लिए उनकी समर्पित सेवा महत्वपूर्ण साबित हुई। परिषद् सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सुनिश्चित करने के रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयासों में शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और अन्य सहयोगियों से प्राप्त निरंतर समर्थन के लिए उनका गहरा आभार व्यक्त करती है।

मैं इस वार्षिक रिपोर्ट में परिषद् की उपलब्धियों को प्रस्तुत करने में योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.) के संकाय सदस्यों, दिनेश कुमार, *अध्यक्ष*, पी.एम.डी.; अशिता रवीन्द्रन, *एसोसिएट प्रोफेसर* और पी.डी. सुभाष, *एसोसिएट प्रोफेसर* के असाधारण प्रयासों की सराहना करता हूँ।

वर्ष 2022–23 की इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करते हुए हमारा लक्ष्य व्यापक शैक्षणिक समुदाय, नीति निर्माताओं, शिक्षकों और अभ्यासकर्ताओं के साथ सार्थक बातचीत को प्रोत्साहित करना है। यह हमारे बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के समर्पित प्रयासों का व्यापक लेखा-जोखा प्रस्तुत करती है। हमें विश्वास है कि हमारे शैक्षिक योजनाकार, विद्वान और विषय विशेषज्ञ हमारे प्रयासों का आकलन करेंगे और सभी के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा प्रदान करने की दिशा में परिषद् की यात्रा को आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्

नई दिल्ली
अक्तूबर 2023

शब्द संक्षेप

3-डी.	त्रि-आयामी
आई.आई.टी.	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान
आई.आर.डी.	अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग
आई.ई.आर.	इंडियन एजुकेशनल रिव्यू
आई.ई.ए.	अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक उपलब्धि मूल्यांकन संघ
आई.ए.एस.बी.	उन्नत अध्ययन शिक्षा संस्थान
आई.ए.बी.	संस्थान सलाहकार बोर्ड
आई.एस.ई.ए.	सूचना सुरक्षा, शिक्षा और जागरूकता
आई.एस.एम.पी.	एकीकृत स्कूल गणित कार्यक्रम
आई.एस.एल.आर.टी.सी.	भारतीय सांकेतिक भाषा अनुसंधान और प्रशिक्षण केंद्र
आई.एस.एल.पी.	एकीकृत स्कूल भाषा कार्यक्रम
आई.एस.एस.एन.	अंतर्राष्ट्रीय मानक क्रम संख्या
आई.एस.बी.एन.	अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक मानक संख्या
आई.क्यू.ए.सी.	आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ
आई.जे.ई.टी.	इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी
आई.टी.	सूचना प्रौद्योगिकी
आई.टी.ई.पी.	एकीकृत अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम
आई.टी.डी.पी.	सेवारत शिक्षक व्यावसायिक विकास
आई.डी.एस.एम.	अंतर प्रदर्शन संबंधी स्कूली बैठक
आई.पी.	इंटरनेट प्रोटोकॉल
आई.वी.आर.एस.	इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पांस सिस्टम
आई.सी.टी.	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी
आई.सी.डी.एस.	समेकित बाल विकास योजना
आयुष (AYUSH)	आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी
आर.आई.ई.	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
आर.आई.एस.एम.	क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों के छात्रों की बैठक
आर. एंड डी.	अनुसंधान और विकास
आर.ए.ए.	राष्ट्रीय आविष्कार अभियान
आर.एम.एस.ए.	राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान
आर.एस.ए.	रिवेस्ट-शमीर-एडलेमन

आर.टी.ई.	शिक्षा का अधिकार
आर.पी.डब्ल्यू.डी.	दिव्यांग व्यक्तियों के अधिकार
आर.पी.डी.सी.	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र
आर.सी.एम.ई.	विज्ञान और गणित शिक्षा संसाधन केंद्र
इग्नू (IGNOU)	इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय
इसरो (ISRO)	भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन
ई.आर.आई.सी. (एरिक)	शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
ई.ई.	प्राथमिक शिक्षा
ई.एल.पी.	प्रारंभिक साक्षरता कार्यक्रम
ई.एस.एम.पी.	प्रारंभिक विद्यालय गणित कार्यक्रम
ई.एस.डी.	शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग
ई.टी.	शैक्षिक प्रौद्योगिकी
ई.डी.	इंजीनियरिंग प्रभाग
ई.डी.यू.एफ.आई.	फिनलैंड की राष्ट्रीय शिक्षा एजेंसी
ई.बी.एस.बी.	एक भारत श्रेष्ठ भारत
ई.वी.एस.	पर्यावरण अध्ययन
ई.सी.	स्थापना समिति
ई.सी.ई.	प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा
ई.सी.सी.ई.	प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा
ए.आई.	कृत्रिम बुद्धि
ए.आई.आर.	ऑल इंडिया रेडियो
ए.आई.एल.	कला समेकित शिक्षा
ए.आई.सी.ई.ई.सी.सी.	अखिल भारतीय बाल शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता
ए.आई.सी.टी.ई.	अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद्
ए.आर.	संवर्धित वास्तविकता
ए.आर.एस.एच.	किशोर प्रजनन और यौन स्वास्थ्य
ए.आर.सी.	किशोरावस्था संसाधन केंद्र
ए.ई.पी.	किशोर शिक्षा कार्यक्रम
ए.ई.पी.-एम.आई.एस.	किशोर शिक्षा कार्यक्रम-प्रबंधन सूचना प्रणाली
ए.एम.एच.एफ.एस.	परिधान मेड-अप और होम फर्निशिंग सेक्टर
ए.के.एस.	कोरियाई अध्ययन अकादमी
एच.आई.वी.	ह्यूमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस

एच.आर.डी.	मानव संसाधन विकास
एच.ई.आई.	उच्च शिक्षा संस्थान
एच.ई.एफ.एस.	मानव पारिस्थितिकी और परिवार विज्ञान
एच.एस.एम.एल.के.	हायर सेकेंडरी मैथमेटिक्स लैब किट
एच.ओ.टी.एस.	उच्च क्रम विचार कौशल
एच.पी.सी.	समग्र प्रगति कार्ड
ए.टी.एस.	शिक्षुता प्रशिक्षण योजना
ए.डब्ल्यू.पी.	वार्षिक कार्य योजना
एडुसैट	शैक्षिक उपग्रह
एड्स	एक्वायर्ड इम्यून डेफिशिएंसी सिंड्रोम
एन.आई.ई.	राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान
एन.आई.एन.यू.	नेशनल ताइवान नॉर्मल यूनिवर्सिटी
एन.आई.ओ.एस.	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान
एन.आई.टी.टी.टी.आर.	राष्ट्रीय तकनीकी शिक्षक प्रशिक्षण और अनुसंधान संस्थान
एन.आर.ओ.ई.आर.	राष्ट्रीय मुक्त शैक्षिक संसाधन भंडार
एन.आर.जी.	राष्ट्रीय संसाधन समूह
एन.आर.सी.वी.ई.	राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा संसाधन केंद्र
एन.ई.	उत्तर-पूर्व
एन.ई.आर.	पूर्वोत्तर क्षेत्र
एन.ई.-आर.आई.ई.	पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
एन.ई.एच.यू.	नॉर्थ ईस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी
एन.ई.पी.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
एन.ए.एस.	राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण
एन.ए.एस.ए.सी.	पूर्वोत्तर अंतरिक्ष अनुप्रयोग केंद्र
एन.एल.ई.पी.टी.	राष्ट्रीय शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय
एन.एस.क्यू.एफ.	राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा
एन.एस.डी.सी.	राष्ट्रीय कौशल विकास परिषद्
एन.ए.सी.सी. (नैक)	राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद्
एन.ओ.एस.	राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक
एन.क्यू.एफ.	राष्ट्रीय योग्यता रूपरेखा
एन.जी.ओ.	गैर सरकारी संगठन
एन.टी.एस.ई.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा

एन.टी.एस.एस.	राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना
एन.डी.एम.सी.	उत्तरी दिल्ली नगर निगम
एन.डी.जी.	राष्ट्रीय विकास समूह
एन.पी.ई.	राष्ट्रीय शिक्षा नीति
एन.पी.ई.जी.ई.एल.	प्राथमिक स्तर पर लड़कियों की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय कार्यक्रम
एन.पी.ई.पी.	राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना
एन.बी.टी.	नेशनल बुक ट्रस्ट (राष्ट्रीय पुस्तक न्यास)
एन.बी.बी.	राष्ट्रीय बाल भवन
एन.यू.ई.पी.ए.	राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन विश्वविद्यालय
एन.यू.डी.	राष्ट्रीय एकता दिवस
एन.वी.एस.	नवोदय विद्यालय समिति
एन.सी.एफ.	राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा
एन.सी.एफ.टी.ई.	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा
एन.सी.टी.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
एन.सी.टी.ई.	राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्
एन.सी.सी.	राष्ट्रीय कैडेट कोर
ए.पी.ई.आई.डी.	एशिया-प्रशांत विकासात्मक शैक्षिक नवाचार
ए.पी.सी.आई.ई.यू.	एशिया-प्रशांत अंतरराष्ट्रीय समझ शिक्षा केंद्र
एफ.ए.	फॉर्मेटिव मूल्यांकन
एफ.ए.क्यू.	अक्सर पूछे जाने वाले प्रश्न
एफ.एल.एन.	मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता
एफ.एल.एस.	मूलभूत शिक्षण अध्ययन
एफ.एस.एस.ए.आई.	भारतीय खाद्य सुरक्षा और मानक प्राधिकरण
एफ.एस.यू.	फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी
एफ.ओ.एस.एस.	नि: शुल्क और मुक्त सॉफ्टवेयर स्रोत
एफ.सी.	वित्त समिति
एम.सी.	प्रबंध समिति
एम.एड.	शिक्षा स्नातकोत्तर
एम.फिल.	दर्शनशास्त्र स्नातकोत्तर
एम.आई.एड.	मॉरीशस शिक्षा संस्थान
एम.आई.एल.	आधुनिक भारतीय भाषाएँ
एम.आई.एस.	प्रबंधन सूचना प्रणाली

एम.आई.टी.	मैसाचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी
एम.एच.आर.डी.	मानव संसाधन विकास मंत्रालय
एम.ओ.ई.	शिक्षा मंत्रालय
एम.ओ.ए.	बहिर्नियम (मेमोरैंडम ऑफ एसोसिएशन)
एम.ओ.ओ.सी. (मूक)	बृहद मुक्त ऑनलाइन पाठ्यक्रम
एम.ओ.यू.	समझौता ज्ञापन
एम.डी.	प्रबंध निदेशक
एम.डी.एम.	मध्याह्न भोजन
एम.पी.डी.	मीडिया उत्पादन प्रभाग
एल.ओ.	अधिगम प्रतिफल
एल.डी.डी.	पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग
एल.पी.डी.	निम्न निष्पादन जिला
एस.आई.ई.	राज्य शिक्षा संस्थान
एस.आई.ई.टी.	राज्य शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
एस.आर.जी.	राज्य संसाधन समूह
एस.ए.	योगात्मक मूल्यांकन
एस.एच.पी.	स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम
एस.ए.पी.	स्कूल अटैचमेंट प्रोग्राम
एस.एम.एल.के.	माध्यमिक गणित लैब किट
एस.एम.सी.	स्कूल प्रबंधन समिति
एस.एल.एम.ई.ई.	राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी
एस.एस.एम.के.	सॉलिड स्टेट मॉडल किट
एस.एस.एम.सी.एल.के.	उच्चत्तर माध्यमिक माइक्रोस्केल रसायन विज्ञान प्रयोगशाला किट
एस.एस.के.	माध्यमिक विज्ञान किट
एस.ओ.पी.टी.	स्कूल शिक्षकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम
एस.टी.	अनुसूचित जनजाति
एस.टी.ई.ए.एम.	विज्ञान, प्रौद्योगिकी इंजीनियरिंग, कला और गणित
एस.टी.सी.	विशेष प्रशिक्षण केंद्र
एस.डी.एम.सी.	स्कूल प्रबंधन और विकास समिति
एस.डी.जी.	सतत विकास लक्ष्य
एस.पी.एम.सी.	स्क्रीनिंग-सह-प्रगति निगरानी समिति
एस.पी.डी.	संवेदी प्रक्रम विकार

एस.पी.सी.	छात्र पुलिस कैडेट
एस.बी.ए.	स्कूल आधारित मूल्यांकन
एस.बी.एस.वी.	स्वच्छ भारत स्वच्छ विद्यालय
एस.सी.	अनुसूचित जाति
एस.सी.ई.आर.टी.	राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
एस.सी.सी.	राज्य समन्वय समिति
ए.सी.	अकादमिक समिति
ओ.ई.आर.	मुक्त शैक्षणिक संसाधन
ओ.ओ.एस.एच.	आउट ऑफ स्कूल चिल्ड्रन
ओ.पी.ए.सी. (ओपेक)	ऑनलाइन सार्वजनिक पहुँच कैटलॉग
ओ.बी.	ऑपरेशन ब्लैकबोर्ड
ओ.सी.आर.	ऑप्टिकल करेक्टर रिकॉग्नेशन
के.आर.आई.वी.ई.टी.	कोरियाई व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण संस्थान
के.आर.पी.	मुख्य संसाधन व्यक्ति
के.जी.	किंडर गार्डन
के.जी.बी.वी.	कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय
के.डब्ल्यू.डी.आई.	कोरियाई महिला विकास संस्थान
के.वाई.ए.	अपनी अभिक्षमता जानें
के.वी.एस.	केंद्रीय विद्यालय संगठन
कोविड-19	2019 का कोरोना वायरस रोग
क्यू.आर.	त्वरित प्रतिक्रिया
जी.आई.एस.	भौगोलिक सूचना प्रणाली
जी.ओ.आई.	भारत सरकार
जी.ओ.वी.टी.	सरकार
जी.सी.ई.डी.	वैश्विक नागरिकता शिक्षा
जे.आई.ई.	जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन
जे. एंड के.	जम्मू और कश्मीर
जे.एन.यू.	जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय
जे.एन.एन.एस.एम.ई.ई.	जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय बाल विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी
जे.एन.वी.	जवाहर नवोदय विद्यालय
टी.एन.ए.	प्रशिक्षण आवश्यकता विश्लेषण
टी.एल.एम.	शिक्षण अधिगम सामग्री

टी.जी.टी.	प्रशिक्षित स्नातक शिक्षक
टी.पी.सी.के.	तकनीकी शैक्षणिक सामग्री ज्ञान
टी.बी.पी.	खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र
टी.वी.	टेलीविजन
टी.वी.ई.टी.	तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण
डब्ल्यू.डब्ल्यू.सी.	समुदाय के साथ काम करना
डी.एल.एड..	प्राथमिक शिक्षा डिप्लोमा
डी.आई.ई.टी.	जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान
डी.आई.वाई.	स्वयं करें
डी.आई.सी.टी.	सूचना और संचार प्रौद्योगिकी विभाग
डी.ई.आर.	शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग
डी.ई.आर.टी.	शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण निदेशालय
डी.ई.ई.	प्रारंभिक शिक्षा विभाग
डी.ई.ए.ए.	कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग
डी.ई.एम.ई.	शैक्षिक मापन और मूल्यांकन विभाग
डी.ई.एल.	भाषा शिक्षा विभाग
डी.ई.एस.	शैक्षिक सर्वेक्षण विभाग
डी.ई.एस.एम.	विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग
डी.ई.एस.एस.	सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग
डी.ई.एस.डी.पी.	शैक्षिक सर्वेक्षण और डेटा प्रसंस्करण विभाग
डी.ई.के.	शैक्षिक किट प्रभाग
डी.ई.जी.एस.एन.	विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग
डी.ई.पी.एफ.ई.	शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग
डी.ए.बी.	विभागीय सलाहकार बोर्ड
डी.एम.एस.	प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल
डी.एस.ई. एंड एल.	स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग
डी.ए.सी.ई.पी.	सामुदायिक शिक्षा और भागीदारी में विकासात्मक गतिविधियाँ
डी.ओ.ई.	शिक्षा निदेशालय
डी.जी.एस.	जेंडर अध्ययन विभाग
डी.टी.ई.	अध्यापक शिक्षा विभाग
डी.टी.ई.ई.	अध्यापक शिक्षा और विस्तार विभाग
डी.टी.एच.	डायरेक्ट टू होम

डी.पी.आर.	विस्तृत परियोजना रिपोर्ट
डी.पी.ई.पी.	जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम
डी.वी.डी.	डिजिटल वीडियो डिस्क
डी.सी.आर.सी.	मार्गदर्शन और परामर्श संसाधन केंद्र
डी.सी.एस.	पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग
डी.सी.जी.सी.	मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा कोर्स
डेल नेट	विकासशील पुस्तकालय नेटवर्क
दीक्षा (DIKSHA)	ज्ञान साझाकरण संबंधी डिजिटल अवसंरचना
निपुण (NIPUN)	राष्ट्रीय साक्षरता और संख्या ज्ञान दक्षता पहल
निष्ठा (NISHTHA)	स्कूल प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल
नीपा (NIEPA)	राष्ट्रीय शैक्षिक योजना और प्रशासन संस्थान
परख (PARAKH)	समग्र विकास के लिए प्रदर्शन मूल्यांकन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण
पॉक्सो (POCSO)	यौन अपराधों से बच्चों का संरक्षण
पी.आर.डी.	योजना और अनुसंधान प्रभाग
पी.इंडिक्स	प्रदर्शन संकेतक
पी.ई.सी.आर.	प्राथमिक शिक्षा पाठ्यचर्या नवीकरण
पीएच.डी.	डॉक्टर ऑफ फिलॉसफी
पी.ए.बी.	परियोजना अनुमोदन बोर्ड
पी.एम.डी.	योजना और अनुवीक्षण प्रभाग
पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.	पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान
पी.एस.ए.सी.	प्राथमिक विद्यालय उपलब्धि प्रमाण पत्र
पी.ए.सी.	कार्यक्रम सलाहकार समिति
पी.ओ.ए.	क्रियान्वयन कार्यक्रम
पी.ओ.एस.एच.	यौन उत्पीड़न निराकरण
पी.जी.टी.	स्नातकोत्तर शिक्षक
पी.जी.डी.जी.सी.	मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा
पी.टी.आर.	विद्यार्थी शिक्षक अनुपात
पी.टी.एम.	अभिभावक शिक्षक बैठक
पी.पी.टी.	पावर पॉइंट प्रस्तुति
पी.-मोस्ट	स्कूल शिक्षकों का जनोन्मुखीकरण कार्यक्रम
प्रशस्त (PRASHAST)	पूर्व-मूल्यांकन समग्र स्क्रीनिंग उपकरण
बी.ए.	कला स्नातक

बी.ए.एड.	कला और शिक्षा स्नातक
बी.एड.	शिक्षा स्नातक
बी.एल.एड.	प्राथमिक शिक्षा स्नातक
बी.एससी.	विज्ञान स्नातक
बी.एससी.एड.	विज्ञान शिक्षा स्नातक
बी.एससी.बी.एड.	विज्ञान स्नातक और शिक्षा स्नातक
बी.टेक.	प्रौद्योगिकी स्नातक
बी.आर.सी.	ब्लॉक संसाधन केंद्र
बी.ए.एस.	बेसलाइन मूल्यांकन सर्वेक्षण
बी.एच.यू.	बनारस हिंदू विश्वविद्यालय
एम.ई.आई.टी.वाई.	इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय
यू.आर.एल.	यूनिफ़ॉर्म रिसोर्स लोकेटर
यू.एन.डी.पी.	संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम
यू.एस.ए.	संयुक्त राज्य अमेरिका
यू.एस.ओ.एल.	यूनिवर्सिटी स्कूल ऑफ ओपन लर्निंग
यू.जी.सी.	विश्वविद्यालय अनुदान आयोग
यू.टी.	केंद्र शासित प्रदेश
यू.डी.एल.	सार्वभौमिक अधिगम डिजाइन
यूनिसेफ़ (UNICEF)	संयुक्त राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय बाल आपातकालीन कोष
यूनेस्को (UNESCO)	संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन
यू.पी.एस.के.	उच्च प्राथमिक विज्ञान किट
योजना (YOJANA)	रा.शै.अ.प्र.प. की गतिविधियों का वार्षिक विवेकपूर्ण मूल्यांकन
रा.शै.अ.प्र.प.	राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
वी.आर.	आभासी वास्तविकता
वी.ई.	व्यावसायिक शिक्षा
वी.ई.टी.	व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण
वी.टी.टी.ई.	वॉयसेज ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स
सक्षम (SAKSHAM)	संधारणीय स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए उन्नत ज्ञान को प्रोत्साहन
सी.आई.आई.	भारतीय उद्योग परिसंघ
सी.आई.ई.टी.	केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान
सी.आर.आई.एस.पी.	अनुसंधान और औद्योगिक स्टाफ प्रदर्शन केंद्र
सी.आर.सी.	क्लस्टर संसाधन केंद्र

सी.ई.आर.एन.	शिक्षा अनुसंधान पद्धति प्रमाण पत्र
सी.ई.एम.सी.ए.	एशिया राष्ट्रमंडल शैक्षिक मीडिया केंद्र
सी.ए.एस.	कम्प्यूटरीकृत लेखा प्रणाली
सी.ए.टी.सी.	संयुक्त वार्षिक प्रशिक्षण शिविर
सी.ए.पी.ई.	प्राथमिक शिक्षा तक व्यापक पहुँच
सी.ए.बी.ई.	केंद्रीय शिक्षा सलाहकार बोर्ड
सी.एम.पी.	न्यूनतम साझा कार्यक्रम
सी.एल.एस.एस.	स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता और अध्ययन
सी.एल.ओ.	पाठ्यक्रम/गतिविधि अधिगम प्रतिफल
सी.एस.आई.आर.	वैज्ञानिक और औद्योगिक अनुसंधान परिषद्
सी.एस.आर.	कारपोरेट सामाजिक जिम्मेदारी
सी.ओ.ई.टी.जी.	स्पर्श ग्राफिक्स में उत्कृष्टता केंद्र
सी.ओ.एल.	अधिगम राष्ट्रमंडल
सी.टी.ई.	अध्यापक शिक्षा कॉलेज
सी.टी.ई.एस.	प्राथमिक विद्यालय विज्ञान के शिक्षण के लिए प्रमाण पत्र कार्यक्रम
सी.टी.एस.ए.	तिब्बती स्कूल केंद्र प्रशासन
सी.डब्ल्यू.ए.	ऑटिज्म से पीड़ित बच्चे
सी.डब्ल्यू.एस.एन.	विशेष आवश्यकता वाले बच्चे
सी.डब्ल्यू.डी.	दिव्यांग बच्चे
सी.डी.	कांपैक्ट डिस्क
सी.पी.एस.ई.	कोलंबो प्लान स्टाफ कॉलेज
सी.बी.एस.ई.	केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
सी.बी.टी.	योग्यता आधारित शिक्षण
सी.सी.ई.	सतत और व्यापक मूल्यांकन
स्वयं (SWYAM)	युवा महत्वाकांक्षी प्रतिभाओं के लिए सक्रिय-शिक्षण वेब का अध्ययन

विषय-सूची

	आमुख	*iii*
1.	विहंगावलोकन	1
2.	प्रमुख प्रकाशन	38
3.	अनुसंधान अध्ययन	47
4.	विकास गतिविधियाँ	66
5.	क्षमता निर्माण कार्यक्रम	104
6.	विस्तार गतिविधियाँ	142
7.	रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा चलाई जा रही शिक्षा मंत्रालय की प्रमुख योजनाएँ	186
8.	रा.शै.अ.प्र.प. में आने वाले अतिथि और अंतरराष्ट्रीय सहयोग	207
9.	परिशिष्ट	215–299
I.	रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशन और प्रस्तुतीकरण	216
II.	रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के पर्यवेक्षण के तहत वर्ष के दौरान प्रदान की गई पी-एच.डी. डिग्रियाँ	229
III.	पुरस्कार और अध्येतावृत्तियाँ	233
IV.	वर्ष 2022–23 के लिए बहिर्नियमावली में उल्लिखित रा.शै.अ.प्र.प. की समितियों का विवरण	234
V.	31 मार्च, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. के समेकित संस्वीकृत पदों की संख्या और आरक्षण की स्थिति	269
VI.	31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के दौरान प्राप्तियाँ और भुगतान लेखा	270
VII.	वर्ष 2022–23 के दौरान जारी किए गए प्रकाशन	277
VIII.	प्रकाशन प्रभाग और इसके क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र	288
IX.	रा.शै.अ.प्र.प. के संघटक और संकाय	289

'हमारे सामने विभिन्नताओं को खत्म करने की चुनौती नहीं है बल्कि उनके साथ रहते हुए एक रहने की है।'

— रवीन्द्रनाथ टैगोर

'The Problem is not how to wipe out the differences but how to unite with the differences intact.'

— Rabindranath Tagore

1. विहंगावलोकन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) को 6 जून, 1961 को रजिस्ट्रेशन ऑफ सोसाइटी अधिनियम (1860 का अधिनियम 21) के अंतर्गत एक संस्था के रूप में पंजीकृत किया गया था और शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 27 जुलाई, 1961 के अपने संकल्प में परिषद् की स्थापना की घोषणा की गई। इसने 1 सितंबर, 1961 को औपचारिक रूप से अपना कार्य शुरू किया गया। इस परिषद् की स्थापना सरकार द्वारा विद्यालयी शिक्षा में गुणात्मक सुधार हेतु केंद्र और राज्य सरकारों को नीतियों और कार्यक्रमों में सहायता और सलाह देने के लिए की गई थी। रा.शै.अ.प्र.प. के मुख्य उद्देश्य हैं—

- विद्यालयीन शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित क्षेत्रों में अनुसंधान, संवर्धन एवं समन्वय करना;
- आदर्श पाठ्यपुस्तकें, अनुपूरक पाठ्य-सामग्री, समाचार-पत्र, पत्रिकाएँ एवं अन्य तत्संबंधी साहित्य तैयार और प्रकाशित करना तथा शैक्षिक किट, मल्टी मीडिया डिजिटल सामग्री आदि का विकास करना;
- अध्यापकों के लिए सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण आयोजित करना;
- नवाचारात्मक शैक्षिक तकनीकें और पद्धतियाँ विकसित और प्रसारित करना;
- राज्यों के शिक्षा विभागों, विश्वविद्यालयों, गैर-सरकारी संगठनों और अन्य शैक्षिक संस्थाओं के साथ सहयोग और संपर्क सूत्र स्थापित करना;
- विद्यालयी शिक्षा से संबंधित सभी मामलों में विचारों और सूचनाओं के आदान-प्रदान केंद्र के रूप में कार्य करना; और
- प्राथमिक शिक्षा के सार्वजनीकरण के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए एक नोडल अभिकरण के रूप में कार्य करना।

यह परिषद् आज़ादी के बाद के शुरुआती दशक में स्थापित किए गए सात संस्थानों— केंद्रीय शिक्षा संस्थान (1947), केंद्रीय पाठ्यपुस्तक अनुसंधान ब्यूरो (1954), केंद्रीय शैक्षिक और व्यावसायिक मार्गदर्शन ब्यूरो (1954), माध्यमिक शिक्षा विस्तार कार्यक्रम निदेशालय (1958) प्रारंभ में 1955 में अखिल भारतीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् के रूप में स्थापित, राष्ट्रीय बेसिक शिक्षा संस्थान (1956), नेशनल फंडामेंटल एजुकेशन सेंटर (1956) और राष्ट्रीय ऑडियो विजअुल शिक्षा संस्थान (1959) को मिलाकर अस्तित्व में आई। इन संस्थाओं के एकीकरण से देश में शिक्षा को समग्र दृष्टि से विकसित करने की आवश्यकता के बारे में पता चला। विगत वर्षों में देश की बदलती शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की रूपरेखा और कार्यों में सुधार किया गया है। अब यह देश के विभिन्न भागों में स्थित संस्थानों अर्थात 17 विभागों/प्रभागों एवं तीन प्रकोष्ठों वाले नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.); अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) में स्थित पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) और दो केंद्रीय संस्थानों अर्थात् भोपाल स्थित पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) और नई दिल्ली स्थित केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) के साथ उन्नति की ओर अग्रसर है।

रा.शै.अ.प्र.प.

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने एक शीर्ष राष्ट्रीय निकाय के रूप में शिक्षा के राष्ट्रीय स्वरूप पर पुनर्विचार करने और देश में विविध संस्कृति की अभिव्यक्ति को सरल बनाने और उसे प्रोत्साहन देने की प्रक्रिया शुरू की। अनेक लोगों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. को मुख्य रूप से केवल पाठ्यपुस्तक प्रकाशन में इसकी भागीदारी के लिए जाना जाता है। वास्तव में रा.शै.अ.प्र.प. ने स्कूली बच्चों के लिए विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान और भाषाओं के लिए पाठ्यपस्तुकें तैयार की है, जिनमें *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा, 2005* पर आधारित पाठ्यपुस्तकें नवीनतम हैं। अभी भी अपने नाम के अनुरूप ही रा.शै.अ.प्र.प. विद्यालयी शिक्षा से जुड़े संपूर्ण कार्यों— चाहे वे विद्यालयी शिक्षा में अनुसंधान करना हो, नवाचारी सेवा-पूर्व और सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना हो अथवा एस.सी.ई.आर.टी., डायट आदि जैसे राज्य स्तरीय शैक्षिक संगठनों की सहक्रियाएँ हों, को हर संभव तरीके से करती है।

परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई. 1986) और प्रोग्राम ऑफ एक्शन (पी.ओ.ए. 1992) तैयार करने में सर्वेक्षण, अनुसंधान और विकास संबंधी सूचनाएँ उपलब्ध कराकर एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। एन.पी.ई. और पी.ओ.ए. के अनुवर्तन के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. ने *प्रारंभिक और माध्यमिक शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या एक रूपरेखा (1988)* और उसके पश्चात विद्यालयी शिक्षा के सभी स्तरों के लिए दिशानिर्देश और पाठ्यक्रम प्रकाशित किए। परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को इनपुट प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। परिषद् ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित नई पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार करने के लिए कार्य आरंभ किए हैं। विद्यार्थियों के अधिगम निष्कर्षों के मूल्यांकन और अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम तैयार करना इसकी गतिविधि का एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है।

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् देश में अध्यापक शिक्षा के लिए भी समर्पित है। परिषद् द्वारा अध्यापकों को तैयार करने के लिए अपने क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम, जैसे – चार वर्षीय बी.एससी.बी.एड., बी.ए.बी.एड. और दो वर्षीय बी.एड., बी.एससी.बी.एड. समेकित कार्यक्रम पाठ्यक्रम चलाया जाता है। इसके द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में मार्गदर्शन और परामर्श में एक वर्षीय पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी चलाया जाता है। अध्यापकों के बीच उत्कृष्टता को प्रोत्साहित करने में योगदान देने के लिए अध्यापकों को उनके संबंधित क्षेत्रों में नवीनतम विकास की जानकारी देने के लिए अल्पावधि सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं। परिषद् ने प्रदर्शनियों, प्रतियोगिताओं और अन्य गतिविधियों के आयोजन द्वारा विज्ञान शिक्षा, सामाजिक विज्ञान शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, पर्यावरणीय शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.), सतत विकास शिक्षा (ई.एस.डी.), वंचित और उपेक्षित वर्गों के लोगों की शिक्षा आदि को लोकप्रिय बनाने का कार्य किया है। रा.शै.अ.प्र.प. बच्चों में उत्कृष्टता और नवाचार को प्रोत्साहित करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने प्रतिष्ठित राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा (एन.टी.एस.ई.) का आयोजन किया जिसमें 2000 प्रतिभाशाली बच्चों को डॉक्टरेट कार्यक्रमों सहित विज्ञान और सामाजिक विज्ञान के साथ-साथ चिकित्सा और इंजीनियरिंग जैसे व्यावसायिक क्षेत्रों में द्वितीय-डिग्री स्तर तक अध्ययन करने के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की गई। रा.शै.अ.प्र.प. ने सीखने को आनंददायक बनाने के लिए अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक रूप में अनेक अनुपूरक और गैर-पाठ्य सामग्री भी तैयार की है। रा.शै.अ.प्र.प. ने विज्ञान और गणित में प्रयोग के लिए भी उपकरण और किट्स तैयार किए हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. ने राज्यों के साथ सार्थक जुड़ाव और भागीदारी बनाए रखने के लिए केंद्रीय क्षेत्र की अनेक परियोजनाओं/स्कीमों, जैसे– माध्यमिक शिक्षा का व्यावसायीकरण, 6–14 वर्ष की आयु वर्ग के बच्चों के लिए

अनौपचारिक शिक्षा कार्यक्रम, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, स्कूली अध्यापकों के लिए विशेष अभिविन्यास कार्यक्रम (एस.ओ.पी.टी.), स्कूली अध्यापकों के लिए व्यापक अभिविन्यास कार्यक्रम (पी-एम.ओ.एस.टी.), स्कूलों में विज्ञान शिक्षा में सुधार, स्कूली शिक्षा का पर्यावरणीय अभिविन्यास, स्कूलों में कंप्यूटर साक्षरता और अध्ययन (सी.एल.ए.एस.एस.), ऑपरेशन ब्लैक बोर्ड स्कीम, नि:शक्तों के लिए समेकित शिक्षा स्कीम, सर्व शिक्षा अभियान (एस.एस.ए.), राष्ट्रीय माध्यमिक शिक्षा अभियान (आर.एम.एस.ए.), स्कूलों में योग को बढ़ावा देना, सेवा-पूर्व और सेवारत अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम, समग्र शिक्षा आदि में शैक्षिक निवेश उपलब्ध कराना जारी रखा है।

विगत वर्षों में, परिषद् ने अंतरराष्ट्रीय अभिकरणों द्वारा वित्तपोषित महत्वपूर्ण परियोजनाएँ शुरू की हैं, जिनसे शिक्षा की नीतियाँ, योजनाएँ और कार्यक्रम तैयार करने के लिए मौलिक आँकड़े उपलब्ध हुए हैं। इनमें से कुछ हैं— अंतरराष्ट्रीय शैक्षिक उपलब्धि मूल्यांकन संघ (आई.ई.ए.) प्राथमिक शिक्षा पाठ्यक्रम नवीकरण (पी.ई.सी.आर.), भाषा और विज्ञान में उपलब्धियों से संबंधित अध्ययन, आई.ई.ए. कोम्पएड अध्ययन, समुदाय शिक्षा और सहभागिता संबंधी विकासात्मक गतिविधि (डी.ए.सी.ई.पी.), प्राथमिक शिक्षा तक व्यापक पहुँच (सी.ए.पी.ई.), जिला प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम (डी.पी.ई.पी.), राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.), माध्यमिक स्कूलों का सर्वेक्षण, हाई स्कूल के विद्यार्थियों में उपलब्धि प्रेरणा और उनका प्रशिक्षण, कक्षा 8 और 11 के विद्यार्थियों के लिए हिंदी में शैक्षिक अभिरुचि परीक्षा, माध्यमिक स्कूलों में निरीक्षण और पर्यवेक्षण हेतु मूल्यांकन मानदंड, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में अपव्यय और ठहराव, स्कूली शिक्षा के तीन स्तरों पर गणित में उपलब्धि का सर्वेक्षण, प्राथमिक और माध्यमिक स्कूलों में प्रतिभा की पहचान, माध्यमिक स्कूलों में गणित अध्यापन का पाठ्यक्रम और विधियाँ आदि।

रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा हाल के वर्षों में किए गए कुछ अन्य मुख्य प्रयासों में शामिल हैं— चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाएँ अर्थात् राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर आधारित प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.), विद्यालय शिक्षा (एस.ई.), अध्यापक शिक्षा (टी.ई.) और प्रौढ़ शिक्षा (ए.ई.); निष्ठा— विद्यालय प्रमुखों और अध्यापकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल नामक देशव्यापी क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का संचालन; पी.एम. ई-विद्या, विभिन्न माध्यमों अर्थात् रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट आधारित दीक्षा प्लेटफॉर्म और मोबाइल एप्लिकेशन के माध्यम से ई-कंटेंट के प्रसार के लिए एक व्यापक पहल; प्रशस्त जाँच जो सभी 21 प्रकार की नि:शक्तता स्थितियों की जाँच की सुविधा प्रदान करता है; वैकल्पिक शैक्षणिक कैलेंडर; स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार के लिए एन.ए.एस. के निष्कर्षों के आधार पर राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षणोत्तर हस्तक्षेप; राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (एन.एस.क्यू.एफ.) पर आधारित व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए दक्षता आधारित पाठ्यक्रम; और व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लिए पाठ्यपुस्तकों का विकास; विधार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए मनो-सामाजिक सहायता प्रदान करने हेतु मनोदर्पण प्रकोष्ठ के तहत एक लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र 'सहयोग' का संचालन; कला उत्सव, राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा, राष्ट्रीय भूमिका निर्वहन और लोक नृत्य प्रतियोगिता, राष्ट्रीय योग ओलंपियाड और योग प्रश्नोत्तरी, अखिल भारतीय बच्चों की शैक्षिक ई-सामग्री प्रतियोगिता (ए.आई.सी.ई.सी.सी.) आदि जैसे प्रमुख कार्यक्रमों का आयोजन; मानदंडों, मानकों, दिशानिर्देशों को निर्धारित करने और अन्य कार्यों के साथ-साथ विधार्थियों के आकलन से संबंधित गतिविधियों के कार्यान्वयन हेतु समग्र विकास के लिए ज्ञान का प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और विश्लेषण (परख) की स्थापना; स्कूलों में अधिगम की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए स्कूली शिक्षा के सभी तीन स्तरों— प्राथमिक, माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक के लिए सीखने के प्रतिफलों (एल.ओ.) का विकास।

संगठनात्मक संरचना

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् महानिकाय के सदस्य हैं— सभी राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा मंत्री; *अध्यक्ष*, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी.); *सचिव*, भारत सरकार; शिक्षा मंत्रालय (स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग), विश्वविद्यालयों के चार *कुलपति* (प्रत्येक क्षेत्र से एक); *अध्यक्ष*, केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड; *आयुक्त*, केंद्रीय विद्यालय संगठन; *निदेशक*, केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो; *प्रशिक्षण निदेशक*, प्रशिक्षण और रोज़गार महानिदेशालय, श्रम मंत्रालय; योजना आयोग के शिक्षा प्रभाग के एक प्रतिनिधि; परिषद् की कार्यकारिणी समिति के सदस्य और भारत सरकार द्वारा मनोनीत व्यक्ति, (छह से अधिक नहीं, इनमें से कम से कम चार स्कूल के अध्यापक होंगे)। केंद्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के सचिव इस महानिकाय के संयोजक हैं।

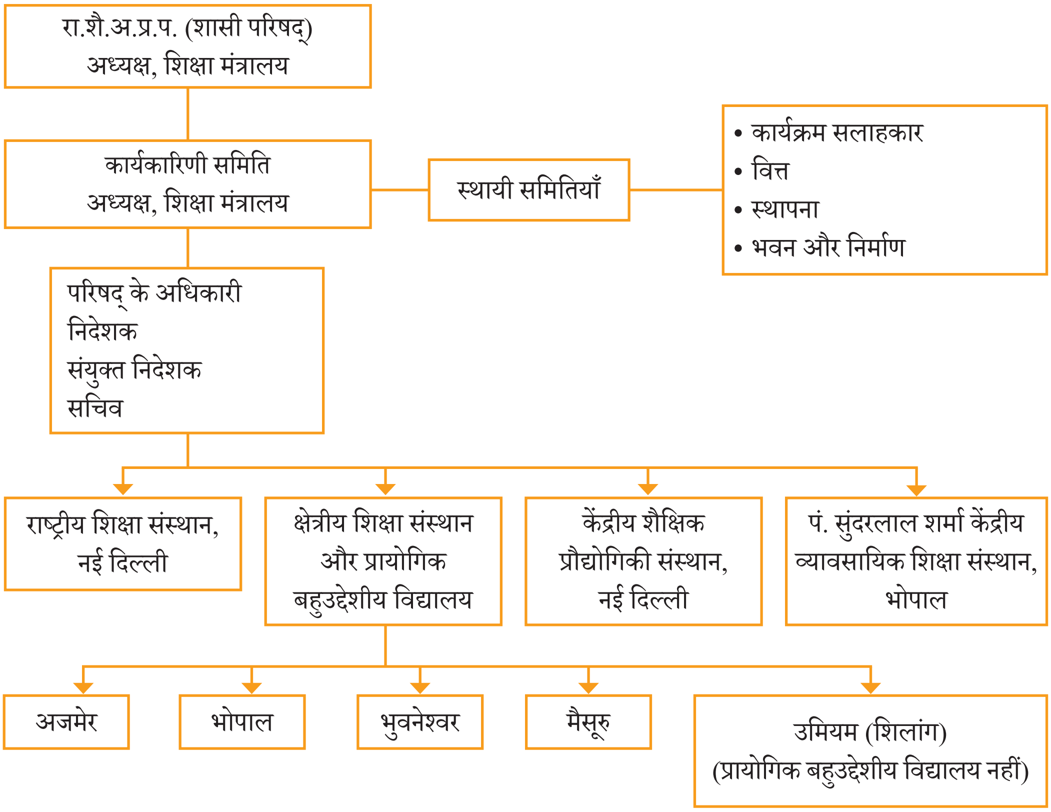

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् का मुख्य शासी निकाय इसकी कार्यकारिणी समिति है। समिति आम तौर पर बहिर्नियमावली में निर्धारित रूप में परिषद् के उद्देश्यों को पूरा करने का कार्य करती है और परिषद् के सभी मामलों और निधि का प्रबंधन नियंत्रित करती है। केंद्रीय शिक्षा मंत्री इसके अध्यक्ष (पदेन) और शिक्षा राज्य मंत्री इसके उपाध्यक्ष (पदेन) हैं। कार्यकारिणी समिति के सदस्य हैं— *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प.; *सचिव*, शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग), भारत सरकार; *अध्यक्ष*, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग; विद्यालयी शिक्षा में रुचि रखने वाले चार विख्यात शिक्षाविद् (इनमें से दो स्कूल के अध्यापक होंगे); *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प.; रा.शै.अ.प्र.प. के तीन संकाय सदस्य (इनमें से कम-से-कम दो प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष स्तर के हों); शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि और वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि (जो रा.शै.अ.प्र.प. का वित्तीय सलाहकार हो)।

रा.शै.अ.प्र.प. के सचिव कार्यकारिणी समिति के संयोजक के रूप में कार्य करते हैं। कार्यकारिणी समिति निम्नलिखित स्थायी समितियों/बोर्डों के सहयोग से कार्य करती है —

- वित्त समिति
- स्थापना समिति
- भवन और निर्माण समिति
- कार्यक्रम सलाहकार समिति
- शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की अकादमिक समिति
- केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान का सलाहकार बोर्ड
- पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान का सलाहकार बोर्ड
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों की प्रबंध समितियाँ
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान के विभागों के सलाहकार बोर्ड

बैठकें

वर्ष 2022–23 के दौरान, एन.आई.ई., नई दिल्ली में 14 जनवरी, 2022 को वित्त समिति की 144वीं बैठक आयोजित की गई। कार्यकारिणी समिति की 109वीं बैठक 12 नवंबर, 2022 को शास्त्री भवन, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली में आयोजित की गई।

रा.शै.अ.प्र.प. के वरिष्ठ पदाधिकारी

परिषद् के शैक्षिक कार्यों की देखभाल निदेशक, संयुक्त निदेशक और सचिव द्वारा की जाती है। संकायाध्यक्ष (अनुसंधान) अनुसंधान कार्यक्रमों का समन्वय तथा शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) के कार्यों की देखभाल करते हैं; संकायाध्यक्ष (अकादमिक) राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, नई दिल्ली के विभागों के अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियों का समन्वय करते हैं; संकायाध्यक्ष (समन्वय) रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न घटकों की अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियों का समन्वय करते हैं।

रा.शै.अ.प्र.प. के वरिष्ठ पदाधिकारी 2022–23	
निदेशक	दिनेश प्रसाद सकलानी
संयुक्त निदेशक	श्रीधर श्रीवास्तव
सचिव	मेजर हर्ष कुमार (22.04.2022 तक) प्रत्यूष कुमार मंडल (25.04.2022 से)
संयुक्त निदेशक (सी.आई.ई.टी.)	अमरेंद्र प्रसाद बेहरा
संयुक्त निदेशक (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)	राजेश पी. खंबायत (09.05.2022 तक) दीपक पालीवाल (02.08.2022 से)
संकायाध्यक्ष (अकादमिक)	अंजुम सिबिया

संकायाध्यक्ष (अनुसंधान)	बी.के. त्रिपाठी (31.08.2022 तक) दिनेश कुमार (01.09.2022 से)
संकायाध्यक्ष (समन्वय)	गौरी श्रीवास्तव

कार्यक्रमों का आयोजन एवं क्रियान्वयन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के कार्यक्रम राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.पी.ई.) और राज्यों की शैक्षिक जरूरतों के व्यापक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए तैयार किए जाते हैं। राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं का अभिनिर्धारण मुख्यतः राज्य समन्वय समितियों के तंत्र के माध्यम से किया जाता है, जो परिषद् के संकाय और राज्य शिक्षा विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों या कार्यकर्ताओं के बीच समन्वय के लिए एक मंच प्रदान करता है। संबंधित राज्य शिक्षा सचिव, राज्य समन्वय समिति के अध्यक्ष होते हैं तथा संबंधित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के प्राचार्य सदस्य संयोजक होते हैं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की पहचानी गई शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुसार संस्थान द्वारा प्रस्ताव तैयार किए जाते हैं जिसे आर.आई.ई. के संस्थान सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.) के समक्ष रखा जाता है और फिर कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) की सिफारिश के लिए की प्रबंध समितियों द्वारा रखा जाता है।

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) के शैक्षिक कार्यक्रमों पर कार्रवाई सबसे पहले इसके संबंधित विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों के सलाहकार बोर्डों के माध्यम से की जाती है तथा तत्पश्चात एन.आई.ई. की अकादमिक समिति उस पर कार्रवाई करती है। केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) के कार्यक्रमों पर क्रमश: संस्थान के सलाहकार बोर्ड और उसके बाद अकादमिक समिति के समक्ष रखने के माध्यम से कार्रवाई की जाती है। अकादमिक समिति/प्रबंध समिति द्वारा तैयार किए गए कार्यक्रमों पर अंतिम रूप से कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) द्वारा विचार किया जाता है। इन सभी योजनाओं, कार्यक्रमों, अनुसंधान प्रस्तावों आदि पर विचार करना और परिषद् के कार्य के शैक्षिक पक्षों की जाँच करना तथा कार्यक्रमों के विकास के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण सुनिश्चित करना पीएसी की जिम्मेदारी है। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की कार्यकारिणी समिति को पेश की गई कार्यक्रम सलाहकार समिति की रिपोर्ट में उन समग्र निर्देशों के बारे में बताया जाता है जिन पर अनुसंधान, प्रशिक्षण, विस्तार और अन्य कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए और जिन्हें देश में सर्वोत्तम विद्यालयी शिक्षा को बढ़ावा देने के लक्ष्य को पूरा करने के लिए आगे बढ़ाया जाएगा।

शैक्षिक अनुसंधान का संचालन और प्रायोजन रा.शै.अ.प्र.प. का एक प्रमुख क्रियाकलाप है। रा.शै.अ.प्र.प. के संघटकों और अन्य संस्थाओं/संगठनों द्वारा प्रस्तावित अनुसंधान कार्यक्रमों पर शैक्षिक अनुसंधान एवं नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) द्वारा विचार किया जाता है। ई.आर.आई.सी. विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहित और प्रायोजित करती है।

रा.शै.अ.प्र.प. की संघटक इकाइयाँ

देश के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में स्थित रा.शै.अ.प्र.प. की प्रमुख संघटक इकाइयाँ निम्नलिखित हैं—

1. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.), नई दिल्ली
2. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.), नई दिल्ली

3. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल
4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर
5. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल
6. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर
7. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूरु
8. पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम (मेघालय)

I. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान

नई दिल्ली में स्थित राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) द्वारा पाठ्यचर्या के शैक्षिक पहलुओं से संबद्ध अनुसंधान एवं विकास कार्य किया जाता है; आदर्श पाठ्यचर्यात्मक और अनुपूरक सामग्री तैयार की जाती है; विद्यालयी शिक्षा से संबंधित आधार सामग्री विकसित की जाती है और बच्चों के चहुँमुखी विकास के लिए पूर्व-प्राथमिक, प्राथमिक, माध्यमिक तथा उच्चतर माध्यमिक स्तरों पर प्रयोग किया जाता है। राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान अल्पावधिक/दीर्घावधिक पाठ्यक्रम एवं कार्यक्रम संचालित करता है और केंद्र द्वारा प्रायोजित विद्यालय सुधार योजनाओं के कार्यान्वयन और क्षमता विकास के लिए मुख्य संसाधन व्यक्तियों और अध्यापक-प्रशिक्षकों के सेवाकालीन प्रशिक्षण का आयोजन करता है।

एन.आई.ई., नई दिल्ली में स्थित रा.शै.अ.प्र.प. के मुख्य विभाग/प्रभाग/प्रकोष्ठ हैं—

1. प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

प्रारंभिक शिक्षा विभाग, प्रारंभिक शिक्षा के क्षेत्र में नीतियों और कार्यक्रमों पर भारत सरकार (जी.ओ.आई.) को सलाह देने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. का एक नोडल विभाग है। विभाग समग्र शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को लगातार समर्थन और मार्गदर्शन प्रदान करता रहा है। विभाग की प्रमुख भूमिकाओं और कार्यों में बुनियादी और प्रारंभिक चरणों के लिए पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण-अधिगम की सामग्री का विकास; एन.ई.पी. 2020 और बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा की नई आवश्यकताओं के अनुसार संसाधन और सहायता सामग्री; अध्यापकों और अन्य प्रमुख पदाधिकारियों के लिए संसाधन सामग्री अर्थात दिशानिर्देश, मैनुअल, हैंडबुक, फ्रेमिंग मॉड्यूल आदि; आर.टी.ई. अधिनियम के तहत स्कूल में नहीं पढ़ने वाले बच्चों और विशेष प्रशिक्षण केंद्रों (एस.टी.सी.) में काम करने वाले अध्यापकों के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री; शिक्षा की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करते हुए शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के विभिन्न पहलुओं पर मास्टर प्रशिक्षकों और राज्य स्तरीय प्रमुख पदाधिकारियों का प्रशिक्षण/अभिविन्यास; बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु प्राथमिकता वाले क्षेत्रों में अनुसंधान; समकालीन मुद्दों और प्रमुख क्षेत्रों पर गोष्ठियाँ, सम्मेलन और परामर्शी बैठकों, समीक्षा बैठकों का आयोजन; बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर एन.ई.पी. 2020 और शिक्षा का अधिकार अधिनियम, 2009 के तहत योजना, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन गतिविधियों के संबंध में शैक्षणिक सहायता और इनपुट प्रदान करना; और दो पत्रिकाओं— *प्राथमिक शिक्षक* और *प्राइमरी टीचर* के माध्यम से विकसित संसाधन सामग्री, अनुसंधान और नवीन अभ्यासों के निष्कर्षों और अन्य वैचारिक प्रपत्रों को साझा करने के रूप में सूचनाओं का प्रसार करना शामिल है।

विभाग सेवा-पूर्व कार्यबल के लिए प्रशिक्षण पाठ्यक्रम के विकास और शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के क्षेत्र में बुनियादी स्तर पर काम करने वाले शैक्षिक कार्मिकों के लिए अनुकरणीय प्रशिक्षण सामग्री और संसाधन सामग्री के विकास में शामिल है। यह प्री-स्कूल/बालवाटिका की योजना, कार्यान्वयन और निगरानी, सहायता सामग्री विकसित करने में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख पदाधिकारियों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों के संचालन प्री स्कूल शिक्षा/बालवाटिका के क्षेत्र में ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम और शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों से संबंधित ई-सामग्री, इन्फोग्राफिक्स और अन्य अधिगम-अध्यापन सामग्री (एल.टी.एम.) के विकास में भी शामिल है।

2. भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल)

भाषा शिक्षा विभाग वर्ष 2005 में स्थापित स्कूली शिक्षा के सभी चरणों में भाषा शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करता है। विभाग पाठ्यक्रम और शिक्षणशास्त्र के संबंध में युक्ति संगत पाठ्यक्रम, एन.सी.एफ. 2005 का कार्यान्वयन करने में प्रमुख भूमिका निभाता है। विभाग भाषा शिक्षा के क्षेत्र में नवीनतम विकास से अवगत रहता है। विभाग द्वारा स्कूली शिक्षा में विविधता को ध्यान में रखते हुए, भाषा शिक्षा के नवीन सिद्धांतों के आधार पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को अकादमिक इनपुट प्रदान किए जाते हैं। स्कूली शिक्षा के सभी चरणों के लिए अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम चलाए जाते हैं। विभाग ने हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्य और पूरक सामग्री विकसित की है। अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों (एस.एस.ए. और आर.एम.एस.ए. के तहत) के क्षमता निर्माण के लिए प्रशिक्षण पैकेज विकसित किए गए हैं। उर्दू में ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किए गए हैं। इसके अलावा, विद्यार्थियों और अध्यापकों के लाभ के लिए ई-सामग्री और त्वरित प्रतिक्रिया (क्यू.आर.) कोड भी विकसित किए गए हैं। भाषा शिक्षा विभाग अनुसंधान को बहुत महत्व देता है। एन.सी.एफ. के कार्यान्वयन पर सभी चार भाषाओं हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में शोध अध्ययन किया गया है। त्रिभाषा सूत्र की नीति और कक्षा आधारित शोध पर अनुसंधान जारी है। विभाग ने भाषा शिक्षा के परिप्रेक्ष्य से पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के युक्तिकरण और कुछ राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा पर कार्यक्रम में योगदान दिया है। भाषा शिक्षा विभाग में आई.सी.टी., जेंडर, समावेशी शिक्षा, पर्यावरण, शांति आदि जैसे उभरते मुद्दों, भाषा और साहित्यकारों के मुद्दों पर गोष्ठी और सम्मेलन आयोजित किए जाते हैं। विभाग में नवाचारी अभ्यासों, सामग्रियों और भावी दृष्टिकोण को साझा करने और इन्हें भाषा शिक्षा में समेकित और प्रसारित करने के लिए विस्तार गतिविधियाँ की जाती हैं। विभाग में भाषाओं में एक संसाधन केंद्र भी स्थापित किया जा रहा है। वर्ष 2005 से पहले प्रकाशित संसाधनों की खरीद, वर्गीकरण और व्यवस्था कैटलॉग तैयार करने का काम पूरा हो चुका है। 2005 से पहले प्रकाशित संसाधनों तक पहुँच और संसाधनों की स्कैनिंग पूरी हो चुकी है। विभाग पूरे वर्ष विभिन्न कार्यक्रमों जैसे स्वयं प्रभा, ऑडियो/वीडियो रिकॉर्डिंग, पी.एम. ई-विद्या आदि में भी शामिल रहता है। सी.आई.ई.टी. के सहयोग से पाठ्यक्रम आधारित विषयों पर कक्षावार वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए हैं। विभाग में सभी स्तरों के लिए चार भाषाओं में सीखने के प्रतिफलों पर आधारित गतिविधियों के लिए एक रोड मैप भी विकसित किया गया है।

3. विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग 1 सितंबर, 1995 को स्थापित किया गया था। तब से विभाग विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और सामाजिक रूप से वंचित समूहों, जैसे– अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और अल्पसंख्यकों के बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। यह सभी के लिए समावेशी शिक्षा प्रणाली के कार्यान्वयन एवं प्रणालीगत सुधारों हेतु विशेष रूप से सामाजिक रूप से वंचित और विशेष आवश्यकता वाले बच्चों

के संदर्भ में अधिक महत्व रखता है। विभाग में अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ का गठन किया गया है, जिसे अल्पसंख्यकों की शिक्षा और कल्याण को बढ़ावा देने हेतु 28 जुलाई, 2006 को गठित किया गया था।

विभाग की प्रमुख भूमिकाएँ हैं— सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के बच्चों, अर्थात सी.डब्ल्यू.डी. और समाज के सामाजिक रूप से वंचित समूहों के बच्चों को सरकार के प्रमुख कार्यक्रमों, जैसे– समग्र शिक्षा के माध्यम से समान तथा समावेशी स्कूली शिक्षा की सुविधा प्रदान करना; अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति के बच्चों की शिक्षा से संबंधित मुद्दों और समस्याओं पर ध्यान केंद्रित करने हेतु (खानाबदोश, पहचाने गए, आदिम, तटीय और पहाड़ी जनजातियों और प्राकृतिक आपदा और मानव कार्रवाई के कारण अशांत आदिवासी क्षेत्रों पर ध्यान देने के साथ) और सामाजिक रूप से वंचित समूहों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना; सभी कार्यक्रमों/योजनाओं/समितियों के तहत सी.डब्ल्यू.डी. के कवरेज को बढ़ाने और एस.ई.डी.जी. सामाजिक-पारिस्थितिकी में वंचित रहने वाले बच्चों के दृष्टिकोण से शिक्षा का अधिकार (आर.टी.ई.) अधिनियम, 2009 के कार्यान्वयन हेतु एक समर्थक की भूमिका निभाना।

विभाग के प्रमुख कार्य हैं— अनुसंधान करना और अनुसंधान आधारित शिक्षक मार्गदर्शिका, मैनुअल, हैंडबुक और प्रशिक्षण पैकेज आदि विकसित करना; विशेष आवश्यकता वाले बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने हेतु कार्यनीतियों पर ध्यान केंद्रित करते हुए अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों और नीति-निर्माताओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करना; अधिगम के सार्वजनिक डिजाइन (यू.डी.एल.) पर आधारित समावेशी पाठ्यक्रम और शिक्षण-अधिगम सामग्री के विकास का समर्थन करना; शिक्षा में विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और सामाजिक रूप से वंचित समूहों को शामिल करने के कार्यान्वयन हेतु केंद्र, राज्यों, गैर सरकारी संगठनों और अंतरराष्ट्रीय और राष्ट्रीय एजेंसियों को संसाधन सहायता प्रदान करना।

4. जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

जेंडर अध्ययन विभाग का सृजन शुरू में 1979 में महिला शिक्षा इकाई के रूप में किया गया था जिसे 1989 में बालिका शिक्षा और महिला सशक्तीकरण के मुद्दों को और अधिक सघन रूप से संबोधित करने के लिए एक पूर्ण महिला अध्ययन विभाग के रूप में प्रोन्नत किया गया। भारत के उच्चतम न्यायालय के ऐतिहासिक निर्णय के प्रकाश में और ट्रांसजेंडर के सरोकारों को स्वीकार करते हुए उनको 'तीसरे जेंडर' के रूप में मान्यता देने के लिए 2014 में विभाग का नाम जेंडर अध्ययन विभाग रखा गया।

विभाग अपनी अनुसंधान परियोजनाओं, सामग्रियों के विकास, विभिन्न हितधारकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों और विस्तार कार्यक्रमों के माध्यम से सभी जेंडर की समानता की दिशा में काम करता है। इसका विश्वास है कि जेंडर को राष्ट्रीय और राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा का एक महत्वपूर्ण आधार सिद्धांत बनाया जाना चाहिए और जेंडर समावेशी समाज तैयार करने के लिए इसे प्रभावी तरीके से लागू किया जाना चाहिए। इसकी परिकल्पना है कि शिक्षा को जेंडर समानता, जेंडर न्याय, सद्भाव और शांति के सिद्धांत के साथ जोड़ा जाना चाहिए।

विभाग की प्रमुख भूमिकाओं और कार्यों में शामिल हैं— देशभर के ट्रांसजेंडरों सहित शिक्षा में जेंडर संबंधी सरोकारों पर अध्यापक-प्रशिक्षकों, शैक्षिक योजनाकारों, जेंडर समन्वयकों और प्रशासकों सहित प्रमुख शैक्षिक कर्मियों का संवेदीकरण; पाठ्यपुस्तकों और अन्य शिक्षण-अधिगम सामग्रियों से जेंडर पूर्वाग्रह को समाप्त करना तथा पाठ्यक्रम और शैक्षिक कार्यक्रमों को फिर से डिजाइन करना; जेंडर समानता के लिए दिशानिर्देशों, पुस्तिकाओं और अन्य अनुकरणीय सामग्रियों का विकास; जेंडर समानता को बढ़ावा देने और पाठ्यक्रम एवं उसके अंतरण को जेंडर समावेशी बनाने के लिए पाठ्य और गैर-पाठ्य सामग्री का विकास; जेंडर पर विचार किए बिना विद्यार्थियों में

आत्मसम्मान और आत्मविश्वास का संचार; राज्यों में पाठ्यपुस्तकों और स्कूल पाठ्यक्रम में सभी जेंडरों के बीच समानता, शांति और सद्भाव के अनुरूप मूल्यों को शामिल करने के लिए पाठ्यक्रम निर्माताओं, पाठ्यपुस्तक लेखकों और शैक्षिक योजनाकारों के लिए क्षमता निर्माण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित करना; जेंडर अध्ययन, लड़कियों की शिक्षा और सशक्तीकरण के क्षेत्र में अनुसंधान करना; अध्यापकों के बीच जेंडर संवेदीकरण को बढ़ावा देने के लिए अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में इनपुट के लिए हस्तक्षेप कार्यनीतियों का निर्माण, अध्यापक प्रशिक्षकों का प्रशिक्षण, अध्यापकों की सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षा; और बालिकाओं के शैक्षिक और समग्र विकास के लिए समर्थन और संवेदीकरण अभियानों के माध्यम से समुदाय को एकजुट करना। विभाग रा.शै.अ.प्र.प., शिक्षा मंत्रालय, नीति आयोग, महिला एवं बाल विकास विभाग, एन.आई.ई.पी.ए., महिला अध्ययन केंद्रों, विश्वविद्यालयों, शिक्षा संकायों, जेंडर अध्ययन और बालिकाओं/महिलाओं की शिक्षा और सशक्तीकरण के क्षेत्र में काम करने वाली राष्ट्रीय, अंतरराष्ट्रीय और स्वैच्छिक एजेंसियों की घटक इकाइयों के साथ निकट सहयोग में काम करता है।

विभाग का दृष्टिकोण है कि प्रत्येक विद्यार्थी, जेंडर पर विचार किए बिना गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के अधिकार का प्रयोग करने में सक्षम हो, जीवन की चुनौतियों का सामना करने में सक्षम हो और सही मायने में कार्यक्षमता के मामले में सशक्त हो, ताकि वह सूचित विकल्प चुनें और भयभीत हुए बिना कार्रवाई करें। विभाग विद्यार्थियों की शिक्षा और जीवन की गुणवत्ता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालने के लिए प्रतिबद्ध है— शिक्षा में आने वाली बाधाओं को दूर करने में अग्रणी भूमिका निभाना; शिक्षा में सभी प्रकार के भेदभाव का निवारण; बालिकाओं और ट्रांसजेंडरों के पक्ष में सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन लाने की दिशा में काम करना और उन्हें अपनी पूरी क्षमता प्राप्त करने में सक्षम बनाना। विभाग नई पाठ्यचर्याओं, पाठ्यक्रमों, पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्य/गैर-पाठ्य सामग्री में जेंडर परिप्रेक्ष्य को समेकित करने की दिशा में काम कर रहा है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि उनमें उचित और संगत सामग्री शामिल हो जो जेंडर के आधार पर किसी भी पूर्वाग्रह/रूढ़िवादिता और भेदभाव से मुक्त हो।

5. सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग में अनुसंधान, सामग्री के विकास, अध्यापक प्रशिक्षकों और अध्यापकों की क्षमता निर्माण और विस्तार संबंधी गतिविधियों से संबंधित गतिविधियाँ की जाती हैं। विभाग के मुख्य कार्य हैं— (i) सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में अनुसंधान परियोजनाएँ तैयार करना; (ii) शैक्षणिक प्रक्रियाओं को बाल केंद्रित बनाने और अनुभवात्मक शिक्षा को मजबूत करने के लिए मॉड्यूल, हैंडबुक के रूप में प्रशिक्षण सामग्री विकसित करना; (iii) संकल्पना में स्पष्टीकरण और विषयों की बेहतर समझ के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करना; (iv) एन.आई.ई. के विभिन्न विभागों, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों, विश्वविद्यालय के विभागों, राष्ट्रीय संस्थानों, राज्य शैक्षणिक संस्थानों, गैर-सरकारी संगठनों आदि के साथ सहयोग करना।

विभाग ने सामग्री, प्रशिक्षण और विस्तार संबंधी गतिविधियों के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कुछ विकास गतिविधियों में भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों पर सामग्री तैयार करना, एक एटलस और पूरक पाठक शामिल हैं। भारत के मौद्रिक इतिहास के बारे में विद्यार्थियों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए समावेशी माध्यमिक स्तर (कक्षा 9–12) के लिए अंतरविषय परिप्रेक्ष्य से अर्थशास्त्र के क्षेत्र में किट के मद और मैनुअल, आधुनिक आर्थिक सोच में भारतीय होने पर गौरव की गहरी भावना उत्पन्न करने पर भारतीय विचारकों का योगदान, विद्यार्थियों के बीच दक्षताओं का विकास करना और उन्हें कामकाजी मॉड्यूल, स्वदेशी खेल, क्रियाकलापों आदि जैसी गतिविधियों का उपयोग करते हुए सूचित निर्णय लेने के लिए सशक्त बनाना है। इसके अलावा, विभाग द्वारा विकसित इतिहास में

त्रिभाषी शब्दकोश को ई-पब ऑडियो में परिवर्तित कर दिया गया है और यह रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट पर उपलब्ध है। सामाजिक विज्ञान के अध्यापन और अधिगम को आनंददायक और बाल केंद्रित बनाने के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6–8) के लिए सामाजिक विज्ञान में खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र पर सामग्री तैयार की गई है। इसी के साथ विभाग ने '*नई शिक्षा नीति 2020* के आलोक में रा.शै.अ.प्र.प., राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों और कुछ अंतरराष्ट्रीय देशों के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम पर एक तुलनात्मक अध्ययन' पर एक रिपोर्ट तैयार की है। यह सामग्री भारत के प्रख्यात आर्थिक विचारकों को लेकर तैयार की गई है।

विभाग की राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) के तहत योग ओलंपियाड, योग क्विज़ और राष्ट्रीय रोल प्ले और लोक नृत्य प्रतियोगिता जैसे बड़े राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम आयोजित किए गए। एन.पी.ई.पी. ने स्वास्थ्य और कल्याण से संबंधित सरोकारों पर अधिक जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए, आयुष्मान भारत के स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत विकसित प्रशिक्षण और संसाधन सामग्री के आधार पर शैक्षिक और स्वास्थ्य क्षेत्रों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के प्रशिक्षण के लिए स्वास्थ्य मंत्रालय के सहयोग से दिल्ली और पुरी, भुवनेश्वर में दो क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए। पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्यचर्या संबंधी सामग्रियों को तैयार करने में सामाजिक विज्ञान अध्यापकों की क्षमता का निर्माण करने हेतु स्कूली सामाजिक विज्ञान की पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्यचर्या संबंधी सामग्रियों को मिश्रित विधि में विकसित करने पर छह महीने का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम आयोजित किया गया था।

विभाग ने विस्तार संबंधी गतिविधियों के संबंध में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस, राष्ट्रीय सतर्कता सप्ताह, संविधान दिवस और जी-20 जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रमों का जश्न मनाने के लिए कई प्रश्नोत्तरी मद विकसित किए। विभाग ने स्वयंप्रभा/पी.एम. ई-विद्या चैनलों के लाइव अंत:क्रिया कार्यक्रमों में भी योगदान दिया।

6. विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम)

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग मध्य और माध्यमिक स्तर पर विज्ञान, गणित, पर्यावरण के क्षेत्रों में स्कूली शिक्षा के लिए कार्य करता है। विभाग में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण, मूल्यांकन और विस्तार गतिविधियाँ की जाती हैं। विभाग में शिक्षण-अधिगम के नवीन तरीकों और विज्ञान और गणित शिक्षा से संबंधित अन्य मुद्दों पर अनुसंधान किया जाता है और विद्यार्थियों, अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों आदि के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकें, पूरक सामग्री, ई-संसाधन जैसे प्रिंट और डिजिटल रूपों में अधिगम-शिक्षण सामग्री विकसित की जाती हैं। विभाग विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा को लोकप्रिय बनाने के लिए सामग्री का विकास और प्रसार भी करता है। अध्यापकों/अध्यापक-प्रशिक्षकों के लिए आमने-सामने और ऑनलाइन विधि में क्षमता निर्माण कार्यक्रम नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं।

विभाग की विभिन्न विस्तार गतिविधियों में जर्नल *स्कूल साइंस* के प्रकाशन के अलावा गोष्ठियों, राज्य और राष्ट्रीय स्तर की विज्ञान प्रदर्शनियों का आयोजन शामिल है। राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.बी.वी.पी.) जिसे पहले बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी (जे.एन.एन.एस.एम.ई.ई.) के नाम से जाना जाता था, एक वार्षिक कार्यक्रम है जो जिला, क्षेत्रीय और राज्य स्तर पर आयोजित विज्ञान प्रदर्शनियों की शृंखला के समापन का प्रतीक है। राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनियों के लिए शैक्षणिक मार्गदर्शन और वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाती है। राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के तहत विभाग द्वारा एक वार्षिक कार्यक्रम, राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह (आर.ए.एस.) भी आयोजित किया जाता है। विभाग द्वारा एक विज्ञान पार्क और एक हर्बल गार्डन विकसित किया गया है जिससे स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के लिए बहुमूल्य जानकारी और विचार प्रदान किए जाते हैं।

विभाग में एक विज्ञान और गणित शिक्षा संसाधन केंद्र (आर.सी.एस.एम.ई.) है जो विज्ञान और गणित शिक्षा पर प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक दोनों संसाधनों का एक समृद्ध भंडार है। विभाग में गतिविधियों, प्रयोगों को करने के लिए और संबंधित क्षेत्रों में व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने के केंद्र के रूप में जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान, भौतिकी और गणित की चार प्रयोगशालाएँ भी हैं।

विभाग द्वारा स्कूल स्तर पर विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा से संबंधित विभिन्न मुद्दों और सरोकारों पर भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय को सहायता और सलाह भी दी जाती है। इसके द्वारा विद्यार्थियों के साथ-साथ अध्यापकों के लिए पाठ्यचर्या और अन्य सहायता सामग्री के विकास से संबंधित विभिन्न गतिविधियों में एन.आई.ई. के अन्य विभागों और प्रभागों के साथ-साथ रा.शै.अ.प्र.प. के अन्य घटकों को भी अपना सहयोग और विशेषज्ञता प्रदान की जाती है। विभाग विभिन्न क्षमता निर्माण और विस्तार कार्यक्रमों के संचालन में रा.शै.अ.प्र.प. के अन्य विभागों को भी अपना सहयोग प्रदान करता है। विभाग के संकाय सदस्य एस.सी.ई.आर.टी., राज्य स्कूल शिक्षा बोर्ड, केंद्र और राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों आदि को भी अपनी विशेषज्ञता का लाभ प्रदान करते हैं।

7. पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस.डी.)

वर्ष 2016 में स्थापित किए गए पाठ्यचर्या अध्ययन विभाग और वर्ष 2019 में स्कूल पाठ्यक्रम अनुसंधान और विकास के विभिन्न पहलुओं की देखभाल करने तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के परिप्रेक्ष्य के अनुरूप राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा की तैयारी के लिए स्थापित किए गए पाठ्यचर्या समूह को विलय करने के माध्यम से 13 दिसंबर, 2021 को पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग की स्थापना की गई है। विभाग मुख्य रूप से देश में पाठ्यक्रम विकास और इसके कार्यान्वयन में शामिल है। यहाँ पाठ्यक्रम अनुसंधान और विकास पर दिशानिर्देश विकसित किए जाते हैं और स्कूली शिक्षा में सेवारत राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में एजेंसियों का क्षमता निर्माण किया जाता है। विभाग स्कूली शिक्षा, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा और संबंधित दस्तावेज़ों के विकास की प्रक्रिया का समन्वयन करता है। विभाग इसके बाद विभिन्न स्तरों पर पाठ्यक्रम के विकास और उनके कार्यान्वयन में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को अकादमिक सहायता प्रदान करता है और पाठ्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभिन्न शैक्षणिक/परीक्षा निकायों के बीच संबंधों को मजबूत करता है। विभाग वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के विकास में शामिल है और आने वाले वर्षों में यह स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और अन्य अधिगम-अध्यापन सामग्री के विकास का समन्वयन करेगा।

8. कला एवं सौंदर्य बोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

कला एवं सौंदर्य बोध शिक्षा विभाग का सृजन 24 नवंबर, 2005 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में एक पृथक विभाग के रूप में किया गया था ताकि विद्यालयों में कला के सभी रूपों को बढ़ावा देने की संकल्पना के साथ देश में योगदान देने वाले नागरिकों के रूप में सक्षम बनाने के लिए बच्चों की सौंदर्य क्षमताओं को उभारा जा सके। साथ ही अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार के रूप में विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से उन्हें देश की शिक्षा प्रणाली की मुख्यधारा में लाया जा सके। विभाग स्कूलों में कला शिक्षा की स्थिति पर अनुसंधान, स्कूलों और अध्यापक शिक्षा संस्थानों, आर.आई.ई. में कला समेकित शिक्षण (ए.आई.एल.) के कार्यान्वयन, स्कूल के वातावरण और विद्यार्थियों की शिक्षा पर कला के प्रभाव का अध्ययन, अध्यापन-अधिगम और मूल्यांकन प्रक्रिया और स्कूली शिक्षा और शिक्षक शिक्षा में नवाचारी अभ्यासों की लगातार समीक्षा करने का दायित्व उठाता है। विभाग दृश्य कला और कला प्रदर्शन में स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों के लिए अध्यापन-अधिगम सामग्री, प्रशिक्षण पैकेज, प्रशिक्षण

मॉड्यूल, पाठ्यपुस्तकें, अध्यापकों की पुस्तिकाएँ, पूरक सामग्री, ऑडियो-विज़ुअल सामग्री, मल्टी-मीडिया और ई-सामग्री के विकास में संलग्न है। विभाग ने स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर कला और संस्कृति के माध्यम से सीखने को बढ़ावा देते हुए, राष्ट्र के लिए अनुभवात्मक शिक्षा, कला समेकित शिक्षा का एक शैक्षणिक मॉडल तैयार करने में योगदान दिया है। विभाग ने आर.आई.ई., एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. की क्षमता निर्माण के लिए अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों और शैक्षिक प्रशासकों के लिए नियमित रूप से सेवाकालीन प्रशिक्षण और अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए हैं। इसने राज्यों को लचीले शिक्षणशास्त्र की बारीकियों को आत्मसात करने के लिए कला समेकित अधिगम पर अपने मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने और भारतीय पारंपरिक कलाओं के लिए आधार बनाने वाले अनुभवों के लिए कला शिक्षा विषयों पर गहन क्षमता निर्माण अभ्यास प्रदान किया है। विभाग ने स्कूली शिक्षा के प्रारंभिक और माध्यमिक स्तर पर लाखों अध्यापकों और स्कूलों के प्रमुखों के लिए *निष्ठा* पहल के तहत कला समेकित शिक्षण मॉड्यूल के विकास और प्रशिक्षण में बड़े पैमाने पर योगदान दिया है।

एन.ई.पी. 2020 में अनुशंसा की जाती है कि "स्थानीय विशेषज्ञता के विभिन्न विषयों में उत्कृष्ट स्थानीय कलाकारों, लेखकों, शिल्पकारों और अन्य विशेषज्ञों को मास्टर प्रशिक्षकों के रूप में शामिल किया जाए; पूरे पाठ्यक्रम में और विशेष रूप से माध्यमिक विद्यालयों और उच्च शिक्षा में मानविकी, विज्ञान, कला, शिल्प, खेल आदि में आदिवासी और अन्य स्थानीय ज्ञान सहित पारंपरिक भारतीय ज्ञान का सटीक समावेश और पाठ्यक्रम में बहुत अधिक लचीलापन, ताकि विद्यार्थी अपने स्वयं के रचनात्मक, कलात्मक, सांस्कृतिक और शैक्षणिक मार्ग विकसित करने के लिए पाठ्यक्रमों के बीच आदर्श संतुलन चुनें।" विभाग ने एन.ई.पी. 2020 के दृष्टिकोण को प्राप्त करने और भविष्य में आवश्यक कार्रवाई करने के लिए स्थिति पत्र में दिशानिर्देश तैयार किए हैं। भावी कार्यों के रूप में विभाग एन.ई.पी. 2020 अधिदेश के अनुसार पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्याओं, पाठ्यपुस्तकों, सीखने के प्रतिफलों, कला समेकित अधिगम, कला शिक्षा में अनुसंधान एवं राष्ट्रीय और राज्य स्तर के संगठनों की क्षमता निर्माण, ई-सामग्री और प्रिंट शिक्षण-अधिगम सामग्री, कला और संस्कृति संगठनों के साथ तालमेल आदि विकसित करने पर काम करेगा।

9. शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

शैक्षिक किट प्रभाग जिसे पहले एन.आई.ई. कार्यशाला के रूप में जाना जाता था, की कल्पना 1964 में स्कूल स्तर पर विज्ञान और गणित के अध्यापन-अधिगम के लिए उपकरणों/वस्तुओं के डिजाइन और विकास के लिए अकादमिक सहायता प्रदान करने हेतु की गई थी। इसका मुख्य उद्देश्य विज्ञान और गणित में शिक्षण उपकरणों का अध्ययन करना और स्कूलों में डिजाइन के परीक्षण के लिए डिजाइन, विकास और प्रयोगात्मक परीक्षण करना और उत्पादन करना भी है।

यह प्रभाग स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अध्यापन-अधिगम में शैक्षिक किट के रूप में स्कूल के उपकरणों के डिजाइन, विकास और प्रोटोटाइप उत्पादन द्वारा स्वयं कार्य के अनुभव के जरिए प्रिंट मीडिया को समर्थन देने के लिए जिम्मेदार है। प्रभाग में विद्यार्थियों/अध्यापकों/अध्यापक-प्रशिक्षकों को प्रभाग द्वारा विकसित विभिन्न किटों के उपयोग पर व्यावहारिक प्रशिक्षण भी प्रदान किया जाता है। इस प्रभाग में विभिन्न विस्तार गतिविधियों का आयोजन भी किया जाता है, जैसे बच्चों के लिए विज्ञान और गणित में व्यावहारिक क्रियाकलापों का संचालन और प्रतिवर्ष आयोजित राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी, विश्व पुस्तक मेला, विश्व व्यापार मेला और वैश्विक शिक्षा सम्मेलनों में बच्चों का भाग लेना सुनिश्चित किया जाता है। प्रभाग विभिन्न कार्यों के लिए भी जिम्मेदार है, जिसमें प्रोटोटाइप किट को डिजाइन करना और विकसित करना, फर्मों का पैनल बनाना, ऑर्डर के आधार पर किट आपूर्ति का समन्वय करना और अध्यापकों, विद्यार्थियों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण प्रदान करना शामिल है।

10. शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग रा.शै.अ.प्र.प. के सबसे पुराने विभागों में से एक है। यह वर्ष 1961 में रा.शै.अ.प्र.प. की स्थापना के समय में अस्तित्व में आया था। संगठनात्मक परिवर्तनों और महत्वपूर्ण क्षेत्रों में बदलाव के कारण इसके नामकरण और काम में बदलाव आया है। इसका हमेशा से मनोवैज्ञानिक आधार और मार्गदर्शन और परामर्श पर ध्यान रहा है।

विभाग, मार्गदर्शन और परामर्श के क्षेत्रों पर प्रमुखता से शिक्षा सिद्धांत और अभ्यास के लिए मनोवैज्ञानिक ज्ञान के अनुप्रयोग के माध्यम से स्कूल शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में गुणात्मक सुधार लाने के रा.शै.अ.प्र.प. के उद्देश्यों को साकार करने में संलग्न है। विभाग अपने संसाधनों का विस्तार करता है और स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं अर्थात पाठ्यचर्या योजना, पाठ्यपुस्तक लेखन, शिक्षक प्रशिक्षण, मूल्यांकन इत्यादि के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण प्रदान करने में सहयोग करता है।

एक विभाग के रूप में, यह विभिन्न क्षेत्रों में विशेष रूप से सुविधा प्रदान करने के लिए ठोस प्रयास करता है— (i) स्कूल प्रणाली के लिए परामर्शदाताओं की तैयारी और प्रशिक्षण (ii) सभी चरणों में पाठ्यचर्या क्षेत्रों में मनोवैज्ञानिक इनपुट प्रदान करना ताकि विद्यार्थियों की विशिष्टता को समझने, जीवन कौशल का निर्माण करने और नैतिकता, मानवीय और संवैधानिक मूल्यों को विकसित करने पर ध्यान केंद्रित किया जा सके (iii) स्कूल के कार्यों और अध्यापक शिक्षा में नैतिक शिक्षा को समेकित करना और (iv) पाठ्यक्रम विकास और अध्यापक प्रशिक्षण दोनों के अभिन्न घटकों के रूप में नैतिक शिक्षा तथा मानसिक एवं भावनात्मक कल्याण सुनिश्चित करना।

11. शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.) शैक्षिक नीतिगत अनुसंधान को बढ़ावा देने, विचारक की भूमिका निभाने, विद्यालयी और अध्यापक शिक्षा में अनुसंधान और नवाचार लाने, उनका समन्वय करने, उन्हें प्रायोजित तथा प्रवर्तन करने के कार्य में संलग्न है और रा.शै.अ.प्र.प. की एक स्थायी समिति, जिसे ई.आर.आई.सी. कहा जाता है, के सचिवालय के रूप में कार्य कर रहा है। रा.शै.अ.प्र.प. की एक स्थायी समिति शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) विद्यालयी और अध्यापक शिक्षा के प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में अनुसंधान को बढ़ावा और समर्थन देने के लिए उत्प्रेरक के रूप में कार्य करती है। ई.आर.आई.सी. समिति के सदस्यों में विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थाओं के शिक्षा तथा संबद्ध विषयों में कार्यरत विख्यात अनुसंधानकर्ता और राज्य शिक्षा संस्थानों और रा.शै.अ.प्र.प. संस्थानों के प्रतिनिधि शामिल हैं। यह प्रभाग विश्वविद्यालय/अनुसंधान संस्थानों में अपनी डॉक्टोरल डिग्री के लिए कार्यरत विद्यार्थियों को रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति प्रदान करता है। युवा शिक्षाविदों/शैक्षिक अनुसंधानकर्ताओं को अवसर प्रदान करने के उद्देश्य से एक और नई योजना 'रा.शै.अ.प्र.प. अनुसंधान संबद्धता (शिक्षाविद/अनुसंधानकर्ता पूल)' शुरू की गई है। इस प्रभाग में उन्हें स्कूली शिक्षा से संबंधित संगत क्षेत्रों में योगदान करने और अनुभव प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इससे संपूर्ण भारत में शिक्षा प्रणाली और विशेष रूप से रा.शै.अ.प्र.प. भी इन युवा लोगों की ऊर्जा, उत्साह और ज्ञान से लाभान्वित होगी।

12. अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

अध्यापक शिक्षा विभाग सेवा-पूर्व एवं सेवाकालीन और सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम (सी.पी.डी) दोनों के लिए अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के निर्माण और संगठन का कार्य संभालता है। अध्यापक शिक्षा विभाग के कार्यक्रम और गतिविधियाँ शिक्षक शिक्षा, भर्ती, तैनाती, सेवा शर्तों और शिक्षक सशक्तीकरण आदि; सामग्री,

पत्रिकाओं का विकास; अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों का व्यावसायिक विकास; राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में अध्यापक शिक्षा के केंद्र प्रायोजित संस्थानों (जैसे बी.आई.टी.ई., डी.आई.ई.टी., एस.सी.ई.आर.टी., सी.टी.ई. और आई.ए.एस.ई.) को अकादमिक सहायता प्रदान करने के क्षेत्र में अनुसंधान पर केंद्रित हैं। विभाग अध्यापक शिक्षा और स्कूली शिक्षा में नवाचारों, प्रयोगों को बढ़ावा देता है और विस्तार गतिविधियों का संचालन भी करता है। इसके अलावा, विभाग द्वारा शिक्षक शिक्षा में नीति और सलाहकार भूमिका निभाने पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और शिक्षक शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए केंद्र प्रायोजित योजनाओं के निर्माण, कार्यान्वयन और मूल्यांकन में शिक्षा मंत्रालय और राज्य/संघ राज्य क्षेत्र सरकारों को अकादमिक सहायता प्रदान की जाती है; अध्यापक शिक्षा, पाठ्यक्रम, उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री के साथ-साथ शिक्षणशास्त्र, अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एन.पी.एस.टी.) के क्षेत्र में 'थिंक टैंक फंक्शन' निष्पादन जिसमें विभिन्न स्तरों पर सेवा-पूर्व शिक्षक कार्यक्रम और सेवाकालीन शिक्षा, सतत शिक्षा और अध्यापकों की आजीवन शिक्षा के मॉडल/डिजाइन तैयार करना शामिल है; शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक, समग्र, समेकित, जिज्ञासापरक, खोज-उन्मुख, विद्यार्थी केंद्रित, चर्चा आधारित, शिक्षणशास्त्र को लचीला और निश्चित रूप से मनोरंजक बनाने के लिए इसे अद्यतन करने के क्षेत्र में शिक्षक और अध्यापक-प्रशिक्षकों का समर्थन करना; एस.सी.ई.आर.टी. के सहायक कार्यक्रम और गतिविधियाँ ताकि एस.सी.ई.आर.टी. अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय व्यावसायिक मानक (एन.पी.एस.टी.) प्राप्त करने हेतु उत्कृष्ट संस्थानों में विकसित करने के लिए डी.आई.ई.टी./बी.आर.सी./सी.आर.सी. का पुनर्जीवन, क्षमता निर्माण और कार्य संस्कृति को बदलने के लिए 'परिवर्तन प्रबंधन प्रक्रिया' का नेतृत्व; राष्ट्रीय परामर्श मिशन की गतिविधि का समर्थन और सामाजिक गुणवत्ता मूल्यांकन और प्रत्यायन (एस.क्यू.ए.ए.एफ.) पर रूपरेखा का विकास टी.ई.आई. द्वारा स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के लिए पाठ्यक्रम/पाठ्यपुस्तकों/विभिन्न टी.एल.एम./अन्य ऑनलाइन और ऑफलाइन संसाधनों के गुणवत्तापूर्ण शिक्षक शिक्षा, अनुसंधान और विकास के अधिदेश को प्रभावी तरीके से और कुशलता से आगे बढ़ाने के लिए सशक्त बनाने हेतु प्रौद्योगिकी सहायता; बहु-विषयक संदर्भ में शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों के संगठन में टी.ई.आई. का समर्थन अध्यापक-प्रशिक्षकों/मास्टर प्रशिक्षकों/प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) के लिए उनके व्यावसायिक और स्व-विकास के लिए आमने-सामने और ऑनलाइन विधि में विभिन्न स्तरों पर निरंतर व्यावसायिक विकास कार्यक्रम का आयोजन शिक्षक शिक्षा और स्कूली शिक्षा के विभिन्न मुद्दों और चिंताओं जैसे सेवा-पूर्व शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम, इंटर्नशिप कार्यक्रमों और शिक्षणशास्त्र पर शोध अध्ययन करना; अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों, शैक्षिक प्रशासकों जैसे निष्ठा, दीक्षा, एम.ओ.ओ.सी., पी.एम. ई-विद्या आदि के तहत अध्यापक विकास कार्यक्रमों के लिए शिक्षण और सीखने हेतु उच्च गुणवत्ता वाले संसाधन/ई-सामग्री विकसित करना; और अनुभवात्मक शिक्षा, खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र, खेल और कला समेकित शिक्षणशास्त्र, कहानी-आधारित शिक्षणशास्त्र आदि को बढ़ावा देने के लिए संदर्भ पुस्तकें, हैंडबुक, दिशानिर्देश, मैनुअल, जर्नल आदि का विकास, जैसा कि एन.ई.पी. 2020 में अध्यापक शिक्षा और स्कूली शिक्षा के लिए बताया गया है।

13. शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

भारत में शैक्षिक योजना को मजबूत करने के लिए वर्ष 2012 में शैक्षिक सर्वेक्षण करने और स्कूली शिक्षा पर प्रामाणिक जानकारी प्रदान करने के लिए शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग की स्थापना दो पूर्व विभागों के विलय द्वारा की गई थी। प्रभाग के मुख्य कार्यों में शैक्षिक डेटाबेस बनाना, इसका अनुरक्षण और अद्यतन करना, अनुसंधान विधियों और सांख्यिकीय विश्लेषण में प्रशिक्षण प्रदान करना, क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करना, शैक्षिक मूल्यांकन के

लिए सामग्री विकसित करना, अधिगम आकलन में अनुसंधान करना और राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का प्रबंधन करना शामिल है। शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग ने एन.ए.एस. 2022 सहित अखिल भारतीय स्कूल शिक्षा सर्वेक्षण और राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण जैसे बड़े पैमाने पर सर्वेक्षण आयोजित किए हैं, जिसमें सरकारी और सरकारी सहायता प्राप्त स्कूलों में विद्यार्थियों की अधिगम की उपलब्धि का आकलन किया गया है। शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग ने स्कूली शिक्षा में विभिन्न विषयों पर अनुसंधान अध्ययन भी आयोजित किया है और यह गुणवत्ता परीक्षण विकास, आइटम विकास, प्रश्न पत्र सेटिंग और सांख्यिकीय विधि पर राज्यों के पदाधिकारियों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम प्रदान करता है। शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग का प्रमुख कार्यक्रम राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना है, जिसमें प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की पहचान की जाती है और उनका पोषण किया जाता है, उन्हें डॉक्टरेट स्तर तक उच्च शिक्षा के लिए छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

परख

भारत का पहला राष्ट्रीय आकलन विनियामक, परख (समग्र विकास के लिए ज्ञान का प्रदर्शन, आकलन, समीक्षा और विश्लेषण) रा.शै.अ.प्र.प. में स्थापित किया गया है। इसका कार्य देश के सभी मान्यता प्राप्त स्कूल बोर्डों के लिए विद्यार्थी आकलन और मूल्यांकन के लिए मानदंड, मानक और दिशानिर्देश तय करने पर काम करना है। परख तीन प्रमुख आकलन क्षेत्रों में काम करेगा जिसमें बड़े पैमाने पर आकलन, स्कूल आधारित आकलन और परीक्षा सुधार शामिल हैं। इसका मुख्य उद्देश्य पारंपरिक परीक्षाओं से परे व्यापक आकलन विधियों को प्रस्तुत करके शिक्षा प्रणाली में सुधार करना है। परख का उद्देश्य महत्वपूर्ण सोच और समस्या-समाधान सहित विद्यार्थियों के कौशल का पोषण करना, परीक्षा से जुड़े तनाव को कम करना और न केवल शैक्षणिक उपलब्धियों बल्कि चरित्र और जीवन-कौशल को भी महत्व देकर समग्र विकास को बढ़ावा देना है। इसका उद्देश्य भारत की शिक्षा को वैश्विक मानकों के अनुरूप बनाना, प्रभावी उपकरणों के साथ अध्यापकों को सशक्त बनाना और विद्यार्थियों के लिए सीखने का अनुकूल माहौल बनाना है। यह अक्सर उच्च जोखिम वाली परीक्षाओं से जुड़े अत्यधिक तनाव और दबाव को कम करने पर भी ध्यान केंद्रित करता है। यह आकलन के प्रति अधिक संतुलित और कम चिंता पैदा करने वाले दृष्टिकोण की ओर बदलाव का समर्थन करता है, जिससे विद्यार्थियों के लिए एक स्वस्थ अधिगम का माहौल तैयार होता है। संक्षेप में, परख के उद्देश्य एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की दूरदृष्टि में निहित हैं जो विद्यार्थियों के समग्र विकास को पूरा करती है, कौशल के व्यापक सेट को बढ़ावा देती है और उन्हें तेजी से जटिल और परस्पर संबद्ध दुनिया में पनपने के लिए तैयार करती है।

14. अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. और एजेंसियों के बीच सूचनाओं के आदान-प्रदान की सुविधा के लिए अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने और राष्ट्रीय विकास समूह (एन.डी.जी.) के अकादमिक सचिवालय के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. और इच्छुक अंतरराष्ट्रीय शैक्षणिक संस्थानों के बीच एक समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर करने और जिम्मेदारी का निर्वहन करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. की भूमिका के अनुरूप विभिन्न गतिविधियाँ की जाती हैं। इन गतिविधियों के भाग के रूप में, आई.आर.डी. विदेशों से आने वाले प्रतिनिधि मंडलों की मेजबानी करता है और राष्ट्रीय शिक्षा नीतियों के निर्माण, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखाओं के विकास, सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के आयोजन, व्यावसायिक शिक्षा, शैक्षिक प्रौद्योगिकी के लिए कार्यक्रमों का निर्माण और कार्यान्वयन के क्षेत्रों में सहयोग की सुविधा प्रदान करने के साथ ही यूनेस्को, यूनिसेफ, यू.एन.डी.पी. आदि जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों के तत्वावधान में अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियों, सम्मेलनों, बैठकों, प्रदर्शनियों और प्रशिक्षण

कार्यक्रमों में रा.शै.अ.प्र.प. की ओर से संकाय की भागीदारी की सुविधा प्रदान करता है। इसके अलावा, आई.आर.डी. राष्ट्रीय स्तर पर शिक्षा मंत्रालय में शिक्षक पर्व जैसे प्रयासों में भी सहायता करता है।

प्रभाग द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ावा देने और प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थानों और एजेंसियों के साथ स्कूली शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में समझौता ज्ञापन तैयार करने और हस्ताक्षर करने की प्रक्रिया में संलग्न है। रा.शै.अ.प्र.प. और राष्ट्रीय शिक्षा एजेंसी (ई.डी.यू.एफ.आई.), फिनलैंड; और नेशनल ताइवान नॉर्मल यूनिवर्सिटी (एन.टी.एन.यू.), ताइवान के बीच शुरू किए गए समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने की प्रक्रिया पूरी हो गई है। अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग द्वारा अब तक एकेडमी ऑफ कोरियन स्टडीज (ए.के.एस.), कोरिया गणराज्य; मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन (एम.आई.ई.), मॉरीशस; कर्टिन विश्वविद्यालय (सी.यू.), ऑस्ट्रेलिया; फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी (एफ.एस.यू.) और यूनिवर्सिटी ऑफ सेंट फ्रांसिस, अमेरिका के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए गए हैं। इन समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर करने के पीछे उद्देश्य पारस्परिक लाभ हेतु इन देशों के साथ संरचित और सार्थक संबंधों को बढ़ावा देना तथा स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना है। प्रभाग वर्तमान में श्रीलंका, नेपाल और भूटान के संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन प्रारूप पर कार्य कर रहा है। प्रभाग द्वारा महामारी के दौरान ऑनलाइन संचालन किया गया और समझौता ज्ञापनों में उल्लिखित कई गतिविधियों में भाग लिया गया। इसमें ए.के.एस., कोरिया गणराज्य और एम.आई.ई., मॉरीशस के साथ संयुक्त कार्य समिति की बैठकें आयोजित करना शामिल था। शिक्षा में द्विपक्षीय सहयोग से संबंधित नए प्रयास वियतनाम, फिनलैंड, इज़राइल और इस्लामिक गणराज्य ईरान के संस्थानों के साथ ऑनलाइन मोड में शुरू किए गए।

15. पुस्तकालय और प्रलेखन विभाग (एल.डी.डी.)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् पुस्तकालय शिक्षा के क्षेत्र और उसके अंतरविषयक विषयों के क्षेत्र में देश के सबसे संसाधन युक्त सूचना केंद्रों में से एक है। पुस्तकालय और प्रलेखन विभाग का मुख्य कार्य स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा पर प्राथमिक, माध्यमिक और तृतीयक संसाधनों को एकत्र, व्यवस्थित और प्रसारित करना; पारंपरिक संदर्भों, रेफरल सेवाओं और दस्तावेज़ वितरण सेवाओं के माध्यम से शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों का समर्थन करना; मैनुअल का उपयोग करते हुए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और अन्य संगठनों के पुस्तकालय कर्मियों की सेवाकालीन शिक्षा की सुविधा प्रदान करना; ग्रंथ सूची, पुस्तक समीक्षाओं, सामग्री अनुक्रमण और लेखों के सार-संक्षेप और प्रेस की कतरनों का प्रसार करना; विस्तार सेवाओं के माध्यम से उत्पादों और सेवाओं का प्रसार करना; डेलनेट के माध्यम से पाठकों को संसाधन साझा करने की सुविधा प्रदान करना और पाठकों को मुफ्त इंटरनेट सर्फिंग प्रदान करना है।

16. योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

इस प्रभाग का गठन कार्यक्रम निर्धारण, अनुवीक्षण और मूल्यांकन की प्रक्रिया के समन्वय तथा शिक्षा मंत्रालय में आवधिक रिपोर्ट तथा विवरणी जमा करने के प्रयोजन से किया गया है। यह रा.शै.अ.प्र.प. के अकादमिक कार्यक्रमों या गतिविधियों के संबंध में सूचना वितरण केंद्र के रूप में कार्य करता है तथा सभी कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) का मूल्यांकन भी करता है। इसे परिषद् की स्थायी कार्यनीतियों की संकल्पना और इसके विभिन्न कार्यक्रमों के उचित कार्यान्वयन का दायित्व सौंपा गया है। पी.एम.डी. अपने उद्देश्यों को पूरा करने के लिए दिशानिर्देश जारी करता है, सूचना के प्रसार के लिए विभिन्न दस्तावेज़ तैयार करता है तथा कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी) और परियोजना अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.) द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों की प्रगति की निगरानी करता है।

अल्पकालिक और दीर्घकालिक अकादमिक कार्यक्रमों को तैयार करने और कार्यान्वयन और प्रगति का मूल्यांकन करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के घटक को समर्थन प्रदान करते हुए, पी.एम.डी. निम्नलिखित गतिविधियों में शामिल रहा है— रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट तैयार करना; शिक्षा मंत्रालय की वार्षिक रिपोर्ट के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के भाग को तैयार करना; शैक्षिक कार्यक्रमों के निर्माण के लिए सामान्य दिशानिर्देशों की तैयारी, विकास और अद्यतनीकरण; कार्यक्रम प्रक्रम समितियों की बैठक में समय-सारणी तैयार करना और उनमें भागीदारी करना। जिनमें विभागीय सलाहकार बोर्ड, शैक्षणिक समिति, संस्थान सलाहकार बोर्ड और प्रबंधन समितियाँ शामिल हैं; कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठकों का आयोजन करना; संस्थानों/विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों द्वारा किए गए कार्यक्रमों के कार्यान्वयन की प्रगति की तिमाही निगरानी करना; फॉलोअप के माध्यम से जानकारी का संग्रह और प्रसंस्करण; रा.शै.अ.प्र.प. का वार्षिक कार्यक्रम बजट तैयार करना; प्रशासनिक-सह-वित्तीय अनुमोदनों के लिए पी.ए.सी. और पी.ए.बी. अनुमोदित कार्यक्रमों के प्रस्तावों का प्रसंस्करण; रा.शै.अ.प्र.प. की प्रमुख गतिविधियों और उपलब्धियों पर मासिक और त्रैमासिक रिपोर्ट तैयार करना; शिक्षा मंत्रालय के साथ रा.शै.अ.प्र.प. के समझौता ज्ञापन तैयार करना; कार्यक्रम सलाहकार समिति की बैठकों की सिफारिशों के अनुसार एन.आई.ई. विभागों या प्रभागों या प्रकोष्ठों, सी.आई.ई.टी., पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और आर.आई.ई. के लिए पी.ए.सी. की बैठकों की सिफारिशों के अनुसार दोहराव और वित्तीय पक्षों हेतु कार्यक्रम प्रस्तावों की समीक्षा करना; समग्र शिक्षा-समेकन योजना के तहत शिक्षा मंत्रालय के परियोजना अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.) द्वारा अनुमोदित परियोजनाओं का समन्वयन करना। इन नियमित गतिविधियों के अलावा, पी.एम.डी. स्कूल और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रमों को पूरा करने में भी संलग्न है।

प्रभाग द्वारा कार्यक्रमों की निगरानी और रिपोर्टिंग को सक्षम करने के लिए, एम.आई.एस. पोर्टल 'योजना' (रा.शै.अ.प्र.प. गतिविधियों का वार्षिक विवेकपूर्ण मूल्यांकन) विकसित किया गया है। एम.आई.एस. पोर्टल योजना का उद्देश्य एक वर्ष के दौरान परिषद् की शैक्षिक पहलों और कार्यक्रमों के प्रदर्शन, जवाबदेही और गुणवत्ता का व्यवस्थित रूप से आकलन और मूल्यांकन करना है। इससे कार्यक्रमों की प्रभावी निगरानी, कार्यक्रमों की प्रगति को अद्यतन करने और आवश्यक जानकारी की त्वरित पुनर्प्राप्ति सुनिश्चित की जाएगी। इसका उद्देश्य रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाइयों द्वारा संचालित पी.ए.सी./पी.ए.बी. अनुमोदित परियोजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करना भी है। इस प्रक्रिया से निरंतर सुधार और सहभागिता को बढ़ावा देते हुए पारदर्शिता, गुणवत्ता मानकों का पालन और राष्ट्रीय शैक्षिक लक्ष्यों के साथ संरेखण सुनिश्चित किया जाएगा, जिससे अंततः कार्यक्रमों की समग्र प्रभावशीलता में वृद्धि होगी।

17. प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् ने विद्यालयी पाठ्यपस्तुकों, कार्यपुस्तकों, अनुपूरक पठन सामग्री, अध्यापक संदर्शिकाओं, प्रयोगशाला मैनुअलों, आकलन विषयक स्रोत पुस्तकों, गणित में उदाहरणात्मक समस्याओं, शोध रिपोर्टों या प्रबंध ग्रंथों और शैक्षिक पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन का कार्य जारी रखा। विभिन्न राज्यों और संघ राज्य-क्षेत्रों द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. की पुस्तकों को अपनाने/अनुकूलन और अनुवाद के लिए, राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक कार्यक्रम के तहत राज्यों और संघ राज्य-क्षेत्रों के अनुरोध पर रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा कॉपीराइट की अनुमति दी जाती है। इन्हें केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड से संबद्ध स्कूलों, जैसे केंद्रीय विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालय, तिब्बती स्कूलों और देश के सभी राज्यों में कई सार्वजनिक विद्यालयों में तथा विदेशों में भी व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने वर्ष 2022–23 के लिए स्वीकरण/अनुकूलन/अनुवाद हेतु निम्नलिखित राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों को उनके अनुरोध के आधार पर अपनी पाठ्यपुस्तकों का कॉपीराइट प्रदान किया।

क्र.सं.	राज्य	एजेंसी	वे श्रेणियाँ जिनके लिए कॉपीराइट दिया गया है-++*+
1.	मणिपुर	माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, बाबूपारा, इंफाल, मणिपुर	1–8
2.	मध्य प्रदेश	संचालक, राज्य शिक्षा केंद्र, भोपाल, मध्य प्रदेश समग्र शिक्षा अनुभाग, मध्य प्रदेश	1–12 व्यावसायिक पुस्तकें (22 पुस्तकें)
3.	उत्तराखंड	निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, उत्तराखंड समग्र शिक्षा, राज्य परियोजना कार्यालय, उत्तराखंड समग्र शिक्षा, राज्य परियोजना कार्यालय, उत्तराखंड	1–12 बरखा शृंखला व्यावसायिक पुस्तकें (9–10)
4.	मिजोरम	स्कूली शिक्षा विभाग, मिजोरम सरकार, मिजोरम	1–8
5.	राजस्थान	राजस्थान, पाठ्यपुस्तक मंडल, जयपुर	1–12 (सभी विषय)
6.	झारखंड	जे.ई.पी.सी., रांची	सामान्य प्रकाशन
7.	हरियाणा	1. प्रारंभिक शिक्षा, हरियाणा 2. हरियाणा बोर्ड, भिवानी	1–8 9 और 10 (सभी विषय)
8.	कर्नाटक	कर्नाटक पाठ्यपुस्तक सोसायटी	1–12
9.	आंध्र प्रदेश	एस.सी.ई.आर.टी., आंध्र प्रदेश	8 (7 पुस्तकें)
10.	उत्तर प्रदेश	स्कूल शिक्षा, उत्तर प्रदेश	9–12 (74 पुस्तकें)
11.	दिल्ली	दिल्ली ब्यूरो टेक्स्ट बुक्स सोसायटी, जनकपुरी, दिल्ली	1–8 (108 पुस्तकें)
12.	छत्तीसगढ़	एस.सी.ई.आर.टी., छत्तीसगढ़, रायपुर	6, 7, 8, 11, 12 (82 पुस्तकें) हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू
13.	पंजाब	पंजाब स्कूल शिक्षा बोर्ड	8–12 (57 पुस्तकें) और व्यावसायिक पुस्तकें (एन.एस.क्यू.एफ.)
14.	गोवा	एस.सी.ई.आर.टी., गोवा	1–8
15.	केरल	एस.सी.ई.आर.टी., केरल	11–12
16.	हिमाचल प्रदेश	हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड, धर्मशाला	1–10 (90 पुस्तकें)
17.	गुजरात	गुजरात राज्य स्कूल पाठ्यपुस्तक बोर्ड	1–12 (53 पुस्तकें)

वर्ष 2021–22 में कुल मिलाकर, 17 राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों की 22 एजेंसियों ने कॉपीराइट की अनुमति प्राप्त की है।

गैर-पाठ्य सामग्री के अलावा, पहली से बारहवीं तक की विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यपुस्तकें हर साल मुद्रित की जाती हैं। रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों सहित अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में विभिन्न प्रकाशनों की लगभग छह करोड़ प्रतियाँ हर साल प्रकाशित की जाती हैं। किताबें सी.बी.एस.ई. से संबद्ध स्कूलों में व्यापक रूप से उपयोग की जाती हैं जिनमें सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के केंद्रीय विद्यालय, जवाहर नवोदय विद्यालय, केंद्रीय तिब्बती स्कूल और कई निजी स्कूल शामिल हैं। कई राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों ने रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों के लिए कॉपीराइट प्राप्त कर लिया है। परिषद् अपनी पाठ्यपुस्तकों में क्यू.आर. कोड का भी उपयोग करती है।

प्रकाशन प्रभाग, ने देशभर में रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए 995 समर्पित पुस्तक विक्रेताओं को अपने विक्रेताओं के रूप में सूचीबद्ध किया है। उर्दू प्रकाशन सामग्री का वितरण या बिक्री उर्दू अकादमी, एन.सी.टी. दिल्ली सरकार के माध्यम से की जाती हैं। रा.शै.अ.प्र.प. का प्रकाशन प्रभाग एक समर्पित वेब पोर्टल की मदद से अपनी आवश्यकता के अनुसार पाठ्यपुस्तकों के ऑनलाइन ऑर्डर के लिए स्कूलों को सुविधा प्रदान करता है। स्कूलों के पास यह विकल्प है कि वे अपनी सुविधानुसार रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपस्तुकों को किसी अन्य पैनलबद्ध विक्रेता से सीधे रा.शै.अ.प्र.प. से या अन्य विक्रेताओं से अपनी आवश्यकतानुसार प्राप्त कर सकते हैं। रा.शै.अ.प्र.प. वेब पोर्टल व्यक्तियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और संस्थानों को रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशनों के लिए ऑनलाइन ऑर्डर करने की सुविधा भी प्रदान करता है। रा.शै.अ.प्र.प. वेब पोर्टल में इस प्रकार प्राप्त आर्डर ग्राहकों के दरवाजे पर पंजीकृत बुक पोस्ट द्वारा वितरित किए जाते हैं जिस के लिए रा.शै.अ.प्र.प. डाक खर्च वहन करता है।

प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. विभिन्न शैक्षणिक संस्थानों, सरकारी एजेंसियों, स्कूल संगठनों जैसे, नवोदय विद्यालय समिति, विभिन्न राज्यों के मॉडल स्कूल, अरुणाचल प्रदेश, सिक्किम, गुजरात, असम की सरकारें, एस.सी.ई.आर.टी. त्रिपुरा, नागालैंड बोर्ड ऑफ स्कूल एजुकेशन, कोहिमा, पाठ्यपुस्तक ब्यूरो अंडमान और निकोबार, झारखंड शिक्षा परियोजना परिषद्, पांडिचेरी सरकार, शिक्षा विभाग लक्षद्वीप, दमन और दीव, चंडीगढ़ प्रशासन, एन.डी.एम.सी., गोवा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, म.प्र. पाठ्यपुस्तक नियम (उर्दू), स्कूल शिक्षा निदेशालय जम्मू और कश्मीर आदि को सीधे पाठ्यपुस्तकों की आपूर्ति भी कर रहा है।

कोलकाता, बेंगलुरु, अहमदाबाद और गुवाहाटी में स्थित प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के चार उत्पादन-सह-वितरण केंद्र (आर.पी.डी.सी.) क्रमशः देश के पूर्वी, दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वोत्तर भागों में प्रकाशनों की जरूरतों को पूरा कर रहे हैं। दिल्ली मुख्यालय उत्तर भारत की आवश्यकता को पूरा कर रहा है।

रा.शै.अ.प्र.प., के प्रकाशन प्रभाग द्वारा प्रमुख रूप से कुल 10 बिक्री काउंटर संचालित किए जाते हैं। ये काउंटर पूरे वर्षभर में चार आर.पी.डी.सी., पाँच क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों और दिल्ली मुख्यालय में कार्य करते हैं ताकि सभी व्यक्तियों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और स्कूलों को रा.शै.अ.प्र.प., प्रकाशनों की आसान उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। प्रतिवेदनाधीन वर्ष के दौरान, 666 प्रकाशन जारी किए गए। प्रकाशनों का विवरण परिशिष्ट-VII में दिया गया है।

प्रकोष्ठ

1. राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ (सी.एन.सी.एल)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों के अनुसार, मार्च 2021 में रा.शै.अ.प्र.प. में राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र (सी.एन.सी.एल.) के लिए एक प्रकोष्ठ का गठन किया गया था। यह मूलभूत साक्षरता के लिए मुद्रित और गैर-मुद्रित दोनों तरह की संसाधन सामग्री विकसित करने के लिए 'सभी के लिए शिक्षा' (प्रौढ़ शिक्षा) को समर्पित है जिसमें

महत्वपूर्ण जीवन कौशल के साथ-साथ संख्या ज्ञान शामिल है। यह प्रकोष्ठ शिक्षा मंत्रालय के कार्यक्रम 'न्यू इंडिया लिटरेसी प्रोग्राम (नव भारत साक्षरता कार्यक्रम)' के अनुसार काम करता है जो सभी के लिए शिक्षा पर केंद्रित है।

प्रौढ़ शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.), 2020 में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता, महत्वपूर्ण जीवन कौशलों, व्यावसायिक कौशल विकास, बुनियादी शिक्षा और सतत शिक्षा हासिल करने के लिए पाँच प्रमुख क्षेत्रों के बारे में विचार किया गया है। इस प्रकोष्ठ में दो प्रमुख क्षेत्रों— मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता और महत्वपूर्ण जीवन कौशलों हेतु विभिन्न संसाधन सामग्री जैसे चार खंडों में उजास शीर्षक वाला प्राइमर, मार्गदर्शिका, वर्कशीट, आकलन के मद, प्राइमर पर आधारित वीडियो कार्यक्रम, महत्वपूर्ण जीवन कौशलों पर ऑडियो कार्यक्रम, प्रचार सामग्री जैसे जिंगल, वृत्तचित्र, फ़्लायर्स, मोनोग्राम, सूचनात्मक पुस्तिकाएँ, आदि तैयार करते हुए प्रौढ़ विद्यार्थियों के लिए कार्य किया जाता है।

इस प्रकोष्ठ का लक्ष्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 द्वारा अनुशंसित 100 प्रतिशत साक्षरता के लक्ष्य को प्राप्त करने की दिशा में काम करना है। प्रकोष्ठ ने इस दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए सभी क्षेत्रों के लिए अभिविन्यास कार्यशालाओं सहित विभिन्न राज्यों के अध्यापकों, प्रमुख संसाधन व्यक्तियों और मास्टर प्रशिक्षकों के लिए विभिन्न कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

इसी दिशा में, प्रकोष्ठ द्वारा व्यावसायिक कौशल विकास, बुनियादी शिक्षा और सतत शिक्षा के क्षेत्रों को कवर करते हुए, मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता और महत्वपूर्ण जीवन-कौशल के लिए विभिन्न संसाधन सामग्री विकसित करने में मौजूदा विशेषज्ञता के साथ तालमेल विकसित करने की कल्पना की जाती है। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए, प्रकोष्ठ द्वारा विस्तृत दिशानिर्देश, हैंडबुक, ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम, कहानी की किताबें, पोस्टर, पैम्फलेट, मोनोग्राफ आदि जैसी संसाधन सामग्री विकसित करने की योजना बनाई गई है।

2. मनोदर्पण प्रकोष्ठ

शिक्षा मंत्रालय की पहल 'मनोदर्पण' का उद्देश्य आत्मनिर्भर भारत अभियान के भाग के रूप में विद्यार्थियों के बीच मानसिक और भावनात्मक कल्याण की चिंताओं को दूर करना है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों, अध्यापकों और परिवारों को कोविड-19 और उसके बाद मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण के लिए मनो-सामाजिक सहायता प्रदान करना भी है। मनोदर्पण पहल का उद्घाटन 21 जुलाई, 2020 को माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा किया गया था।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा एक कार्यसमूह का गठन किया गया था, जिसमें विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं की निगरानी और बढ़ावा देने के लिए शिक्षा, मानसिक स्वास्थ्य और मनोविज्ञान के क्षेत्र के विशेषज्ञ शामिल थे। इस पहल के तहत परिकल्पित कार्य को आगे बढ़ाने के लिए, 14 अक्तूबर, 2020 को रा.शै.अ.प्र.प. में मनोदर्पण प्रकोष्ठ की स्थापना की गई, जिसमें अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) में डी.ई.पी.एफ.ई., एन.आई.ई. और आर.आई.ई. के संकाय सदस्य शामिल थे। मनोदर्पण प्रकोष्ठ कार्यसमूह के सदस्यों के साथ, विशेष रूप से विद्यार्थियों के लिए मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के महत्व के समर्थन के लिए कई गतिविधियाँ जारी है।

शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट पर बनाए गए मनोदर्पण वेबपेज (https://manodarpan.education.gov.in/) में विद्यार्थियों, अभिभावकों और अध्यापकों के लिए परामर्श और दिशानिर्देश, परामर्शदाताओं की निर्देशिका (जिसमें स्कूल और कॉलेज/विश्वविद्यालय स्तर दोनों के लगभग 350 परामर्शदाता शामिल हैं), प्रेरक पोस्टर, बार-बार पूछे

जाने वाले प्रश्न, 'मनतरंग' जैसी अन्य सहायक सामग्रियों के साथ, मनोदर्पण पहल के तहत की गई गतिविधियों का एक डिजिटल संकलन तैयार किया गया और वेबपेज पर अपलोड किया गया। हितधारकों तक पहुँचने का एक और कदम विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों को टोल-फ्री टेली-हेल्पलाइन (8448440632) के माध्यम से टेली-काउंसलिंग सेवाएँ प्रदान करना था। प्रशिक्षित परामर्शदाता जुलाई, 2020 से सुबह 8:00 बजे से रात 8:00 बजे तक स्वैच्छिक परामर्श सेवाएँ प्रदान कर रहे हैं।

मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण से संबंधित चिंताओं पर विद्यार्थियों (कक्षा 6–12) के लिए विभिन्न क्षेत्रों में सोमवार से शुक्रवार (शाम 5:00–5:30 बजे तक) कार्यरत सलाहकारों के साथ लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र 'सहयोग' आयोजित किए जाते हैं। विद्यार्थियों, अभिभावकों और अध्यापकों के विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए क्षेत्र के विशेषज्ञों के साथ प्रत्येक शुक्रवार (दोपहर 2:30 बजे से शाम 4:00 बजे तक) वेबिनार 'परिचर्चा' आयोजित की जाती है। ये सत्र पी.एम. ई-विद्या चैनलों पर प्रसारित होते हैं और रा.शै.अ.प्र.प. के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध हैं।

3. हिंदी प्रकोष्ठ

हिंदी को 26 जनवरी 1950 को संविधान लागू होने के साथ ही संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार भारतीय संघ की राजभाषा घोषित किया गया और हिंदी के प्रचार-प्रसार की जिम्मेदारी भारत सरकार को सौंपी गई। राजभाषा अधिनियम, 1963 के अधिनियमन के परिणामस्वरूप, भारत सरकार के गृह मंत्रालय द्वारा राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रयोग के आदेश लगातार जारी किए जाते हैं। हिंदी को राजभाषा बनाए जाने के बाद राजभाषा नियम, 1976 लागू किए गए। परिषद् के दैनिक कार्यों में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार एवं उसके समुचित क्रियान्वयन हेतु रा.शै.अ.प्र.प. में हिंदी प्रकोष्ठ की स्थापना की गई।

हिंदी प्रकोष्ठ द्वारा हिंदी को राजभाषा के रूप में बढ़ावा देने के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी आदेशों, नियमों और संकल्पों का पालन करने के लिए हर संभव प्रयास किए जाते हैं। यह परिषद् के प्रशासनिक कार्यों में समय-समय पर इन आदेशों, निर्देशों आदि का अनुपालन भी सुनिश्चित करता है।

II. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

रा.शै.अ.प्र.प. की एक घटक इकाई के रूप में केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.), वर्ष 1984 में शैक्षणिक प्रौद्योगिकी केंद्र और शिक्षण सहायता विभाग के विलय के साथ अस्तित्व में आया। सी.आई.ई.टी. शैक्षिक प्रौद्योगिकी का एक अग्रणी राष्ट्रीय संस्थान है। इसका मुख्य उद्देश्य शैक्षणिक प्रौद्योगिकियों, जैसे– रेडियो, टी.वी., फिल्मों, सेटेलाइट संचार और साइबर मीडिया के उपयोग को अलग-अलग या संयोजन में बढ़ावा देना है। संस्थान शैक्षिक अवसरों को बढ़ाने, साम्यता को बढ़ावा देने और स्कूल स्तर पर शैक्षिक प्रक्रियाओं की गुणवत्ता में सुधार करने हेतु गतिविधियाँ करता है। संस्थान में चार प्रमुख विभाग हैं— सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी विभाग और प्रशिक्षण प्रभाग (डी.आई.सी.टी. और टी.डी.), योजना और अनुसंधान प्रभाग (पी.आर.डी.), मीडिया उत्पादन प्रभाग (एम.पी.डी.) और अभियांत्रिकी प्रभाग (ई.डी.)।

सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी विभाग और प्रशिक्षण प्रभाग विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए मल्टीमीडिया सामग्री के निर्माण, शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में आई.सी.टी. के उपयोग पर प्रशिक्षण प्रदान करने और अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों और अन्य हितधारकों के लिए शिक्षा में आई.सी.टी. के लिए अनुसंधान पद्धति आदि में सहायक है। शिक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग पर संकाय प्रशिक्षण का आयोजन किया जाता है जिसमें ओपन-सोर्स सामग्री का विकास और उपयोग आदि शामिल हैं। यहाँ शिक्षा और उनके प्रसार में आई.सी.टी. में नवाचारों की

सुविधा भी प्रदान की जाती है। प्रभाग का आदर्श वाक्य देश के कोने-कोने में स्कूलों, विद्यार्थियों और अध्यापकों के बीच आई.सी.टी. संसाधनों का विस्तार, सी.आई.ई.टी. और रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइटों और अन्य वेब अनुप्रयोगों को निरंतर अद्यतन बनाना और उनका रखरखाव करना है। पी.आर.डी. योजना, संचालन और अनुसंधान को प्रसारित करने से संबंधित गतिविधियों का कार्य करता है। यह नये कार्यक्रम प्रस्तावों के विकास हेतु प्रक्रियाओं की देखरेख, सी.आई.ई.टी. के संस्थागत सलाहकार बोर्ड (आई.ए.बी.); रा.शै.अ.प्र.प. की कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) और शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार के परियोजना सलाहकार बोर्ड जैसे निकायों से उनकी मंजूरी और अंततः अनुमोदित कार्यक्रमों का समय पर निष्पादन सुनिश्चित करने के अलावा रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय और राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार गतिविधियों के समन्वय के साथ सी.आई.ई.टी. की शैक्षिक गतिविधियों की मासिक, त्रैमासिक और वार्षिक रिपोर्टों को संकलित और साझा करने में भी शामिल रहा है।

मीडिया उत्पादन प्रभाग (एम.पी.डी.) का प्राथमिक अधिदेश स्कूल जाने वाले बच्चों (बुनियादी से माध्यमिक चरण तक) और अध्यापकों के लिए उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक ऑडियो-वीडियो कार्यक्रमों का उत्पादन करना है। एक बार जब कार्यक्रम तैयार हो जाते हैं और विशेषज्ञों और अन्य हितधारकों द्वारा गहन पूर्वावलोकन से गुजरने के बाद उन्हें अंतिम रूप दिया जाता है और इसके बाद कार्यक्रमों को कक्षा 1–12 के लिए पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों और रेडियो स्टेशनों आदि पर प्रसारण सहित ऑफलाइन और ऑनलाइन विधि के माध्यम से प्रसार के लिए पैक किया जाता है। पाठ्यक्रम आधारित वीडियो कार्यक्रमों के समान, ऑडियो कार्यक्रम भी विकसित किए जाते हैं जो अखिल भारतीय रेडियो स्टेशनों, ज्ञानवाणी, एफ.एम. रेडियो चैनलों, सामुदायिक रेडियो स्टेशनों और आई-रेडियो के माध्यम से प्रसारित किए जाते हैं। ये कार्यक्रम विद्यार्थियों, अध्यापकों के साथ-साथ आम जनता के लिए सी.डी./डी.वी.डी. प्रारूपों पर भी उपलब्ध हैं। इसके अलावा, सभी पाठ्यक्रम आधारित वीडियो कार्यक्रमों को दीक्षा पोर्टल और मोबाइल ऐप से भी देखा जा सकता है।

अभियांत्रिकी प्रभाग (ई.डी.) का प्राथमिक अधिदेश सी.आई.ई.टी. को अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद करने के लिए संस्थान को आधुनिक और नवीनतम तकनीकों से सुसज्जित करना है। अभियांत्रिकी प्रभाग (ई.डी.), सी.आई.ई.टी. का एक महत्वपूर्ण प्रभाग है क्योंकि इसका मुख्य उद्देश्य संस्थान को आधुनिक और नवीनतम तकनीकों से समृद्ध करना है, ताकि सी.आई.ई.टी. को अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों को प्राप्त करने में मदद मिल सके। अभियांत्रिकी प्रभाग द्वारा जरूरत के मुताबिक उपकरण खरीदे जाते हैं और उनका रखरखाव भी किया जाता है। सी.आई.ई.टी. में अत्याधुनिक उत्पादन सुविधाएँ हैं और निरंतर उन्नयन और उपकरणों के उचित रखरखाव के कारण गुणवत्ता वाले उत्पादों का उत्पादन किया जाता है। सी.आई.ई.टी. स्कूल और अध्यापक प्रशिक्षण कॉलेजों में पढ़ाए और सीखे गए सभी विषयों को कवर करते हुए ई-सामग्री (ऑडियो/वीडियो/मल्टीमीडिया या एनीमेशन) बनाने का आशय रखता है और ऑफलाइन व ऑनलाइन (एयर, वेब और मोबाइल प्लेटफ़ॉर्म) दोनों तरीकों का उपयोग करते हुए उनका प्रसार करता है। हमारा लक्ष्य ऑगमेंटेड रियलिटी-वर्चुअल रियलिटी (ए.आर.वी.आर.) जैसी नवीनतम तकनीकों का उपयोग करते हुए इस देश के बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना है।

III. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में एक शीर्ष अनुसंधान और विकास संगठन है। यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की एक घटक इकाई है, जिसे 1993 में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित किया गया था। इसमें पाँच केंद्रों के साथ छह शैक्षणिक विषय, नामत: कृषि और पशुपालन, व्यापार और वाणिज्य, अभियांत्रिकी और प्रौद्योगिकी,

स्वास्थ्य और पैरामेडिकल विज्ञान, गृह विज्ञान एवं आतिथ्य प्रबंधन और मानविकी, विज्ञान, शिक्षा और अनुसंधान शामिल हैं।

संस्थान भारत में एक यू.एन.ई.वी.ओ.सी. (अंतरराष्ट्रीय तकनीकी और व्यावसायिक शिक्षा परियोजना) नेटवर्क केंद्र भी है, जो यूनेस्को-यू.एन.ई.वी.ओ.सी. अंतरराष्ट्रीय केंद्र, बॉन, जर्मनी के साथ संचार सहित सभी गतिविधियों का समन्वय करता है। केंद्र नेटवर्क के माध्यम से वी.ई.टी. के सभी पहलुओं से संबंधित ज्ञान और अनुभव साझा करता है, देश के अनुभवों का आदान-प्रदान करता है और सामान्य सार्थकता के मुद्दों पर चर्चा करता है।

संस्थान का दृष्टिकोण वर्तमान और भविष्य के कार्यबल की कौशल आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणाली को मजबूत करने के लिए एक अग्रणी संगठन बनना है। इसके लिए संस्थान विभिन्न श्रेणियों, जैसे– विकास, प्रशिक्षण, अनुसंधान और मूल्यांकन तथा विस्तार गतिविधियों के तहत विविध क्षेत्रों में कार्य कर रहा है। यह राष्ट्रीय विकास हेतु मानव संसाधन की जरूरतों को पूरा करने तथा रोज़गार की सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु व्यावसायिक शिक्षा के राष्ट्रीय लक्ष्य की प्राप्ति के लिए शैक्षणिक और तकनीकी सहायता प्रदान करता है। यह संस्थान कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संस्थानों, जैसे– यू.एन.ई.वी.ओ.सी., सी.बी.एस.ई., एन.आई.ओ.एस, एन.एस.डी .सी., एस.एस.सी, राज्य बोर्डों आदि के साथ मिलकर कार्य करता है।

संस्थान का लक्ष्य व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को बढ़ावा देना, देश के सामाजिक-आर्थिक विकास को बढ़ाना; प्रणालीगत नीतिगत हस्तक्षेपों के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण प्रणाली की गुणवत्ता बढ़ाना; रोज़गारपरकता की प्रदायगी और 21वीं सदी के कौशल प्रदान करके आजीवन सीखने को बढ़ावा देना; स्कूल में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए व्यावसायिक अध्यापकों के व्यावसायिक विकास के लिए कार्यक्रमों को डिजाइन और प्रस्तुत करना; और वी.ई.टी. उत्पादों और सेवाओं की प्रदायगी के लिए संगठनों, संस्थानों और एजेंसियों के साथ सहक्रियात्मक साझेदारी और नेटवर्किंग को बढ़ाना है।

संस्थान की अपने लक्ष्य को प्राप्त करने की कार्यनीतियों में एन.एस.क्यू.एफ. (कक्षा 9 से 12) के लिए सीखने के प्रतिफल आधारित पाठ्यक्रम का विकास करना; व्यावसायिक शिक्षा में अनुसंधान का संचालन और उसे प्रोत्साहन देना; विभिन्न हितधारकों के प्रशिक्षण की जरूरतों को पूरा करने के लिए कई दृष्टिकोण विकसित करना; व्यावसायिक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगठनों के साथ नेटवर्किंग करना; व्यावसायिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाना; रोज़गार के कौशल प्रदान करना और बेहतर रोज़गार के अवसर सुनिश्चित करने हेतु विद्यार्थी सहायता प्रणाली की स्थापना करना; व्यावसायिक अध्यापकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण के लिए संस्थान की पहुँच बढ़ाना और तंत्र स्थापित करना; शिक्षा के सभी स्तरों पर व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण में पहुँच, दक्षता और साम्यता में सुधार करने वाले व्यावसायिक कौशल को पूरा करना और सूचना जमा करना, उसका रखरखाव और उसे प्रसारित करना तथा व्यापक रूप से समाज में व्यावसायिक शिक्षा को लोकप्रिय बनाना है।

शिक्षा मंत्रालय द्वारा परिषद् को पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम सामग्री तैयार करने का अधिदेश दिया गया है, इसलिए संस्थान ने अर्थव्यवस्था के 19 अलग-अलग क्षेत्रों, जैसे– रिटेल, ऑटोमोबाइल, सुरक्षा, मीडिया और मनोरंजन, यात्रा और पर्यटन, कृषि, स्वास्थ्य देखभाल आदि में कक्षा 9 से 12 के लिए व्यावसायिक विषयों (कार्यभूमिका) हेतु पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम सामग्री का विकास किया है। शिक्षा मंत्रालय ने रा.शै.अ.प्र.प. को एन.एस.क्यू.एफ. पाठ्यक्रमों के पाठ्यक्रम और कोर्सवेयर के विकास का अधिदेश प्रदान किया है। इसे सभी राज्यों के लिए अनिवार्य बनाया गया है कि उन्हें पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल द्वारा विकसित पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम सामग्री का पालन करना होगा। संस्थान एन.एस.क्यू.एफ. के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए राज्य के मुख्य पदाधिकारियों के क्षमता निर्माण और अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए भी जिम्मेदार है।

IV. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और उमियम में स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) अपने अधिकार क्षेत्र में आने वाले राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के अध्यापकों या अध्यापक-प्रशिक्षकों की शैक्षिक आवश्यकताओं (सेवा-पूर्व तथा सेवाकालीन शिक्षा) को पूरा करते हैं। विद्यालयी अध्यापकों को विभिन्न विद्यालयी विषयों के अध्यापन हेतु सेवा-पूर्व व्यावसायिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा हेतु क्षेत्रीय संसाधन संस्थानों के रूप में कार्य करते हैं; राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को नीतियों को क्रियान्वित करने में अपेक्षित सहायता देते हैं और केंद्र प्रायोजित योजनाओं के क्रियान्वयन, अनुवीक्षण और मूल्यांकन हेतु सहायता प्रदान करते हैं।

आर.आई.ई. के प्रमुख शैक्षणिक कार्य निम्नलिखित हैं— नवाचारात्मक सेवा-पूर्व शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों का अभिकल्पन तथा उनका क्रियान्वयन करना; क्षेत्र में राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों के डी.आई.ई.टी., सी.टी.ई., आई.ए.एस.ई. तथा एस.सी.ई.आर.टी. के कर्मचारी वर्ग तथा अन्य शैक्षिक पदाधिकारियों के क्षमता निर्माण हेतु शिक्षा जारी रखने अथवा सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करना; विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा से संबंधित मामलों पर अनुसंधान और विकास गतिविधियाँ आयोजित करना; विद्यालयी शिक्षा तथा अध्यापक शिक्षा से संबंधित मामलों पर परामर्श सेवाएँ उपलब्ध कराना; क्षेत्र में राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा को शैक्षिक समर्थन प्रदान करना; और क्षेत्र में केंद्र प्रायोजित योजनाओं के क्रियान्वयन, निगरानी तथा मूल्यांकन में सहायता प्रदान करना, उनका क्षेत्रगत परीक्षण करना तथा उनका मूल्यांकन करने में राज्यों की सहायता करना और पाठ्यचर्या सामग्री, पाठ्यपुस्तकों तथा अनुदेशात्मक सामग्री आदि को तैयार करना।

सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के मुख्य कार्यों में से एक कार्य नवाचारात्मक सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों को तैयार करना तथा उन्हें प्रचालनरत करना है अर्थात अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर तथा मैसूरु और उमियम स्थित क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में सामाजिक विज्ञान एवं मानविकी की शिक्षा में चार वर्षीय समेकित बी.ए. बी.एड. पाठ्यक्रम, विज्ञान शिक्षा में बी.एससी. बी.एड. या बी.एससी.एड., विज्ञान तथा मानविकी में दो वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम, प्रारंभिक शिक्षा में एक वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम और मार्गदर्शन तथा परामर्श में एक वर्षीय स्नातकोत्तर डिप्लोमा (पी.जी.डी.जी.सी.)। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में पीएच.डी. कार्यक्रम के लिए सुविधाएँ भी उपलब्ध हैं। चार वर्षीय समेकित बी.ए. बी.एड. और बी.एससी. बी.एड. या बी.एससी.एड. पाठ्यक्रम में गुणवत्ता पर मुख्य बल दिया गया है अर्थात विषय-सामग्री, प्रक्रिया, शिक्षणशास्त्र तथा सह-पाठ्यचर्यात्मक क्रियाकलापों में सुविज्ञता प्राप्त अच्छे अध्यापक तैयार करना। अध्यापक शिक्षा में एक वर्षीय एम.एड. (प्रारंभिक शिक्षा) पाठ्यक्रम में प्रारंभिक शिक्षा के मुद्दों और सरोकारों पर तथा अनुसंधान आधारित निविष्टियों पर समुचित बल दिया जाता है। पाठ्यक्रम के विद्यार्थी अध्यापक प्रारंभिक शिक्षा के विभिन्न प्राथमिकता प्राप्त क्षेत्रों में अनुसंधान अध्ययन करते हैं। विज्ञान तथा मानविकी में दो वर्षीय बी.एड. (माध्यमिक) पाठ्यक्रम एन.सी.टी.ई. के दिशानिर्देशों पर आधारित एक प्रयोगात्मक पाठ्यक्रम है।

1. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर की स्थापना वर्ष 1963 में हुई थी, जिसे बाद में वर्ष 1995 में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर नाम दिया गया। यह उत्तरी क्षेत्र के शैक्षिक हितों की देखभाल करता है जिसमें हरियाणा,

हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, दिल्ली, चंडीगढ़, जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र शामिल हैं। यह एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर से संबद्ध है और इसके पाठ्यक्रम एन.सी.टी.ई., नई दिल्ली द्वारा मान्यता प्राप्त हैं। संबद्ध विश्वविद्यालय के कुलपति की अध्यक्षता में प्रबंधन समिति अकादमिक हित के मामलों पर सलाहकार की भूमिका निभाती है। संस्थान को वर्ष 2017–18 में एन.ए.ए.सी. द्वारा 'ए+' ग्रेड से मान्यता दी गई है। संस्थान ने हाल ही में एन.ए.ए.सी को पुनः मान्यता के लिए अपनी एस.एस.आर. रिपोर्ट सौंपी है। संस्थान महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर से संबद्ध है और कार्यक्रम अधिगम प्रतिफल (पी.एल.ओ.) और पाठ्यक्रम/गतिविधि सीखने के प्रतिफल (सी.एल.ओ.) की उपलब्धि पर महत्वपूर्ण जोर देने के साथ बी.एससी. बी.एड., बी.ए.बी.एड., बी.एड., एम.एड. और मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा जैसे कार्यक्रम और पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

देश के उत्तरी क्षेत्र के शिक्षा के एक उन्नत और अग्रणी संस्थान के रूप में, यहाँ नवीन सेवा-पूर्व कार्यक्रमों को चलाने का प्रयास किया जाता है और अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाता है, निर्देशात्मक सामग्री का विकास किया जाता है और विभिन्न स्कूल विषयों में सेवारत अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है और उन्हें संचालित करने के तरीके बताए जाते हैं। स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा पर एक क्षेत्रीय संसाधन संस्थान के रूप में, यह राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को एक सहायता प्रणाली प्रदान करता है और राज्य स्तर की एजेंसियों को शिक्षा के बेहतर तरीकों, अभ्यासों और पैटर्न से संबंधित जानकारी का दस्तावेज़ीकरण और प्रसार किया जाता है। संस्थान शिक्षा के राज्य विभागों को स्कूली शिक्षा के सभी पहलुओं से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों पर सलाह देता है और शिक्षा मंत्रालय और रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय से शुरू होने वाली राष्ट्रीय स्तर की नीतियों और कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में सहायता प्रदान करता है। संस्थान मुख्य रूप से अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण के क्षेत्रों में विशिष्ट परियोजनाओं के द्वारा राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और रा.शै.अ.प्र.प., डी.आई.ई.टी., आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई. आदि जैसे जिला स्तर के अध्यापक शिक्षा संस्थानों की क्षमता निर्माण का लक्ष्य रखता है।

2. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल पहले क्षेत्रीय शिक्षा कॉलेज के रूप में जाना जाता था। इसे 1963 में रा.शै.अ.प्र.प. के एक संघटक के रूप में स्थापित किया गया। यह देश के पश्चिमी क्षेत्र की स्कूली शिक्षा से संबंधित सेवा-पूर्व और सेवाकालीन जरूरतों को पूरा करने के लिए जाना जाता है, जिसमें मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ , गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, दमन और दीव तथा दादरा एवं नगर हवेली शामिल हैं। संस्थान विज्ञान, गणित, अंग्रेजी और सामाजिक विज्ञान में माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों को तैयार करने के लिए एम.एड., बी.एड. कार्यक्रम और बी.ए.एड. और बी.एससी.एड. के चार वर्षीय समेकित अध्यापक तैयार करने के कार्यक्रम प्रस्तावित करता है। यह अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों और अन्य स्कूल पदाधिकारियों की व्यावसायिक विकास आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए सेवाकालीन कार्यक्रम भी प्रस्तावित करता है। इसके अलावा, इसमें शिक्षक परामर्शदाता तैयार करने के लिए मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पर एक साल का कार्यक्रम भी है। संस्थान डिग्री प्रदान करने के लिए बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय, भोपाल से संबद्ध है।

यह सामान्य रूप से शिक्षा और विशेष रूप से स्कूल और अध्यापक शिक्षा में प्रशिक्षण, अनुसंधान और विकास कार्यक्रम आयोजित करने के लिए एक क्षेत्रीय संस्थान के रूप में कार्य करता है। इसकी भूमिका में विज्ञान और गणित शिक्षा, भौतिक विज्ञान, जैविक विज्ञान, गणित) सामाजिक विज्ञान और भाषाएँ और शिक्षक शिक्षा के क्षेत्रों में गुणवत्तापूर्ण अध्यापकों को तैयार करना; स्कूली शिक्षा से संबंधित अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों, पर्यवेक्षकों और प्रशासकों के लिए सेवा कार्यक्रम आयोजित करना; नवीन प्रयोगों को आजमाने के लिए संस्थान

की प्रयोगशाला के रूप में काम करने के लिए एक मॉडल प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल (डी.एम.एस.) चलाना; और राज्य/जिला और शिक्षक शिक्षा संस्थानों जैसे अनुसंधान, प्रशिक्षण, विकास और विस्तार के क्षेत्रों में एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी./सी.टी.ई. और आई.ए.एस.ई. की क्षमता निर्माण हेतु क्षेत्र के राज्यों के लिए एक सहायता प्रणाली के रूप में कार्य करना और रा.शै.अ.प्र.प. या भारत सरकार द्वारा शुरू की गई स्कूली शिक्षा के विभिन्न पहलुओं से संबंधित नीतियों और कार्यक्रमों पर राज्य के शिक्षा विभागों को सलाह देना शामिल है

3. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर द्वारा ओडिशा, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, सिक्किम, मणिपुर, मिजोरम, मेघालय, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, त्रिपुरा और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की स्कूली शिक्षा से संबंधित सेवा-पूर्व और ओडिशा, बिहार, झारखंड, पश्चिम बंगाल, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सेवाकालीन आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। संस्थान द्वारा एन.सी.टी.ई के अनुमोदन के बाद उत्कल विश्वविद्यालय से संबद्धता के तहत निम्नलिखित नियमित सेवा-पूर्व पाठ्यक्रम चलाए जाते हैं— 1. चार वर्षीय समेकित बी.एस-सी. बी.एड., 2. चार वर्षीय समेकित बी.ए.बी.एड., 3. दो वर्षीय बी.एड., 4. दो वर्षीय एम.एड. और 5. शिक्षा में एक वर्षीय एम.फिल.। इसके अलावा, संस्थान द्वारा दूरस्थ सह नियमित विधि से परामर्श और सलाह पर एक डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रस्तावित किया गया है। संस्थान उत्कल विश्वविद्यालय के पूर्व पीएच.डी. शिक्षा पाठ्यक्रम के नोडल केंद्र के रूप में भी कार्य करता है।

आर.आई.ई., भुवनेश्वर का मुख्य कार्य अध्यापक शिक्षा और शैक्षिक अनुसंधान के एक संस्थान के रूप में कार्य करना है, इसके अलावा शिक्षक प्रशिक्षण, नए शैक्षणिक क्षेत्र की संकल्पनाओं में कौशल विकास के क्षेत्रों में क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी., आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई. और डी.आई.ई.टी. का क्षमता निर्माण करना; कार्यनीतिक संस्थागत और कक्षा प्रबंधन तकनीक, सामग्री उत्पादन, पाठ्यक्रम नवीनीकरण, निगरानी और शैक्षिक अनुसंधान; समग्र शिक्षा जैसी केंद्र प्रायोजित योजनाओं के कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में सहायता करना; चार वर्षीय समेकित बी.एससी.बी.एड. और बी.ए.बी.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम, दो वर्षीय एम.एड. पाठ्यक्रम के माध्यम से नवीन सेवा-पूर्व शिक्षक तैयारी कार्यक्रमों को संकल्पित करना और आजमाना; समावेशी शिक्षा, जेंडर संवेदनशीलता, बहु-कक्षा शिक्षण, विशेष शिक्षा आदि के विशेष संदर्भ में पाठ्यचर्या सामग्री, पाठ्यपुस्तकों, अनुदेशात्मक सामग्रियों के विकास, क्षेत्र-परीक्षण और मूल्यांकन और प्रशिक्षण पैकेज की तैयारी में राज्यों की सहायता करना; रा.शै.अ.प्र.प. के एक क्षेत्रीय केंद्र के रूप में कार्य करना और क्षेत्र और राज्य विशिष्ट आवश्यकता आधारित कार्यक्रमों को डिजाइन करने के अलावा रा.शै.अ.प्र.प. की नीतियों और कार्यक्रमों को लागू करना; शैक्षिक अनुसंधान सहित स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के लिए क्षेत्रीय संसाधन संस्थान के रूप में कार्य करना; स्कूली शिक्षा में उनकी जरूरतों के अनुसार पूर्वी क्षेत्र और अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में ग्राहक राज्यों को अकादमिक सहायता प्रदान करना; नवाचारी कक्षा अभ्यासों का दस्तावेज़ीकरण और प्रसार करना।

4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूरु

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु (पूर्व में क्षेत्रीय शिक्षा महाविद्यालय) की स्थापना 1 अगस्त, 1963 को हुई थी। यह नवाचारी सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से स्कूली शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाने और दक्षिणी राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के मुख्य उद्देश्य से शुरू किया गया था।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु ने स्वयं को स्कूल और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित संस्थान के रूप में स्थापित किया है। संस्थान ने देश और दक्षिणी क्षेत्र के शैक्षिक परिदृश्य में बदलाव से उत्पन्न जिम्मेदारियों और चुनौतियों को वहन करने का प्रयास किया है। सेवा-पूर्व शिक्षा से सेवाकालीन शिक्षा पर अपना ध्यान केंद्रित

करने में एक बड़े बदलाव के बाद, संस्थान 1995 से क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान के रूप में कार्य कर रहा है। संस्थान के सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम मैसूर विश्वविद्यालय से संबद्ध हैं और दक्षिण भारतीय राज्यों, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु और संघ राज्य क्षेत्रों पुदुच्चेरी और लक्षद्वीप की जरूरतों को पूरा करते हैं। स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवीन अभ्यासों को आजमाने के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में आर.आई.ई., मैसूरु से एक मॉडल प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल (डी.एम.एस.) जुड़ा हुआ है। इनका उपयोग विभिन्न विषय क्षेत्रों में योग्य अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए संस्थानों के प्रशिक्षुओं के व्यावहारिक प्रशिक्षण के लिए भी किया जाता है।

संस्थान का मुख्य कार्य सेवाकालीन और सेवा-पूर्व दोनों प्रकार के अध्यापकों को प्रशिक्षित करना है; स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के लिए मानवीय और चिंतनशील प्रैक्टिशनरों को तैयार और प्रशिक्षित करना जो समावेशी व्यवस्थाओं का प्रबंधन करने में सक्षम हों; दक्षिणी क्षेत्र के विशेष संदर्भ में अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार सहित स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता का केंद्र बनना; संवैधानिक मूल्यों और समकालीन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करते हुए स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना; अध्यापन-अधिगम में वर्तमान रुझानों और स्कूली शिक्षा की उभरती माँगों पर जोर देते हुए अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करना; विभिन्न शैक्षिक योजनाओं के निर्माण और कार्यान्वयन के लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के साथ सहयोग करना; स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले संगठनों को आवश्यकता आधारित शैक्षणिक सहायता प्रदान करना और स्कूल और अध्यापक शिक्षा के मामले में सहकर्मी संस्थानों के साथ पारस्परिक समर्थन का नेटवर्क बनाना और बनाए रखना।

संस्थान में वर्तमान में मैसूरु विश्वविद्यालय द्वारा अनुमोदित संशोधित पाठ्यक्रम के साथ सेवा-पूर्व कार्यक्रमों को चलाया जाता है। संस्थान बी.एससी.बी.एड., बी.ए.बी.एड. के चार वर्षीय समेकित कार्यक्रम, भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित में एम.एससी.एड. के छह वर्षीय समेकित कार्यक्रम, दो वर्षीय बी.एड. और एम.एड. कार्यक्रम चला रहा है। इन सभी कार्यक्रमों में विकल्प आधारित क्रेडिट सिस्टम शुरू किया गया है। संस्थान एक संपर्क-सह-दूरस्थ शिक्षा विधि कार्यक्रम, मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम भी प्रदान कर रहा है। संस्थानों के विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) को अनुसंधान कार्यक्रमों के केंद्र के रूप में मान्यता प्राप्त है। वर्तमान में संस्थान में 60 विद्यार्थी पीएच.डी. कर रहे हैं।

संस्थान शिक्षक प्रशिक्षण और शैक्षिक अनुसंधान के लिए एक मॉडल संस्थान के रूप में कार्य करता है। इसके अलावा शिक्षक प्रशिक्षण, नई शैक्षणिक संकल्पनाओं के कक्षा अनुप्रयोग के लिए कौशल विकास के क्षेत्रों में क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी., आई.ए.एस.ई., सी.टी.ई. और डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए क्षमता निर्माण कार्य; अनुदेशात्मक कार्यनीतियाँ और कक्षा प्रबंधन तकनीकें; सामग्री उत्पादन, पाठ्यक्रम नवीनीकरण; निगरानी और पाठ्यपुस्तक मूल्यांकन तथा शैक्षिक अनुसंधान करता है। यह विज्ञान शिक्षा, नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार, शैक्षिक प्रौद्योगिकी, समग्र शिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, जेंडर संवेदनशीलता, मध्याह्न भोजन, कंप्यूटर शिक्षा और विद्यालय शिक्षा के लिए पर्यावरण अभिविन्यास जैसी केंद्र सरकार प्रायोजित योजनाओं के कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में सहायता करता है।

5. पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम, मेघालय

पूर्वोत्तर राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु 1995 में मेघालय राज्य की राजधानी शिलांग में पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान की स्थापना की गई थी जिसमें असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिज़ोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा शामिल हैं। संस्थान पूर्वोत्तर क्षेत्र में सक्रिय संगठन की भूमिका निभाकर स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में अग्रणी बनने के लिए तैयार है। संस्थान का लक्ष्य क्षेत्र में मानव संसाधन विकास

की सुविधा देने का है, ताकि राज्य अध्यापक शिक्षा के साथ-साथ स्कूल के सभी पक्षों में गुणवत्तापूर्ण निवेश देने में सक्षम बन सकें। एन.ई.आर.आई.ई. का दृष्टिकोण क्षेत्र में मानव संसाधनों के विकास को सुविधाजनक बनाना है ताकि राज्य स्कूल के साथ-साथ अध्यापक शिक्षा के सभी पहलुओं में गुणवत्तापूर्ण इनपुट प्रदान करने में सक्षम हो सकें। संस्थान सभी पूर्वोत्तर राज्यों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अनुसंधान, विकास और सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाता है। यह भारत सरकार की सभी केंद्र प्रायोजित योजनाओं और प्रमुख शैक्षिक कार्यक्रमों के कार्यान्वयन में नोडल एजेंसी के रूप में कार्य करता है।

संस्थान मुख्य रूप से राज्य और जिला स्तर के संसाधन संस्थानों/अध्यापक शिक्षा संस्थानों और क्षेत्र में स्थित राज्यों के माध्यमिक और उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्डों के अनुसंधान, विकास और प्रशिक्षण हेतु क्षमता निर्माण के लिए काम करता है। संस्थान स्वयं को इसमें शामिल करने का आशय रखता है— (i) भारत सरकार और रा.शै.अ.प्र.प. के कार्यक्रमों का प्रचार और समर्थन, (ii) पूर्वोत्तर में स्कूली शिक्षा का विकास, (iii) शिक्षा पर राष्ट्रीय नीति, 2020 और राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखाओं, अध्यापकों के व्यावसायिक विकास, शिक्षा के सामाजिक और सांस्कृतिक आयामों पर शोध के आलोक में शिक्षा, विज्ञान और गणित शिक्षा में भाषा के क्षेत्रों में एक अलग प्रकार की व्यावसायिक पहचान का विकास आदि।

एन.ई.आर.आई.ई. ने सत्र 2015–16 से अपना दो वर्षीय नियमित पूर्णकालिक बी.एड. पाठ्यक्रम शुरू किया है। पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् (एन.सी.टी.ई.) द्वारा अनुमोदित किया गया है और पूर्वोत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय (एन.ई.एच.यू.), शिलांग से विधिवत संबद्ध किया गया है। इसके अलावा, यह मिश्रित मोड में बी.एड. पाठ्यक्रम, मार्गदर्शन और परामर्श (डी.सी.जी.सी.) में एक वर्ष का डिप्लोमा पाठ्यक्रम और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) में छह महीने का प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम प्रदान करता है। क्षेत्र की अनोखी जनसांख्यिकीय, भौगोलिक और अन्य विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए, एन.ई.आर.आई.ई. की विशिष्ट विशेषताएँ शिक्षा और प्रशिक्षण की पारंपरिक आमने-सामने की प्रणाली के अलावा अधिगम और प्रशिक्षण के दूरस्थ मोड द्वारा चिह्नित इसकी कार्यप्रणाली है। यह बड़ी संख्या में ग्राहकों के लिए इसे सुलभ बनाकर प्रशिक्षण की प्रदायगी के विकेंद्रीकरण की दिशा में एक कदम हैं। इस उद्देश्य के लिए संस्थान पूर्वोत्तर राज्यों के एस.सी.ई.आर.टी. और सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के साथ नेटवर्क करता है। संस्थान पूर्वोत्तर क्षेत्र की जातीय/सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने के लिए सभी प्रयास करता है।

V. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय

अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूरु स्थित प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय (डिमॉन्सट्रेशन मल्टीपरपज़ स्कूल) क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों का एक अभिन्न अंग हैं जो विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में नवाचारों का प्रयास करने के लिए प्रयोगशालाओं के रूप में कार्य करते हैं। प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड (सी.बी.एस.ई.), नई दिल्ली के साथ संबद्ध हैं तथा कक्षा 1–12 तक हिंदी और अंग्रेज़ी माध्यम से शिक्षा प्रदान करते हैं। इन विद्यालयों में संस्थान के अध्यापक-प्रशिक्षकों को व्यावहारिक प्रशिक्षण भी दिया जाता है।

1. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, अजमेर

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय (डी.एम.एस.) की स्थापना 1964 में क्षेत्रीय शिक्षा कॉलेज (अब क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान), अजमेर के नियंत्रणाधीन गतिनिर्धारण संस्थान के रूप में देश में स्कूली शिक्षा के सुधार के लिए नवाचारी विचारों और प्रयोगों को आजमाने के लिए की गई थी। यह सी.बी.एस.ई. से संबद्ध एक सह-शिक्षा विद्यालय है और यहाँ पूर्व-प्राथमिक से लेकर बारहवीं तक के 700 से अधिक विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान की जाती है। उच्चतर माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों को मानविकी, विज्ञान, वाणिज्य और व्यावसायिक विषय उपलब्ध हैं। संस्थान एक

समर्पित पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं, एक कंप्यूटर कक्ष और मल्टीमीडिया सी.डी/डी.वी.डी. संसाधनों के व्यापक संकलन जैसी विशिष्ट सुविधाओं से सुसज्जित है।

2. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भोपाल 1965 में अस्तित्व में आया, जो सी.बी.एस.ई के साथ संबद्ध है। स्कूल में समाज के सभी वर्गों के बच्चों को प्रवेश की सुविधा देने के लिए स्थानीय रूप से यादृच्छिक कंप्यूटर ड्रॉ के जरिए बच्चों को स्कूल में प्रवेश दिया जाता है। यह स्कूली शिक्षा में सक्रिय अनुसंधान और नवाचारी प्रयोगों के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है। यहाँ विद्यार्थियों को अवलोकन करके सीखने और इंटर्नशिप कार्यक्रम के जरिए अध्यापन में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। यह स्कूल केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ संबद्ध है। स्कूल में पृथक प्राथमिक स्कंध है। स्कूल में सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशालाएँ और कंप्यूटर केंद्र हैं।

3. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, भुवनेश्वर

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, आर.आई.ई. भुवनेश्वर स्कूल शिक्षा के प्रमुख क्षेत्रों से संबंधित अनुसंधान और विकास में भाग लेकर भारत के पूर्वी क्षेत्र में एक गति तय करने वाले स्कूल के रूप में कार्य करता है और ज्यादातर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रमों के केंद्र के रूप में कार्य करता है। इस विद्यालय में समाज के सभी वर्गों के छात्र-छात्राएँ आते हैं। यहाँ, पूर्व-प्राथमिक, कक्षा 1 और कक्षा 6 (अतिरिक्त खंड) में प्रवेश यादृच्छिक चयन द्वारा किया जाता है। इन 25 विद्यार्थियों को 3–4 वर्ष में और 4–5 वर्ष के आयु वर्ग में, 45 विद्यार्थियों को कक्षा 1 में और 35 विद्यार्थियों को कक्षा 6 में प्रवेश दिया गया है। स्कूल के विद्यार्थियों को कक्षा 11 (विज्ञान, वाणिज्य और कला वर्ग) में प्रवेश के लिए प्राथमिकता दी जाती है। इस स्कूल में 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों को योग्यता के आधार पर प्रवेश दिया जाता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और प्रशिक्षण के माध्यम से हमारे विद्यार्थियों ने आई.आई.टी., एन.आई.एस.ई.आर. और आई.आई.एस.ई.आर. जैसे राष्ट्रीय स्तर के संस्थानों और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी योग्यता साबित की है। स्कूल के उत्पादों से चिकित्सा, इंजीनियरिंग, कानून, शिक्षा, खेल, मॉडलिंग, फिल्म, नौकरशाही और आध्यात्मिक संस्थानों के क्षेत्र में देश और दुनियाभर में बहुत प्रशंसा अर्जित की गई है।

4. प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, मैसूरु

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय, मैसूरु संस्थान की नई कार्यनीतियों के साथ प्रयोग करने और उन्हें आजमाने तथा अनुदेशात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों के लिए एक प्रयोगशाला के रूप में कार्य करता है। स्कूल द्वारा बी.एस.सी. (शिक्षा) के विद्यार्थियों को अवलोकन करने, सीखने और अध्यापन में भाग लेने के अवसर प्रदान किए जाते हैं तथा यह संस्थान के कर्मचारियों के लिए सहयोगात्मक प्रशिक्षण और अनुसंधान प्रयास के केंद्र के रूप में कार्य करता है। यह सी.बी.एस.ई. से संबद्ध है और बच्चे के समग्र व्यक्तित्व विकास पर बल देने सहित अध्यापन और मूल्यांकन के नवाचारी मार्गों के लिए जाना जाता है। दक्षता आधारित अध्यापन (सी.बी.टी) सहित एक कार्य अनुसंधान उपागम को 1995-96 से स्कूल में कार्यान्वित किया गया है। विद्यालय में पृथक प्राथमिक स्कंध है। विद्यालय में सुसज्जित विज्ञान प्रयोगशालाएँ और कंप्यूटर केंद्र हैं।

परिषद् की प्रमुख उपलब्धियाँ 2022–23

निष्ठा ऑनलाइन

निष्ठा स्कूल के विभिन्न चरणों के अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए एक राष्ट्रव्यापी पहल है। पाठ्यक्रम को फिर से चलाने के लिए एन.ई.पी. 2020 के आलोक में निष्ठा प्राथमिक के 18 पाठ्यक्रमों की समीक्षा की गई। निष्ठा

माध्यमिक के बारह सामान्य पाठ्यक्रम और निष्ठा एफ.एल.एन. के बारह पाठ्यक्रम 21 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में फिर से चलाए गए। निष्ठा माध्यमिक के लिए शिक्षणशास्त्र पाठ्यक्रमों का विकास प्रक्रियाधीन है। निष्ठा ई.सी.सी.ई. 29 जुलाई, 2022 को शुभारंभ किया गया था और बैचों में छह पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए गए हैं। 30 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में प्रशिक्षण शुरू कर दिया गया है और लगभग 60,000 प्रतिभागियों ने नामांकन कराया है और लगभग 14,000 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है। दूसरे चरण की प्रक्रिया जारी है। बेशक, निष्ठा एजुकेटर्स और निष्ठा व्यावसायिक के विकासकों का अभिविन्यास पूरा हो चुका है और पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में हैं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के समन्वयकों को कार्यान्वयन कार्यनीतियों और डेटा प्रबंधन में प्रशिक्षित किया गया है।

निष्ठा अधिगम प्रशिक्षण कार्यक्रम एक योग्यता आधारित कार्यक्रम है जो अध्यापकों को प्रभावी तरीके से पढ़ाने के लिए आवश्यक कौशल और ज्ञान विकसित करने पर केंद्रित है। यह एक मिश्रित अधिगम कार्यक्रम है जो ऑनलाइन और आमने-सामने के प्रशिक्षण को जोड़ता है। कार्यक्रम मापन योग्य है और इसे सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में क्रियान्वित किया जा सकता है। यह एक सतत व्यावसायिक विकास कार्यक्रम भी है जो अध्यापकों को उनके करियर के दौरान सीखने और बढ़ने के अवसर प्रदान करता है। निष्ठा अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण पहल है जिसमें भारत में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार करने की क्षमता है। यह कार्यक्रम पहले ही लाखों अध्यापकों और स्कूल प्रमुखों तक पहुँच चुका है और आने वाले वर्षों में इसके और भी अधिक पहुँचने की उम्मीद है।

परख

राष्ट्रीय शिक्षा अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने भारत के आरंभिक राष्ट्रीय आकलन विनियामक को प्रारंभ किया है, जिसे परख (समग्र विकास के लिए प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और ज्ञान का विश्लेषण) के रूप में जाना जाता है। यह स्वतंत्र इकाई रा.शै.अ.प्र.प. के अंदर एक घटक केंद्र के रूप में कार्य करती है और इसे कई प्रमुख उद्देश्यों को पूरा करने का काम सौंपा गया है। इनमें मानदंड, मानक, दिशानिर्देश स्थापित करना और विद्यार्थी आकलन से संबंधित गतिविधियों की देखरेख करना, साथ ही एन.ई.पी. 2020 के पैरा 4.41 द्वारा अनिवार्य अतिरिक्त जिम्मेदारियों का प्रबंधन करना शामिल है।

परख के दायरे में अनेक महत्वपूर्ण गतिविधियाँ शुरू की गई हैं, जैसे राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) 2021 और मूलभूत अधिगम अध्ययन (एफ.एल.एस.) रिपोर्ट 2022 सहित बड़े पैमाने पर उपलब्धि सर्वेक्षण आयोजित करना और पी.एम. श्री स्कूलों में उपलब्धि सर्वेक्षणों का संचालन करना, एन.ए.एस. 2024 और एफ.एल.एस. 2024 के लिए तैयारी, स्कूल बोर्डों की समकक्षता के लिए मानक प्रोटोकॉल/दिशानिर्देश बनाना और स्कूल आधारित आकलन में हितधारकों की क्षमताओं को बढ़ाना, विशेष रूप से विभिन्न ग्रेड स्तरों पर योग्यता आधारित आकलन और समग्र प्रगति कार्ड (एच.पी.सी.) पर ध्यान केंद्रित करना।

आगामी राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) 2024 के लिए, एक आकलन रूपरेखा, एक नमूना रूपरेखा और एक विश्लेषण रूपरेखा को विकसित किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, 'बोर्डों की समतुल्यता' की खोज के संदर्भ में प्रश्न पत्रों के विश्लेषण के लिए एक टेम्पलेट तैयार किया गया है और शैक्षिक बोर्डों के कार्यों की व्यापक समझ हासिल करने के लिए एक प्रश्नावली तैयार की गई है। इन उपकरणों के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा से स्कूल बोर्डों के बीच समानता स्थापित करने हेतु मानक प्रोटोकॉल और दिशानिर्देशों के निर्माण की जानकारी मिलेगी।

स्कूल आधारित आकलन में हितधारक क्षमताओं को बढ़ाने की खोज में, बुनियादी स्तर पर समग्र प्रगति कार्ड (एच.पी.सी.) के विकास के लिए विशिष्ट प्रयास किए गए हैं। 31 मार्च तक आयोजित गतिविधियों में एच.पी.सी.

विकास के लिए विभिन्न हितधारकों को शामिल करने वाली परामर्शी बैठकें, समग्र प्रगति कार्ड तैयार करने के लिए समर्पित कार्यशालाएँ, एच.पी.सी. के संदर्भ में योग्यता आधारित आकलन के लिए क्षमता निर्माण पहल, विभिन्न राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में समग्र प्रगति कार्ड का संचालन, पोस्ट-पायलटिंग रूपरेखा एकत्र करना और एच.पी.सी. कार्यान्वयन के बुनियादी स्तर के दौरान योग्यता आधारित आकलन के लिए क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना शामिल है।

मनोदर्पण प्रकोष्ठ

स्कूली विद्यार्थियों में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए कार्य करने हेतु निर्मित मनोदर्पण पहल के तहत, शिक्षा मंत्रालय की वेबसाइट पर एक वेबपेज (https://manodarpan.education.gov.in/) बनाया गया है जिसमें विद्यार्थियों, अभिभावकों और अध्यापकों के लिए परामर्श और दिशानिर्देश, परामर्शदाताओं की निर्देशिका (स्कूल और कॉलेज/विश्वविद्यालय स्तर दोनों के लगभग 350 परामर्शदाता) के साथ-साथ अन्य सहायक सामग्री जैसे प्रेरक पोस्टर, मनोदर्पण पहल के तहत 'मनतरंग', की गई गतिविधियों का एक डिजिटल संग्रह शामिल है। प्रकोष्ठ द्वारा स्कूली विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण सर्वेक्षण का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में कक्षा 6वीं से 12वीं तक के स्कूली विद्यार्थियों की मानसिक स्वास्थ्य धारणाओं को समझना था। विद्यार्थियों, अध्यापकों और अभिभावकों के लिए टेली-काउंसलिंग सेवाएँ और मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण से संबंधित चिंताओं पर सलाहकारों के साथ लाइव अंत:क्रियात्मक सत्र 'सहयोग' आयोजित किए जा रहे हैं। विद्यार्थियों, अभिभावकों और अध्यापकों के विभिन्न मानसिक स्वास्थ्य और भावनात्मक कल्याण संबंधी चिंताओं को संबोधित करने के लिए वेबिनार 'परिचर्चा' भी आयोजित किए जाते हैं और ये सत्र पी.एम. ई-विद्या चैनलों पर प्रसारित होते हैं और रा.शै.अ.प्र.प. आधिकारिक के यूट्यूब चैनल पर भी उपलब्ध हैं।

प्रकोष्ठ ने राज्य और जिला स्तर पर हितधारकों को मानसिक स्वास्थ्य के निष्कर्षों के प्रति संवेदनशील बनाने और स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप पर मार्गदर्शन प्रदान करने के लिए कई अभिविन्यास कार्यक्रमों पर भी ध्यान केंद्रित किया। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में उल्लिखित पाठ्यक्रम और आकलन सुधारों पर चर्चा के लिए विभिन्न स्कूल शिक्षा बोर्डों के प्रतिनिधियों के साथ परामर्श बैठक भी आयोजित की गई। मनोदर्पण प्रकोष्ठ के तहत ये पहल स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व पर जोर देती है, हितधारकों के लिए मार्गदर्शन प्रदान करती है और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के लक्ष्यों के साथ संरेखित करते हुए शिक्षा प्रणाली में मानसिक स्वास्थ्य शिक्षा के समेकन का समर्थन करती है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा (एन.सी.एफ.)

परिषद्, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बाद स्कूली शिक्षा के बुनियादी स्तर, अध्यापक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा के लिए नई राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.) विकसित करने पर काम कर रही है। जमीनी स्तर से रूपरेखा प्राप्त करने हेतु, रा.शै.अ.प्र.प. ने विश्वविद्यालयों, संकाय सदस्यों, विद्यार्थियों, अभिभावकों और नागरिक समाज समूहों के सदस्यों की भागीदारी के साथ देशभर में 12 परामर्श आयोजित किए। इन परामर्शों में लगभग 8,000 लोगों ने भाग लिया और प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.), स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और प्रौढ़ शिक्षा पर प्रतिक्रिया दी। रा.शै.अ.प्र.प. ने आकलन और परीक्षाओं पर इनपुट प्राप्त करने के लिए स्कूल शिक्षा बोर्डों से भी परामर्श किया।

बुनियादी स्तर के लिए एन.सी.एफ. 20 अक्तूबर, 2022 को जारी किया गया। बुनियादी स्तर के विभिन्न आयामों पर नोट्स तैयार किए गए और एन.सी.एफ.-एफ.एस. में शामिल करने के लिए एकीकरण समूह को प्रस्तुत किए गए। बुनियादी स्तर हेतु पाठ्यक्रम विकसित किया गया है, जिसे एन.सी.एफ.-एफ.एस. में निर्धारित पाठ्यचर्या लक्ष्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के अनुरूप बनाया गया है। बुनियादी स्तर का पाठ्यक्रम एन.सी.एफ.-

एफ.एस. 2022 की सिफारिशों पर आधारित है। इसे प्रत्येक डोमेन के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या संबंधी लक्ष्यों और दक्षताओं के अनुसार मैप किया जाता है। कक्षा 1 और 2 के लिए हिंदी, अंग्रेजी, गणित और उर्दू की पाठ्यपुस्तकें भी पाठ्यक्रम के आधार पर विकसित की गई हैं। इन पाठ्यपुस्तकों में भाषा विकास के लिए एक संतुलित साक्षरता दृष्टिकोण का उपयोग किया गया है और ये एन.सी.एफ.-एफ.एस. में प्रस्तावित भाषा और संख्यात्मक विकास के लिए चार-ब्लॉक दृष्टिकोण के अनुसार हैं। इनमें पाठ्यक्रम वितरण के लिए खेल आधारित, खोज आधारित और कहानी आधारित दृष्टिकोण का भी उपयोग किया गया है।

एन.ई.पी. 2020 में पहचाने गए विभिन्न विषयों पर स्थिति पत्र और कार्य नोट्स विकसित किए गए हैं। स्कूली शिक्षा के लिए एन.सी.एफ. माध्यमिक स्तर का प्रारूप सार्वजनिक टिप्पणियों के लिए अपलोड कर दिया गया है। एन.सी.एफ.-एस.ई. जारी होने के बाद पाठ्यचर्या, पाठ्यपुस्तकें और अन्य पाठ्यक्रम सामग्री तैयार की जाएगी।

शैक्षिक प्रौद्योगिकी

शिक्षा में प्रौद्योगिकी को समेकित करने के महत्व को पहचानते हुए विभिन्न प्राथमिक, उच्च प्राथमिक, माध्यमिक और उच्च माध्यमिक स्तरों पर विद्यार्थियों के लिए पाठ्यक्रम आधारित वीडियो कार्यक्रमों का निर्माण किया गया है। ये कार्यक्रम डी.डी.-फ्री डिश, टाटा स्काई, वीडियोकॉन, सन डायरेक्ट, डिश-टी.वी., यूट्यूब (रा.शै.अ.प्र.प. आधिकारिक चैनल) और जियो टी.वी. मोबाइल ऐप जैसे प्लेटफार्मों पर प्रतिदिन प्रसारित किए जाते हैं। वे सी.आई.ई.टी.-रा.शै.अ.प्र.प. के स्टूडियो में विशेषज्ञों के साथ फीडबैक और लाइव इंटरैक्शन के लिए इंटरएक्टिव वॉयस रिस्पांस सिस्टम (आई.वी.आर.एस.) के माध्यम से दर्शकों से भी जुड़ते हैं। इसके अतिरिक्त, 1946 ऑडियो कार्यक्रम उपलब्ध हैं, जिनमें हिंदी, अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू, गणित, विज्ञान, पर्यावरण अध्ययन और सामाजिक विज्ञान जैसे विभिन्न विषयों और भाषाओं में रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों पर आधारित ऑडियो पुस्तकें शामिल हैं। इस संग्रह में 1382 क्विज प्रश्न, 19 डेजी पुस्तकें और आई.एस.एल. डिक्शनरी के 3358 शब्द शामिल हैं। रा.शै.अ.प्र.प. ने आधिकारिक वेबसाइट पर अपनी नवीनतम पाठ्यपुस्तकों को अपडेट किया है और इन सभी पाठ्यपुस्तकों के लिए क्यू.आर. कोड परीक्षण आयोजित किया है। अद्यतन पाठ्यपुस्तकें फ्लिपबुक प्रारूप में ई-पाठशाला पोर्टल पर भी उपलब्ध हैं।

भारत के सभी कोनों से प्रविष्टियाँ स्वीकार करने के लिए आई.सी.टी. पुरस्कारों हेतु एक पोर्टल का शुभारंभ किया गया है। 2022–23 सत्र की पाठ्यपुस्तकों के ई-प्रकाशन संस्करण तैयार किए गए हैं और ई-पाठशाला पर अपलोड किए गए हैं। कक्षा 9–12 के लिए प्रयोगशाला मैनुअल दीक्षा (विद्यादान) पर उपलब्ध कराए गए हैं। उन्होंने एन.सी.एफ. सर्वेक्षण मोबाइल ऐप विकसित किया है, जिसका परीक्षण ब्लू स्टैक्स प्लेयर का उपयोग करते हुए किया गया है। पहुँच बढ़ाने के लिए, ई-पाठशाला और दीक्षा के लिए प्रयोक्ता सर्वेक्षण फॉर्म और पोस्टर डिजाइन किए गए हैं। नवीनतम ए.पी.के. फ़ाइलें और संस्करण (एंड्रॉइड/आई.ओ.एस. के लिए) ई-पाठशाला कंसोल पर प्रकाशित किए गए हैं। इसके अलावा, प्रशस्त ऐप, स्कूलों के लिए विकलांगता स्क्रीनिंग जाँच-सूची का शुभारंभ किया गया है। ई-पाठशाला मोबाइल ऐप अब जियो बुक पर उपलब्ध है और दीक्षा पर 1,335 आई.एस.एल. वीडियो का एक बड़ा संग्रह अपलोड किया गया है।

शिक्षक पर्व के दौरान 6 सितंबर, 2022 को ‘प्रशस्त’ पहल की शुरुआत की गई थी। यह वैज्ञानिक स्क्रीनिंग चेकलिस्ट विद्यार्थियों में संभावित नि:शक्ततों की तुरंत पहचान करने के लिए सभी स्कूली शिक्षा स्तरों पर नियमित अध्यापकों के लिए डिजाइन की गई है। स्कूल-वार नि:शक्तता स्क्रीनिंग से एकत्र किए गए डेटा को आकलन और प्रमाणन कार्यक्रमों में आगे उपयोग के लिए अधिकारियों के साथ साझा किया गया है। व्यापक उपयोग और कुशल डेटा साझाकरण की सुविधा के लिए, प्रशस्त ऐप एंड्रॉइड ऐप के रूप में डिजिटल रूप में उपलब्ध है।

एक और पहल, पी.एम. ई-विद्या, शिक्षा मंत्रालय द्वारा कोविड-19 महामारी के दौरान शुरू की गई थी। इस पहल में रेडियो, टेलीविजन, दीक्षा प्लेटफ़ॉर्म और एक मोबाइल ऐप जैसे विभिन्न माध्यमों से शैक्षिक सामग्री का प्रसार करना शामिल है। 'वन क्लास वन चैनल' संकल्पना के तहत डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों पर बड़ी संख्या में वीडियो का निर्माण और प्रसारण किया गया। दीक्षा मंच पर हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों में पी.एम. ई-विद्या का कवरेज व्यापक था, जबकि उर्दू में वीडियो का विकास जारी है। इस पहल में विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों के साथ लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र भी शामिल हैं।

दीक्षा, स्कूली शिक्षा के लिए एक राष्ट्रीय मंच, पूरे भारत में विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए सुलभ है और 36 भारतीय भाषाओं में सामग्री अपलोड करने का समर्थन करता है। इस पर पाठ्यपुस्तकों, व्यावसायिक शिक्षा सामग्री, ऑडियोबुक अध्याय और कई भाषाओं में विभिन्न ई-सामग्री सहित संसाधनों की एक विस्तृत शृंखला को होस्ट किया जाता है। दीक्षा ने अपने शैक्षिक पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ाने के लिए कई प्रशिक्षण सत्र, कार्यशालाएँ और सहयोग की सुविधा प्रदान की है।

व्यावसायिक शिक्षा

व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में, 152 विशिष्ट कार्यभूमिकाओं के लिए पाठ्यक्रम शुरू किया गया है। इसके अलावा, राष्ट्रीय कौशल योग्यता रूपरेखा (एन.एस.क्यू.एफ.) के रूपरेखा के अंदर 59 कार्यभूमिकाओं के लिए विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकें तैयार की गई हैं। इनमें से, कुल 57 पाठ्यपुस्तकें सफलतापूर्वक प्रकाशित की गई हैं, जो 19 क्षेत्रों में विस्तारित हैं— 1. कृषि, 2. परिधान, मेकअप और होम फर्निशिंग, 3. ऑटोमोटिव, 4. सौंदर्य और कल्याण, 5. बैंकिंग, वित्तीय सेवाएँ और बीमा, 6. निर्माण, 7. इलेक्ट्रॉनिक्स, 8. खाद्य प्रसंस्करण, 9. स्वास्थ्य सेवा, 10. आई.टी.-आई.टी.ई.एस., 11. रिटेल, 12. शारीरिक शिक्षा और खेल, 13. प्लम्बिंग, 14. विद्युत, 15. निजी सुरक्षा, 16. दूरसंचार, 17. पर्यटन और आतिथ्य, 18. परिवहन, रसद और भंडारण/वेयरहाउसिंग, 19. मीडिया और मनोरंजन।

नौवीं से बारहवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए डिजाइन की गई विभिन्न कार्यभूमिकाओं को कवर करने वाली 150 वीडियो फिल्मों सहित डिजिटल संसाधनों की एक शृंखला भी विकसित की गई है। इसके अतिरिक्त, कक्षा 6–8 तक के विद्यार्थियों को लक्षित करते हुए कृषि, परिधान, बेकरी, प्लम्बिंग, सौंदर्य और कल्याण, रिटेल और स्वास्थ्य क्षेत्रों जैसे विषयों के लिए 41 पूर्व-व्यावसायिक वीडियो फिल्में बनाई गई हैं। इसके अलावा, विभिन्न क्षेत्रों में कार्यभूमिकाओं के विविध पहलुओं को संबोधित करने वाली एनिमेटेड सामग्री 9वीं से 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए डिजाइन की गई है।

संस्थान ने स्कूलों के अंदर व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को मजबूत करने के लिए, विभिन्न प्रकार के अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए हैं। इनमें व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के निहितार्थ, व्यावसायिक शिक्षा में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) का समेकन, प्रभावी व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र, साथ ही ऑटोमोबाइल प्रौद्योगिकी, रोज़गार कौशल, पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन और विशिष्ट कार्यभूमिकाओं जैसे विशिष्ट विषय पर केंद्रित सत्र शामिल हैं।

समग्र शिक्षा के तत्वावधान में विद्यालयों में व्यावसायिक शिक्षा के क्रियान्वयन को सुगम बनाने हेतु क्षेत्रीय परामर्श बैठक एवं कार्यशाला का आयोजन किया गया है। इस पहल में दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वोत्तर क्षेत्र शामिल हैं। इसके अतिरिक्त, संस्थान व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों में एक वर्षीय डिप्लोमा पाठ्यक्रम संचालित करता है। यह अपने प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूलों में मॉडल व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रम भी संचालित करता है।

इसके अलावा उन्होंने कर्नाटक, मध्य प्रदेश, मेघालय, ओडिशा, राजस्थान और त्रिपुरा में राज्य शिक्षा विभागों द्वारा चुने गए छह स्कूलों में ऐसे कार्यक्रम स्थापित किए हैं। ये प्रयास स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के नवाचारी मॉडल के दायरे में आते हैं।

अनुसंधान अध्ययन

परिषद् ने स्कूली शिक्षा और शिक्षक प्रशिक्षण के विभिन्न पहलुओं को शामिल करते हुए शैक्षिक अनुसंधान अध्ययनों की एक विस्तृत शृंखला आयोजित की। इन अध्ययनों में वंचित बच्चों के लिए प्राथमिक विद्यालयों में सामाजिक वातावरण, हिंदी भाषा शिक्षा में नवीन अभ्यास, नि:शक्त बच्चों के लिए आवास, जेंडर समानता पहलें, गणित अधिगम पर हाइब्रिड शिक्षा मॉडल का प्रभाव, शैक्षणिक दृष्टिकोण का दस्तावेज़ीकरण, विज्ञान शिक्षा में पारंपरिक भारतीय ज्ञान का समेकन, संवर्धित वास्तविकता आधारित सामग्री और साइबर सुरक्षा जागरूकता जैसे शैक्षिक हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता आदि सहित विषयों की एक विस्तृत शृंखला शामिल है। इसके अतिरिक्त, अनुसंधान के जरिए महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के तरीकों, व्यावसायिक शिक्षा कार्यक्रमों के कार्यान्वयन, कोविड-19 के दौरान सीखने के अंतराल, विभिन्न क्षेत्रों और विषयों में शैक्षिक संसाधनों और अभ्यासों के मूल्यांकन आदि का पता लगाया। इस तरह के व्यापक अनुसंधान के प्रति परिषद् की प्रतिबद्धता देशभर में शिक्षा की उन्नति और विद्यार्थियों, अध्यापकों और शैक्षिक प्रणालियों की बेहतरी के प्रति इसके समर्पण को रेखांकित करती है।

विकास गतिविधियाँ

परिषद् द्वारा किए गए विकास कार्यों में विभिन्न शैक्षिक चरणों में पाठ्यक्रम, शिक्षणशास्त्र और संसाधनों को बढ़ाने के उद्देश्य से शैक्षिक पहलों की एक विस्तृत शृंखला शामिल है। इनमें बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुरूप पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों का निर्माण, पर्यावरण अध्ययन में योग्यता आधारित शैक्षणिक रूपरेखा का विकास और स्कूल और अध्यापक शिक्षा के लिए ई-सामग्री का उत्पादन शामिल है। परिषद् सांस्कृतिक और भाषाई विविधता पर भी ध्यान केंद्रित करती है। कई भाषाओं में दिशानिर्देश और अनुकरणीय सामग्री, भारतीय भाषाओं में शिक्षणशास्त्र के लिए सामग्री और चतुर्भाषी सचित्र शब्दकोश प्रस्तुत करती है। विद्यार्थी केंद्रित शिक्षणशास्त्र, अनुभवात्मक अधिगम और शिक्षा में 21वीं सदी के कौशल के समेकन को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं। इसके अतिरिक्त, कला शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, मनोविज्ञान, गणित और विज्ञान आदि विषयों के लिए संसाधनों के विकास में भी पहल की गई है। ये व्यापक प्रयास नवीन पाठ्यक्रम, शैक्षणिक दृष्टिकोण और संसाधनों के विकास के माध्यम से भारत में शिक्षा में सुधार के लिए परिषद् की प्रतिबद्धता को दर्शाते हैं।

क्षमता निर्माण कार्यक्रम

परिषद् विद्यालय और अध्यापक शिक्षा के सभी स्तरों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए मास्टर प्रशिक्षकों या प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए क्षमता निर्माण/अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है। वर्ष के दौरान, परिषद् द्वारा ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, पाठ्यचर्या अनुसंधान, व्यावसायिक शिक्षण और रोज़गार कौशल, अनुसंधान विधि, मार्गदर्शन और परामर्श, चयन, अनुकूलन और अल्पसंख्यक भाषा में संसाधन सामग्री के विकास, लघु-जनजातीय भाषा शिक्षण, बहुभाषी दृष्टिकोण, अल्पसंख्यक भाषा में संसाधन सामग्री का विकास, मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता, ई-सामग्री के लिए पटकथा लेखन, शिक्षण-अधिगम सामग्री का प्रभावी उपयोग, जीवन-कौशल शिक्षा, अनुकरणीय प्रश्न विकसित करना, आई.सी.टी. आदि के साथ डेटा विश्लेषण के क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

विस्तार गतिविधियाँ

परिषद् के विस्तार कार्यक्रमों में शिक्षा को बढ़ावा देने और विभिन्न क्षेत्रों में नवाचार को बढ़ावा देने के उद्देश्य से व्यापक पहलें शामिल हैं। इन पहलों में बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र को लोकप्रिय बनाने के लिए क्षेत्रीय सम्मेलन, बच्चों के लिए विज्ञान, गणित और पर्यावरण में राज्य-स्तरीय प्रदर्शनियाँ, साथ ही राष्ट्रीय प्रदर्शनियाँ शामिल हैं। परिषद् अनुसंधान और शिक्षा का समर्थन करने के लिए संसाधन केंद्र, पुरस्कार और अध्येतावृत्ति भी संचालित करती है। परिषद् द्वारा शैक्षणिक संस्थानों के लिए बैठकों और गतिविधियों का आयोजन किया जाता है, कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं, और अध्यापक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम विकास और जनसंख्या शिक्षा जैसे क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इसके अतिरिक्त, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा, भाषा और संस्कृति और डिजिटल शिक्षा से संबंधित कार्यक्रम भी हैं, जो शैक्षिक वृद्धि और विकास के लिए एक व्यापक दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं। परिषद् विस्तार गतिविधियों के हिस्से के रूप में शैक्षिक अनुभव को बढ़ाने के लिए वेबसाइटों, मोबाइल ऐप और विभिन्न अन्य डिजिटल गतिविधियों के विकास और रखरखाव में शामिल है। परिषद् सेवा-पूर्व अध्यापकों और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देने के लिए सेमिनार, सम्मेलन और इंटर्नशिप भी आयोजित करती है। नवाचारी शैक्षणिक दृष्टिकोण को बढ़ावा देने से लेकर प्रतिभा को बढ़ावा देने और डिजिटल प्रौद्योगिकियों को अपनाने तक, परिषद् के बहुमुखी प्रयास राष्ट्रीय नीतियों और समकालीन शैक्षिक आवश्यकताओं के अनुरूप देश के शैक्षिक परिदृश्य में महत्वपूर्ण योगदान देते हैं।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग और अंतरराष्ट्रीय संबंध

स्कूली शिक्षा के क्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय सहयोग के महत्व को ध्यान में रखते हुए, परिषद् विदेशी प्रतिनिधिमंडल की मेजबानी करती है तथा उनकी रुचि और जरूरतों के लिए महत्वपूर्ण क्षेत्रों, जैसे– शैक्षणिक नीतियाँ, पाठ्यचर्या संरचना, अध्यापकों के सेवा-पूर्व और सेवाकालीन शिक्षा कार्यक्रम, शारीरिक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, आई.सी.टी. और ई.टी. से संबंधित विभिन्न विभागों और घटक इकाइयों के साथ उनकी बातचीत की सुविधा प्रदान करती है तथा विदेशी संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापनों पर हस्ताक्षर किए जाने के साथ कार्यशालाओं, संगोष्ठियों और सम्मेलनों का आयोजन करती है।

विद्यालयी शिक्षा और अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु पारस्परिक लाभ के लिए विभिन्न देशों के साथ संरचित और सार्थक संबंधों को बढ़ावा देने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प. ने कोरियाई अध्ययन अकादमी (ए.के.एस.), कोरिया गणराज्य; मॉरीशस इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन (एम.आई.ई.), मॉरीशस; कर्टिन यूनिवर्सिटी (सी.यू.), ऑस्ट्रेलिया; नेशनल ताइवान नॉर्मल यूनिवर्सिटी (एन.टी.एन.यू.), ताइवान; नेशनल एजेंसी ऑफ एजुकेशन (ई.डी.यू.एफ.आई.), फिनलैंड; और फ्लोरिडा स्टेट यूनिवर्सिटी (एफ.एस.यू.) और सेंट फ्रांसिस यूनिवर्सिटी, यू.एस.ए. जैसे संस्थानों के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं। समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर करने की प्रक्रिया रा.शै.अ.प्र.प. और श्रीलंका, नेपाल और भूटान के बीच शुरू की गई है।

प्रकाशन

रा.शै.अ.प्र.प. ने विद्यालय पाठ्यपुस्तकों, कार्यपुस्तिकाओं, अनुपूरक पाठमालाओं, शिक्षक संदर्शिकाओं प्रयोगशाला मैनुअल, मूल्यांकन संबंधी स्रोत पुस्तकों, गणित में प्रश्न प्रदर्शिकाओं अनुसंधान रिपोर्टों, मोनोग्राफ़ और शैक्षिक पत्रिकाओं का प्रकाशन जारी रखा। प्रकाशन प्रभाग में गैर-पाठ्य सामग्री के अलावा, प्रत्येक वर्ष 1–12 तक की विभिन्न कक्षाओं के लिए पाठ्यपस्तुकें मुद्रित होती हैं। रा.शै.अ.प्र.प. के अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में विभिन्न प्रकाशनों की पाँच करोड़ से अधिक प्रतियाँ, जिनमें पाठ्यपुस्तकें, पूरक पठन सामग्री, अध्यापकों की हस्त पुस्तिकाएँ, स्रोत

पुस्तकें, शोध रिपोर्ट और छह शैक्षिक पत्रिकाएँ शामिल हैं, हर वर्ष निकाली जाती हैं। राज्यों द्वारा अपने राष्ट्रीयकृत पाठ्यपुस्तक कार्यक्रम के तहत रा.शै.अ.प्र.प. के पाठ्यक्रमों को स्वेच्छापूर्वक अपनाया गया है। इनका प्रयोग सी.बी.एस.ई., के.वी.एस., एन.वी.एस., तिब्बती विद्यालयों से संबद्ध स्कूलों और सभी राज्यों के अनेक पब्लिक स्कूलों में भी बड़े पैमाने पर किया जाता है। कई राज्यों ने रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों के लिए कॉपीराइट प्राप्त किए हैं। परिषद् ने क्यू.आर.कोड का उपयोग करते हुए वेबसाइट पर पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध कराई हैं।

वर्ष के दौरान परिषद् ने *विद्या प्रवेश—* तीन महीने का खेल-आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल; बारहवीं कक्षा के लिए *जैव प्रौद्योगिकी* की पाठ्यपुस्तक; कक्षा 6–8 के लिए विज्ञान में *स्पर्श किट मैनुअल (4 खंड)*; *खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र* पर हस्तपुस्तिका; *विद्यालयी बस्ता नीति 2020*; *हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन* कक्षा 11; कक्षा 1–5 और कक्षा 6–8 को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए *कला समेकित शिक्षण पुस्तिका*; *स्कूली विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण*; अपेरल और होम फर्निशिंग क्षेत्र, आई.टी. और आई.टी.ई.एस. क्षेत्र और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र आदि में व्यावसायिक कार्यभूमिकाओं के लिए विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकें आदि प्रकाशित किए। वर्ष के दौरान परिषद् द्वारा जर्नल और पत्रिकाएँ, जैसे— *प्राथमिक शिक्षक*, *प्राइमरी टीचर*, *स्कूल साइंस*, *इंडियन एजूकेशनल रिव्यू*, *भारतीय आधुनिक शिक्षा*, *जर्नल ऑफ इंडियन एजूकेशन* (जे.आई.ई.) *वायस आफ टीचर्स एजूकेटर्स* (वी.टी.टी.ई.), *व्यावसायिक शिक्षा* पर त्रैमासिक बुलेटिन, *इंडियन जर्नल ऑन वोकेशनल एजुकेशन*, *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी* और *वार्षिक रिपोर्ट 2021–22* आदि प्रकाशित किए।

2. प्रमुख प्रकाशन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के प्रकाशनों में पाठ्यचर्या सामग्री प्रकाशित की जाती है जिसमें स्कूली पाठ्यपुस्तकें, कार्यपुस्तिकाएँ, अनुपूरक पाठमालाएँ, अध्यापक संदर्शिकाएँ, प्रयोगशाला पुस्तिकाएँ, आकलन पर स्रोत पुस्तकें, गणित में अनुकरणीय समस्याएँ, अनुसंधान रिपोर्ट / मोनोग्राफ़ और शैक्षिक पत्रिकाएँ शामिल हैं। परिषद् ने क्यू.आर. कोड का उपयोग करने के माध्यम से सक्रिय पाठ्यपुस्तकों को प्रकाशित किया है। परिषद् द्वारा शैक्षिक पत्रिकाएँ और जर्नल्स भी प्रकाशित किए जाते हैं।

वर्ष के दौरान, परिषद् ने ये प्रकाशन तैयार किए, जिसमें *विद्या प्रवेश— तीन महीने का खेल-आधारित स्कूल की तैयारी का मॉड्यूल; बायो टेक्नोलॉजी,* कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक; *टेक्टाइल किट मैनुअल साइंस* (4 खंड) कक्षा 6–8 के लिए; *टॉय बेस्ड पेडागॉजी—ए हैंडबुक; विद्यालयी बस्ता नीति 2020; हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन*, कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक; *कला समेकित अध्यापन पुस्तिका,* कक्षा 1–5 और कक्षा 6–7 को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए; *स्कूली विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण*; आदि शामिल हैं। इसके अलावा अपेरल मेडअप और होम फर्निशिंग क्षेत्र; आई.टी. और आई.टी.ई.एस. क्षेत्र; और इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र आदि में व्यावसायिक कार्य की भूमिकाओं (जॉब रोल्स) के लिए भी विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की हैं।

परिषद् द्वारा वर्ष के दौरान, शैक्षिक जर्नल्स और पत्रिकाएँ, जैसे— *प्राथमिक शिक्षक, प्राइमरी टीचर, स्कूल साइंस—त्रैमासिक पत्रिका, भारतीय आधुनिक शिक्षा, जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, वॉयसेस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स नामक ऑनलाइन जर्नल, व्यावसायिक शिक्षा पर त्रैमासिक बुलेटिन इंडियन जर्नल ऑन वोकेशनल एजुकेशन, इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी* का ऑनलाइन प्रकाशन और *वार्षिक रिपोर्ट 2021–22* आदि भी प्रकाशित किए गए।

विद्या प्रवेश— कक्षा 1 के लिए तीन महीने का खेल-आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल

(आई.एस.बी.एन. 978-93-5580-101-2)

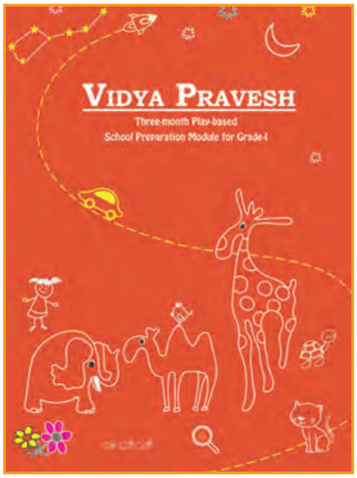

बच्चों को *विद्या प्रवेश— कक्षा 1 के लिए तीन महीने का खेल-आधारित स्कूल तैयारी मॉड्यूल* प्रदान करना, कक्षा 1 के लिए आवश्यक अपेक्षित दक्षताओं को विकसित करने के लिए आयु के उपयुक्त अनुभव प्रदान करके उनके समग्र विकास को बढ़ावा देने का एक प्रयास है। यह मॉड्यूल भारत सरकार के मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) पर एक राष्ट्रीय मिशन निपुण भारत का एक अभिन्न अंग है। यह तीन महीने (12 सप्ताह) का कार्यक्रम है जिसे कक्षा 1 में प्रवेश करने वाले सभी बच्चों के लिए एक अंतरिम उपाय के रूप में विकसित किया गया है। मॉड्यूल में कार्यक्रम को कक्षा 1 की शुरुआत में तीन महीने के लिए लागू करने और प्रति दिन चार घंटे तक संचालित करने के लिए डिजाइन किया गया है।

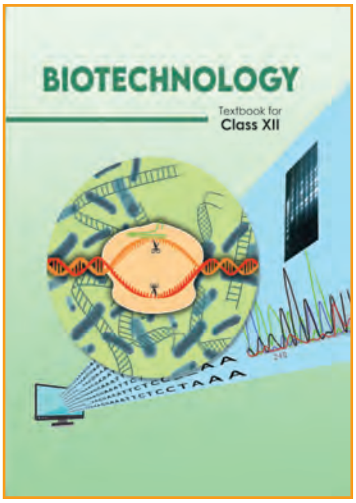

बायो टेक्नोलॉजी, कक्षा 12 के लिए पाठ्यपुस्तक

कक्षा 11 के लिए *बायो टेक्नोलॉजी* पाठ्यपुस्तक के प्रकाशन की निरंतरता में संशोधित पाठ्यक्रम के आधार पर बारहवीं कक्षा के लिए *बायो टेक्नोलॉजी* की पाठ्यपुस्तक प्रकाशित की गई है। पाठ्यपुस्तक में दी गई संकल्पनाएँ जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हुए विकास कार्यों पर आधारित हैं।

टेक्टाइल किट मैनुअल साइंस (4 खंड), कक्षा 6–8 के लिए

समावेशी शिक्षा के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मध्य स्तर (कक्षा 6–8) में कम दृष्टि वाले और दृष्टिबाधित विद्यार्थियों के लिए विज्ञान में 59 गतिविधियों वाला *टेक्टाइल किट मैनुअल साइंस* प्रकाशित किया गया है। कम दृष्टि वाले और दृष्टिबाधित विद्यार्थी विभिन्न युक्तियों का उपयोग करते हुए इस स्पर्श किट की मदद से इन गतिविधियों को कर सकते हैं। गतिविधियों का विवरण ब्रेल लिपि में स्पर्श रेखाचित्रों के साथ दिया गया है ताकि ये विद्यार्थी विज्ञान की संकल्पनाओं को बेहतर तरीके से समझ सकें।

खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र पर पुस्तिका

स्कूली शिक्षा, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा और अध्यापक शिक्षा में पाठ्यक्रम में खिलौनों और इसकी शिक्षणशास्त्र के एकीकरण को बढ़ावा देने के लिए खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर पुस्तिका *टॉय बेस्ड पेडागॉजी—ए हैंडबुक* विकसित की गई है। इस दस्तावेज़ में खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के विभिन्न पहलुओं पर पाठ्यक्रम विकासकों, अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए एक रोडमैप शामिल है। इस हैंडबुक को दो भागों में विभाजित किया गया है— भाग 1, स्वदेशी खिलौनों की विविधता, खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र के चरणवार परिप्रेक्ष्य, अनुभवात्मक शिक्षा, विभिन्न चरणों में दक्षताओं के साथ खिलौनों की मैपिंग और आगे बढ़ने के अध्यायों में दी गई खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र की संकल्पना और समझ शामिल है। भाग 2 विभिन्न चरणों में विभिन्न संकल्पनाओं और सीखने के परिणामों को सीखने के साथ मैप किए गए खिलौनों की सूची और छवियों सहित अनुलग्नक शामिल हैं। इस दस्तावेज़ के भाग 1 और भाग 2 के बीच मजबूत अंतर्संबंध है। खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर हैंडबुक सभी विषय क्षेत्रों में और विभिन्न चरणों में खिलौनों के साथ बहु-विषयक तरीके से दक्षताओं के मानचित्रण के कई उदाहरण प्रदान करती है। यह मूलभूत, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तरों पर खिलौनों के महत्व और लाभों के बारे में भी विस्तार से बताती है। हैंडबुक टॉय-फेयर, टॉय-कॉर्नर के माध्यम से खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र को लागू करने, लोगों की मानसिकता बदलने, विभिन्न हितधारकों की क्षमता निर्माण आदि के लिए उपयोगी सुझाव प्रदान करती है। बच्चों की मदद से स्कूलों में स्थानीय समस्याओं, जैसे— पानी की बर्बादी, भोजन की बर्बादी, स्वच्छता आदि पर नियमित कठपुतली शो आयोजित किए जा सकते हैं, जिसमें माता-पिता और समुदाय को उन्हें देखने के लिए आमंत्रित किया जा सकता है और जागरूकता पैदा की जा सकती है। स्कूल सामाजिक चेतना केंद्र के रूप में

कार्य कर सकते हैं, जो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की महत्वपूर्ण चिंताओं में से एक है— स्थानीय और सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता और समझ पैदा करने के माध्यम के रूप में खिलौनों और कठपुतलियों का उपयोग करना। इस हैंडबुक में यह भी सुझाव दिया गया है कि स्कूली बच्चों को बिना बस्ते वाले इन 10 दिनों या इंटर्नशिप दिनों के दौरान स्थानीय खिलौना निर्माताओं की मदद से स्कूलों में खिलौना बनाना सीखने का अवसर दिया जा सकता है। पुस्तिका तक पहुँचने का लिंक https://ncert.nic.in/pdf/notice/toy_based_pedagogy.pdf है।

विद्यालयी बस्ता नीति 2020

विद्यालयी बस्ता नीति 2020 बनाने का कार्य शिक्षा मंत्रालय को सौंप दिया गया है। इसमें इस संबंध में किए गए एक सर्वेक्षण के आधार पर स्कूल बैग के वजन को कम करने पर एक विस्तृत दिशानिर्देश शामिल है। इसमें बिना समझे कार्य के बोझ को कम करने के लिए कार्यनीतियाँ भी प्रदान की जाती हैं। राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा कार्यान्वयन के लिए *विद्यालयी बस्ता नीति 2020* का अंग्रेजी संस्करण *स्कूल बैग पॉलिसी 2020* नाम से पहले ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित किया जा चुका है।

हिंदुस्तानी संगीत— गायन एवं वादन, कक्षा 11 के लिए पाठ्यपुस्तक, 2022

(आई.एस.बी.एन. 978-93-5580-085-5)

यह पाठ्यपुस्तक ग्यारहवीं कक्षा में पढ़ने वाले माध्यमिक स्तर के हिंदुस्तानी संगीत के विद्यार्थियों के लिए गायन संगीत और मधुर वाद्य संगीत पर तैयार की गई है। यह हिंदुस्तानी संगीत के सिद्धांतों और व्यावहारिक भाग दोनों को समझने के लिए है। सिद्धांत भाग में संगीत का ऐतिहासिक विकास शामिल है जो वैदिक युग से लेकर समकालीन समय तक नवीन रूप से विकसित होने वाली भारतीय ज्ञान परंपराओं और प्रथाओं में गहराई से निहित है। संगीत का ग्रंथ, जिसमें शास्त्रीय संगीत, शब्दावली में सिद्धांत दिशानिर्देश निर्धारित किए गए हैं, जिसमें संगीत को परिभाषित किया जाता है। संगीत रचनाओं के विभिन्न रूप, रागों, तालों का ज्ञान, अंतर अनुशासनात्मक दृष्टिकोण, संगीत वाद्ययंत्रों की 4 श्रेणियाँ, भारतीय संगीत के घरानों और दिग्गजों के बारे में जानकारी प्रदान की गई है जो इन रूपों को वर्तमान समय में लेकर आए हैं। व्यावहारिक भाग में रागों का वर्णन, विभिन्न रागों में रचनाओं के संकेतन, ताल लिखने के संकेतन और लयबद्ध व्याख्याएँ शामिल हैं। यह पुस्तक हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत की बारीकियों को समझने की ललक रखने वाले आम लोगों के लिए भी उपयोगी होगी।

आर्ट इंटिग्रेटिड लर्निंग, कक्षा 1–5 को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए हस्तपुस्तिका

(आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-396-0)

इस हैंडबुक का उद्देश्य कला समेकित शिक्षण की पहुँच और अभिगम्यता को देश के हर हिस्से तक बढ़ाना है। मूलभूत स्तर पर कला समेकित शिक्षण के उद्देश्य हैं— (i) बच्चों के सामाजिक कौशल, संवेदनशीलता और नैतिकता को विकसित करते हुए अधिगम को आनंददायक और आकर्षक बनाना, (ii) निर्देशित अवलोकन और रचनात्मक अन्वेषण के माध्यम से समझने की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को बढ़ाना, (iii) बच्चों को अपने पर्यावरण के प्रति जागरूक होने और इसके प्रति संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए प्रोत्साहित करना, (iv) मुक्त भावनात्मक अभिव्यक्ति और संचार को बढ़ावा देना, (v) अवलोकन, अन्वेषण और सहज अभिव्यक्ति के माध्यम से इंद्रियों को प्रशिक्षित करना। बुनियादी स्तर में कला समेकित शिक्षण के उद्देश्य हैं— (i) उन्हें अधिगम में आनंद का अनुभव कराने हेतु जुड़ाव और अभिव्यक्ति के स्तर को बढ़ाना, (ii) साक्षरता और संख्यात्मकता की प्रारंभिक शिक्षा को समेकित करना, (iii) समावेशी वातावरण प्रदान करना और जिज्ञासु स्वभाव, ज्ञान के प्रति दृष्टिकोण को बढ़ावा देना, (iv) उन्हें अपने विचारों और भावनाओं को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने में मदद करना, (v) अवलोकन

और रचनात्मक अन्वेषण के माध्यम से अधिगम की संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं को बढ़ाना, (vi) बेहतर संचार और महत्वपूर्ण सोच कौशल की सुविधा प्रदान करना, (vii) सहकर्मी समूहों के साथ सहयोगात्मक कार्य में भागीदारी को प्रोत्साहित करना। यह पुस्तिका उन सभी अध्यापकों के लिए फायदेमंद होगी जो अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया में अपने क्षितिज का विस्तार करने और ए.आई.एल. तक पहुँच प्राप्त करने के इच्छुक हैं, भले ही उनके पास इस शिक्षणशास्त्र में कोई औपचारिक प्रशिक्षण न हो। यह प्रकाशन रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशन काउंटरों पर बिक्री के लिए उपलब्ध है।

आर्ट इंटिग्रेटिड लर्निंग, कक्षा 6–8 को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए हस्तपुस्तिका

(आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-397-7)

इस पुस्तिका का उद्देश्य देश में मध्य स्तर के सभी अध्यापकों तक कला समेकित शिक्षण की पहुँच और अभिगम्यता को बढ़ाना है। मध्य स्तर पर कला समेकित शिक्षण के विशिष्ट उद्देश्य हैं— (i) बच्चों को संकल्पनाओं के कई परिप्रेक्ष्यों का पता लगाने में मदद करना, (ii) क्षेत्रीय कला रूपों के माध्यम से विविधता में एकता की संकल्पना की सराहना करना, (iii) अंतर-विषयक संबंधों की स्पष्टता के साथ थीम, विषयों और संकल्पनाओं के ज्ञान का निर्माण करने की क्षमता बढ़ाना, (iv) जुड़ाव और अभिव्यक्ति की प्रक्रिया का अनुभव करना जिसके जरिए सीखने में खुशी का संचार होता है, (v) टीम वर्क और आपसी प्रशंसा को बढ़ावा देना, (vi) संचार कौशल और समस्या सुलझाने के कौशल को बढ़ाना, (vii) पर्यावरण और सामाजिक चिंताओं के प्रति संवेदनशीलता बनाना, (viii) अन्य लोगों और पर्यावरण के लिए पारस्परिक सम्मान, देखभाल, सहानुभूति और करुणा का अभ्यास करने के लिए आधार प्रदान करना, (ix) प्रशंसा और सौंदर्य संबंधी संवेदनशीलता के कौशल को बढ़ाना, (x) सहयोगात्मक कार्यों में उत्साह से भागीदारी को प्रोत्साहित करना, सामाजिक संघर्ष को हल करना, सहिष्णुता और सार्वभौमिक स्वीकृति विकसित करना, (xi) मूल्यों के अभ्यास को प्रोत्साहित करना, जैसे— ईमानदारी, निष्पक्षता, सहयोग, भय और पूर्वाग्रहों से मुक्ति, करुणा आदि। कक्षा 6–8 को पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए ए.आई.एल. हैंडबुक में वैचारिक रूपरेखा और विभिन्न विषयों के उदाहरण शामिल हैं। इसके उदाहरणों में शामिल हैं— संकल्पनाओं की पहचान, हॉट-स्पॉट, सीखने के उद्देश्य, विभिन्न विषयों में कला समेकित शिक्षण आधारित शैक्षणिक कार्यनीतियाँ, अध्यापकों को समझने, अभ्यास करने और परिणाम के रूप में अपनी स्वयं की कला समेकित शिक्षण कार्यनीतियों और अभ्यासों को विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए संभावित अंतरविषय / पार-विषयात्मक संबंध आदि। यह हैंडबुक प्रयोक्ता के अनुकूल है और इसका उपयोग अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों द्वारा स्कूली शिक्षा के मध्य स्तर में ए.आई.एल. के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए किया जा सकता है।

स्कूली विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण, 2022

स्कूली विद्यार्थियों का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण, 2022 शीर्षक वाली रिपोर्ट 6 सितंबर, 2022 को शिक्षा मंत्रालय द्वारा जारी की गई थी। यह मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण जनवरी–मार्च, 2022 के बीच कक्षा 6 से 12 के विद्यार्थियों पर आयोजित किया गया था। इस सर्वेक्षण में 28 राज्यों और 8 संघ राज्य क्षेत्रों के विभिन्न प्रकार के स्कूलों के 3,79,842 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इस रिपोर्ट में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के संबंध में उनकी धारणा का वर्णन किया गया है। इसमें सभी प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं पर आधारित एक समग्र खंड और राज्य सरकार, जवाहर नवोदय विद्यालय, केंद्रीय विद्यालय और निजी स्कूलों के विद्यार्थियों के निष्कर्षों पर चार व्यक्तिगत खंड शामिल हैं। इस रिपोर्ट में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संकेत प्रदान किए गए हैं और इसमें स्कूल प्रणाली में विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाने की दिशा में सिफारिशें शामिल हैं।

अपेरल, मेड-अप और होम फर्निशिंग; आई.टी. और आई.टी.ई.एस.; इलेक्ट्रॉनिक्स क्षेत्र में व्यावसायिक कार्यभूमिकाओं (जॉब रोल्स) के लिए विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकें

संस्थान विभिन्न क्षेत्रों में व्यावसायिक कार्यभूमिकाओं के लिए विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकें विकसित कर रहा है। 2022–23 के दौरान, निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गई हैं—

क्र.सं.	शीर्षक / जॉब रोल का नाम	क्षेत्र	कक्षा	आई.एस.बी.एन.
1.	असिस्टेंट ब्यूटी थेरेपिस्ट	सौंदर्य और कल्याण	10	973-93-91-444-47-1
2.	बैंकिंग टेक्नीशियन	खाद्य प्रसंस्करण	9	978-93-91444-17-4
3.	डेयरी फार्मर वर्कर	कृषि	10	978-81-949589-1-4
4.	डोमेस्टिक डाटा एंट्री ऑपरेटर	आई.टी. आई.टी.ई.एस.	10	978-93-5580-007-7
5.	डोमेस्टिक बायोमेट्रिक डाटा ऑपरेटर	आई.टी. आई.टी.ई.एस.	11	978-81-948859-6-9
6.	एम्प्लायबिलिटी स्किल्स	सभी क्षेत्रों के लिए	11	978-93-5292-126-3
7.	फील्ड टेक्नीशियन अदर होम एप्लाइंसेज	इलेक्ट्रॉनिक्स और हार्डवेयर	9	978-93-5580-055-8
8.	फील्ड टेक्नीशियन वायरमैन कंट्रोल रूम	इलेक्ट्रॉनिक	12	978-93-5292-389-2
9.	फ्लोरिकल्चरिस्ट प्रोटेक्टिड कल्टिवेशन	कृषि	12	978-93-5292-390-8
10.	फूड एंड बेव्रिज सर्विस ट्रेनी	यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य	10	978-93-81444-41-9
11.	जनरल ड्यूटी असिस्टेंट	स्वास्थ्य देखभाल	12	978-93-5580-117-3
12.	हाउसकीपिंग अटेंडेंट—मैनुअल क्लीनिंग	यात्रा, पर्यटन और आतिथ्य	10	978-93-5580-084-8
13.	ऑप्टिकल फाइबर स्प्लिसर	दूरसंचार	9	978-93-5292-330-4
14.	पेडी फार्मर	कृषि	10	978-93-5292-364-9
15.	सोलेनेसियस क्रॉप कल्टिवेटर	कृषि	10	978-93-5292-388-5
16.	टेक्सचरिंग आर्टिस्ट	मीडिया और मनोरंजन	11	78-93-5292-367-0
17.	ट्रेनी एसोसिएट	रिटेल	11	978-93-5580-053-4
18.	अनआर्म्ड सिक्योरिटी गार्ड	सुरक्षा	10	978-93-91444-49-5
19.	वेयरहाउस बिनर	रसद	9	978-93-5292-378-6
20.	प्लम्बर सामान्य	प्लंबिंग	9	978-93-5292-340-3
21.	मोटर वाहन सेवा तकनीशियन	ऑटोमोटिव	9	978-93-5580-099-2
22.	रोज़गार क्षमता कौशल	सभी क्षेत्रों के लिए	9	978-93-5580-118-0
23.	हस्त कशीदाकार (अड्डावाला)	परिधान	9	978-93-5580-005-3
24.	नि:शस्त्र सुरक्षा गार्ड	निजी सुरक्षा	9	978-93-5580-134-0
25.	सहायक सौंदर्य थेरेपिस्ट	सौंदर्य एवं कल्याण	9	978-93-5580-046-6
26.	सूक्ष्म सिंचाई तकनीशियन	कृषि	11	978-93-5580-092-3

व्यावसायिक पाठ्यक्रमों पर विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकें

संस्थान को वर्ष 2021–22 के लिए परियोजना अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.), समग्र शिक्षा, शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.), भारत सरकार द्वारा अनुमोदित एन.एस.क्यू.एफ. के तहत विभिन्न क्षेत्रों में कार्यभूमिकाओं के लिए विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकों और अध्यापक पुस्तिकाओं के विकास का प्रमुख कार्य सौंपा गया है।

संस्थान ने पिछले दो वर्षों में 152 कार्यभूमिकाओं के लिए पाठ्यक्रम और परियोजना अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.) द्वारा अनुमोदित एन.एस.क्यू.एफ. के तहत 59 कार्यभूमिकाओं के लिए विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकें विकसित की हैं। इनमें से 19 क्षेत्रों में 57 विद्यार्थी पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गई हैं, जैसे— 1. कृषि 2. परिधान, मेडअप और होम फर्निशिंग 3. ऑटोमोटिव 4. सौंदर्य और कल्याण 5. बैंकिंग, वित्तीय सेवाएँ और बीमा 6. निर्माण 7. इलेक्ट्रॉनिक्स 8. खाद्य प्रसंस्करण 9. स्वास्थ्य सेवा 10. आई.टी.-आई.टी.ई.एस. 11. रिटेल 12. शारीरिक शिक्षा और खेल 13. प्लंबिंग 14. इलेक्ट्रिकल 15. निजी सुरक्षा 16. दूरसंचार 17. पर्यटन और आतिथ्य 18. परिवहन, रसद और भंडारण 19. मीडिया और मनोरंजन। पाठ्यपुस्तकें संस्थान की वेबसाइट www.psscive.in सहित ई-पाठशाला और रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर भी अपलोड की गई हैं। वर्ष 2022–23 के दौरान निम्नलिखित पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित की गई हैं—

क्र.सं.	2022–23 के दौरान प्रकाशित विद्यार्थियों की पाठ्यपुस्तकों का शीर्षक
1.	एम्प्लायबिलिटी स्किल्स (कक्षा 11)
2.	ऑप्टिकल फाइबर स्प्लिसर (कक्षा 11)
3.	पेडी फार्मर (कक्षा 10)
4.	वेयरहाउस बिनर (कक्षा 9)
5.	टेक्सचरिंग आर्टिस्ट (कक्षा 11)
6.	सोलेनेसियस क्रॉप कल्टिवेटर (कक्षा 10)
7.	फ्लोरीकल्चरिस्ट (प्रोटेक्टिड कल्टिवेशन) (कक्षा 12)
8.	फील्ड तकनीशियन—वायरमैन कंट्रोल पैनल (कक्षा 12)
9.	डोमेस्टिक बायोमेट्रिक डेटा ऑपरेटर
10.	डेयरी वर्कर—कक्षा 10 के लिए पाठ्यपुस्तक
11.	बैंकिंग टेक्नीशियन
12.	फूड एंड बेव्रिज ट्रेनी
13.	असिस्टेंट ब्यूटी थेरेपिस्ट (कक्षा 10)
14.	ट्रेनी एसोसिएट (कक्षा 11)
15.	अनआर्म्ड सिक्योरिटी गार्ड
16.	हाउस कीपिंग अटेंडेंट—मैन्युअल क्लीनिंग
17	फील्ड टेक्नीशियन—अदर होम एप्लाइंसेज
18	सूक्ष्म सिंचाई तकनीशियन (कक्षा 11)
19	मोटर वाहन सेवा तकनीशियन (ऑटोमेटिव), (कक्षा 9)
20	जनरल ड्यूटी सहायक
21	रोज़गार क्षमता कौशल (कक्षा 9)
22	निःशस्त्र सुरक्षा गार्ड (कक्षा 9)
23	हस्त कशीदाकार (अड्डावाला), (कक्षा 9)
24	डोमेस्टिक डाटा एंट्री ऑपरेटर (कक्षा 9)
25	सहायक सौंदर्य चिकित्सक (कक्षा 9)

जर्नल और पत्रिकाएँ

प्राथमिक शिक्षक और *द प्राइमरी टीचर*

(आई.एस.एस.एन. 0970-9312) (आई.एस.एस.एन. 0970-9282)

शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और अन्य पदाधिकारियों और अन्य समसामयिक मुद्दों के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए दो पत्रिकाएँ अर्थात *प्राथमिक शिक्षक और प्राइमरी टीचर* निकाली जा रही हैं। *प्राइमरी टीचर* का जनवरी 2022 अंक, खंड XLVII और *प्राथमिक शिक्षक* का जनवरी, 2022 अंक प्रकाशित किया गया है।

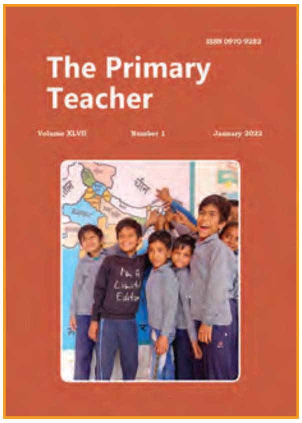

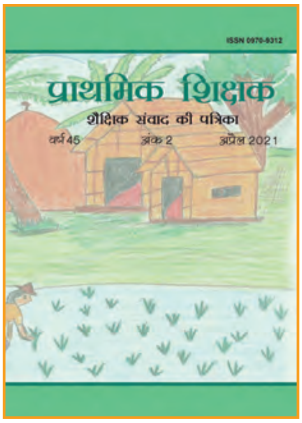

स्कूल साइंस— त्रैमासिक पत्रिका

(आई.एस.एस.एन. 0036-679X (प्रिंट); 0972-5061) (ऑनलाइन)

स्कूल साइंस, स्कूल स्तर पर प्राचीन ज्ञान, स्वदेशी पारंपरिक ज्ञान और हर्बल औषधीय पौधों सहित विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा के क्षेत्र में एक सहकर्मी-समीक्षित त्रैमासिक पत्रिका है जो अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं और विद्यार्थियों को पाठ्यक्रम, अध्यापन के नए और नवीन तरीकों, आकलन, शैक्षिक अभ्यासों आदि से संबंधित अपने विचारों, अनुभवों और अनुसंधान निष्कर्षों का प्रसार करने के लिए एक मंच प्रदान करती है। यह पत्रिका ऐसे सभी क्षेत्रों में नवीनतम वैश्विक रुझानों और विकास को साझा करने हेतु एक मंच के रूप में भी कार्य करती है।

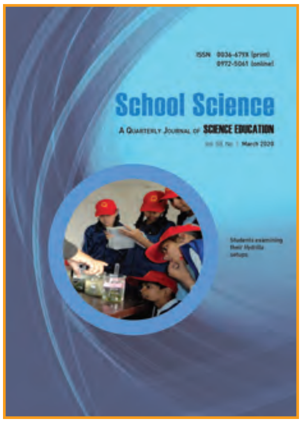

इंडियन एजुकेशनल रिव्यू

(आई.एस.एस.एन. 0019-4700 (प्रिंट); 0971-561X) (ऑनलाइन)

रा.शै.अ.प्र.प. की प्रतिष्ठित अनुसंधान पत्रिका *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (आई.ई.आर.)* का उद्देश्य शिक्षा में अनुसंधान के सिद्धांत और व्यवहार को बढ़ाना है। पत्रिका में अंतर-विषयक परिप्रेक्ष्य में अध्ययन सहित मुद्दों, रिपोर्टों, समीक्षाओं और अनुभवजन्य निष्कर्षों की एक विस्तृत शृंखला को कवर किया जाता है। यह पत्रिका अर्धवार्षिक रूप से जनवरी और जुलाई में प्रकाशित होती है। इसका जुलाई 2020 का अंक प्रकाशित हो चुका है। जनवरी, 2021 अंक की पांडुलिपि प्रकाशन प्रभाग में प्रकाशनाधीन है। *आई.ई.आर.* के जुलाई 2021 और जनवरी 2022 के संयुक्त अंक के लेख और जुलाई 2022 और जनवरी 2023 के अंक के लेख समीक्षाधीन हैं। जर्नल में पूर्ण ई.आर.आई.सी. वित्त पोषित अनुसंधानों के सारांश प्रकाशित करने की पहल की गई है।

रा.शै.अ.प्र.प.

भारतीय आधुनिक शिक्षा

(आई.एस.एस.एन. 0972-5636)

भारतीय आधुनिक शिक्षा यू.जी.सी.–केयर सूची की त्रैमासिक पत्रिका है जो रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नियमित आधार पर हिंदी में प्रकाशित की जाती है। इसके प्रकाशित संस्करणों को रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर भी अपलोड किया जाता है। यह स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से जुड़े अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं, विद्यार्थियों और अन्य हितधारकों के विचारों के प्रसार के लिए एक उपयोगी प्रकाशन साबित हुआ है। इसकी सामग्री में विचारोद्दीपक लेख, शोध पत्र, आलोचनात्मक समीक्षा, सर्वोत्तम अभ्यास, नवाचार और प्रयोग, क्षेत्र का अनुभव और पुस्तक समीक्षा और अन्य विशेषताएँ शामिल हैं। वर्ष के दौरान, *भारतीय आधुनिक शिक्षा* के चार अंकों (अर्थात, अप्रैल 2022, जुलाई 2022, अक्तूबर 2022 और जनवरी, 2023) को अंतिम रूप दिया गया और प्रकाशन के लिए भेजा गया।

जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन

आई.एस.एस.एन. 0377-0435

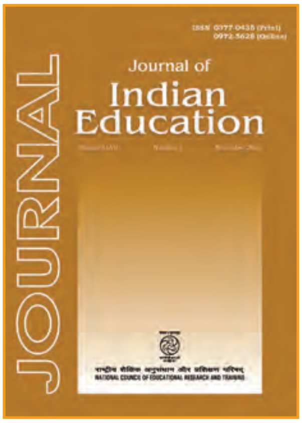

जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (जे.आई.ई.) नए विचारों के प्रस्तुतीकरण, समकालीन शैक्षिक समस्याओं के आलोचनात्मक मूल्यांकन और नवाचारी अभ्यासों पर अनुभवों के माध्यम से शिक्षा में मौलिक और महत्वपूर्ण विचारों को प्रोत्साहित करने के लिए अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं और शिक्षा से जुड़े अन्य लोगों के लिए एक मंच प्रदान करती है। पत्रिका की सामग्री में विचारोद्दीपक लेख, शोध पत्र, चुनौतीपूर्ण चर्चाएँ, नवीन अभ्यास, पुस्तक समीक्षाएँ और साक्षात्कार आदि शामिल हैं।

वर्ष के दौरान, अंग्रेजी में 202 लेख/ शोध पत्र/ प्रकरण अध्ययन/पुस्तक समीक्षा प्राप्त हुए। प्राप्त लेख की संपादकीय टीम के सदस्यों द्वारा समीक्षा की गई। टिप्पणियाँ और सुझाव उन पत्रों के संबंधित लेखकों को भेजे गए थे, जिन्हें प्रकाशन के लिए चुना गया है। इन सुझावों/टिप्पणियों को शामिल करने के बाद चयनित आलेखों को प्रकाशन विभाग को भेज दिया गया। *जे.आई.ई.* के चार अंक (अर्थात, मई 2022 अगस्त 2022, नवंबर 2022 और फरवरी 2023) को अंतिम रूप दिया गया और प्रकाशन के लिए भेजा गया।

वॉयसेस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स

(ई-आई.एस.एस.एन. 2455-1376)

वॉयसेस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स (वी.टी.टी.ई.) एक ऑनलाइन जर्नल है जो रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा प्रकाशित किया जाता है और यू.जी.सी.-केयर सूची में सूचीबद्ध है। यह द्विवार्षिक पत्रिका द्विभाषी है। यह स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से जुड़े अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, अनुसंधानकर्ताओं, विद्यार्थियों और अन्य हितधारकों के विचारों के प्रसार के लिए एक उपयोगी प्रकाशन साबित हुआ है। सामग्री में विचारोद्दीपक लेख, शोध पत्र,

आलोचनात्मक समीक्षाएँ, सर्वोत्तम अभ्यास, नवाचार और प्रयोग, क्षेत्र अनुभव और पुस्तक समीक्षाएँ शामिल हैं। वर्ष 2021–22 के दौरान, इस पत्रिका के दो अंकों (अर्थात, जुलाई 2020 और दिसंबर 2021) को अंतिम रूप दिया गया और रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट पर अपलोड किया गया।

व्यावसायिक शिक्षा पर त्रैमासिक बुलेटिन

संस्थान ने अप्रैल–सितंबर, 2022 की अवधि के लिए त्रैमासिक बुलेटिन *व्यावसायिक शिक्षा* प्रकाशित की। बुलेटिन में इस अवधि के दौरान संस्थान में आयोजित कार्यक्रमों और गतिविधियों और अन्य महत्वपूर्ण समाचारों को शामिल किया गया है।

इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन

(आई.एस.एस.एन. 0972–5830)

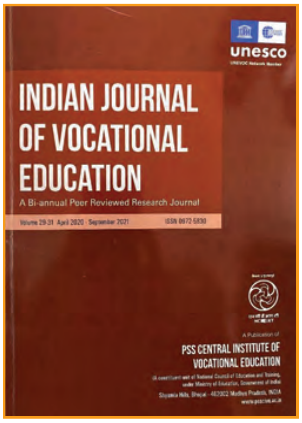

संस्थान वर्ष 2022–23 के दौरान *इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन* खंड 29–31 में शोध लेख और पत्र प्रकाशित करके व्यावसायिक शिक्षा के क्षेत्र में अनुसंधान को बढ़ावा दे रहा है। यह पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल द्वारा प्रकाशित एक द्विवार्षिक पत्रिका है। इस शोध पत्र में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के क्षेत्र में मूल अनुभवजन्य जाँच शामिल हैं, जिसमें कार्रवाई अनुसंधान परियोजनाओं के माध्यम से स्कूल में विभिन्न व्यावसायिक शिक्षा प्रणालियों की प्रभावशीलता और दक्षता बढ़ाने के लिए चर्चा को प्रोत्साहित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी का ऑनलाइन प्रकाशन

(आई.एस.एस.एन. 2581–8325)

सी.आई.ई.टी. द्वारा अंग्रेजी में एक ऑनलाइन विद्वत समीक्षित पत्रिका, *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी (आई.जे.ई.टी.)* इसकी वेबसाइट (https://ciet.nic.in/pages.php?id=journal &ln=en) पर द्विवार्षिक रूप से प्रकाशित की जाती है। यह एक यू.जी.सी. सूचीबद्ध पत्रिका है। जुलाई 2022 और जनवरी 2023 के अंक रा.शै.अ.प्र.प. और सी.आई.ई.टी. की वेबसाइट पर प्रकाशित किए गए थे, जिसमें विभिन्न श्रेणियों में क्रमशः 25 और 21 पांडुलिपियाँ प्रकाशित की गईं।

रा.शै.अ.प्र.प. वार्षिक रिपोर्ट 2021–22

रा.शै.अ.प्र.प. की वार्षिक रिपोर्ट एक महत्वपूर्ण दस्तावेज़ है जिसमें संसद में रखे गए लेखा विवरण सहित उपलब्धियों और गतिविधियों की पूरी तस्वीर प्रदान की जाती है। स्कूली शिक्षा की सर्वोच्च संस्था रा.शै.अ.प्र.प. की वर्ष 2021–22 की यात्रा की वार्षिक रिपोर्ट तैयार की गई है। रा.शै.अ.प्र.प. इसमें अपने प्रकाशनों, अनुसंधान अध्ययनों, विकास गतिविधियों, क्षमता निर्माण कार्यक्रमों और विस्तार गतिविधियों के रूप में परिषद् की सफलताओं और उपलब्धियों की पूरी तस्वीर प्रदान करती है। रिपोर्ट में व्यापक शैक्षणिक समुदाय, नीति निर्माताओं, अध्यापकों और क्षेत्र में अभ्यासकर्ताओं के साथ मूल्यवान संचार की सुविधा प्रदान की जाती है।

3. अनुसंधान अध्ययन

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के प्रमुख कार्यों में अनुसंधान एक प्रमुख कार्य होने के नाते, स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न आयामों पर शैक्षिक अनुसंधान को बढ़ावा दिया जाता है और इसका समन्वयन किया जाता है। रा.शै.अ.प्र.प. अनुसंधान अध्ययन और नवाचारों के माध्यम से चुनी हुई अंतर्दृष्टि के आधार पर, शैक्षिक प्रणाली में वांछनीय बदलाव लाने के लिए नीतियों और कार्यक्रमों की सूचना प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

शैक्षिक अनुसंधान के क्षेत्र में वर्ष के दौरान, परिषद ने स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में अध्ययन किया, जैसे– सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के बच्चों के लिए सामाजिक वातावरण पर स्कूल आधारित सर्वेक्षण, हिंदी भाषा में नवीन अभ्यासों का खोजपूर्ण अध्ययन और वांछित सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने में उनकी प्रभावशीलता, स्कूलों में नि:शक्त बच्चों के लिए उचित आवास की प्रभावकारिता, जेंडर समानता और बाल यौन शोषण की रोकथाम के लिए भारत सरकार की चुनिंदा पहलों का प्रभाव आकलन अध्ययन, विद्यार्थियों पर शिक्षा के हाइब्रिड मॉडल का प्रभाव, गणित की संकल्पनाओं की समझ, अंतरराष्ट्रीय और स्वदेशी शैक्षणिक दृष्टिकोण का दस्तावेज़ीकरण, सजीव भारतीय पारंपरिक ज्ञान के समेकन का अन्वेषणात्मक अध्ययन और अभ्यास, उच्च प्राथमिक विज्ञान किट की प्रभावशीलता का आकलन, संधारणीय विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) 4.7— स्कूली शिक्षा में नीतियाँ और अभ्यास आदि।

प्रतिवेदनाधीन वर्ष के दौरान संवर्धित वास्तविकता आधारित ई-सामग्री और वर्चुअल लैब की प्रभावशीलता, समग्र शिक्षा के तहत आई.सी.टी. @ स्कूल योजना, विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के समग्र विकास पर रा.शै.अ.प्र.प. के आई.सी.टी. आधारित सुलभ हस्तक्षेप (यू.डी.एल. आधारित ई-सामग्री) का प्रभाव, आई.सी.टी. दक्षता और तकनीकी शिक्षणशास्त्र पर शैक्षिक पाठ्यक्रमों में आई.सी.टी. की प्रभावशीलता, अध्यापकों की एकीकरण दक्षता, साइबर सुरक्षा और संरक्षा जागरूकता पैकेज की प्रभावशीलता, महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा के विभिन्न तरीकों का अध्ययन, कोविड-19 के दौरान आदिवासी विद्यार्थियों के सामने ऑनलाइन सीखने में आने वाली समस्याएँ, कोविड-19 का प्रभाव, कोविड-19 अवधि के दौरान सीखने की हानि, भारत में कोविड काल आदि के दौरान ई-अधिगम पहलें भी शुरू की गईं।

परिषद् ने व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रमों के कार्यान्वयन, परिवहन सुविधाओं के उपयोग और प्रभाव, ऑनलाइन और डिजिटल संसाधनों के उपयोग से अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच विकसित दक्षताओं, ई.सी.सी.ई. में बच्चों के लिए शैक्षणिक अभ्यासों, एन.ई.पी. 2020 के आलोक में महाराष्ट्र द्वारा तैयार एफ.एल.एन. की पाठ्यपुस्तकें, आकांक्षी जिलों के सरकारी स्कूलों में भौतिकी शिक्षा के अध्यापकों के सामने आने वाली चुनौतियाँ, आकांक्षी जिलों में विज्ञान सीखने पर आई.सी.टी. एकीकरण, कक्षा प्रक्रियाओं में सामाजिक विज्ञान शैक्षणिक प्रशिक्षण कार्यक्रम का कार्यान्वयन, आकलन में रुझान और भौतिकी में विद्यार्थियों के सीखने का मूल्यांकन, विज्ञान में पूर्ण किए गए नवीन कार्यक्रम, लोक प्रथाओं के साथ रसायन विज्ञान में कुछ चयनित

संकल्पनाओं के संबंधों की पहचान, अध्यापक प्रशिक्षक की भावी आवश्यकताएँ, हैप्पीनेस कार्यक्रम की मजबूतियों, कमजोरियों, अवसरों और चुनौतियों का विश्लेषण, प्राथमिक विद्यालय स्तर पर हस्तक्षेपों का क्रियान्वयन— एक ब्लॉक स्तरीय अनुसंधान आदि पर अध्ययन किया।

शैक्षिक संसाधन केंद्र का विश्लेषण, डी.आई.ई.टी.-सी.आर.सी. लिंकेज पहल, विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता कौशल, अध्यापन अधिगम की प्रक्रिया की स्थिति, सामाजिक-सांस्कृतिक अभ्यासों की पहचान और कार्यान्वयन, 10 बैग रहित दिनों का कार्यान्वयन, बहुभाषी शिक्षा, मध्य स्तर में भाषा के उपयोग की अनुकूलता, वर्ष के दौरान पाठ्यपुस्तकें, समावेशी कक्षा वातावरण को बढ़ाना, उत्तर-पूर्व में स्कूली विद्यार्थियों और अभिभावकों की भाषा प्राथमिकताएँ, उत्तर-पूर्व क्षेत्र में अंग्रेजी, गणित और सामाजिक विज्ञान के अध्यापन के लिए सांकेतिक भाषा का अनुसंधान-सह-प्रलेखन आदि आयोजित किए गए।

इसके अलावा, परिषद् शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) के माध्यम से शैक्षिक अनुसंधान का समर्थन करती है। परिषद् 'रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति' प्रदान करती है, जिसमें शिक्षा के क्षेत्र में डॉक्टरेट अनुसंधान को आगे बढ़ाने के लिए युवा प्रत्याशियों को हर साल दस अध्येतावृत्तियाँ दी जाती हैं और शिक्षा से सीधे संबंधित विषयों पर काम किया जाता है।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

उत्तर पूर्व क्षेत्र के चयनित आकांक्षी जिलों में प्राथमिक स्कूली बच्चों के अधिगम प्रतिफलों पर वर्चुअल स्कूलिंग का प्रभाव

यह शोध आठ उत्तर पूर्वी राज्यों, अर्थात अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम और त्रिपुरा में किया गया था। इन शोधों का मुख्य उद्देश्य प्राथमिक विद्यालय के बच्चों और अध्यापकों पर हुए कोविड-19 के प्रभाव की गंभीरता को समझना, प्राथमिक विद्यालय शिक्षा प्रणाली पर कोविड-19 और बच्चों के सीखने के प्रतिफलों पर वर्चुअल स्कूलिंग के प्रभावों का विश्लेषण करना, कोविड-19 महामारी के कारण प्राथमिक विद्यालयों के समक्ष आने वाली चुनौतियों और अवसरों की पहचान करना था।

विद्यालय स्तर पर स्वच्छ भारत मिशन के कार्यान्वयन की स्थिति पर एक अध्ययन

यह अध्ययन मिश्रित विधि दृष्टिकोण के साथ आयोजित किया गया था जिसमें एक दस्तावेज़ समीक्षा टेम्पलेट और एक स्कूल प्रोफार्मा एवं अभिभावक प्रोफार्मा का उपयोग करते हुए क्षेत्र परीक्षण में डेटा एकत्र किया गया। गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरह के डेटा को व्यवस्थित रूप देकर उनका विश्लेषण किया गया। नमूने में भारत की एस.डी.जी. रैंकिंग सूची 2021 में पाँच शीर्ष और पाँच अल्प निष्पादन वाले राज्य और संघ राज्य क्षेत्र— अरुणाचल प्रदेश, चंडीगढ़, बिहार, गोवा, हिमाचल प्रदेश, केरल, लद्दाख, नागालैंड, त्रिपुरा और उत्तराखंड शामिल हैं।

निष्कर्षों से पता चलता है कि एस.बी.एस.वी. कार्यक्रम ने पानी, स्वच्छता और स्वच्छता पहलुओं की उपलब्धता, पहुँच और सुरक्षा पहलुओं, अर्थात लड़कों और लड़कियों के लिए अलग-अलग कार्यात्मक शौचालय, पीने योग्य और अन्य कार्यों हेतु पानी और हाथ धोने की सुविधा में महत्वपूर्ण सुधार के साथ विभिन्न स्तरों पर राज्यों के साथ लक्षित लक्ष्य हासिल किए हैं। जबकि, पानी की मात्रा, परीक्षण और संरक्षण, अपशिष्ट और मासिक धर्म स्वच्छता प्रबंधन तथा विशेष आवश्यकता समूह के लिए शौचालय, और लड़कियों एवं विशेष आवश्यकता समूह के लिए उचित फ्लश और सीवेज सिस्टम के साथ मूत्रालय की उपलब्धता पर अधिक प्रयासों की आवश्यकता है। विभिन्न हितधारकों की स्वास्थ्य जाँच और प्रशिक्षण एस.बी.एस.वी. मानदंडों के अनुसार है। एस.एम.सी., विद्यार्थियों, माता-पिता/अभिभावकों और समुदाय की भागीदारी के संबंध में सुधार की आवश्यकता है। यह पाया गया है कि उच्च

एस.डी.जी. रैंकिंग वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र अधिकांश एस.बी.एस.वी. घटकों पर दूसरों की तुलना में बेहतर निष्पादन कर रहे हैं। चंडीगढ़, गोवा और हिमाचल प्रदेश शीर्ष प्रदर्शनकर्ता हैं जबकि केरल, उत्तराखंड, त्रिपुरा, लद्दाख और बिहार राज्यों का निष्पादन औसत है और नागालैंड, अरुणाचल प्रदेश अधिकांश एस.बी.एस.वी. पहलुओं पर पीछे हैं।

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

स्कूलों में नि:शक्त बच्चों के लिए उचित आवास की प्रभावशीलता— एक अध्ययन

अनुसंधान परियोजना का उद्देश्य नि:शक्तता वाले व्यक्तिगत विद्यार्थियों के लिए आवश्यक और स्कूल द्वारा प्रदान किए जाने वाले आवास के स्वरूप और सीमा का पता लगाना और नि:शक्त विद्यार्थियों की सीखने की ज़रूरतों के संबंध में स्कूलों द्वारा प्रदान किए गए आवास और सहायता की प्रभावकारिता का विश्लेषण करना है।

सितंबर, 2022 में मध्य प्रदेश के भोपाल जिले के छह स्कूलों में अनुसंधान टूल्स तैयार करने से पहले एक प्रायोगिक अध्ययन आयोजित किया गया था। अनुसंधान टूल्स के तहत स्कूल सूचना और अवलोकन पत्रक, स्कूली विद्यार्थियों के लिए साक्षात्कार अनुसूची, कक्षा अवलोकन अनुसूची, स्कूल अध्यापकों के लिए प्रश्नावली, और माता-पिता के लिए साक्षात्कार अनुसूची शोधकर्ताओं द्वारा तैयार की गई और प्रायोगिक अध्ययन के दौरान प्रशासित की गई। सूत्रीकरण और कथन, उपयुक्तता, भाषा, सार्थकता, अनुक्रमण और वस्तुओं को जोड़ने या हटाने की आवश्यकता में और संशोधन के लिए अनुसंधान टूल्स पर विभिन्न हितधारकों से प्रतिक्रिया प्राप्त की गई। हिमाचल प्रदेश के कांगड़ा जिले के पाँच स्कूलों में आयोजित टूल्स के परीक्षण के बाद इन टूल्स (उपकरणों) को अंतिम रूप दिया गया।

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

जेंडर समानता और बाल यौन शोषण की रोकथाम के लिए भारत सरकार की चुनिंदा पहलों का प्रभाव आकलन

इस अध्ययन का उद्देश्य बच्चों, अध्यापकों और अभिभावकों जैसे लाभार्थियों के लिए स्कूलों में लघु फिल्म 'कोमल' की स्क्रीनिंग, स्कूल सुरक्षा प्रतिज्ञा, पॉक्सो और जे.जे. अधिनियम जागरूकता और जेंडर संवेदनशीलता का प्रसार और इसकी समीक्षा करना था। इस अनुसंधान डेटा के संग्रह के लिए राज्यों को प्रश्नावली भेजी गईं। डेटा प्राप्त करने के बाद, प्रत्येक क्षेत्र से दो राज्यों को चुना गया, जैसे कि हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, गोवा, असम, मणिपुर, छत्तीसगढ़, ओडिशा और तेलंगाना। तमिलनाडु को छोड़कर चिह्नित राज्यों का क्षेत्र भ्रमण किया गया। शोध डेटा विभिन्न हितधारकों, जैसे प्रधानाचार्यों, अध्यापकों और सभी कक्षाओं के विद्यार्थियों और अभिभावकों से एकत्र किया गया था। तमिलनाडु को छोड़कर सभी राज्यों में डेटा संग्रह के लिए क्षेत्र भ्रमण पूरे हो चुके हैं।

प्रारंभिक निष्कर्षों के अनुसार, यह पाया गया कि फिल्म 'कोमल' की स्क्रीनिंग सभी चयनित राज्यों में की गई थी। जबकि, फिल्म पर कोई फॉलोअप नहीं हुआ। बुनियादी स्तर पर, अधिकांश विद्यार्थी चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर और शरीर के निजी अंगों के बारे में जानते थे। प्रारंभिक स्तर में, तेलंगाना और गोवा को छोड़कर सभी राज्यों में, सभी विद्यार्थियों को निजी अंगों के बारे में पता नहीं था, क्योंकि स्कूलों ने अपने यहाँ विद्यार्थियों को लघु फिल्म 'कोमल' नहीं दिखाई थी। मध्य और माध्यमिक स्तर पर, विद्यार्थियों को निजी अंगों और चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर के बारे में पता था। यह नोट किया गया कि अधिकांश विद्यार्थी पॉक्सो अधिनियम के बारे में जानते थे जबकि अधिकांश विद्यार्थियों को जे.जे. अधिनियम के बारे में नहीं पता था। माता-पिता के मामले में, अधिकांश माता-पिता को पॉक्सो और जे.जे. अधिनियम तथा चाइल्ड हेल्पलाइन नंबर के बारे में भी जानकारी नहीं थी। सभी राज्यों में अभिभावकों के बीच यही

स्थिति देखी गई। सभी राज्यों के अध्यापक एवं प्रधानाचार्य फिल्म ‘कोमल’ के महत्व से अवगत थे। जबकि, सभी अध्यापकों को पॉक्सो और जे.जे. अधिनियम के बारे में जागरूक नहीं किया गया था। ओडिशा और हरियाणा राज्यों में, अध्यापक बाल यौन शोषण (सी.एस.ए.) की रोकथाम पर ज्ञान का प्रसार करने के प्रयास कर रहे हैं।

जी.एच.एस., एन.बी.टी. नगर, तेलंगाना में मध्य चरण के विद्यार्थियों के साथ डेटा संग्रह

जी.एच.एस. स्कूल, कामरूप मेट्रो, असम में अध्यापकों के साथ केंद्रित समूह चर्चा

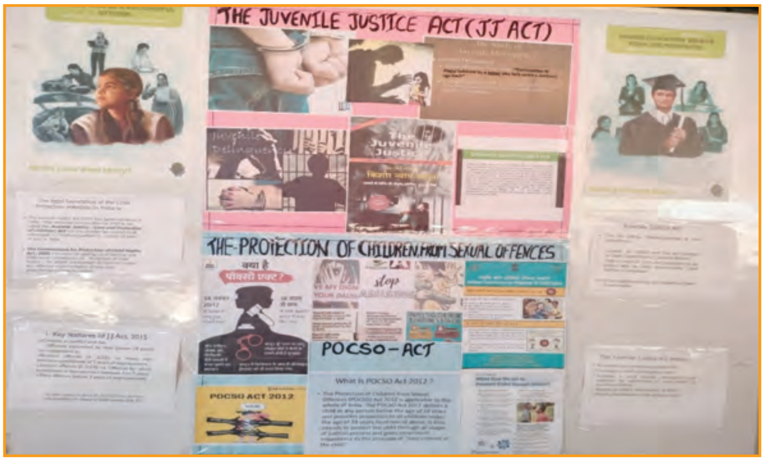

जी.पी.एस. स्कूल, धौरशायर, दक्षिण गोवा में दीवारों पर पॉक्सो, जे.जे. अधिनियम के बारे में जानकारी

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में रा.शै.अ.प्र.प., राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों और कुछ महत्वपूर्ण देशों द्वारा विकसित सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम का एक तुलनात्मक अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में रा.शै.अ.प्र.प., राज्यों, संघ राज्य क्षेत्रों और कुछ महत्वपूर्ण देशों के सामाजिक विज्ञान पाठ्यक्रम की जाँच करना और संगठनात्मक रूपरेखा और बल दिए जाने वाले क्षेत्रों का अध्ययन करना था। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि सामाजिक विज्ञान स्कूली स्तर पर पेश किया जाने वाला एक महत्वपूर्ण विषय है। इसमें इस बात पर प्रकाश डाला गया कि संपूर्ण पाठ्यक्रम में परियोजना कार्य सहित व्यावसायिक शिक्षा, अनुभवात्मक शिक्षा और व्यावहारिक कार्य को प्राथमिकता दी गई थी। उनमें से लगभग सभी पर ज्ञान के इस क्षेत्र में वास्तविक जीवन की स्थिति और आयु के उपयुक्त जानकारी पर बल दिया गया था। इस अध्ययन के निष्कर्षों से भारत में सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य शिक्षा के लिए अधिक प्रासंगिक, आकर्षक और प्रभावी पाठ्यक्रम के विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव होने की उम्मीद है। यह अध्ययन देश में पाठ्यक्रम सुधार पर जारी विमर्श में भी योगदान देगा और नीति निर्माताओं, अध्यापकों और अन्य हितधारकों के लिए मार्गदर्शन तथा दिशा प्रदान करेगा।

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

माध्यमिक स्तर पर गणित की संकल्पनाओं को समझने वाले विद्यार्थियों पर शिक्षा के हाइब्रिड मॉडल के प्रभाव का आकलन करने हेतु एक अध्ययन

इस अध्ययन का विशिष्ट उद्देश्य हाइब्रिड मॉडल के संबंध में माध्यमिक स्तर पर गणित में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर की पहचान करना और माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों द्वारा गणितीय संकल्पनाओं की समझ पर अध्यापन-अधिगम के मिश्रित मॉडल के प्रभाव की जाँच करना था।

अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि ऑनलाइन अधिगम विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए समान रूप से एक लोकप्रिय विकल्प बन गया है, और यह एक ऐसा क्षेत्र है जहाँ पुनरीक्षण कक्षाओं के जरिए विशेष आशा दर्शाई गई है। ऑनलाइन अधिगम की सुविधा और लचीलेपन के साथ कई विद्यार्थी और अध्यापक इसे प्रमुख संकल्पनाओं और कौशलों की समीक्षा और उन्हें सुदृढ़ करने का एक अत्यधिक प्रभावी तरीका मानते हैं। पुनरीक्षण कक्षाओं के लिए ऑनलाइन अधिगम का एक प्रमुख लाभ इसमें निहित समय बचाने का पहलू है। पारंपरिक पुनरीक्षण कक्षाओं में अक्सर विद्यार्थियों को एक विशिष्ट स्थान की यात्रा करने की आवश्यकता होती है, जिसमें समय लग सकता है और अन्य प्रतिबद्धताओं में हस्तक्षेप किया जा सकता है। ऑनलाइन अधिगम से यात्रा की आवश्यकता समाप्त हो जाती है, जिससे विद्यार्थियों को अपने घर से या जहाँ भी उनके पास कंप्यूटर और इंटरनेट कनेक्शन उपलब्ध है, आराम से पुनरीक्षण कक्षाओं में भाग लेने की सुविधा मिलती है। अध्यापकों के लिए निरंतर व्यावसायिक विकास के अवसर प्रदान करना आवश्यक है जो आई.सी.टी. टूल्स के प्रभावी उपयोग पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस.डी.)

स्कूल विज्ञान पाठ्यक्रम में सभी स्तरों पर सजीव भारतीय पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं के समेकन का एक खोजपूर्ण अध्ययन

इस शोध अध्ययन के माध्यम से स्कूल विज्ञान पाठ्यक्रम में वर्तमान भारतीय पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं के समेकन का पता लगाया गया। यह अध्ययन भारतीय पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं से संबंधित मौजूदा अभ्यासों की पहचान

करने के लिए डिजाइन किया गया था। इससे पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं में प्रयुक्त संकल्पनाओं, विषयों, कौशलों, विधियों और कार्यनीतियों की पहचान की जा सकेगी और उनमें निहित वैज्ञानिक सिद्धांतों और प्रक्रियाओं का पता लगाया जा सकेगा। इस अध्ययन में प्रयुक्त अनुसंधान विधि गुणात्मक स्वरूप की है। इसमें एक खोजपूर्ण दृष्टिकोण और डिजाइन का उपयोग किया गया है। इस अध्ययन में सिक्किम, राजस्थान और उत्तराखंड राज्यों में प्रचलित भारतीय पारंपरिक ज्ञान और प्रथाओं की पहचान की गई और उन्हें विभिन्न चरणों में विज्ञान पाठ्यक्रम में विषयों, संकल्पनाओं और कौशल के साथ मैप किया गया है। इस अध्ययन में विज्ञान पाठ्यक्रम में इस ज्ञान और प्रथाओं के एकीकरण के लिए उदाहरण भी प्रदान किया गया है। यह न केवल भारत के पारंपरिक ज्ञान, स्थानीय स्वाद, आदिवासी ज्ञान आदि के बारे में अंतर्दृष्टि प्रदान करेगा, बल्कि इससे स्कूली पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों और अध्यापन-अधिगम सामग्री में इसके एकीकरण का मार्ग भी प्रशस्त होगा।

स्कूली शिक्षा में विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए अंतरराष्ट्रीय और स्वदेशी शैक्षणिक दृष्टिकोण के दस्तावेजीकरण पर एक अध्ययन

इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न विषयों को पढ़ाने के लिए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपयोग किए जाने वाले स्वदेशी शैक्षणिक दृष्टिकोणों का दस्तावेजीकरण और संकलन करना और उन तरीकों की पहचान करना है जिन्हें स्कूली शिक्षा के वर्तमान परिदृश्य में नियोजित किया जा सकता है। यह एक गुणात्मक अध्ययन है जहाँ शोधकर्ता ने देश भर में/अंतरराष्ट्रीय स्तर पर और साथ ही भारत में अपनाए जाने वाले शैक्षणिक दृष्टिकोण के बारे में जानकारी एकत्र करने के लिए संबंधित दस्तावेजों, लेखों और साहित्य की समीक्षा की। एक राष्ट्रीय परामर्श बैठक आयोजित की गई जिसमें शिक्षाविदों, अभ्यासकर्ताओं और प्रशासकों ने सामान्य रूप से स्कूली शिक्षा और विशेष रूप से अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया से संबंधित अपने अनुभव साझा किए। दस्तावेजों/साहित्य, परामर्शदात्री बैठक और क्षेत्र दौरों से एकत्र किए गए आँकड़ों का विश्लेषण किया गया और उन शैक्षणिक दृष्टिकोणों पर सिफ़ारिशें की गईं जिन्हें भारत में वर्तमान स्कूल परिदृश्य में स्कूली शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हेतु अभ्यास या कार्यान्वित किया जा सकता है। इस अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों में शामिल है कि अध्यापकों को ज्ञान के स्रोतों और उसके अधिग्रहण की गहन समझ होनी चाहिए; स्कूल में विद्यार्थियों के समग्र विकास के लिए मानव विकास प्रक्रिया (पंचकोश) और संसाधन एवं वातावरण प्रदान किए जाने की आवश्यकता है; वर्तमान स्कूलों में अपनाई जा सकने वाली कुछ स्वदेशी शैक्षणिक प्रक्रियाओं में मौखिक परंपरा (ड्रिल, दोहराव और अभ्यास), खेल और अन्वेषण; और पढ़ना, याद करना (रटना नहीं), चिंतन, प्रश्न-उत्तर, सीधा उत्तर, उदाहरणों, उपमाओं, चित्रण और रूपकों का उपयोग, यात्रा (क्षेत्र का दौरा, अन्वेषण), अवलोकन और अनुकरण करना, संवाद और चर्चा, परंपराओं का जश्न, सांस्कृतिक गतिविधियाँ और समारोह, मॉडलिंग, सामुदायिक जीवन, ध्यान और प्रार्थना, अध्यापन और स्व-अधिगम के रूप में शिक्षण शामिल हैं। कुछ शैक्षणिक प्रक्रियाएँ जो अन्य देशों से अपनाई जा सकती हैं, उनमें विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक स्वभाव, इंजीनियरिंग क्षमताओं और सौंदर्य संबंधी संवेदनाओं को बढ़ावा देने के लिए एस.टी.ई.एम./ एस.टी.ई.ए.एम. शिक्षा और स्कूल के घंटों के दौरान विद्यार्थियों के बीच स्वच्छता और ईमानदारी का विकास शामिल है जैसा कि जापान की स्कूली शिक्षा प्रणाली में पाया जाता है।

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

दिल्ली के स्कूलों में उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान की संकल्पनाओं को समझने में उच्च प्राथमिक विज्ञान किट (यू.पी.एस.के.) की प्रभावकारिता का आकलन करने हेतु एक अध्ययन

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान की संकल्पनाओं को समझने में उच्च प्राथमिक विज्ञान किट की प्रभावकारिता का पता लगाना और विज्ञान की संकल्पनाओं को समझने में इसकी प्रभावकारिता में सुधार

के लिए किट में आवश्यक संशोधनों का पता लगाना था। अधिकांश विद्यार्थियों में अध्यापन-अधिगम के दौरान उच्च प्राथमिक विज्ञान किट की वस्तुओं के प्रयोग का प्रभाव सकारात्मक पाया गया। जबकि, यह भी देखा गया है कि अधिकांश विद्यार्थियों ने व्यक्तिपरक प्रश्नों को हल करने का प्रयास नहीं किया है। स्कूल द्वारा आयोजित विभिन्न परीक्षणों/परीक्षाओं में विद्यार्थियों के निष्पादन पर विचार करके भी निष्कर्षों पर विचार किया जाता है।

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति 2022–23

अध्येतावृत्ति की योजना के अनुसार, अध्येतावृत्ति की निरंतरता के लिए हर वर्ष रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येता की प्रगति रिपोर्ट की समीक्षा की जाती है। इस संबंध में, 16 डॉक्टरेट अध्येता की प्रगति की समीक्षा के लिए संवीक्षा-सह-प्रगति निगरानी समिति (एस.पी.एम.सी.) की बैठक 2–3 फरवरी, 2023 को आभासी विधि के माध्यम से बुलाई गई थी। संवीक्षा-सह-प्रगति निगरानी समिति की बैठक के विवरण के अनुसार उचित कार्रवाई की गई है।

ई.आर.आई.सी. की संवीक्षा-सह-प्रगति निगरानी समिति (एस.पी.एम.सी.) की दो दिवसीय बैठक 1–2 मार्च, 2023 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में आयोजित की गई और 10 डॉक्टरेट अध्येताओं को अध्येतावृत्ति के लिए अनुशंसित किया गया। शैक्षणिक वर्ष 2022–23 के दौरान, 22 अध्येताओं को अध्येतावृत्ति/आकस्मिकता राशि जारी की गई है। नौ अध्येताओं ने अपनी पीएच.डी. पूरी कर ली है और अपना शोध प्रबंध प्रभाग को प्रस्तुत किया।

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) 2021

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 12 नवंबर, 2021 को आयोजित किया गया था, जिसमें देश के सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के 720 जिलों के 1,18,274 स्कूलों के 34 लाख से अधिक बच्चों और 5 लाख अध्यापकों को शामिल किया गया। एन.ए.एस. 2021 के माध्यम से उत्पन्न डेटा के विश्लेषण से कक्षा 3, 5, 8 और 10 का राष्ट्रीय औसत निष्पादन प्रदान किया गया है।

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2021 रिपोर्ट 25 मई, 2022 को जारी की गई थी। राष्ट्रीय रिपोर्ट, सभी 37 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के राज्य रिपोर्ट कार्ड और 720 जिलों की जिला रिपोर्ट सार्वजनिक डोमेन में उपलब्ध हैं और इन्हें निम्नलिखित लिंक https://ncert.nic. in/NAS.php या https://nas.gov.in /report-card/2021 का उपयोग करते हुए एक्सेस किया जा सकता है।

मूलभूत अधिगम अध्ययन 2022

पूरे भारत में 23 से 26 मार्च, 2022 तक मूलभूत अधिगम अध्ययन (एफ.एल.एस.) नामक मूलभूत शिक्षा के लिए बड़े पैमाने पर आकलन और बेंचमार्किंग अध्ययन प्रचालित किया गया था। इस अध्ययन का उद्देश्य कक्षा 3 के विद्यार्थियों के मूलभूत सीखने के स्तर की प्रत्यक्ष समझ बनाना था। मूलभूत अधिगम अध्ययन 20 भाषाओं— असमिया, बंगाली, बोडो, अंग्रेजी, गारो, गुजराती, हिंदी, कन्नड़, खासी, कोंकणी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, मिज़ो, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु और उर्दू आयोजित किया गया था, जिनका उपयोग संबंधित राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों में शिक्षा के माध्यम के रूप में किया जा रहा है। मूलभूत अधिगम अध्ययन में 10,000 स्कूलों के कक्षा 3 के लगभग 86,000 विद्यार्थियों को शामिल किया गया। अध्ययन के नमूने में राज्य सरकार के स्कूल, सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल, निजी मान्यता प्राप्त और केंद्र सरकार के स्कूल शामिल थे। इस शोध में 18,000 से अधिक अध्यापकों ने भाग लिया। बच्चों के सीखने के स्तर की पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त करने के लिए स्कूल

के प्रधान अध्यापकों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के लिए तीन प्रश्नावलियाँ भी अध्ययन के एक भाग के रूप में प्रशासित की गईं। मूलभूत अधिगम अध्ययन 2022 की रिपोर्ट सितंबर, 2022 में जारी की गई थी। रिपोर्टिंग राष्ट्रीय, राज्य और जिला (केवल अल्प निष्पादन वाले जिलों के लिए) स्तर पर की गई है। मूलभूत अधिगम अध्ययन रिपोर्ट के लिए लिंक https://dsel.education.gov.in/fls_2022 या https://ncert.nic.in/fls.php है।

अल्प निष्पादन वाले जिलों में उपलब्धि सर्वेक्षण

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) बड़े पैमाने पर विद्यार्थियों के सीखने का एक सर्वेक्षण है जो भारत की शिक्षा प्रणाली के स्थिति की निगरानी के लिए 2001 से समय-समय पर आयोजित किया जाता है। यह सर्वेक्षण सरकारी, सरकारी सहायता प्राप्त, निजी मान्यता प्राप्त, केंद्र सरकार के स्कूलों में कक्षा 3, 5, 8 और 10 के विद्यार्थियों के लिए किया जाता है। सबसे हाल में किए गए सर्वेक्षण का आयोजन 13 नवंबर, 2021 को किया गया था, जिसमें सभी 36 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के 701 जिलों के 1,10,000 स्कूलों के 2.2 मिलियन विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का आकलन किया गया। सर्वेक्षण में दस 'अल्प निष्पादन वाले जिलों' (एल.पी.डी.) की पहचान की गई जहाँ विद्यार्थियों का निष्पादन स्तर राष्ट्रीय औसत से नीचे था। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) और अन्य शैक्षिक मापदंडों के परिणामों के आधार पर अल्प निष्पादन वाले जिलों (एल.पी.डी.) के रूप में पहचाने जाने वाले जिले, चांगलांग (अरुणाचल प्रदेश), धमतरी (छत्तीसगढ़), दीव (दमन और दीव), अलीराजपुर (मध्य प्रदेश), यवतमाल (महाराष्ट्र), संबलपुर (ओडिशा), मुक्तसर (पंजाब), तिरुचिरापल्ली (तमिलनाडु), आदिलाबाद (तेलंगाना) और शामली (उत्तर प्रदेश) थे।

रा.शै.अ.प्र.प. को 'देश के अल्प निष्पादन वाले जिलों (एल.पी.डी.) के निष्पादन में सुधार के राष्ट्रीय मिशन' नामक पहल के तहत निष्पादन को उन्नत करने के लिए इन एल.पी.डी. में दो सर्वेक्षण करने की जिम्मेदारी दी गई जिसका शुभारंभ 22 जनवरी, 2022 को माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किया गया था। रा.शै.अ.प्र.प. ने इस उद्देश्य के लिए एक प्राइमर बनाया, जिसमें मध्यावधि उपलब्धि सर्वेक्षण और अंतिम अवधि का उपलब्धि सर्वेक्षण शामिल है। कक्षा 3 और 5 में विद्यार्थियों के निष्पादन का आकलन करने के लिए, 22 नवंबर, 2022 को एक मध्यावधि उपलब्धि सर्वेक्षण (एम.टी.ए.एस. 2022) आयोजित किया गया और अंतिम अवधि का उपलब्धि सर्वेक्षण (ई.टी.ए.एस. 2023) क्रमशः 16 मार्च, 2023 को इन जिलों में नौ भाषाओं में आयोजित किया गया। सर्वेक्षण में विद्यार्थियों की प्रगति पर उच्च गुणवत्ता वाले डेटा एकत्र किए गए जो सर्वेक्षण प्रशासन में अंतराल को कम करने में मदद करेंगे और प्रणालीगत सुधारों के माध्यम से उनकी स्थिरता सुनिश्चित करने के लिए समयबद्ध लक्ष्य और परिणाम प्राप्त करेंगे।

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

स्कूली शिक्षा में सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) 4.7 – नीतियाँ और व्यवहार

सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.) 4.7 में कहा गया है कि वर्ष 2030 तक यह सुनिश्चित करें कि सभी विद्यार्थी सतत विकास को बढ़ावा देने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल प्राप्त करें, जिसमें अन्य बातों के अलावा, सतत विकास और सतत जीवन शैली, मानवाधिकार, जेंडर समानता, शांति और अहिंसा की संस्कृति के प्रचार, वैश्विक नागरिकता और सांस्कृतिक विविधता की सराहना और सतत विकास में संस्कृति का योगदान के लिए शिक्षा शामिल है। एस.डी.जी. लक्ष्य 4.7 सतत विकास शिक्षा (ई.एस.डी.) और वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) सहित उभरती संकल्पनाओं को अपनाता है। यह अध्ययन विद्यालयों में कार्यान्वित जी.सी.ई.डी. और ई.एस.डी. से संबंधित पाठ्यचर्या परिपाटियों की जाँच करने और इस बात का विश्लेषण करने के उद्देश्य से किया गया है कि (i) वैश्विक नागरिकता और (ii) सतत विकास के लिए शिक्षा, जिसमें जेंडर समानता और मानव अधिकार

शामिल हैं, राष्ट्रीय/राज्य शिक्षा नीतियों और स्कूली शिक्षा के पाठ्यचर्या में सभी स्तरों पर मुख्यधारा में शामिल हो। एस.डी.जी. 4.7 और नीतियों तथा अभ्यासों से संबंधित साहित्य की समीक्षा की गई है। लक्षित एस.डी.जी. 4.7 के संबंध में राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की स्थिति को समझने के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों की नीतियों, पाठ्यचर्या, अध्यापक शिक्षा और आकलन में ई.एस.डी. और जी.सी.ई.डी. के प्रतिबिंब का विश्लेषण किया गया है। एस.डी.जी. 4.7 से संबंधित पाठ्यक्रम अभ्यासों पर गहन प्रकरण अध्ययन केरल, आंध्र प्रदेश और हिमाचल प्रदेश राज्यों में आयोजित किए गए थे। प्रारंभिक निष्कर्ष पाठ्यक्रम सामग्री में ई.एस.डी. और जी.सी.ई.डी. विषयों को समेकित करके, नए शिक्षणशास्त्र का उपयोग करते हुए, पाठ्यचर्या अभ्यासों के आकलन और कार्यान्वयन में सुधार करके पाठ्यक्रम को मजबूत करने की आवश्यकता की ओर संकेत करते हैं जो जी.सी.ई.डी. और ई.एस.डी. दक्षताओं के निर्माण में मदद कर सकते हैं। पाठ्यक्रम को विद्यार्थियों को सीखने में मदद करने, सकारात्मक मूल्यों और दृष्टिकोणों को विकसित करने और सामान्य कौशल के विकास में मदद करने की आवश्यकता है जो शिक्षार्थियों को भविष्य में चुनौतियों से निपटने के लिए ज्ञान और कौशल से लैस करता है।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

कक्षा 9 के स्कूली विद्यार्थियों की विज्ञान में उपलब्धि पर संवर्धित वास्तविकता आधारित ई-सामग्री और वर्चुअल लैब की प्रभावशीलता

वर्चुअल प्रयोगशाला और संवर्धित वास्तविकता ई-सामग्री के प्रति विद्यार्थियों और अध्यापकों की प्रतिक्रिया के लिए एक पैमाना विकसित किया गया था। इस हस्तक्षेप के लिए कुल 15 ए.आर. और 15 वी.आर. ई-सामग्री का चयन किया गया। दिल्ली के 5 चयनित स्कूलों में डेटा संग्रह पूरा किया गया (परीक्षण से पहले के लिए 496 विद्यार्थी और परीक्षण के बाद के लिए 390 विद्यार्थी)।

समग्र शिक्षा के अंतर्गत आई.सी.टी. @ स्कूल योजना का एक मूल्यांकनापरक अध्ययन

अनुसंधान को पूरक बनाने के लिए संबंधित साहित्य की समीक्षा की गई। सी.आई.ई.टी. द्वारा विकसित परख ऐप का पता लगाया गया। अनुसंधान टूलों में प्रश्नावली शामिल थी (प्रधानाचार्य, आई.टी. प्रशिक्षक, अध्यापक, विशेष अध्यापक और विद्यार्थियों के लिए एक-एक) जिसे डेटा संग्रह के लिए अंतिम रूप दिया गया और डेटा संग्रह 10 प्रतिशत (कुल जिले–10 एल.पी.डी.) से 10 प्रतिशत स्कूलों में किया गया।

विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के समग्र विकास पर रा.शै.अ.प्र.प. के आई.सी.टी. आधारित सुलभ हस्तक्षेप (यू.डी.एल. आधारित ई-सामग्री) की प्रभावशीलता

कक्षा 1–5 के लिए रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों पर आधारित 596 भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल.) में वीडियो और यूनिवर्सल डिजाइन ऑफ अधिगम (यू.डी.एल.) के सिद्धांतों का पालन करते हुए 115 ऑडियो पुस्तकें विकसित की गई हैं। इन ई-सामग्री को एक अच्छी तरह से स्थापित व्यवस्थित प्रक्रिया के बाद तैयार किया गया था और दीक्षा (स्कूल शिक्षा के लिए डिजिटल ढाँचा), ई-पाठशाला, एन.आर.ओ.ई.आर. और पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच.-टीवी चैनलों और रेडियो प्रसारण के माध्यम से हितधारकों के साथ साझा करने से पहले इनकी बाहरी तौर पर समीक्षा की गई थी। इन यू.डी.एल. आधारित ई-सामग्री के बारे में जागरूकता का अध्ययन करने और अंतिम प्रयोक्ताओं की प्रतिक्रिया इकट्ठा करने के उद्देश्य से एक अध्ययन आयोजित किया गया था। शोध के डेटा विशेष अध्यापकों (458), नियमित अध्यापकों (760) और विद्यार्थियों (725) से एकत्र किए गए थे। अधिकांश नियमित अध्यापकों को ऑडियो पुस्तकों (58 प्रतिशत) और रा.शै.अ.प्र.प. पर आई.एस.एल. वीडियो (71 प्रतिशत), पी.एम. ई-विद्या पर वीडियो (59 प्रतिशत), रा.शै.अ.प्र.प. के आधिकारिक यूट्यूब चैनल पर वीडियो (44 प्रतिशत),

और ई-पाठशाला (57 प्रतिशत) के बारे में जानकारी नहीं थी। जबकि, (58 प्रतिशत) प्रतिक्रिया देने वाले विशेष अध्यापक सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार किए गए यू.डी.एल. आधारित आई.एस.एल. वीडियो से अवगत थे। हस्तक्षेप के बाद नियमित अध्यापकों ने इस बात पर प्रकाश डाला कि आई.एस.एल. वीडियो कक्षाओं में उपयोग करना आसान है (64 प्रतिशत), आई.एस.एल. वीडियो की सामग्री को समझना आसान है (66 प्रतिशत), इनसे ध्यान लगा रहता है (62 प्रतिशत), कक्षा में विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाते हैं (68 प्रतिशत), नि:शक्तता के बावजूद सभी के लिए आकर्षक बने रहते हैं (61 प्रतिशत), और गणित (68 प्रतिशत) एवं विज्ञान (69 प्रतिशत) में संकल्पना समझने की सुविधा प्रदान करते हैं।

माध्यमिक स्तर पर सेवाकालीन अध्यापकों की आई.सी.टी. दक्षता और तकनीकी-शिक्षणशास्त्र समेकन पर शैक्षणिक पाठ्यक्रमों में आई.सी.टी. की प्रभावशीलता

कुल 30 देशों की योग्यता रूपरेखा की समीक्षा पूरी की गई और अनुसंधान के दौरान ध्यान केंद्रित करने वाली प्रमुख दक्षताओं की पहचान की गई। तकनीकी शिक्षणशास्त्र सामग्री एकीकरण (टी.पी.सी.आई.) पैकेज रूपरेखा का विकास पूरा किया गया। आई.सी.टी. योग्यता पैमाने का विकास जिसमें ज्ञान, दृष्टिकोण और कौशल घटक शामिल थे, पूरा किया गया और प्रतिक्रिया प्रश्नावली का विकास किया गया। ऑनलाइन इंडक्शन कोर्स का विकास किया जा रहा है और अंतिम चरण में है।

कास्केड और प्रत्यक्ष हस्तक्षेप मॉडल के माध्यम से कार्यान्वित साइबर सुरक्षा और संरक्षा जागरूकता पैकेज की प्रभावशीलता पर एक अध्ययन

एक हस्तक्षेप अनुसूची और उपलब्धि परीक्षण विकसित किया गया था। दो दिवसीय हस्तक्षेप आयोजित किया गया और इसमें 30 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और 5 स्वायत्त संगठनों के लगभग 900 प्रतिभागियों ने भाग लिया। हस्तक्षेप के बाद आकलन किया गया और लगभग 70 प्रतिशत और उससे अधिक अंक प्राप्त करने वालों को प्रमाणित किया गया। साइबर सुरक्षा और संरक्षा के पाँच आयामों— तकनीकी, सामाजिक, नैतिक, मनोवैज्ञानिक और कानूनी पक्ष के संबंध में डेटा विश्लेषण किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष से पता चलता है कि हस्तक्षेप मनोवैज्ञानिक आयाम में अधिक और तकनीकी आयाम में कम जागरूकता पैदा कर सकता है। इस अध्ययन में उन क्षेत्रों की भी पहचान की गई जिनमें साइबर सुरक्षा और संरक्षा के संदर्भ में समग्र जागरूकता पैदा करने के लिए अधिक हस्तक्षेप की आवश्यकता है।

कोविड महामारी के दौरान प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों द्वारा अपनाई गई ऑनलाइन शिक्षा की विभिन्न विधियों का एक अध्ययन

संबंधित शोध के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए संबंधित साहित्य की समीक्षा की गई। अध्यापकों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए अंग्रेजी और हिंदी में अनुसंधान उपकरण विकसित किए गए और उन्हें संचालित और अंतिम रूप दिया गया। चार राज्यों— गुजरात, सिक्किम, जम्मू और कश्मीर तथा दिल्ली (प्रत्येक राज्य में 4 स्कूल) में भी डेटा संग्रह पूरा किया गया और डेटा विश्लेषण भी किया गया।

स्कूल स्तर पर आई.सी.टी. हस्तक्षेपों को लागू करना— ब्लॉक स्तरीय अनुसंधान अध्ययन

यह अध्ययन रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अपनाए गए आकांक्षी ब्लॉकों में ब्लॉक स्तर पर आई.सी.टी. हस्तक्षेप की स्थिति का अध्ययन करने, हस्तक्षेप के लिए एक योजना विकसित करने और ब्लॉक के अध्यापकों के बीच हस्तक्षेप के प्रभाव का अध्ययन करने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था। इस अध्ययन के क्षेत्रों में राजस्थान में ब्लॉक हुर्दा, उड़ीसा में चिल्का और मध्य प्रदेश में इछावर शामिल थे। पहले चरण में तीन ब्लॉकों के 139 स्कूलों में

आई.सी.टी. एकीकरण की स्थिति का आकलन करने के लिए छह चर अर्थात बुनियादी ढाँचा, प्रशिक्षण, योग्यता, मनोवृत्ति, बाधाओं और उपयोग का अध्ययन किया गया, जिसके लिए 130 प्रधानाचार्यों और 658 अध्यापकों पर टूल्स प्रशासित किए गए थे। चरण 1 के प्रमुख निष्कर्ष यह थे कि क) हुर्दा के अध्यापकों में उच्चतम योग्यता थी, इसके अधिकतम अध्यापकों (46.3 प्रतिशत) का योग्यता स्तर मध्यम था, जबकि इछावर (66.9 प्रतिशत) और चिल्का (83.1 प्रतिशत) दोनों में अधिकतम योग्यता थी। कम योग्यता स्तर वाले अध्यापक, अध्यापक स्मार्टफोन का उपयोग करने और सोशल मीडिया का उपयोग करने में सबसे अधिक सक्षम थे और एफ.ओ.एस.एस. का उपयोग करने में सबसे कम सक्षम थे; ख) अध्यापकों का एकमत रुख था (91.20 प्रतिशत सहमत) कि कक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग से विद्यार्थियों के सीखने में सुधार करने में मदद मिलती है और यह समय की बर्बादी नहीं है (74.50 प्रतिशत सहमत), अधिकतम अध्यापक शिक्षा में एफ.ओ.एस.एस. के उपयोग के लाभों के बारे में अनिर्णीत थे (48.00 प्रतिशत) जबकि कई अध्यापकों की राय थी कि आई.सी.टी. के उपयोग से अध्यापकों का महत्व कम हो जाता है (40 प्रतिशत सहमत), अध्यापकों का शिक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग के प्रति समग्र सकारात्मक दृष्टिकोण था (औसत माध्य स्कोर = 2.42); ग) आई.सी.टी. के एकीकरण में अध्यापकों द्वारा पहचानी गई प्रमुख बाधाएँ आई.सी.टी. के लिए पर्याप्त धन की कमी (80.57 प्रतिशत), स्कूल में व्यक्तिगत रूप से अध्यापकों के लिए कंप्यूटर की सुविधा की कमी (82.19 प्रतिशत) और घर पर पर्सनल कंप्यूटर की कमी (74.06 प्रतिशत) थीं; घ) चिल्का में आई.सी.टी. (औसत स्कोर ≤ 1.67) का कम उपयोग करने वाले अध्यापकों की संख्या सबसे अधिक (91.2 प्रतिशत) थी, उसके बाद इछावर (71.8 प्रतिशत) थे।

अध्ययन के दूसरे चरण के लिए, चरण 1 के डेटा के विश्लेषण से हस्तक्षेप के क्षेत्रों की पहचान की गई और विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में हस्तक्षेप प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किया गया। प्रथम चरण के उप-नमूना को प्रशिक्षण प्रदान किया गया जिसमें तीनों ब्लॉकों के 91 अध्यापकों को अलग-अलग 5 दिवसीय आमने-सामने के प्रशिक्षण में अर्ध-प्रयोगात्मक (परीक्षण से पहले और उसके बाद एक समूह) डिजाइन का उपयोग करते हुए हस्तक्षेप के प्रभाव का अध्ययन किया गया। प्रभाव अध्ययन के प्रमुख निष्कर्षों से पता चला कि शिक्षा में आई.सी.टी. के उपयोग के प्रति अध्यापकों के दृष्टिकोण में कोई अंतर नहीं था, हालाँकि सभी अध्यापक तटस्थ से सकारात्मक दृष्टिकोण की श्रेणी में थे, लेकिन हस्तक्षेप के बाद शिक्षा में आई.सी.टी. का उपयोग करने में अध्यापकों के ज्ञान और कौशल में अंतर देखा गया।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल

कक्षा 6–8 के लिए स्कूलों में 10 बैग रहित दिवसों के कार्यान्वयन हेतु दिशानिर्देश का परीक्षण

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार, कला, क्विज़, खेल और व्यावसायिक शिल्प से जुड़ी विभिन्न प्रकार की संवर्धन गतिविधियों के लिए पूरे वर्ष बैग रहित दिवसों को प्रोत्साहित किया जाना है। इसे देखते हुए, पी.एस.एस.सी. आई.वी.ई. ने स्कूलों में 10 बैग रहित दिवस गतिविधियों के कार्यान्वयन के लिए एक दिशानिर्देश विकसित किया है। सत्यापन और विश्वसनीयता जाँच के लिए गतिविधियों को आजमाने और सत्यापित करने के लिए यह परियोजना शुरू की गई थी। इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य स्कूलों में 10 बैग रहित दिवसों की गतिविधियों के दिशानिर्देश को आजमाना; दिशानिर्देश की कार्यान्वयन समस्याओं की पहचान करना और दिशानिर्देश के सफल कार्यान्वयन के लिए कार्यनीतियों का सुझाव देना है। कक्षा 9–12 तक व्यावसायिक विषयों वाले आठ स्कूलों को चार अलग-अलग स्थानों, जैसे कि ग्रामीण, अर्ध-शहरी, शहरी और जनजातीय क्षेत्रों से चुना गया था। अध्ययन के लिए ध्यान

में रखी गई इकाइयाँ विद्यार्थियों और अध्यापकों द्वारा प्रदर्शित पूर्व-व्यावसायिक संकल्पनाओं की रुचि, उत्साह और मौज-मस्ती की भावना, उत्साह और तनाव-मुक्त सीखने के स्तर थे। अध्यापकों और विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं सहित परीक्षण अवलोकनों की रिपोर्टिंग के लिए एक प्रोफार्मा विकसित किया गया। अध्ययन से पता चलता है कि विद्यार्थियों और अध्यापकों ने स्कूल में लागू किए जाने वाले दिशानिर्देश की सराहना की है। इससे विद्यार्थियों को विभिन्न व्यावसायिक गतिविधियों में शामिल करने में मदद मिलेगी और उन्हें विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों से परिचित भी किया जाएगा।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

माध्यमिक स्तर पर हस्तक्षेप लागू करना— ब्लॉक स्तरीय अनुसंधान

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर ने ब्लॉक स्तर पर आवश्यकता आधारित हस्तक्षेप को कार्यान्वित करने और इसकी प्रभावशीलता को देखने के लिए वर्ष 2018–19 से राजस्थान में भीलवाड़ा जिले के हुर्दा ब्लॉक के 167 विद्यालयों में किया है। एन.ए.एस. 2017 में जिले के खराब निष्पादन के आधार पर ब्लॉक का चयन किया गया है। विद्यार्थियों के आधारभूत आकलन और अध्यापकों के आवश्यकता आकलन डेटा के आधार पर आवश्यकता-आधारित हस्तक्षेप की योजना बनाई गई है। कला समेकित अधिगम (ए.आई.एल.) और स्कूल-आधारित आकलन (एस.बी.ए.) का उपयोग करते हुए हस्तक्षेप प्रदान किया गया है। अध्यापकों को ऑनसाइट सहायता प्रदान करने और सहकर्मी अधिगम को बढ़ावा देना। प्रत्येक पंचायत से दो अध्यापकों की पहचान की गई है और उन्हें 'कला समेकित अधिगम' के माध्यम से सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने के लिए मास्टर प्रशिक्षकों के रूप में प्रशिक्षित किया गया है।

वैकल्पिक कार्यनीतियों के माध्यम से भी हस्तक्षेप लागू किए जा रहे हैं। इनमें से कुछ में ब्लॉक के विद्यार्थियों के बीच सीखने के स्तर और दक्षताओं के विकास को आधारभूत मूल्यांकन सर्वेक्षण (29–30 मार्च, 2019 को), नमूना आधारित मध्यावधि आकलन (5–9 सितंबर, 2022 को) और टर्मिनल असेसमेंट (10–11 मार्च, 2023) द्वारा सीखने के प्रतिफलों पर आधारित परीक्षण आइटम द्वारा ट्रैक किया गया है। इस अध्ययन की आवश्यकताओं के अनुसार प्रतिफलों का मूल्यांकन और विश्लेषण किया गया है। 31 जनवरी, 2023 से 3 फरवरी, 2023 तक स्वामी विवेकानन्द स्कूल, तस्वारिया में ब्लॉक के 167 स्कूलों के अध्यापकों के लिए स्तर विशिष्ट शिक्षण प्रतिफल प्राप्त करने के लिए व्यावहारिक कार्यशालाओं का आयोजन किया गया है। इन कार्यशालाओं के दौरान, 445 अध्यापकों को अल्प निष्पादन वाले शिक्षण प्रतिफलों को प्राप्त करने के लिए उपयुक्त शिक्षणशास्त्र की खोज करने के अवसर प्रदान किए गए। एन.ए.एस. 2021 जिला रिपोर्ट कार्ड का विश्लेषण करके विषय विशिष्ट आवश्यकता आधारित हस्तक्षेपों का पता लगाया गया है।

कार्यान्वित हस्तक्षेपों के कुछ परिणाम यह थे कि राज्य रिपोर्ट कार्ड में विद्यार्थियों के सीखने के स्तर और कक्षा 3, 5 और 8 के लिए राजस्थान के 33 जिलों के बीच रैंकिंग में महत्वपूर्ण सुधार देखा गया है; टर्मिनल मूल्यांकन में सभी कक्षाओं और विषयों में विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफलों में उल्लेखनीय सुधार दिखाया गया है; कार्यान्वित गुणवत्ता हस्तक्षेपों से ब्लॉक के स्कूलों में कक्षा प्रक्रियाओं में बदलाव आया है। विषय-विशिष्ट अधिगम प्रतिफलों के साथ कला को समेकित करके, बढ़ी हुई रुचि, जुड़ाव और भागीदारी के साथ विद्यार्थियों के सीखने के प्रतिफल में सुधार किया जा रहा है। प्रदान किए गए हस्तक्षेपों पर प्रकरण अध्ययन के निष्कर्ष कार्यान्वित हस्तक्षेपों की प्रभावशीलता को प्रतिबिंबित कर रहे हैं और भविष्य के हस्तक्षेपों की योजना बनाने के लिए भी मार्गदर्शन कर रहे हैं। साझाकरण मंच और अध्यापक मंडलियों ने अध्यापकों को शैक्षणिक अभ्यासों को साझा करने की सुविधा दी है। सहकर्मी अधिगम ने ब्लॉक में सीखने का माहौल बनाया है।

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के संदर्भ में ई.सी.सी.ई. में बच्चों के लिए शैक्षणिक अभ्यासों का अध्ययन

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न ई.सी.सी.ई. केंद्रों के स्कूल तैयारी कार्यक्रम के लिए शिक्षणशास्त्र और अभ्यासों की पहचान करना और तुलना करना तथा आर.आई.ई., अजमेर और अन्य ई.सी.सी.ई. केंद्रों में भाग लेने वाले बच्चों के बीच संज्ञानात्मक, पूर्व-शैक्षणिक, भाषा, स्व-सहायता, सामाजिक और खेल के मैदानों में स्कूल की तैयारी के विभिन्न पहलुओं का पता लगाना था। इसके लिए एक टूल का विकास किया गया और कार्यशाला विधि में इसकी जाँच की गई। डेटा विभिन्न ई.सी.सी.ई. केंद्रों जैसे चार आँगनवाड़ी केंद्रों, सेवा-पूर्व और प्राथमिक केंद्रों, आर.आई.ई., भोपाल, भुवनेश्वर, मैसूरु और अजमेर के प्रायोगिक बहुउद्देश्यीय स्कूलों में एकत्र किया गया था। मूलभूत सुविधाओं और शैक्षणिक अभ्यासों पर डेटा भी दो निजी केंद्रों से एकत्र किया गया था। यह पाया गया कि मूल ढाँचे और संसाधनों में अंतर के अलावा विभिन्न प्रकार के ई.सी.सी.ई. केंद्रों द्वारा उपयोग किए जाने वाले शिक्षणशास्त्र में भी अंतर है। विभिन्न केंद्रों पर ई.सी.सी.ई. में भाग लेने वाले बच्चों की मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के स्तर में भी अंतर पाया गया। एफ.एल.एन. स्तर पर शिक्षणशास्त्र और अभ्यासों को मानकीकृत करने की आवश्यकता है।

उत्तरी क्षेत्र के स्कूलों में ऑनलाइन और डिजिटल संसाधनों के उपयोग से अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच विकसित दक्षताओं का अध्ययन

यह शोध उत्तरी क्षेत्र के सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के लिए किया गया था। अध्ययन में डेटा संग्रह और अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र के 10 स्कूलों की पहचान की गई। स्कूलों के दौरे में नमूना राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों के लिए डेटा संग्रह किया गया था। इस अध्ययन के लिए 86 स्कूलों के 770 अध्यापकों से डेटा एकत्र किया गया। ऑनलाइन और डिजिटल संसाधनों के उपयोग पर दक्षताओं के विकास के लिए विकसित दक्षताओं का परीक्षण चार स्तरीय पैमाने— कोई दक्षता नहीं, बुनियादी, मध्यवर्ती और उन्नत दक्षता पर किया जाता है। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि ऑनलाइन और डिजिटल संसाधनों के उपयोग से अध्यापकों और विद्यार्थियों के बीच केवल बुनियादी स्तर की दक्षताएँ विकसित हुई हैं। इससे शिक्षा में ऑनलाइन और डिजिटल संसाधनों के उपयोग को समझने में मदद मिलेगी और शिक्षा अधिकारियों को अपने राज्य के स्कूलों में संसाधनों को बेहतर बनाने और आधुनिक बनाने के लिए सिफ़ारिशें की जाएँगी।

संघ राज्य क्षेत्र लद्दाख के माध्यमिक विद्यालयों में परिवहन सुविधाओं के उपयोग और प्रभाव का अध्ययन

यह शोध भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय की समग्र शिक्षा योजनाओं के तहत परिवहन सुविधाओं की स्थिति और प्रभाव का पता लगाने के लिए किया गया था। संघ राज्य क्षेत्र लद्दाख के माध्यमिक विद्यालयों में परिवहन सुविधाओं के उपयोग की स्थिति और माध्यमिक विद्यालयों में विद्यार्थियों के नामांकन पर इसके प्रभाव और परिवहन योजना के तहत संघ राज्य क्षेत्र लद्दाख में उपयोग की जाने वाली परिवहन सुविधाओं के पारंपरिक तरीकों और सर्वोत्तम अभ्यासों की जाँच की गई है।

यह अध्ययन 21–25 नवंबर, 2022 तक लेह के 44 स्कूलों और लद्दाख के कारगिल जिले के 19 स्कूलों में आयोजित किया गया था और तदनुसार आँकड़ा संग्रहण का कार्य किया गया। आँकड़ा संग्रहण हेतु राज्य परियोजना निदेशक कार्यालय, विद्यालय प्रमुखों, विद्यार्थियों और अभिभावकों के लिए प्रश्नावलियाँ तैयार की गईं। इन आँकड़ों के विश्लेषण से पता चलता है कि समग्र शिक्षा के मानदंडों के अनुसार योजना को लागू करने के लिए प्रयास ईमानदारी से किए गए हैं। जबकि, योजना के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए कुछ बिंदुओं पर और ध्यान देने की आवश्यकता है।

उत्तराखंड राज्य में कोविड-19 के दौरान प्राथमिक शिक्षा में सीखने में अंतराल, चुनौतियाँ और नवाचार

इस शोध का उद्देश्य कोविड-19 महामारी के कारण विद्यार्थियों के समग्र विकास (संज्ञानात्मक, स्वास्थ्य और कल्याण, सामाजिक-व्यक्तिगत) में अंतराल का अध्ययन करना था। कोविड के दौरान अध्यापन-अधिगम में अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और शिक्षा पदाधिकारियों को पेश आई चुनौतियाँ और अपनाए गए नवाचार संगत शोध प्रश्न थे। अध्ययन में मिश्रित अनुसंधान डिजाइन का पालन किया गया है और बहु-चरण नमूनाकरण तकनीकों का उपयोग करते हुए नमूनाकरण किया गया है।

इस शोध अध्ययन के लिए उत्तराखंड के दो जिलों के 40 विद्यालयों, जिसमें टिहरी-गढ़वाल को सामान्य जिले और हरिद्वार को आकांक्षी जिले के रूप में चिह्नित किया गया है। इसमें स्वास्थ्य और कल्याण, विद्यार्थियों के सामाजिक-व्यक्तिगत विकास के बारे में विद्यार्थियों के लिए प्रश्नावली, अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षा पदाधिकारियों, माता-पिता और विद्यार्थियों को पेश आई चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए प्रश्नावली, अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों, शिक्षा पदाधिकारियों और अभिभावकों द्वारा किए गए नवाचारों का अध्ययन करने के लिए प्रश्नावली और कोविड के दौरान आने वाली चुनौतियों का अध्ययन करने के लिए विद्यार्थियों के साथ केंद्रित समूह चर्चा का उपयोग किया गया है। कार्यशाला विधि में विकसित उपकरणों का उपयोग कुल 40 स्कूलों; प्रत्येक जिले के ग्रामीण और शहरी ब्लॉक से 5 स्कूलों में डेटा संग्रह के लिए किया गया है। एन.ए.एस. 2021 के परिणाम का उपयोग कक्षा 3 और 5 में सीखने में अंतर की पहचान के लिए किया गया है। अध्ययन में एन.ए.एस. 2021 के जिला रिपोर्ट कार्ड के अनुसार विषय विशिष्ट सीखने के प्रतिफलों में आए अंतराल का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। इंटरनेट कनेक्टिविटी/डिजिटल गैजेट की कमी, साथ ही माता-पिता के समर्थन की कमी, अध्यापकों की सीमित प्रतिक्रिया और अध्यापक प्रशिक्षण की कमी रिपोर्ट की गई कुछ प्रमुख चुनौतियाँ थीं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

एन.ई.पी. 2020 की सिफ़ारिशों के आलोक में महाराष्ट्र द्वारा तैयार एफ.एल.एन. की पाठ्यपुस्तकों का एक अध्ययन

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य है (क) महाराष्ट्र द्वारा तैयार एफ.एल.एन. की पाठ्यपुस्तकों का अध्ययन करना, (ख) यह आकलन करना कि क्या पाठ्यपुस्तकें सीखने के प्रतिफलों और निपुण भारत दिशानिर्देशों के अनुसार तैयार की गई हैं, (ग) यह आकलन करना कि क्या पाठ्यपुस्तकों में विद्यार्थियों को उन्हें पढ़ने के लिए प्रेरित करने के लिए अच्छे/पर्याप्त चित्रण, मुद्रण आदि हैं, और (घ) पाठ्यपुस्तकों में सुधार के लिए परिवर्तन का सुझाव देना। अनुसंधान में गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों दृष्टिकोणों को शामिल करते हुए एक विश्लेषणात्मक विधि का उपयोग किया गया। अध्ययन में यह देखने के लिए कुछ टूल्स भी विकसित किए जाएँगे कि पाठ्यपुस्तकें विद्यार्थियों में सीखने के प्रतिफलों को पूरा करने में सहायता करेंगी या नहीं। इसके अलावा, पाठ्यपुस्तक के चित्र, फॉन्ट, मुद्रण आदि का मात्रात्मक और गुणात्मक अध्ययन भी किया जाएगा, ताकि यह देखा जा सके कि क्या वे विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकें पढ़ने के लिए प्रेरित करते हैं। चूँकि यह एक राज्य की आवश्यकता है इसलिए निष्कर्षों और सुझावों को महाराष्ट्र राज्य के साथ साझा किया जाएगा। इसके अलावा, इन निष्कर्षों और सुझावों को अन्य राज्य अपनी पाठ्यपुस्तकों को विकसित और समीक्षा करते समय ध्यान में रख सकते हैं।

स्कूल स्तर पर हस्तक्षेप लागू करना— ब्लॉक स्तरीय अनुसंधान परियोजना

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य है— (क) एक चिह्नित राजस्व ब्लॉक (आकलन) में स्कूल स्तर पर विद्यार्थियों के सीखने के स्तर का आकलन करना, (ख) एन.सी.एफ. 2005 द्वारा प्रचारित विचारों (उदाहरण के लिए, जेंडर सरोकार,

समावेशी शिक्षा, कला समेकित शिक्षा, बहुभाषावाद, आई.सी.टी., सी.सी.ई. का उपयोग, बाल-केंद्रित और साथ ही विषय-विशिष्ट शिक्षणशास्त्र, स्कूल पुस्तकालय सुविधाएँ, मार्गदर्शन सेवाएँ, स्कूल-समुदाय की भागीदारी, सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों का संगठन आदि) की स्कूल स्तर पर पहुँच और क्रियान्वयन की सीमा का अध्ययन करना, (ग) अध्यापकों को उनके दैनिक स्कूल के काम में आने वाली कठिनाइयों का पता लगाना, (घ) स्कूल के माहौल (जैसे— सुरक्षा, रिश्ते, अध्यापन और अधिगम, संस्थागत वातावरण और स्कूल सुधार प्रक्रिया आदि) का अध्ययन करना। साथ ही स्कूल की गतिविधियों में माता-पिता/समुदायों की भागीदारी, (ड.) अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए आवश्यकता आधारित हस्तक्षेपों को विकसित/संशोधित करना। इससे विद्यार्थियों की उपलब्धि और पाठ्यचर्या और सह-शैक्षिक गतिविधियों में उनकी भागीदारी, अध्यापकों की कठिनाइयों; स्कूल का माहौल और स्कूल के कामकाज में माता-पिता और समुदायों की भागीदारी पर ध्यान केंद्रित किया जाएगा, (च) हस्तक्षेपों को लागू करने में अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों की मदद करना, (छ) विद्यार्थियों के सीखने के स्तर, अध्यापकों के व्यवहार, स्कूल के माहौल आदि में परिवर्तन, यदि कोई हो, का अध्ययन करना, (ज) कक्षाओं को जीवंत बनाने के लिए कला, खेल, खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र और स्थानीय विशिष्ट गतिविधियों को शामिल करना, और (झ) एन.ई.पी. 2020 और नए एन.सी.एफ. 2022 के लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अनुभव और सिद्धांत द्वारा निर्देशित कुछ व्यावहारिक समाधान प्रदान करना।

आर.आई.ई., भोपाल के विद्यार्थियों को अनुसंधान और बहुसंस्कृति पर सामुदायिक अनुभव प्रदान करना

इस शोध का मुख्य लक्ष्य और उद्देश्य था— (क) आर.आई.ई., भोपाल के विद्यार्थियों को सामुदायिक अनुभव/एक्सपोज़र प्रदान करना, (ख) साक्षरता, जेंडर समानता, आर.टी.ई., बाल अधिकार, एड्स, कोविड, अंधविश्वास, हठधर्मिता, स्वच्छता आदि पर जागरूकता अभियान शुरू करना, (ग) विद्यार्थियों को सर्वेक्षण और अनुसंधान का ज्ञान प्रदान करना, (घ) ड्रॉप-आउट, किसानों, पशुपालन, औषधालय, किसान पत्नियों, आँगनवाड़ी केंद्रों/अध्यापकों आदि पर प्रकरण अध्ययन/सर्वेक्षण आयोजित करना, (ङ) विद्यार्थियों को बहु-सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करना, (च) गाँव की वास्तविक स्कूल स्थितियों का अनुभव प्रदान करना, और (छ) लड़कियों की शिक्षा, साक्षरता, कोविड आदि जैसे विभिन्न मुद्दों पर समुदाय के बीच जागरूकता लाने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

ओडिशा में कोविड काल के दौरान प्राथमिक शिक्षा में सीखने में अंतर, चुनौतियाँ और नवाचार

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य कोविड अवधि के दौरान विद्यार्थियों के समग्र विकास में सीखने में अंतर पता लगाना और हितधारकों की चुनौतियों और नवाचारों का दस्तावेजीकरण करना था। यह सर्वेक्षण 296 विद्यार्थियों, 20 प्रधानाध्यापकों, 37 अध्यापकों, 70 अभिभावकों और 14 शैक्षिक पदाधिकारियों पर किया गया था। अध्ययन के संचालन के लिए प्रश्नावली और साक्षात्कार अनुसूचियों का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के निष्कर्ष बताते हैं कि सीखने में अंतराल ई.वी.एस., भाषा, गणित, भावनात्मक कल्याण और शारीरिक स्वास्थ्य के सीखने के प्रतिफलों में पाए जाते हैं। हितधारकों के सामने मुख्य चुनौतियाँ; डिजिटल उपकरणों की कमी, खराब नेटवर्क कनेक्शन, डिजिटल कौशल की कमी, अध्यापकों की खराब भागीदारी आदि हैं। केंद्र और राज्य सरकारों ने कोविड के दौरान शिक्षा जारी रखने के लिए यूट्यूब, दीक्षा, पी.एम. ई-विद्या, मधु ऐप आदि के माध्यम से ई-सामग्री प्रदान करने जैसी कई पहलें की हैं। इस शोध से ऐसी स्थितियों में विद्यार्थियों के लिए शिक्षण वृद्धि कार्यक्रमों की योजना बनाने और आयोजित करने के लिए हितधारकों और नीति निर्माताओं को अंतर्दृष्टि प्रदान की गई है।

सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापकों के बीच इसके प्रभावी उपयोग हेतु शैक्षिक संसाधन केंद्र का एक अध्ययन

इस अध्ययन में आर.आई.ई., भुवनेश्वर के सेवा-पूर्व (बी.एड.) अध्यापकों और चिल्का ब्लॉक के सेवाकालीन अध्यापकों से अनुसंधान डेटा एकत्र करने के लिए मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों दृष्टिकोणों का पालन किया गया। पूर्व-निष्पादन के लिए प्रश्नावली/उपकरणों को उनके स्कूलों में सेवा-पूर्व अध्यापकों के पिछले अनुभवों के साथ-साथ सेवारत अध्यापकों के अनुभवों का आकलन करने के लिए एक कार्यशाला मोड में अंतिम रूप दिया गया था। एक्सपोज़र के बाद, सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापकों दोनों के लिए शैक्षिक संसाधन केंद्र में पाँच दिवसीय एक्सपोज़र कार्यक्रम आयोजित किया गया, जहाँ उन्हें आर.आई.ई., भुवनेश्वर में विभिन्न संसाधन सामग्रियों से अवगत कराया गया था। इसके बाद, एक्सपोज़र के बाद परीक्षण आयोजित किए गए। इसके बाद, सेवा-पूर्व अध्यापकों ने अपने बहु-सांस्कृतिक कार्यक्रम में भाग लिया, जबकि सेवाकालीन अध्यापक अपने-अपने स्कूलों में लौट आए। डेटा संबंधित क्षेत्रों से एकत्र किए गए थे। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चलता है कि जब सेवा-पूर्व और सेवाकालीन अध्यापक दोनों उचित प्रक्रिया में इसका उपयोग करते हैं तो शैक्षिक संसाधन केंद्र का प्रभावी उपयोग देखा जाता है और वे स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप इसके उपयोग में विकल्प ढूँढ़ते हैं। इसके अलावा, अध्ययन ने नए तरीके से संकल्पनाओं को सीखने में जिज्ञासा और रुचि पैदा की, जिससे यह एहसास हुआ कि एन.ई.पी. 2020 के दृष्टिकोण को पूरा करने के लिए शैक्षिक संसाधन केंद्रों के माध्यम से गतिविधियों की मदद से अध्यापन आनंददायक होने के साथ-साथ प्रेरणादायक भी हो सकता है।

झारखंड के स्कूलों में सामाजिक-सांस्कृतिक अभ्यासों की पहचान और कार्यान्वयन : एक अध्ययन

यह अध्ययन झारखंड के स्कूलों में सामाजिक-सांस्कृतिक अभ्यासों की खोज और स्कूली शिक्षा में उनके कार्यान्वयन पर केंद्रित था। यह विशेष रूप से दो जिलों, गुमला और पूर्वी सिंहभूम तक सीमित था, जिन्हें उनकी समृद्ध जातीय संस्कृति के लिए चुना गया था। सर्वेक्षण में गुमला जिले के भरनो ब्लॉक के ग्यारह स्कूल और पूर्वी सिंहभूम जिले के जमशेदपुर ब्लॉक के एक स्कूल को शामिल किया गया। व्यापक डेटा इकट्ठा करने के लिए, विभिन्न प्रकार के स्कूलों का चयन किया गया, जिनमें नौ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दस मध्य विद्यालय और पाँच प्राथमिक विद्यालय शामिल थे। इस अध्ययन में दो सौ विद्यार्थी शामिल थे और अनुसंधान प्रक्रिया के दौरान 20 प्रधानाध्यापकों, 50 अध्यापकों और 20 समुदाय सदस्यों से मूल्यवान अंतर्दृष्टियाँ प्राप्त की गईं। अध्ययन के निष्कर्षों ने कक्षाओं के अंदर विविधता के सकारात्मक प्रभाव पर प्रकाश डाला गया। भाषा सीखने की सुविधा और विद्यार्थियों के बीच अंतरसांस्कृतिक संवेदनशीलता को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न भाषा संबंधी और धार्मिक पृष्ठभूमि के विद्यार्थियों की उपस्थिति देखी गई। इन स्कूलों में विभिन्न समुदायों और मिश्रित पृष्ठभूमि के बच्चों के एक साथ पढ़ने से सामाजिक-सांस्कृतिक अभ्यासों के एकीकरण को बढ़ावा मिला। कुल मिलाकर, शोध शैक्षिक सेटिंग में सामाजिक-सांस्कृतिक अभ्यासों के महत्व पर प्रकाश डालता है और वे विद्यार्थियों के सीखने के अनुभवों और अंतरसांस्कृतिक समझ को कैसे सकारात्मक रूप से प्रभावित कर सकते हैं।

ओडिशा में 10 बैग रहित दिवसों के कार्यान्वयन पर हितधारकों की जागरूकता और धारणा

अध्ययन का मुख्य उद्देश्य छठवीं से आठवीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए 10 बैग रहित दिवसों के कार्यान्वयन के संबंध में हितधारकों की जागरूकता और धारणा की जाँच करना था। इस सर्वेक्षण में संबलपुर, बालासोर, कोरापुट और केंद्रपाड़ा जिलों के विभिन्न स्कूलों के 20 प्रधानाध्यापकों, 40 अध्यापकों, 40 अभिभावकों और 120 विद्यार्थियों से डेटा एकत्र करना शामिल था। हितधारकों की धारणाओं का आकलन करने के लिए, 10 बैग रहित दिनों के विभिन्न

पहलुओं को कवर करने वाले 36 आइटमों वाले एक स्व-विकसित धारणा पैमाने का उपयोग प्राथमिक अनुसंधान टूल के रूप में किया गया था। इस अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश प्रधानाध्यापक, अध्यापक और विद्यार्थी 10 बैग रहित दिवस गतिविधियों के कार्यान्वयन के बारे में जानते थे और इसके प्रति सकारात्मक धारणा रखते थे। देखा गया कि इन गतिविधियों को सीखने के अनुभव को और अधिक आनंददायक और भागीदारीपूर्ण बनाकर बढ़ाया जा सकता है, जिससे अंततः विद्यार्थियों को सिखाई जा रही संकल्पनाओं को बेहतर ढंग से समझने में सहायता मिली। इसके अतिरिक्त, 10 बैग रहित दिन सहयोग, रचनात्मकता, सामाजिक योग्यता, बोलने में आत्मविश्वास को बढ़ावा देने और विद्यार्थियों के बीच रुचि पैदा करने के लिए पाए गए। अध्ययन के परिणामों के आधार पर, यह सुझाव दिया गया कि अध्यापकों और प्रधानाध्यापकों को व्यावसायिक शिक्षा पर विशेष जोर देने के साथ विशेष रूप से 10 बैग रहित दिन की गतिविधियों पर केंद्रित अभिविन्यास सत्र से गुजरना चाहिए। इससे संभवतः कार्यक्रम के लाभ और बढ़ेंगे और स्कूलों में इसके सफल कार्यान्वयन में योगदान मिलेगा।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

दक्षिणी राज्यों में प्राथमिक शिक्षा पर कोविड-19 महामारी का प्रभाव

इस प्रस्तावित शोध का उद्देश्य दक्षिणी क्षेत्र के अंदर प्राथमिक शिक्षा पर कोविड-19 महामारी के प्रभावों को व्यापक रूप से समझना है। इस अध्ययन के उद्देश्य बहुआयामी थे और इसमें शैक्षिक प्रणालियों पर महामारी के प्रभाव, शैक्षिक अधिकारियों द्वारा अपनाई गई कार्यनीतियों, चुनौतियों का सामना करना और संभावित सीखने के नुकसान के विभिन्न आयाम शामिल थे।

पहला उद्देश्य राज्यों के विभिन्न जिलों में विद्यार्थियों और अध्यापकों दोनों की शैक्षिक भागीदारी पर महामारी के प्रभाव की सीमा का आकलन करना था। दूसरा उद्देश्य महामारी के दौरान स्कूली शिक्षा को प्रभावी तरीके से प्रबंधित करने और बनाए रखने के लिए जिला स्तरीय शैक्षिक अधिकारियों द्वारा कार्यान्वित कार्यनीतियों और उपायों की पहचान करना था। इसके अलावा, अध्ययन का उद्देश्य इस अवधि के दौरान स्कूलों द्वारा उपयोग की जाने वाली शैक्षिक विधियों और संसाधनों के साथ-साथ महामारी से प्रेरित चुनौतियों का समाधान करने हेतु आवंटित विशिष्ट संसाधनों का विश्लेषण करना था।

इसके अतिरिक्त, अनुसंधान में संभावित सीखने की हानियों के बारे में शैक्षिक कार्यकर्ताओं की धारणाओं पर भी गौर किया गया, विशेष रूप से विशेष आवश्यकता वाले बच्चों और समाज के हाशिए पर रहने वाले वर्गों जैसे कमजोर समूहों पर ध्यान केंद्रित किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य विभिन्न शैक्षिक निकायों द्वारा महामारी के दौरान विद्यार्थियों को प्रस्तुत किए गए अनोखे हस्तक्षेपों और अनुभवों को ग्रहण करना भी था। इसके अलावा, स्कूलों, अध्यापकों और विद्यार्थियों के सामने आने वाली चुनौतियों की सावधानीपूर्वक जाँच की गई, जिससे भविष्य में इसी तरह के संकटों से निपटने में जिलों और राज्यों की प्रणालीगत तैयारी को समझने का मार्ग प्रशस्त हुआ।

इस अध्ययन के लिए अपनाई गई विधि गुणात्मक स्वरूप की थी। इसने एक बहुकेंद्रित दृष्टिकोण अपनाया, जिसमें दक्षिणी क्षेत्र के सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को शामिल किया गया। विश्लेषण की इकाई जिला थी, प्रत्येक राज्य के दो जिलों में प्रकरण अध्ययन आयोजित किए गए थे। इन जिलों को उनकी आकांक्षात्मक स्थिति और शैक्षिक सूचकांकों के आधार पर चुना गया था। व्यापक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए, सरकारी, सहायता प्राप्त और विशेष/आदिवासी स्कूलों सहित शहरी और ग्रामीण दोनों सेटिंग्स के स्कूलों का चयन किया गया। शोध डेटा प्रश्नावली और साक्षात्कार/फोकस समूह चर्चा के माध्यम से एकत्र किया गया था जिसमें शैक्षिक प्रशासक, स्कूल प्रमुख, अध्यापक, विद्यार्थी और माता-पिता जैसे हितधारक शामिल थे।

अध्ययन में दक्षिणी राज्यों में प्राथमिक शिक्षा पर कोविड-19 महामारी के दूरगामी प्रभावों का पता लगाया गया और कार्यनीतियों, चुनौतियों और प्रतिक्रियाओं की जाँच की गई। इसमें अपनाई गई संपूर्ण कार्यप्रणाली और निष्कर्षों के प्रसार से भविष्य के संकटों का सामना करने के लिए शैक्षिक प्रणालियों के लचीलेपन को बढ़ाने के अंतिम लक्ष्य के साथ, महामारी के कारण हुई शैक्षिक उथल-पुथल को समझने और संबोधित करने के महत्व को रेखांकित किया गया।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

प्राथमिक विद्यालय स्तर पर हस्तक्षेप लागू करना—एक ब्लॉक स्तरीय अनुसंधान परियोजना (भोइरीम्बोंग ब्लॉक, मेघालय)

इस अनुसंधान का उद्देश्य भोइरीम्बोंग ब्लॉक में प्रदान की जाने वाली विभिन्न प्रकार की प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की पहचान करना, ई.सी.सी.ई. केंद्रों में उपलब्ध कराए गए बुनियादी ढाँचे, खेल उपकरणों की जाँच करना, इन केंद्रों में नियुक्त व्यावसायिक श्रमिकों की गुणवत्ता का विश्लेषण करना, शिक्षा के इस चरण के दौरान पाठ्यचर्या और शैक्षणिक अंतरण का आकलन करना और भोइरीम्बोंग ब्लॉक में ई.सी.सी.ई. की गुणवत्ता में सुधार के लिए सुझाव देना। ब्लॉक में 122 आँगनवाड़ी केंद्र हैं जो मेघालय सरकार के समाज कल्याण विभाग की देखरेख में हैं। स्कूलों से जुड़े ई.सी.सी.ई. केंद्रों (पूर्व-प्राथमिक और आँगनवाड़ी केंद्रों) की संख्या 188 है जबकि नमूना आकार में छह अलग-अलग प्रकार के स्कूल, अर्थात एस.एस.ए. (9), निजी (6), अभावग्रस्त (2), सरकारी (2), गैर-सरकारी संगठन (1) और आँगनवाड़ी (10) शामिल थे। इस शोध अध्ययन में कुल 50 अध्यापक, 65 अभिभावक और 162 विद्यार्थी शामिल थे। इस अध्ययन में स्कूल अवलोकन अनुसूची, स्कूल सूचना अनुसूची, पूर्व-प्राथमिक अध्यापकों और आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए प्रश्नावली, अध्यापकों की साक्षात्कार अनुसूची, माता-पिता की साक्षात्कार अनुसूची और विद्यार्थियों की साक्षात्कार अनुसूची का उपयोग किया गया। डेटा का विश्लेषण करने के लिए गुणात्मक और मात्रात्मक दोनों तरीकों का इस्तेमाल किया गया। स्कूलों को समुदाय के और समुदाय को स्कूलों के करीब लाने के लिए आउटरीच कार्यक्रमों के रूप में समुदाय के सदस्यों को शिक्षा की आवश्यकता, महत्व और हाल के रुझानों पर अभिविन्यास आयोजित किया गया। भोइरीम्बोंग ब्लॉक के तीन स्कूल समूहों के विद्यार्थियों को निम्नलिखित क्षेत्रों— समावेशन, किशोर शिक्षा, स्वास्थ्य शिक्षा, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.), मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण में स्थानीय भाषा में पाँच पर्चे वितरित किए गए।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में स्कूली विद्यार्थियों और अभिभावकों की भाषा प्राथमिकताओं का आधारभूत अध्ययन

यह शोध पूर्वोत्तर क्षेत्र में अभिभावकों और विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा में पसंदीदा भाषाओं को देखने के लिए आयोजित किया गया था। शोध डेटा पूर्वोत्तर के चार राज्यों— असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर और नागालैंड से एकत्र किया गया था। शोध के लिए नागालैंड से दस (*अंगामी*, *एओ*, *चाकेशांग*, *चांग*, *खियामनिउंगन*, *लोथा*, *संगतम*, *सुमी*, *यिमखिंग* और *कोन्याक* भाषा बोलने वाले समुदायों), असम से सात (*असमिया*, *बोडो*, *देउरी*, *कार्बी*, *मिसिंग*, *नेपाली* और *राभा* भाषा बोलने वाले समुदायों), मणिपुर से सात (*अनल*, *माओला*, *पुमाई*, *मरम*, *तांगखुल*, *थडौ-कुकी* और *मरम* भाषा बोलने वाले समुदायों) के साथ-साथ अरुणाचल प्रदेश की दो भाषाओं, *निशी* और *टैगिन* भाषा समुदायों को लिया गया। प्रश्नावली उल्लिखित समुदायों के 1099 अभिभावकों और 1117 विद्यार्थियों को दी गई थी। कुल मिलाकर शोध के निष्कर्षों से पता चला कि शिक्षा प्राप्त करने के लिए सबसे पसंदीदा भाषा अंग्रेजी है क्योंकि यह उच्च शिक्षा और नौकरियों से जुड़ी हुई है, अगली पसंदीदा भाषा हिंदी है क्योंकि इसे एक ऐसी भाषा माना जाता है जो उन्हें भारत के हर कोने में संवाद करने में सक्षम बनाएगी। असमिया और मणिपुरी जैसे बड़े समुदायों

को छोड़कर सभी भाषा बोलने वालों को लगता है कि अवसर अंग्रेजी में है, इसलिए यह अंतिम विकल्प है। जबकि, प्रत्येक समुदाय को लगता है कि उन्हें भी अपनी-अपनी मातृभाषा सीखनी चाहिए और पर्याप्त संख्या में अध्यापकों और संसाधनों वाले स्कूल इस उद्देश्य को पूरा करेंगे। यह भी देखा गया है कि मणिपुर और असम राज्यों में क्षेत्रीय भाषा या राज्य की आधिकारिक/प्रमुख भाषा का व्यापक रूप से अध्ययन किया जाता है और लोग पसंद भी करते हैं। दिलचस्प बात यह है कि नागालैंड राज्य में लोग अंग्रेजी और मातृभाषाओं के साथ-साथ हिंदी भी सीखना चाहते हैं। हालाँकि अरुणाचल प्रदेश में हिंदी लगभग एक सामान्य भाषा बन गई है। ज्ञान प्राप्त करने के लिए हिंदी पसंदीदा भाषा नहीं है, वे स्कूली पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में हिंदी सीखते हैं लेकिन शायद ही हिंदी में पढ़ते हैं।

सिक्किम में स्कूली किशोरों के बीच आत्महत्या में योगदान देने वाले कारक—गैंगटोक और पाकयोंग जिलों का प्रकरण (राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना के तहत)

इस शोध अध्ययन का उद्देश्य सिक्किम के गैंगटोक और पाकयोंग जिलों के स्कूली किशोरों के बीच आत्महत्या की भयावहता का पता लगाना, और स्कूली किशोरों के बीच आत्महत्या के खतरे को कम करने के लिए हस्तक्षेप हेतु कार्यनीति की योजना बनाना तथा स्कूली किशोरों के बीच आत्महत्या में योगदान देने वाले कारकों का अध्ययन करना है। अध्ययन को अंजाम देने में एक वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का पालन किया गया। अध्ययन के नमूने में गैंगटोक और पाकयोंग जिलों, सिक्किम के 25 प्राथमिक और/या माध्यमिक विद्यालय शामिल थे। अध्ययन के विषय/मुख्य सूचनादाताओं में यादृच्छिक रूप से चयनित 26 स्कूलों में फैले स्कूली किशोर, अध्यापक (100), प्रधानाध्यापक (25), एस.एम.सी. सदस्य (50) शामिल थे। स्कूलों के चयन और प्रमुख सूचनादाताओं के चयन में उद्देश्यपूर्ण/आकस्मिक नमूनाकरण तकनीकों का पालन किया गया। डेटा को प्रधानाध्यापकों के लिए साक्षात्कार कार्यक्रम, अध्यापकों के लिए प्रश्नावली, एस.एम.सी. सदस्यों/अभिभावकों/पर्यवेक्षकों और विद्यार्थी सूचनार्थियों के लिए फोकस समूह चर्चा की मदद से एकत्र किया गया था। यह पाया गया कि स्कूली किशोरों में आत्महत्या के लिए योगदान देने वाले कारकों में माता-पिता के बीच घरेलू हिंसा, माता-पिता का अलगाव, परिवार से प्यार और स्नेह की कमी, माता-पिता और बच्चों के बीच संबंध, पारिवारिक नैतिकता, लड़कों और लड़कियों के बीच कारण संबंध, किशोर विवाह, साथियों का दबाव, शराब, मादक द्रव्यों का सेवन आदि शामिल हैं। अध्यापकों ने बताया कि अधिकांश माता-पिता अशिक्षित हैं। इसके अलावा, लड़के मादक द्रव्यों के सेवन के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं और लड़कियाँ यौन गतिविधियों के प्रति अधिक संवेदनशील होती हैं। माता-पिता अपने बच्चों की पढ़ाई और भावनात्मक कल्याण में कोई रुचि नहीं लेते हैं। कुछ माता-पिता तो पी.टी.ए. में आते ही नहीं। विद्यार्थी घरेलू कार्यों में संलग्न हैं। माता-पिता उनकी तुलना दूसरे बच्चों या भाई-बहनों से करते हैं। स्कूल में पॉक्सो के मामले भी हैं। कोविड महामारी के बाद एक बड़ा अंतराल आ गया है और उस अंतराल को पाटना अब तक संभव नहीं हो पाया है। लगभग सभी स्कूली विद्यार्थी प्रवासी परिवारों, अर्थात बिहार, नेपाल से हैं, और उनके माता-पिता दुकानें और दैनिक वेतनभोगी के रूप में टैक्सी ड्राइवर के बतौर या गैरेज में काम करते हैं। अध्ययन की सिफ़ारिशों में, प्रत्येक स्कूल में परामर्शदाताओं की नियुक्ति/एन.ई.आर.आई.ई. द्वारा संचालित डी.जी.डी.सी. पाठ्यक्रम में कम से कम दो अध्यापकों का नामांकन और माता-पिता और विद्यार्थियों के बीच जीवन के उतार-चढ़ाव से निपटने के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए समर्थन कार्यक्रम आयोजित करना शामिल हैं।

4. विकास गतिविधियाँ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के विभिन्न संघटकों द्वारा विद्यालय और अध्यापक शिक्षा के सभी क्षेत्रों में शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया को बढ़ावा देने वाले विकास संबंधी कार्य किए जाते हैं। इनमें ऑडियो-विज़ुअल सामग्री, पाठ्यपुस्तकें, हस्त पुस्तिकाएँ, प्रशिक्षण पैकेज, मैनुअल, अनुपूरक पाठ्य-सामग्री, किट्स आदि शामिल हैं। प्रतिवेदनाधीन वर्ष में, परिषद् द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार बुनियादी और प्राथमिक स्तर के पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के विकास, योग्यता आधारित शैक्षणिक संरचना, अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री हेतु दिशानिर्देश, पूरक पठन सामग्री आदि का विकास किया गया है।

परिषद् ई-सामग्री, कार्य शोध पत्र, अधिगम प्रतिफल, ऑडियो-वीडियो पांडुलिपियों, प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, प्रशिक्षण सामग्री, स्कूल में नहीं पढ़ने वाले बच्चों के लिए ब्रिज कोर्स पैकेज, ई-पब ऑडियो, किट और मैनुअल, आइटम बैंक, अनुकरणीय सामग्री, शैक्षिक मीडिया कार्यक्रम और ऑनलाइन पाठ्यक्रम के विकास में भी शामिल थी। एन.ई.पी. 2020 के आलोक में हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में बुनियादी, प्रारंभिक, मध्य और माध्यमिक स्तरों में उर्दू भाषा के विद्यार्थी पर केंद्रित शिक्षणशास्त्र पर आधारित गतिविधियों की पुस्तिका, 'समझ का माध्यम' का 22 भाषाओं में अनुवाद और समीक्षा, 22 भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन (बुनियादी स्तर) भाषा पाठ्यक्रम, विभिन्न आदिवासी समूहों के संसाधनों के रूप में अनुभवात्मक शिक्षा का दस्तावेज़ीकरण, कला समेकित शिक्षा और अनुभवात्मक शिक्षा पर दिशानिर्देश, और खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र को बढ़ावा देने के लिए खिलौने/मॉडल/गेम/वीडियो/स्टोरी बोर्ड विकसित किए गए थे।

परिषद् ने पूर्वोत्तर की लोककथाओं के माध्यम से जी.सी.ई.डी. मान्यताओं को प्रदान करते हुए आधुनिक भारत के आर्थिक विचारकों और भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों पर पूरक पाठ्य सामग्री, भारतीय भाषाओं और चतुर्भाषी (उर्दू-उर्दू, हिंदी-अंग्रेजी-संस्कृत) सांस्कृतिक शब्दों के सचित्र शब्दकोश के लिए शिक्षणशास्त्र पर सामग्री, स्वास्थ्य और कल्याण पर ई-पाठ्यक्रम, अनुभवात्मक शिक्षा को कार्यान्वित करने के लिए दिशानिर्देश, कर्नाटक संगीत-गायन और मेलोडिक-कक्षा 12 पर पाठ्यपुस्तक, मनोविज्ञान पाठ्यचर्याओं और मनोविज्ञान पाठ्यपुस्तक, बहु-विषयक संस्थानों में अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के लिए रूपरेखा, वैकल्पिक मूल्यांकन तकनीक (ए.ए.आई.), 'योजना', प्रबंधन सूचना प्रणाली (एम.आई.एस.) पोर्टल, आई.सी.टी. के लिए पाठ्यक्रम का क्रियान्वयन, भारतीय सांकेतिक भाषा के मानकीकरण, पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और व्यावसायिक विषयों के लिए डिजिटल संसाधन, एन.एस.क्यू.एफ. के तहत जॉब रोल्स (कार्यभूमिकाओं) के लिए छात्र पाठ्यपुस्तकें, एन.एस.क्यू.एफ. के तहत छह नए जॉब रोल्स के कोर्सवेयर, हब और स्पोक मॉडल के कार्यान्वयन के लिए राज्य योजना, परिधान, मेड अप्स, होम फर्निशिंग कार्यक्षेत्र के 12 जॉब रोल्स के लोकप्रियकरण फ़ोल्डर, संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) पर आधारित ऐप आदि के साथ गणित शिक्षण और अधिगम को सशक्त बनाने के लिए विकास किया।

वर्ष के दौरान स्कूल लाइब्रेरियनशिप में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, विज्ञान शिक्षा (गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जैविक विज्ञान) में नवीन पाठ्यक्रम, एम.ओ.ओ.सी. के माध्यम से गणित में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम, कोडिंग मॉड्यूल

और स्टीम मॉड्यूल, प्राचीन गणित के उपयोग द्वारा संसाधन सामग्री, विज्ञान में कुछ विचारोद्दीपक नवीन शिक्षण और सीखने की अभ्यासों का सार-संग्रह, एफ.एल.एन. के लिए सीखने के परिणाम आधारित शिक्षण संसाधन, मणिपुरी में लोक गीतों और छंदों का संकलन, थाडौ-कुकी, रुंगमेई तांगखुल, पूर्वोत्तर भारत की आदि और गालो भाषाएँ, सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों पर संसाधन, एन.ई.पी. 2020 के आलोक में 21वीं सदी के कौशल पर अध्यापक पुस्तिका, विद्यालय-पूर्व शिक्षा के लिए अनुभवात्मक अधिगम आदि पर एक पुस्तिका भी विकसित की गई।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

बुनियादी स्तर के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की सिफारिशों के आधार पर बुनियादी चरण के लिए पाठ्यक्रम विकसित किया गया है। पाठ्यक्रम को प्रत्येक डोमेन के उद्देश्यों, पाठ्यचर्या लक्ष्यों और दक्षताओं के अनुसार मैप किया गया था। विभाग ने पाठ्यक्रम के आधार पर, कक्षा 1 और 2 के लिए हिंदी (*सारंगी* 1 और 2), अंग्रेजी (*मृदंग* 1 और 2), गणित (*जॉयफुल मैथमेटिक्स* 1 और 2) और उर्दू (*शहनाई* 1 और 2) की पाठ्यपुस्तकें भी विकसित की गईं। *जॉयफुल मैथमेटिक्स* के हिंदी संस्करण (*आनंदमयी गणित* 1 और 2) और उर्दू संस्करण (*दिलचस्प रियाज़ी* 1 और 2) भी विकसित किए गए हैं। पाठ्यपुस्तकों में भाषा विकास के लिए एक संतुलित साक्षरता दृष्टिकोण को एन.सी.एफ.-एफ.एस. में प्रस्तावित भाषा और संख्यात्मक विकास के लिए चार ब्लॉक दृष्टिकोण से जोड़ा गया है। पाठ्यपुस्तकों में खेल आधारित, खोज आधारित, कहानी आधारित, पाठ्यक्रम संचालन के लिए दृष्टिकोणों का भी उपयोग किया गया।

बुनियादी स्तर में संख्यात्मकता के लिए अध्यापक प्रशिक्षक मैनुअल

बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों पर अध्यापकों/अध्यापक प्रशिक्षकों के बीच संख्यात्मकता की समझ को सुविधाजनक बनाने के लिए बुनियादी स्तर पर संख्यात्मक कौशल को मजबूत करने पर अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए एक अध्यापक प्रशिक्षक मैनुअल विकसित किया गया है। संसाधन मैनुअल को अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के बीच समझ को सुविधाजनक बनाने के लिए प्रयोक्ता के अनुकूल दृष्टिकोण के साथ डिजाइन किया गया है। इसमें एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 में उल्लिखित चार ब्लॉक दृष्टिकोण शामिल हैं; वे हैं मौखिक गणित वार्ता, कौशल शिक्षण, कौशल अभ्यास और गणित खेल। इसमें बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों पर संख्यात्मकता और गणित की सभी अवधारणाओं और घटकों पर मॉड्यूल शामिल हैं। इस मैनुअल में शामिल प्रमुख विषय संख्या-पूर्व और संख्या अवधारणाएँ, जोड़ और घटाना, गुणा और भाग, आकार और स्थानिक समझ, अनुमान और माप, पैटर्न, डेटा हैंडलिंग, गणितीय संचार, गणित सीखने में त्रुटियाँ, गणितीय समस्याएँ और पहेलियाँ, गणित पर कहानियाँ और कविताएँ, अधिगम के परिणाम और मूल्यांकन दिए गए हैं।

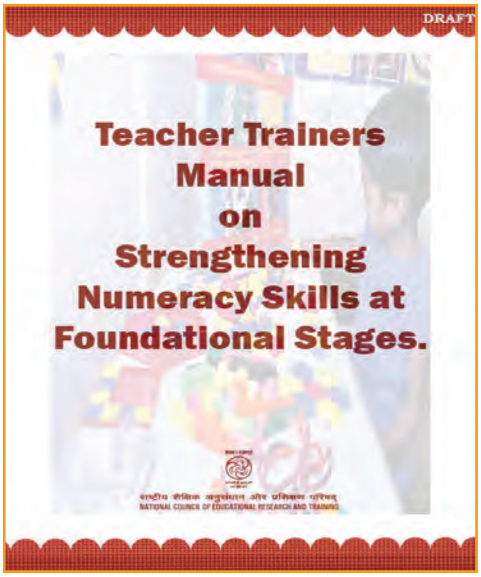

प्रशिक्षक मैनुअल में प्रत्येक विषय से जुड़े प्रारंभिक गणित कौशलों पर प्रकाश डाला जाता है और इन कौशलों को बढ़ाने के अवसरों के साथ-साथ इसे और भी विस्तारित किया जाता है। इसमें अध्यापकों की अपनी समझ के

लिए व्यावहारिक गतिविधियाँ शामिल हैं और इसे उनकी कक्षा में भी आयोजित किया जा सकता है और अध्यापकों के साथ चर्चा के लिए प्रश्नों पर विचार-मंथन किया जा सकता है। मैनुअल में अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए सहायक वीडियो और पी.पी.टी. को भी शामिल किया गया है।

बुनियादी स्तर के लिए साक्षरता और संख्यात्मकता पर बच्चों और अध्यापकों के लिए इंफोग्राफिक संसाधन सामग्री

(क) इंफोग्राफिक पोस्टर

संख्यात्मकता

दृश्य प्रतिनिधित्व के माध्यम से अध्यापकों, माता-पिता, अभिभावकों और अन्य सभी हितधारकों द्वारा अधिगम के परिणामों की स्पष्ट और आसान समझ सुनिश्चित करने के लिए विद्यालय पूर्व और कक्षा 1–3 के तीन वर्षों के लिए *निपुण भारत* दिशानिर्देशों के तहत निर्दिष्ट विकासात्मक लक्ष्य 3 के लिए अधिगम के परिणामों पर आधारित इंफोग्राफिक्स विकसित किए गए थे। इस प्रकार कुल 176 इंफोग्राफिक्स विकसित किए गए हैं। इन 176 इंफोग्राफिक्स का हिंदी संस्करण भी विकसित किया गया और दीक्षा पोर्टल पर अपलोड किया गया। संदर्भ के उद्देश्य से और दीक्षा पोर्टल के माध्यम से अध्यापकों द्वारा उपयोग किए जाने के लिए इसी पर आधारित मेटाडेटा शीट भी विकसित की गई थी।

साक्षरता

बच्चों को प्रभावी संचारक (विकास लक्ष्य 2) बनाने के लिए निपुण भारत दिशानिर्देशों के तहत विकसित अधिगम के परिणामों की एक दृश्य समझ की सुविधा के लिए, विद्यालय पूर्व कक्षा 1 से 3 तक इंफोग्राफिक पोस्टर विकसित किए गए थे। ये इंफोग्राफिक पोस्टर विशेष रूप से अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए अधिगम के परिणामों की समझ (उदाहरण के साथ) विकसित करने के लिए एक अच्छे उपकरण के रूप में काम करते हैं। दीक्षा पोर्टल पर विद्यालय पूर्व कक्षा 1 से 3 तक के लिए अब तक 178 इंफोग्राफिक पोस्टर अपलोड किए जा चुके हैं। हमने इनमें से बुनियादी स्तर पर द्विभाषी संसाधनों के महत्व को ध्यान में रखते हुए विशेष रूप से विद्यालय पूर्व स्तर के लिए भाषा 1 (हिंदी) के साथ-साथ भाषा 2 (अंग्रेजी) के लिए अलग-अलग इंफोग्राफिक्स पोस्टर भी विकसित किए हैं। इसके अलावा, दीक्षा पोर्टल पर इसका सही विवरण प्रदान करने के लिए मेटाडेटा शीट विकसित और साझा की गई। अपलोड किए गए इंफोग्राफिक्स तक पहुँचने करने के लिए लिंक—

- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244893609164811634?contentId=do_31350972295208960011342
- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244958498816011637?contentId=do_31350910703487385611015
- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244893609164811634?contentId=do_31350563764781056011207
- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244893609164811634?contentId=do_31350562848342835211831
- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244893609164811634?contentId=do_3135806102813655041159

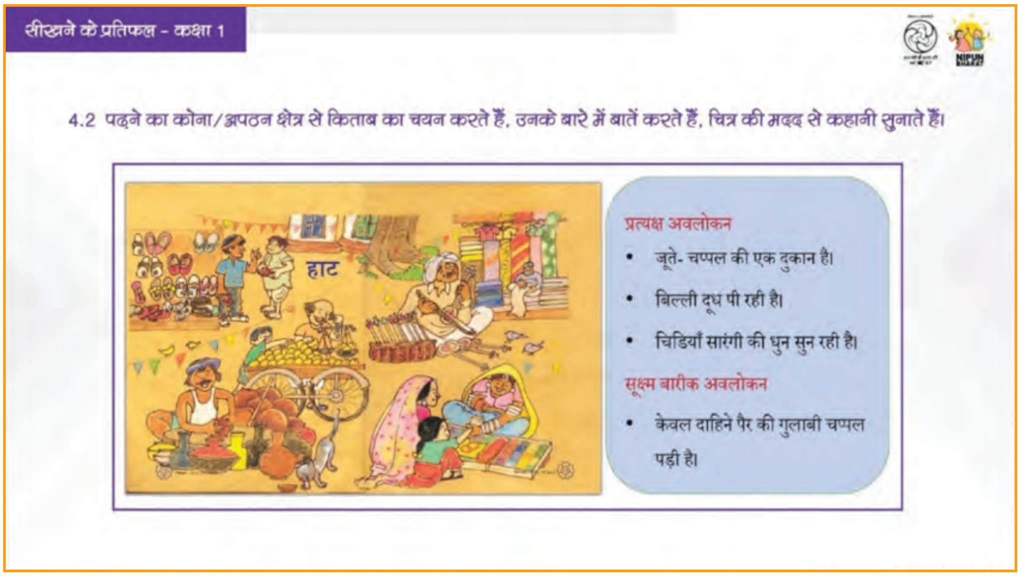

(ख) निपुण भारत के तहत मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए बाइट-साइज की वीडियो पांडुलिपि

संख्यात्मकता

अध्यापकों, माता-पिता, अध्यापक प्रशिक्षकों और अन्य हितधारकों को अधिगम प्रतिफलो की व्याख्या करने के लिए बाइट साइज के वीडियो के लिए पांडुलिपियाँ विकसित की गई थी। प्रत्येक अधिगम प्रतिफल पर आधारित 176 वीडियो पांडुलिपियाँ विकसित की गईं और 51 पांडुलिपियों की समीक्षा की गई और उन्हें अंतिम रूप दिया गया।

साक्षरता

निपुण भारत दिशानिर्देशों के तहत सीखने के परिणामों की स्पष्ट समझ प्रदान करने के लिए पांडुलिपि के आधार पर बाइट साइज के वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए थे। पांडुलिपि पर आधारित ये बाइट साइज के वीडियो कार्यक्रम एक सक्रिय अधिगम का अनुभव प्रदान करते हैं और अधिगम की प्रक्रियाओं को सिखाने के लिए अच्छे संसाधन हैं। प्रत्येक अधिगम प्रतिफल को कवर करते हुए कक्षा 1–3 के लिए 15 पांडुलिपियाँ विकसित की गईं। पांडुलिपि के आधार पर, 10 वीडियो कार्यक्रमों की समीक्षा की गई और दीक्षा पोर्टल पर अपलोड किया गया। विद्यालय पूर्व

1–3 के लिए 38 पांडुलिपियाँ विकसित की गई हैं। इनमें से भाषा 1 (हिंदी) के साथ-साथ भाषा 2 (अंग्रेजी) में विशेष रूप से विद्यालय पूर्व स्तर के लिए अलग-अलग पांडुलिपियाँ विकसित की गई हैं।

वीडियो प्रोग्राम तक पहुँचने के लिए लिंक —

https://diksha.gov.in/play/collection/
do_31337245181108224011301?contentId=do_31335117126433177612 98

(ग) वर्कशीट और मूल्यांकन आइटम

संख्यात्मकता

इसके अलावा, लक्ष्य 3 के लिए *निपुण भारत* दिशानिर्देशों में उल्लिखित प्री-स्कूल और कक्षा 1–3 के लिए प्रत्येक अधिगम प्रतिफल के लिए 176 वर्कशीट और मूल्यांकन मद विकसित किए गए थे। प्री-स्कूल और कक्षा 1, 2 और 3 के लिए चित्रों और मेटाडेटा शीट के साथ कुल 79 वर्कशीट को अंतिम रूप दिया गया और दीक्षा पोर्टल पर अपलोड किया गया।

साक्षरता

शिक्षा के सभी हितधारकों, विशेष रूप से माता-पिता, अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए एक समृद्ध, मूर्त और व्यावहारिक संसाधन सामग्री प्रदान करने के लिए विकासात्मक लक्ष्य 2 के अधिगम प्रतिफलों के अनुसार वर्कशीट विकसित की जाती है। प्री-स्कूल और कक्षा 1–3 तक के लिए अब तक 194 वर्कशीट की समीक्षा की गई है और उन्हें दीक्षा पोर्टल पर अपलोड किया गया है। हमने इनमें से बुनियादी स्तर में द्विभाषी संसाधनों के महत्व पर विचार करते हुए विशेष रूप से प्री-स्कूल स्तर के लिए भाषा 1 (हिंदी) के साथ-साथ भाषा 2 (अंग्रेजी) में अलग-अलग वर्कशीट विकसित की हैं। इसके अलावा, दीक्षा पोर्टल पर इसका सही विवरण प्रदान करने के लिए मेटाडेटा शीट विकसित और साझा की गई। गुणवत्ता एवं सतत मूल्यांकन के महत्व को देखते हुए कक्षा 1–3 तक के लिए 574 मूल्यांकन मद भी विकसित किए गए हैं।

अपलोड की गई वर्कशीट तक पहुँचने के लिए लिंक

- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244893609164811634?contentId=do_31361028341881241611433
- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244893609164811634?contentId=do_31361028341881241611433
- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337244893609164811634?contentId=do_31361033578635264012937

मूल्यांकन मदों को तक पहुँचने के लिए लिंक

- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337245106012160011300?contentId=do_31352682597046681611 61
- https://diksha.gov.in/play/collection/do_31337245106012160011300?contentId=do_31352682597046681611 61

Subject-English
Pre-School 2
Worksheet-1

विषय- हिंदी

कहानी सुनाने वाली वीडियो

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार विद्यार्थियों को एक आकर्षक शिक्षण अनुभव प्रदान करने और बच्चों को प्रभावी संचारक बनने में मदद करने के लिए दीक्षा पोर्टल पर अपलोड करने के लिए 20 कहानी सुनाने वाले वीडियो विकसित किए गए हैं, जो 'अनुभवात्मक, समग्र, समेकित, पूछताछ-संचालित, खोज पर केंद्रित, चर्चा आधारित, लचीले और आनंददायक' हैं।

बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों में बच्चों और अध्यापकों के लिए ई-सामग्री और खिलौने

आई.आई.टी. गांधीनगर के सेंटर फॉर क्रिएटिव लर्निंग (सी.सी.एल.) द्वारा किए गए सहयोग से 3–7 अक्तूबर 2022 तक आई.आई.टी. गांधीनगर, गुजरात में एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में बच्चों के समग्र विकास में, विशेषकर बुनियादी स्तर पर खिलौनों और खेलों की भूमिका पर जोर दिया गया।

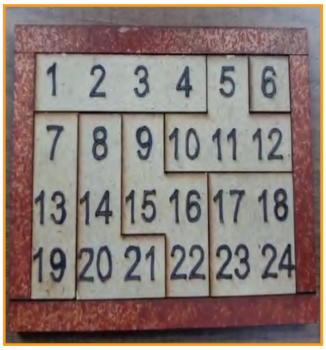

चर्चाओं, विचार-मंथन सत्रों और प्रदर्शनों की एक शृंखला के कारण सी.सी.एल., आई.आई.टी. गांधीनगर में बनाए गए शैक्षिक खिलौनों और खेलों को शैक्षिक खिलौनों की एक विचारोद्दीपक सूची के रूप में अंतिम रूप दिया गया, जिन्हें बच्चों और अध्यापकों के लिए संशोधित या अनुकूलित किया जा सकता है।

इस कार्यशाला में 20 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतिभागी आई.आई.टी. गांधीनगर और एन.आई.डी., गांधीनगर, गुजरात से थे। कार्यशाला के दौरान, कुछ खिलौनों, जोड़-तोड़ के मद, मॉडल, पहेलियाँ और खेलों की पहचान की गई और जोड़-तोड़ के मदों की एक विचारोद्दीपक सूची तैयार की गई जिसे बच्चों और अध्यापकों के लिए बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों (संख्यात्मकता) में और संशोधित या अनुकूलित किया जा सकता है।

बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए जो जोड़-तोड़ के मद और खिलौने सबसे प्रभावी पाए गए, वे थे शेप सुडोकू, वॉकिंग फ्लोर पहेली, नंबर बोर्ड, स्क्वायर व्हील कार, जंपिंग पहेलियाँ, स्टैक इट अप आदि।

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार प्रारंभिक स्तर पर ई.वी.एस. में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें

एन.ई.पी. 2020 के विचारों का पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों में रूपांतरण करने के लिए विभिन्न देशों के संगत शोध अध्ययनों, नीति दस्तावेज़ों और पाठ्यक्रम को संकलित और विश्लेषित किया गया; मौजूदा ई.वी.एस. पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों की ताकत और चुनौतियों का पता लगाने के लिए शोध अध्ययनों की वैश्विक रुझानों की समीक्षा का आकलन किया गया। ई.वी.एस. पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों के प्रमुख क्षेत्रों, संरचनाओं और दृष्टिकोणों को तय करने के लिए एन.ई.पी. 2020 का अध्ययन किया गया है। प्रारंभिक स्तर पर ई.वी.एस. के पाठ्यक्रम का पहला प्रारूप विकसित करने के लिए कक्षा 3–5 तक कक्षावार विषयों, आयु-उपयुक्त अवधारणाओं और सरोकारों की पहचान की गई है। एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2023 के प्रारूप के आलोक में प्रारूप पाठ्यचर्या की समीक्षा करने की आवश्यकता है।

प्रारंभिक स्तर पर पर्यावरण अध्ययन की ई-सामग्री (ई.वी.एस.)

बच्चों के लिए तैयारी के चरण में ई.वी.एस. विषय में ई-सामग्री गतिविधियाँ विकसित की गईं, जिनका उपयोग अध्यापकों और अभिभावकों द्वारा किया जाता है ताकि बच्चों को पाठ्यपुस्तकों से आगे जाकर आनंदमय तरीके से सीखने में मदद मिल सके। अंग्रेजी में पाँच पांडुलिपियाँ विकसित की गईं और संबंधित चित्रण और ग्राफिक्स बनाए गए। अंग्रेजी और सांकेतिक भाषा में वॉयस ओवर किया गया और इन्हें वीडियो कार्यक्रमों में डिजिटल रूप में तैयार किया गया।

पूर्वोत्तर की लोक-कथाओं के माध्यम से वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) के मूल्य प्रदान करना

एन.ई.पी. 2020 के अनुसार और जी.सी.ई.डी. पर यूनेस्को के बल देने को ध्यान में रखते हुए कक्षा 3 से 5 के बच्चों के लिए एक पूरक पाठक शृंखला, 'बैम्बू' नामक लोक-कथा शृंखला विकसित करने की परियोजना शुरू की गई है। इसमें पूर्वोत्तर भारत के आठ राज्यों की 15 लोक-कथाएँ शामिल हैं जो सांस्कृतिक और भाषा के रूप से विविध हैं। विद्यार्थियों को प्रत्येक लोक-कथा के अंत में प्रभावी तरीके से जी.सी.ई.डी. की अवधारणाओं और कौशल सीखने में सक्षम बनाने के लिए एक गतिविधि या अभ्यास शामिल किया गया है। यह शृंखला रा.शै.अ.प्र.प. के शैक्षिक कार्यक्रमों का एक हिस्सा है जिसका उद्देश्य भारत में स्थानीय स्तर पर जी.सी.ई.डी. को आगे बढ़ाना है। ये सामग्रियाँ विद्यार्थियों को जी.सी.ई.डी. के लिए एक सिद्धांत-आधारित दृष्टिकोण प्रदान करेंगी और उन्हें इसके कई रूपों में विविधता के लिए गहरा और संपूर्ण सम्मान प्राप्त करने में मदद मिलेगी।

उन्मुख — बालवाटिका के लिए प्रशिक्षकों की पुस्तिका (आई.एस.बी.एन. 978-93-5292-493-6)

एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022 की सिफारिशों के अनुसार बड़ी संख्या में प्रशिक्षकों और अध्यापकों तक पहुँचने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प., एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी., बी.आर.सी. और सी.आर.सी. जैसे अध्यापक प्रशिक्षण संस्थानों द्वारा हर स्तर पर संसाधन व्यक्तियों के लिए छोटी अवधि के प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जाने चाहिए। प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन के लिए कुछ संदर्भ सामग्री प्रदान करने के लिए 'उन्मुख' नामक एक पुस्तिका विकसित की गई है, जिसका अर्थ है 'अभिविन्यास', जिसका हिंदी और उर्दू में अनुवाद किया गया है।

इस पुस्तिका के दो भाग हैं। भाग 1 में अवलोकन के माध्यम से अंतर्निहित मूल्यांकन के साथ बालवाटिका कार्यक्रम की आवश्यकता और महत्व, विधियों और सामग्रियों, योजना और अंतरण के बारे में मूल बातें बताई गई हैं। भाग 2 में प्रारंभिक स्तर के बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार की अनुकरणीय विचारोद्दीपक गतिविधियाँ शामिल हैं। इसमें दी गई गतिविधियाँ प्रगतिशील और समेकित प्रकार की हैं और बच्चे के समग्र विकास के विभिन्न क्षेत्रों को पूरा करती हैं। जहाँ भी आवश्यकता हो, देखभाल करने वालों के लिए सुझाव भी प्रदान किए गए हैं।

आनंद— बालवाटिका के लिए गतिविधि पुस्तक

एन.ई.पी. 2020 के परिप्रेक्ष्य का ध्यान रखते हुए बालवाटिका के बच्चों के लिए गतिविधि पुस्तक, *आनंद* को तैयार किया गया और इसमें सरल, रोचक और आकर्षक तरीके से योग्यता आधारित वर्कशीट प्रदान करने का प्रयास किया गया है। इस गतिविधि पुस्तक में समावेशी होने का प्रयास किया गया है और इसमें सामाजिक और सांस्कृतिक बुनियाद का ख्याल रखा जाता है और शिक्षकों को बच्चों के सामने काम करने और अधिगम के लिए पर्याप्त अवसर प्रदान किए जाते हैं। गतिविधि पुस्तक में कला और शिल्प को समेकित किया गया है जिसके माध्यम से अध्यापक बच्चों को ऐसी गतिविधियों में निहित सौंदर्य बोध की सराहना करने के लिए जागरूक और प्रेरित करते हैं। *आनंद— बालवाटिका के लिए गतिविधि पुस्तक* में 92 अनुकरणीय कार्यपत्रक दिए गए हैं। ये कार्यपत्रक बच्चों को अपनी दृश्य स्मृतियों को कक्षा में सीखी गई अवधारणाओं के साथ जोड़ने और अपने पूर्व अनुभवों से भी जुड़ने का अवसर प्रदान करेंगे। इस पुस्तक में दिए गए अनुकरणीय कार्यपत्रक कक्षा स्तर के प्रतिफलों को प्रदर्शित करने के लिए विविध क्षमताओं वाले बच्चों को आनंदपूर्वक सीखने के अवसर प्रदान करने के लिए विकसित किए गए हैं। ये कार्यपत्रक बच्चों के लिए स्कूल की तैयारी को बढ़ावा देंगें और यह सुनिश्चित किया जाएगा कि वे औपचारिक स्कूल प्रणाली में प्रवेश के लिए आवश्यक बुनियादी भाषा और संज्ञानात्मक कौशल से अवगत हों। सुचारु परिवर्तन के लिए यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे पहले से ही कौशल हासिल करें, जिससे उन्हें आयु के उपयुक्त गतिविधियाँ करने में मदद मिलेगी। इन कार्यपत्रकों से बच्चों को स्वस्थ और सुरक्षित आदतें विकसित करने और अभ्यास करने, संवेदी धारणाओं को बढ़ाने, एक फिट और लचीला शरीर बनाने, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, तार्किक सोच और कला के माध्यम से अभिव्यक्ति विकसित करने में मदद मिलेगी। ये अनुकरणीय कार्यपत्रक दक्षताओं पर आधारित हैं (जैसा कि एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022 में दिया गया है) और इसमें विचारोद्दीपक विचार और प्रश्न हैं जो एक अध्यापक या माता-पिता बच्चे से उसकी समझ का आकलन करने के लिए पूछ सकते हैं।

बुनियादी स्तर के लिए शिक्षण सामग्री सीखना— जादुई पिटारा

एन.ई.पी. 2020 और एन.सी.एफ.-एफ.एस., 2022 के बाद अनुकरणीय शिक्षण सामग्री विकसित की गई है और इसे एक बॉक्स में रखा गया है— जादुई पिटारा। जादुई पिटारा एक बॉक्स है जिसमें बुनियादी स्तर के लिए लगभग 45 शिक्षण सामग्री (एल.टी.एम.) हैं। इसमें 3 से 8 वर्ष के आयु वर्ग के छोटे बच्चों के लिए गतिविधि पुस्तक, खेल सामग्री, कठपुतलियाँ, खिलौने और जोड़-तोड़ के मद शामिल हैं। यह पिटारा एक पूर्ण व्यापक एल.टी.एम. है जिसमें बाल विकास के सभी पहलुओं के लिए खेल सामग्री शामिल है, और यह अध्यापकों को बुनियादी स्तर पर गुणवत्ता कार्यक्रम की योजना बनाने और विभिन्न अवधारणाओं को पढ़ाने के लिए गतिविधियों को व्यवस्थित करने में मदद प्रदान करेगा। विभाग ने चित्र-पठन, पोस्टर, वर्णमाला कार्ड (अंग्रेजी), वर्णमाला कार्ड, संख्या कार्ड, वर्णमाला और संख्याओं के लिए ट्रेसिंग कार्ड, अनुक्रमिक सोच के लिए तैयार किए गए कहानी कार्ड, कविता पोस्टर, संख्या और रंग डोमिनोज और वर्गीकरण कार्ड विकसित किए। वर्णमाला और नंबर कार्ड 13 भाषाओं में विकसित किए गए हैं।

बुनियादी वर्षों के लिए परिवार और सामुदायिक जुड़ाव के लिए दिशानिर्देश

दिशानिर्देश एस.सी.ई.आर.टी., परिवारों, स्कूलों और समुदाय जैसे विभिन्न हितधारकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों पर प्रकाश डालते हैं। इसमें विभिन्न गतिविधियों का सुझाव दिया जाता है जो मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के विकास के लिए माता-पिता और स्कूल द्वारा अपनाई जा सकती हैं। इसमें भारत में सामुदायिक भागीदारी के प्रकरण अध्ययन भी शामिल हैं। प्रारूप दिशानिर्देश विशेषज्ञ टिप्पणियों के लिए परिचालित किए गए हैं।

निष्ठा 4.0— ई.सी.सी.ई. के लिए प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पर प्रशिक्षण मॉड्यूल

आँगनवाड़ी के छह पाठ्यक्रम विद्यालय पूर्व अध्यापकों और आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को उनके ई.सी.सी.ई. केंद्रों में शुरुआती अधिगम के अवसरों को अधिकतम करने में मदद करने के लिए मास्टर प्रशिक्षु निष्ठा प्रशिक्षण प्रदान करते हैं। छह पाठ्यक्रम ई.सी.सी.ई. कर्मियों को मार्गदर्शन देंगे कि केंद्रों में अंतरण प्रक्रियाओं की गुणवत्ता में सुधार और प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा कार्यक्रमों में गुणवत्ता लाने के लिए अध्यापकों को कैसे उन्मुख और प्रशिक्षित किया जाए। यह आई.सी.डी.एस. (समेकित बाल विकास सेवा) के सभी पदाधिकारियों को अपडेट करेगा और आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं को आँगनवाड़ी को एक जीवंत और महान जगह बनाने में सहायता करेगा जहाँ छोटे बच्चे समग्र रूप से विकसित होने के साथ खेलेंगे और सीखेंगे।

निष्ठा मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए संसाधन सहायता

अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और अभिभावकों के लिए सीखने के प्रतिफलों को स्पष्ट करने के लिए अंग्रेजी और हिंदी में 120 इंफोग्राफिक्स विकसित किए गए थे। दीक्षा पोर्टल पर वर्णमाला ट्रेसिंग कार्ड, चित्र वाचन पोस्टर जैसी कई अन्य सामग्रियाँ अपलोड की गई हैं।

आर.टी.ई. अधिनियम 2009 के तहत स्कूली शिक्षा से वंचित बच्चों के विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के लिए हिंदी से अंग्रेजी में सेतु पाठ्यक्रम पैकेज की समीक्षा और अनुवाद

स्कूली शिक्षा से वंचित बच्चों के विशेष प्रशिक्षण केंद्रों के लिए अनुकरणीय सेतु पाठ्यक्रम पैकेज का अंग्रेजी संस्करण विकसित किया गया है। इसमें चार स्तर हैं। स्तर 1 में दो पुस्तकें हैं— *नवारंभ*, भाग 1 और 2 है। स्तर 2 में तीन पुस्तकें हैं— *प्ले विद द नंबर्स*, रेनबो और *इंद्रधनुष*। स्तर 3 में चार पुस्तकें हैं— *संख्याओं से खेल*, *रेनबो*, *इंद्रधनुष* और *पर्यावरण अध्ययन*। स्तर 4 में पाँच पुस्तकें हैं— *संख्याओं से खेल*, *इंद्रधनुष*, *रेनबो*, *सामाजिक विज्ञान* और *विज्ञान*।

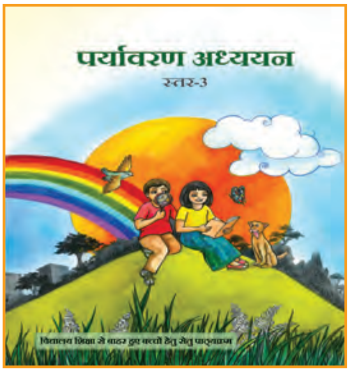

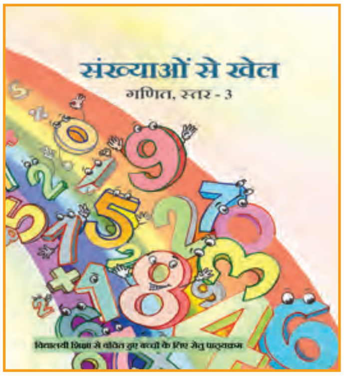

भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

सभी कक्षाओं के लिए अंग्रेजी, हिंदी, संस्कृत और उर्दू भाषाओं में सामग्री (पाठ्यपुस्तक और पूरक सामग्री) के लिए दिशानिर्देश

रा.शै.अ.प्र.प. एक शैक्षिक संगठन के रूप में स्कूली विषयों में विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए सामग्री विकसित कर रही है। यह सामग्री स्कूल में शिक्षण-अधिगम में प्रमुख भूमिका निभाती हैं, जिसमें पाठ्यपुस्तकें, पूरक पठन पुस्तकें और अध्यापक की हस्तपुस्तिकाएँ शामिल हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 अधिगम को बढ़ाने और राज्यों और शिक्षा के अन्य हितधारकों को पाठ्यपुस्तकों और अन्य सामग्रियों के विकास में दक्षताओं से युक्त करने के लिए गुणवत्तापूर्ण सामग्री पर जोर देती है। अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, शिक्षाशास्त्री, लेखकों और रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के परामर्श से सामग्री विकास पर दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं। ये दिशानिर्देश राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों, स्कूल बोर्डों और अन्य एजेंसियों के साथ साझा किए जाएँगे जो भाषा शिक्षा में पाठ्यपुस्तकों और अन्य सामग्रियों के विकास में काम करते हैं।

भारतीय भाषाओं के लिए शिक्षणशास्त्र की ओर : भारतीय भाषाओं के लिए शिक्षणशास्त्र पर सामग्री का विकास और अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री के लिए दिशानिर्देश

कार्यक्रम का विशिष्ट उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित भारतीय भाषाओं के विशेष संदर्भ के साथ भाषा शिक्षणशास्त्र पर अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए दिशानिर्देशों के साथ प्रशिक्षण/अध्यापक विकास सामग्री विकसित करना था। इन उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए, मौजूदा चुनौतियों का सामना करने और हमारे देश में भारतीय भाषाओं की अधिगम-शिक्षण की प्रक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने के लिए भाषा अध्यापकों के लिए एक दिशानिर्देश तैयार किया गया है। इन दिशानिर्देशों में हमारे बहुभाषी और बहुसांस्कृतिक संदर्भों में भाषाओं की एक विशाल शृंखला की विभिन्न गतिशीलता को ध्यान में रखते हुए एक व्यवहार्य रोडमैप प्रस्तुत किया गया है। ये दिशानिर्देश अध्यापकों को सभी स्तरों पर भारतीय भाषाओं का संचालन करने में सशक्त बनाएँगे क्योंकि इनमें कक्षा में विद्यार्थियों की कहानी पर सही तरीके से बल दिया गया है ताकि वे अपनी सीखने की प्रक्रिया और ज्ञान हासिल कर सकें। इसका मुख्य उद्देश्य उन्हें इस तरह से तैयार करना है कि वे पूरे आत्मविश्वास के साथ अपनी भाषा में राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश के कामकाज का प्रतिनिधित्व करें।

भाषा शिक्षा के लिए पाठ्यचर्या

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के दर्शन के आधार पर पाठ्यक्रम का संशोधन किया गया है। एन.ई.पी. 2020 में भाषा शिक्षा के लिए नीति के लचीले कार्यान्वयन का प्रावधान किया गया है। यह प्रारूप पाठ्यचर्या कार्यरत अध्यापकों, भाषाविदों, अध्यापक प्रशिक्षकों, विश्वविद्यालय शिक्षाविदों, मीडिया व्यक्तियों, कलाकारों आदि के परामर्श से विकसित किया गया है। स्कूल में भाषा शिक्षा के प्रमुख सिद्धांतों के रूप में निम्नलिखित बातों को रखा गया है— (i) *बहुभाषावाद और भाषा की शक्ति* (जैसा कि एन.ई.पी. के भाषा अनुभाग को सही शीर्षक दिया गया है) और बहुभाषावाद और बहुभाषी शिक्षा को परिभाषित करना, (ii) शिक्षा का वर्तमान संदर्भ, भाषा शिक्षा, (iii) स्कूली शिक्षा और भाषा शिक्षा के प्रकार— विविध भारतीय स्कूली शिक्षा के संदर्भ में भाषा की स्थितियाँ, (iv) भाषा शिक्षा के व्यापक उद्देश्य, (v) भाषा शिक्षण-अधिगम के चरणवार उद्देश्य, (vi) पहली, दूसरी और तीसरी भाषा के रूप में भारतीय भाषाएँ, (vii) सामग्री और विषय-वस्तु, (viii) योग्यता आधारित अधिगम और अधिगम के परिणाम, (ix) भाषा शिक्षणशास्त्र, (x) भाषाओं के शिक्षण-अधिगम के लिए सामग्री, और (xi) भाषा मूल्यांकन

इत्यादि। अंतिम रूप दिए जाने के तहत स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के आधार पर प्रारूप पाठ्यक्रम को और संशोधित किया जाएगा।

भाषाओं में ई-सामग्री— हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत

इस कार्यक्रम की परिकल्पना विद्यार्थियों को पाठ्यपुस्तकों में क्यू.आर. कोड के रूप में अतिरिक्त संसाधन प्रदान करने और डिजिटल संसाधनों की मदद से भाषा कौशल बढ़ाने के लिए ई-सामग्री विकसित करने के लिए की गई है। हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में डिजिटल संसाधन विकसित किए जा रहे हैं। उर्दू में 20 ऑडियो और 10 वीडियो पांडुलिपियाँ विकसित की गई हैं। संस्कृत श्लोकों पर 13 वीडियो कार्यक्रम, संस्कृत गीतों पर 10 वीडियो, संस्कृत कहानियों पर 2 वीडियो, छंद के लिए 75 चित्र, संस्कृत प्रत्यय के लिए 25 कार्यक्रम, संस्कृत खेलों में 4 कार्यक्रम और संस्कृत नाटक में 15 वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए हैं। हिंदी में 'शब्द छवि' और 'हिंदी साहित्य— एक यात्रा' पर एक वीडियो कार्यक्रम विकसित किया गया है।

आजादी आंदोलन के दौरान भारतीय भाषाओं की राष्ट्रीय एकता विषयक कविताओं के हिंदी संकलन की पूरक पठन पुस्तिका

यह हिंदी की 22 भाषाओं की कविताओं का संग्रह है। इससे विद्यार्थियों के बीच समग्र पठन को बढ़ावा मिलेगा। इससे भारतीय भाषाओं की कविता में पाठ्य घटनाओं की सराहना के लिए रुचि, गतिविधियाँ और कार्य भी विकसित होंगे। यह विद्याथियों के बीच बहुभाषी शिक्षण दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी होगी और वे साहित्य की गुणवत्ता और साहित्यिक मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित होंगे और पढ़ने की आदतों की सर्वोत्तम परंपरा को आगे बढ़ाएँगे।

भारत के पूर्वोत्तर प्रदेश की लोक कथाओं का हिंदी में संकलन तैयार करना

यह हिंदी में भारत के पूर्वोत्तर क्षेत्र के आठ राज्यों और विभिन्न भारतीय भाषाओं की लोककथाओं का संग्रह है। इससे विद्यार्थियों के बीच समग्र पठन को बढ़ावा मिलेगा। इससे पूर्वोत्तर भारतीय भाषाओं की लोककथाओं में घटनाओं की सराहना के लिए रुचि, गतिविधियों और कार्यों को भी विकसित किया जाएगा। यह विद्यार्थियों के बीच बहुभाषी शिक्षण दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए उपयोगी होगा। वे साहित्य की गुणवत्ता और साहित्यिक मूल्यों को आत्मसात करने के लिए प्रेरित होंगे और हमारे महान लोगों द्वारा निर्धारित पढ़ने की आदतों की सर्वोत्तम परंपरा को आगे बढ़ाएँगे।

चतुर्भाषी (उर्दू-उर्दू, हिंदी-अंग्रेजी-संस्कृत) सांस्कृतिक शब्दों का सचित्र शब्दकोश

हमारी सामूहिक स्मृतियों में अब तक भी कई कलाकृतियाँ, बर्तन, प्रकाश उत्पन्न करने वाले उपकरण, पोशाकें, आभूषण, सिक्के, खाद्य पदार्थ, संगीत संबंधी उपकरण, गाड़ियाँ, आतिथ्य और मनोरंजन से संबंधित तौर-तरीके, पत्र लेखन और डाक संचार, काव्य रचनाएँ, कथा, नाटक और अन्य साहित्यिक प्रस्तुतियाँ आदि बनी हुई हैं। चूंकि हमारे स्कूल जाने वाले बच्चे अपनी पाठ्यपुस्तकों में इसी प्रकार की सामग्री पढ़ने के लिए बाध्य हैं, इसलिए उन्हें अक्सर इनमें से कुछ सांस्कृतिक अभिव्यक्तियों को पहचानने और समझने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। इसलिए यह उचित है कि हम अपने सांस्कृतिक जीवन की इन मूल्यवान संपत्तियों को मूल भाषाओं में सुरक्षित रखें, क्योंकि उनके बिना, हमारे पिछले सांस्कृतिक जीवन का इतिहास भी अर्थहीन हो जाता है। अत: सांस्कृतिक शब्दों की पहचान एवं चयन किया गया है। लगभग 2500 शब्दों की पहचान की गई है और संबंधित भाषाओं में उनके अर्थ प्रदान किए जा रहे हैं।

हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में अनुपूरक पठन सामग्री

इस कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यार्थियों को विरासत, मूल्यों और प्रचलित चिंताओं के बारे में जागरूकता पैदा करने और अर्थ के साथ पढ़ने के माध्यम से भाषा के कौशल (एल.एस.आर.डब्ल्यू.) को बढ़ाने के लिए संगत पठन सामग्री प्रदान करना है। पूरक सामग्री के लिए सामग्री प्रामाणिक स्रोतों से एकत्र की गई है। विद्यार्थियों के लिए इसकी संगतता के लिए विशेषज्ञों की एक टीम द्वारा इसकी समीक्षा की जाती है। एक अन्य गतिविधि उच्च प्राथमिक स्तर के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पहले से प्रकाशित सामग्री का संग्रह, संशोधन और पुनर्मुद्रण है। इस चयनित सामग्री का उर्दू और संस्कृत में अनुवाद किया गया है। हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू और संस्कृत में पूरक सामग्री का विकास प्रकाशन की प्रक्रिया में है। अंग्रेजी में दो पूरक पठन निकाले गए हैं। इनका शीर्षक है— *दिस इज़ जस्ट टू से एंड अदर स्टोरीज,* आई.एस.बी.एन. 978-93-5580-133-3; *द एम्प्टी हाउस एंड अदर स्टोरीज,* आई.एस.बी.एन. 978-93-5580-127-2। इसके अलावा 4 पुस्तकें ('पढ़ें और बढ़ें' शृंखला के अंतर्गत *रिश्तों की खिड़कियाँ*) विकसित की गई हैं और प्रकाशनाधीन हैं।

एक भारत श्रेष्ठ भारत (ई.बी.एस.बी.)— 22 भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन भाषा पाठ्यक्रमों (बुनियादी स्तर) का विकास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी.) में लचीली भाषा-शिक्षा नीति, शैक्षणिक अभ्यासों और सभी भाषाओं में सामग्री सुनिश्चित करने के तहत स्कूली शिक्षा में सभी भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने पर फिर से जोर दिया जाता है। भारत सरकार ने *'एक भारत श्रेष्ठ भारत' (ई.बी.एस.बी.)* के प्रमुख कार्यक्रम के तहत राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देने और एक साथ रहने और हमारी भाषाओं के माध्यम से 'भारतीयता' को समझने के लिए एक साधन के रूप में स्कूल में भाषा अधिगम की शुरुआत की। स्कूल में विद्यार्थियों के लिए और अन्य लोगों के लिए भी 22 भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित करने के लिए एक कार्यक्रम शुरू किया गया ताकि वे भाषाएँ सीख सकें और बुनियादी स्तर पर इसका उपयोग कर सकें। पाठ्यक्रमों को विकसित करने का मुख्य उद्देश्य भारत की भाषाओं की विविधता का जश्न मनाना, भाषाओं, संस्कृति और कलाओं के माध्यम से भाषाई सद्भाव और राष्ट्रीय एकता को बढ़ावा देना है। विद्यार्थी भाषाओं से परिचित हो सकेंगे और भाषाओं में बातचीत करने के लिए भाषाओं के प्रारंभिक शब्द, अक्षर और भाषा खंड सीख सकेंगे। ये पाठ्यक्रम स्कूलों में विद्यार्थियों के लिए अन्य भाषाओं और संस्कृतियों को समझने के लिए उत्प्रेरक के रूप में काम करेंगे ताकि वे सामंजस्यपूर्ण और योगदान देने वाले नागरिक बन सकें और उन्हें विश्व नागरिक बनने में सक्षम बनाया जा सके। अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों में उच्च प्राथमिक से उच्चतर माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची (असमिया / बंगाली / बोडो / डोगरी / गुजराती / हिंदी / कन्नड़ / कश्मीरी / कोंकणी / मैथिली / मलयालम / मणिपुरी / मराठी / नेपाली / उड़िया/ पंजाबी / संस्कृत / संथाली / सिंधी / तमिल / तेलुगु / उर्दू) की 22 भारतीय भाषाओं में ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के पाठ्य मॉड्यूल विकसित किए गए हैं। ये लगभग 12 मॉड्यूल हैं जिनके माध्यम से स्कूलों में विद्यार्थी पाठ्य मॉड्यूल और ऑडियो एवं वीडियो सामग्री के मिश्रित मोड के माध्यम से भाषा सीखेंगे। पाठ्यक्रम में एम.ओ.ओ.सी. (मूक) या दीक्षा जैसे उपयुक्त ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को अपनाया जाता है।

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

विभिन्न जनजातीय समूहों की शिक्षा, सामाजिक-आर्थिक और सांस्कृतिक अभ्यासों पर वृत्तचित्र (वीडियो कार्यक्रम)

भारत में विभिन्न जनजातीय समूहों के संसाधनों के रूप में अनुभवात्मक शिक्षा के दस्तावेज़ीकरण के माध्यम से भारत में विभिन्न जनजातीय समूहों के स्वदेशी ज्ञान और अभ्यासों का पता लगाया गया। तदनुसार, पाँच अलग-अलग क्षेत्रों में जनजातीय समूहों का चयन किया गया और प्रधानाध्यापक, अध्यापकों, छात्रों, एस.एम.सी.,

अभिभावकों और समुदाय के लोगों के लिए विभिन्न उपकरण विकसित और सत्यापित किए गए। हिमाचल प्रदेश में गद्दी आदिवासी समूहों और केरल में कादर आदिवासी समूहों के बीच क्षेत्रीय अध्ययन किया गया। डॉक्यूमेंट्री वीडियो फिल्में विकसित करने के लिए पाँच अलग-अलग पांडुलिपियाँ तैयार की गई हैं। इसके अलावा, विभिन्न राज्यों में भील, रियांग, अगरिया, कादर और गद्दी आदिवासी क्षेत्रों का दौरा किया गया और वृत्तचित्र वीडियो फिल्मों की तैयारी के लिए संगत वीडियो शॉट्र्स लिए गए।

जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के सभी मुख्य क्षेत्रों में पाठ्यचर्या और मुख्य अनिवार्यताओं में जेंडर समावेशन

संतुलित जेंडर परिप्रेक्ष्य राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा बुनियादी स्तर 2022 के आलोक में विकसित अधिगम शिक्षण सामग्री में सुनिश्चित करने के लिए जेंडर परिप्रेक्ष्य के दिशानिर्देशों को विकास टीमों और चित्रकारों के साथ साझा किया गया था। स्कूल के अन्य स्तरों में जेंडर परिप्रेक्ष्य को समेकित करने के लिए दिशानिर्देश भी विकसित किए गए हैं। स्कूली शिक्षा 2023 के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा जारी होने के बाद इसे अन्य स्तरों के लिए पाठ्यचर्या और पाठ्यपुस्तक समितियों के साथ साझा किया जाएगा।

स्कूली शिक्षा में ट्रांसजेंडर संबंधी सरोकारों पर अध्यापकों और अध्यापक-प्रशिक्षकों हेतु प्रशिक्षण सामग्री

स्कूलों के शैक्षणिक के साथ गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों को जागरूक करने के लिए, 'स्कूली प्रक्रियाओं में ट्रांसजेंडर संबंधी सरोकारों को समेकित करना' नामक एक प्रारूप मॉड्यूल विकसित किया गया है। मॉड्यूल पूरे दिन के सत्र में आयोजित किए जाने वाले संपूर्ण स्कूल दृष्टिकोण पर आधारित है। प्रारूप मॉड्यूल को उनके सुझावों और प्रतिक्रिया के लिए एन.सी.पी.सी.आर., राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग, राष्ट्रीय ट्रांसजेंडर परिषद् के व्यक्तियों, सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों एस.सी.ई.आर.टी. जैसे संगठनों और संस्थानों के साथ साझा किया गया है।

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

डेजी पूर्ण पाठ पूर्ण ऑडियो इतिहास का त्रिभाषी शब्दकोश

एक संगठन के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. प्रभावी शिक्षण और अधिगम के लिए शैक्षणिक उपकरण विकसित करती है। इस जिम्मेदारी के भाग के रूप में, विभिन्न विषय क्षेत्रों में पाठ्यपुस्तकें, मैनुअल और शब्दकोश विकसित किए जाते हैं। इस प्रकार 2017 में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा तैयार इतिहास में त्रिभाषी शब्दकोष, तीनों भाषाओं अर्थात अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में स्कूली शिक्षा के विभिन्न चरणों में इतिहास के विषय में उपयोग किए जाने वाले विभिन्न शब्दों और अवधारणाओं की व्याख्या प्रदान की गई है।

रा.शै.अ.प्र.प. ने दृष्टिबाधित छात्रों की ज्ञान और सूचना तक पहुँच सुनिश्चित करने के लिए, 'सक्षम' की मदद से इतिहास में त्रिभाषी शब्दकोश को डेजी पूर्ण पाठ पूर्ण ऑडियो में परिवर्तित किया। इस शब्दकोश में अनोखी विशेषताएँ हैं। इसमें टेक्स्ट के साथ ऑडियो है और इसलिए यह गैर-विकलांगों के साथ-साथ डिस्लेक्सिक और पढ़ने में अक्षम लोगों के लिए भी उपयुक्त है। इसके अलावा, पाठ को ऑडियो में सरल मशीन से रूपांतरण करने के बजाय इसे तीनों भाषाओं में विशेषज्ञों द्वारा रिकॉर्ड किया गया था। शब्दकोश को दृष्टिबाधित छात्रों के साथ प्रयोग किया गया है और उन्हें इस पर अच्छी प्रतिक्रिया मिली है। यह अब रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट पर उपलब्ध है।

भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों पर पूरक अध्ययन सामग्री

'भारत के सीमा क्षेत्र— अवधारणाएँ और अन्वेषण' तथा भारत के सीमा क्षेत्रों पर एक एटलस' शीर्षक से एक पूरक पाठमाला विकसित की गई है। भारत की अंतरराष्ट्रीय भूमि सीमाएँ सात देशों— पाकिस्तान, अफगानिस्तान,

चीन, नेपाल, भूटान, बांग्लादेश और म्यांमार के साथ साझा होती हैं। इस पुस्तक को आठ अध्यायों में विभाजित किया गया है— परिचय, सामाजिक-सांस्कृतिक परिदृश्य, भारत-पाकिस्तान और अफगानिस्तान सीमा क्षेत्र, भारत-चीन (तिब्बत) सीमा क्षेत्र, भारत-नेपाल सीमा क्षेत्र, भारत-भूटान सीमा क्षेत्र, भारत-बांग्लादेश सीमा क्षेत्र, भारत-म्यांमार सीमा क्षेत्र। प्रत्येक देश की सीमाओं के भौतिक एवं सांस्कृतिक पक्षों का वर्णन किया गया है।

भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों पर तैयार इस एटलस में 57 मानचित्र शामिल हैं जिन्हें 10 विषयों— परिचय, प्रशासनिक, भौतिक विशेषताएँ, जल निकासी, जनसंख्या घनत्व, अनुसूचित जनजाति, मातृभाषा, बुनियादी ढाँचा, पर्यटन स्थल और झलकियों में वर्गीकृत किया गया है। एटलस के प्रत्येक मानचित्र के साथ एक संक्षिप्त लेख और दृश्य भी शामिल किए गए हैं। दोनों सामग्रियों की जानकारी भारत सरकार और राज्य सरकार के विभिन्न मंत्रालयों/विभागों की वेबसाइटों से एकत्र की गई है।

माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र के शिक्षण-अधिगम के लिए किट और मैनुअल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 के आलोक में, कक्षा 9 से 12 के लिए मैनुअल के साथ माध्यमिक अर्थशास्त्र शैक्षिक किट (एस.ई.ई.के.) विकसित की गई है। यह सामग्री अंतरविषय समावेशी प्रकार की है और भारत की मौद्रिक विरासत और आधुनिक आर्थिक सोच में भारतीय विचारकों के योगदान के बारे में जागरूकता पैदा करने सहित महत्वपूर्ण जीवन कौशल— आर्थिक और वित्तीय विचार को विकसित करने के लिए है। इस किट के माध्यम से भारत-विद्या (भारतीय ज्ञान प्रणाली) के संदर्भ और आरंभ बिंदु को बनाने वाली भारतीय आर्थिक विरासत को फिर से देखने, संरक्षित करने के लिए आधुनिक आर्थिक सोच में भारतीय विचारकों के योगदान, अर्थशास्त्र (सामाजिक विज्ञान) को बढ़ावा देने और प्रसारित भारतीय परिप्रेक्ष्य (भारतीय विद्या), दूरदर्शी संतों और महान विद्वानों द्वारा दिखाया गया ज्ञान मार्ग, नैतिक मूल्य का पता लगाने की पहल की गई है जो सामाजिक और राष्ट्रीय हितों के लिए खड़े हैं और वसुधैव कुटुंबकम (वसुधैव कुटुंबकम्) जैसे विचार अंतरराष्ट्रीय सद्भाव के लिए हैं जिसके परिणामस्वरूप शांति और सतत विकास होता है। इस किट के मद कई संसाधनों से तैयार किए गए हैं। संस्कृत में उपलब्ध पाठ जिसमें भारतीय परंपरा पर बल दिया जाता है। इस किट और मैनुअल में अध्यापकों और छात्रों को स्कूली शिक्षा के लिए एक नई दृष्टि प्रदान करने के रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयास को दर्शाया गया है। यह किट व्यावहारिक तरीके से और दिमाग से सीखने के दृष्टिकोण के माध्यम से बच्चों में सर्वोत्तम क्षमता लाने के लिए काम करने वाले लोगों को समर्पित है।

आधुनिक भारत के आर्थिक विचारकों पर पूरक पाठमाला

स्कूली बच्चों को स्वदेशी राष्ट्रवादी अर्थशास्त्रियों के बारे में जागरूक करने के उद्देश्य से आर्थिक सोच में भारत की समृद्ध परंपरा को प्रकट करने के लिए आधुनिक भारत के उन आर्थिक विचारकों पर एक पाठमाला विकसित की गई है, जिनके विचारों और लेखन ने न केवल भारत की मुक्ति के संघर्ष में योगदान दिया, बल्कि उसे आर्थिक विकास के पथ पर आगे बढ़ाने में भी योगदान दिया। इस पुस्तक का उद्देश्य छोटे विद्यार्थियों को आधुनिक समय के महत्वपूर्ण भारतीय दार्शनिकों, विचारकों और अर्थशास्त्रियों, जैसे— नौरोजी, रानाडे, गोखले, गाँधी, बी.आर. अम्बेडकर, महालनोबिस, वकील, गाडगिल, वी.के.आर.वी.राव, दांडेकर, के.एन. राज, ब्रह्मानंद, अमर्त्य सेन, जगदीश भगवती और कृष्ण भारद्वाज के योगदान से परिचित कराने में मदद करना है। इस पुस्तक में इन विचारकों के जीवन और आर्थिक विचारों पर प्रकाश डाला गया है। चयनित विचारक अनुकरणीय राष्ट्रवादी होने के साथ-साथ स्वतंत्रता के बाद के विचारक भी हैं, जो आधुनिक भारत में आर्थिक सोच में सबसे आगे थे। इन्हीं विचारकों ने देश की भावी आर्थिक नीतियों को भी प्रेरित किया है।

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान में ऑडियो-वीडियो संसाधन

रसायन विज्ञान से संबंधित विषयों पर ऑडियो-वीडियो सामग्री को शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया के दौरान आने वाली जरूरतों और कठिनाइयों के अनुसार डिजाइन और विकसित किया गया था। ये ऑडियो-वीडियो सामग्रियाँ छात्रों और कार्यरत अध्यापकों को प्रयोगात्मक कार्यों को पूरा करने, व्यावहारिक दृष्टिकोण को पूरा करने और आई.सी.टी. को समेकित करने की सुविधा प्रदान करती हैं। माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान से संबंधित विषयों पर प्रयोगों/गतिविधियों की कई नवीन पांडुलिपियाँ विकसित की गई हैं। इस वर्ष, कक्षा 9 और 10 के लिए माध्यमिक स्तर के पहले चरण पर ध्यान केंद्रित किया गया था। कुछ पांडुलिपियाँ विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विकसित की गई हैं। इसका उद्देश्य छोटे-छोटे वीडियो के रूप में संपूर्ण अध्यायों को क्रमबद्ध तरीके से कवर करना है।

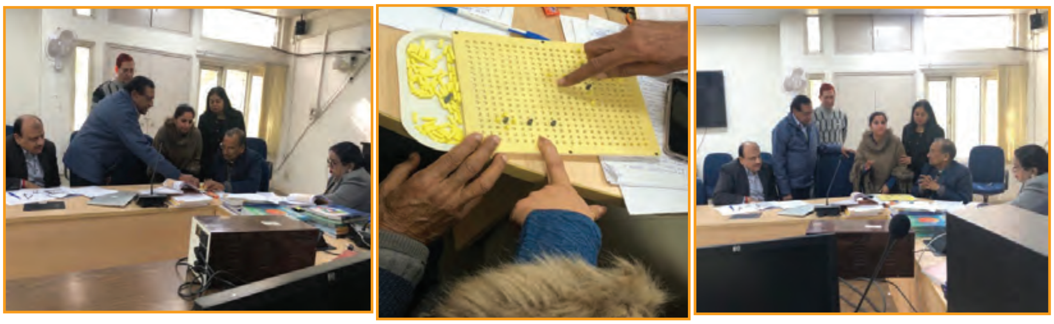

कार्यशाला के दौरान रसायन विज्ञान में मॉडलों का प्रदर्शन

उच्च प्राथमिक स्तर पर विज्ञान में प्रयोगशाला मैनुअल पर आधारित ऑडियो-वीडियो संसाधन

कोविड-19 के दौरान ऑडियो-वीडियो संसाधनों की आवश्यकता महत्वपूर्ण हो गई। अध्यापकों, छात्रों और कई अन्य हितधारकों द्वारा इसका उपयोग काफी बढ़ गया है। ऑडियो-वीडियो सामग्रियाँ विभिन्न शैलियों में विविध शिक्षण आवश्यकताओं को पूरा करती हैं और साथ ही कार्यरत अध्यापकों को आई.सी.टी. के समेकन के साथ-साथ व्यावहारिक दृष्टिकोण के पूरक प्रयोगात्मक कार्य करने की सुविधा प्रदान करती हैं। विज्ञान में प्रयोगशाला मैनुअल पर आधारित लगभग 40 पांडुलिपियाँ विकसित की गई हैं। ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम के निर्माण की प्रक्रिया प्रगति पर है।

जीव विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगशाला का संशोधन एवं उन्नयन

जीव विज्ञान अधिगम को एक गतिविधि-आधारित अधिगम बनाने के तथ्य पर जोर देते हुए, जीव विज्ञान और जैव प्रौद्योगिकी प्रयोगों और गतिविधियों को समग्र तरीके से एक बच्चे के विकास के लिए बाल-केंद्रित दृष्टिकोण का पालन करते हुए डिजाइन किया गया है। विकसित किए गए प्रयोग स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों पर रा.शै.अ.प्र.प. पाठ्यपुस्तकों में दी गई जीव विज्ञान और जैव-प्रौद्योगिकी की अवधारणाओं को समझने के लिए पूरक होंगे। इस कार्यक्रम में विवरणिका, प्रयोगशाला के रख-रखाव और साफ-सफाई आदि के लिए सामान्य दिशानिर्देश विकसित किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, विद्यार्थियों के बीच वैज्ञानिक स्वभाव को विकसित करने के लिए मध्य स्तर में लगभग 10 गतिविधियाँ और माध्यमिक स्तर के लिए लगभग 12 प्रयोग विकसित किए गए हैं।

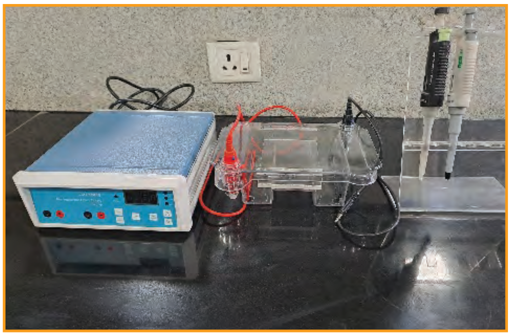

जीव विज्ञान प्रयोगशाला में मॉडलों एवं उपकरणों का प्रदर्शन

गणित प्रयोगशाला का संशोधन एवं विकास

गणित प्रयोगशाला एक मूल्यवान संसाधन है जहाँ छात्रों को गणितीय अवधारणाओं का पता लगाने और समस्या-समाधान कौशल विकसित करने के लिए व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाता है। प्रयोगशाला गतिविधियों को मौजूदा पाठ्यक्रम को पूरकता प्रदान करने और बढ़ाने के लिए डिजाइन किया गया है, जिससे यह छात्रों के लिए अधिक आकर्षक और दिलचस्प बन सके। इन गतिविधियों का उद्देश्य बच्चों को गणित करने का एक प्रयोग देना है, न कि केवल प्रदर्शन के उद्देश्य से कराना है। ये गतिविधियाँ छात्रों को कारणों की कल्पना करने और खोजने में मदद करती हैं। इनसे बच्चों को अनुमान लगाने और उनका परीक्षण करने और देखे गए पैटर्न को सामान्य बनाने के अवसर प्रदान किए जाते हैं। इस कार्यक्रम में उच्च प्राथमिक गणित के लिए लगभग 37 गतिविधियाँ, माध्यमिक के लिए लगभग 42 गतिविधियाँ, उच्च माध्यमिक के लिए लगभग 33 गतिविधियाँ डिजाइन की गई हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आलोक में गणित प्रयोगशालाओं को अद्यतन करने से छात्रों के बीच महत्वपूर्ण सोच, समस्या-समाधान और विश्लेषणात्मक कौशल को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

योग्यता आधारित शैक्षणिक रूपरेखा और विज्ञान तथा गणित में सीखने के परिणामों का पुनरावलोकन

एन.ई.पी.2020 की सिफारिशों में से एक आवश्यक अधिगम और महत्वपूर्ण सोच को बढ़ाने के लिए पाठ्यक्रम सामग्री को कम करना है जिसे दस्तावेज़ों के पैरा 4.5 में इस प्रकार विस्तृत किया गया है, "पाठ्यचर्या की सामग्री को प्रत्येक विषय में उसकी मूल अनिवार्यताओं में कम किया जाएगा ताकि आलोचनात्मक सोच और अधिक समग्र, पूछताछ-आधारित, खोज-आधारित, चर्चा-आधारित और विश्लेषण आधारित शिक्षा के लिए जगह बनाई जा सके।" एन.ई.पी.2020 की सिफारिश को ध्यान में रखते हुए, एक रूपरेखा तैयार करने से मध्य और माध्यमिक स्तरों के लिए विज्ञान और गणित से संबंधित मुख्य अनिवार्यताओं की पहचान करने में विभिन्न हितधारकों का मार्गदर्शन किया जा सकेगा।

यह दस्तावेज़ उन सभी हितधारकों के लिए सहायक होगा जो पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम के अन्य पहलुओं के विकास में संलग्न हैं, मूल अनिवार्यताओं के बारे में एक विचार देकर और वे विज्ञान और गणित में विभिन्न स्तरों और कक्षाओं के लिए ऐसी मूल अनिवार्यताओं की पहचान किस प्रकार कर सकते हैं। इस दस्तावेज़ में प्रत्येक स्तर के लिए उल्लिखित व्यापक क्षेत्र और मुख्य अनिवार्यताएँ केवल विचारोद्दीपक हैं, अनुदेशात्मक नहीं। हितधारक मुख्य अनिवार्यताओं की पहचान करने के लिए अपनी कार्यनीति विकसित कर सकते हैं, जिसका विवरण संदर्भ-विशिष्ट या राज्य-विशिष्ट भी हो सकता है।

खेल, खिलौने, मॉडल, वीडियो, स्टोरीबोर्ड और विज्ञान में कला रूपों के समेकन पर आधारित संसाधन सामग्री

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में विद्यार्थियों के बीच महत्वपूर्ण सोच, रचनात्मकता, निर्णय लेने और समस्या समाधान आदि जैसे विभिन्न कौशल को बढ़ाने पर बल दिया जाता है। खिलौना, खेल और कला-आधारित शिक्षणशास्त्र इस प्रयास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। इसके अलावा, हमारी सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण पर काम करने का तत्काल आह्वान है। इसे ध्यान में रखते हुए, मध्य स्तर पर क्लासिकल खेल, डिजिटल गेम, खिलौने, वीडियो और कला-समेकित गतिविधियाँ जैसी गतिविधियों सहित एक संसाधन सामग्री विकसित की गई है। इस सामग्री का उद्देश्य अनुभवात्मक, नवोन्मेषी, संवादात्मक और बाल-केंद्रित विज्ञान सीखने को बढ़ावा देना है। इस सामग्री से विद्यार्थियों को कला रूपों, खेलों और खिलौनों के साथ विज्ञान के समेकन के माध्यम से अपनी परंपरा और संस्कृति से जुड़ने में भी सक्षम बनाया जा सकेगा। संसाधन सामग्री को अंतिम रूप देने की प्रक्रिया चल रही है। विज्ञान गीतों पर दो पुस्तिकाएँ, हिंदी में *विज्ञान गीत मंजरी* और अंग्रेजी में *साइंस मेलोडीस* भी प्रकाशन की प्रक्रिया में हैं।

पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस.डी.)

स्कूल में अनुभवात्मक शिक्षा को कार्यान्वित करने पर दिशानिर्देश

अनुभवात्मक अधिगम एक दर्शन है जहाँ एक व्यक्ति अधिगम का अनुभव करता है, प्रतिबिंबित करता है, संकल्पना करता है और सक्रिय रूप से प्रयोग या कार्यान्वित करता है। इन दिशानिर्देशों में विभिन्न स्तरों और विषयों में अनुभवात्मक शिक्षा के कार्यान्वयन की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए बहुत सारे चित्र शामिल हैं। इस दस्तावेज़ में अनुभवात्मक शिक्षा के बारे में 'क्या, क्यों और किस प्रकार' का सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य; नीतिगत दृष्टिकोण; स्कूलों में अनुभवात्मक अधिगम संस्कृति का निर्माण करना; और अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों, छात्रों, अभिभावकों, परीक्षा बोर्ड के सदस्यों, समुदाय के सदस्यों आदि सहित विभिन्न हितधारकों की भूमिका के बारे में बताया गया है। चरण और विषयवार चित्रण प्रस्तुति से यह स्पष्ट समझ आएगा कि कक्षाओं में इसका उपयोग कैसे किया जाए। ये दिशानिर्देश शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में गुणवत्ता में सुधार की सुविधा प्रदान करेंगे। इस दस्तावेज़ को राष्ट्रीय परामर्श बैठक में विभिन्न विशेषज्ञों से एकत्र किए गए इनपुट के आधार पर विकसित किया गया है और रा.शै.अ.प्र.प. के अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और संकाय सदस्यों द्वारा चित्रण का प्रारूप तैयार किया गया, समीक्षा की गई और अंतिम रूप दिया गया। यह व्यक्त किया गया कि दस्तावेज़ वास्तव में स्कूलों में अनुभवात्मक शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए अध्यापकों के लिए एक बहुत ही महत्वपूर्ण तैयार संसाधन होगा।

विद्यालयी बस्ता नीति 2020

स्कूल बैग पॉलिसी 2020 का हिंदी संस्करण *विद्यालयी बस्ता नीति 2020* शिक्षा मंत्रालय को सौंप दिया गया है। इसमें इस संबंध में किए गए एक सर्वेक्षण के आधार पर विद्यालयी बस्ते के वजन को कम करने पर एक विस्तृत दिशानिर्देश शामिल है। इसमें बिना समझे कार्य के बोझ को कम करने के लिए कार्यनीतियाँ भी प्रदान की गई हैं।

राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा कार्यान्वयन के लिए विद्यालयी बस्ता नीति का अंग्रेजी संस्करण पहले ही शिक्षा मंत्रालय द्वारा अधिसूचित किया जा चुका है।

एन.सी.एफ.-2005 के अनुवर्तन के रूप में विकसित पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यसामग्री को अद्यतन करना

इस परियोजना का मुख्य उद्देश्य रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न विभागों और इकाइयों द्वारा विकसित स्तरों और विषयों में पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकों को अद्यतन करना था। पाठ्यपुस्तकों की समीक्षा और अद्यतन करने के लिए संबंधित विभागों और सी.बी.एस.ई. के साथ नियमित गतिविधि के रूप में विभिन्न बैठकें आयोजित की गईं। यहाँ 18 व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यपुस्तकों के संपादन और पुनरीक्षण के लिए तीन कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। पाठ्यपुस्तकों की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए जहाँ भी आवश्यक हो, सामग्री के संदर्भ में पुस्तकों की गहन समीक्षा की गई, डेटा, हाल के अभ्यासों और चित्रणों को अद्यतन किया गया। प्रतिक्रिया के आलोक में पुस्तकों को अंतिम रूप दिया गया है। अब तक, 69 व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यपुस्तकें प्रकाशित और रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट पर अपलोड की जा चुकी हैं।

कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

कला शिक्षा पर राष्ट्रीय फोकस समूह आधार पत्र

कला शिक्षा पर एन.एफ.जी. आधार पत्र का विकास शिक्षा के विभिन्न चरणों के लिए एन.ई.पी. 2020 में कला शिक्षा की सिफारिशों पर अध्यापकों और शिक्षा में विभिन्न हितधारकों को एक दिशानिर्देश देने के उद्देश्य से किया गया था। इसमें आवश्यक भारतीय लोकाचार को पहचानते हुए, कला के विभिन्न क्षेत्रों में भारत की बहुल और विविध कला विरासत, भारतीय ज्ञान प्रणालियों और परंपराओं के माध्यम से 21वीं सदी के कौशल हासिल करने के लिए बहुआयामी तरीकों पर बल दिया जाता है और लगातार बदलती वैश्विक दुनिया में लचीले और तर्कसंगत रूप से संचार करने के लिए हमारी समृद्ध सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत की सच्ची भावना को संरक्षित किया जाता है। इस आधार पत्र में दृश्य और प्रदर्शन कला के क्षेत्रों को स्पष्ट रूप से बताया गया है जिन्हें आनंददायक अधिगम और रचनात्मक क्षमताओं को बढ़ाने के लिए चरणबद्ध तरीके से पूरी तरह से कार्यान्वित किया जा सकता है। ये हैं पेंटिंग, मूर्तिकला, मिश्रित मीडिया, ग्राफिक डिजाइन, संग्रहालय, संगीत के शास्त्रीय और लोक रूप (गायन और वाद्य, नृत्य, नाटक, आधुनिक नाटक, एकालाप, नुक्कड़ नाटक, बच्चों के नाटक, कठपुतली नाटक, शिल्प और खाद्य बागवानी की कला, फूलों की सजावट आदि।

फोकस पत्र में पाठ्यचर्या क्षेत्र के रूप में कला के कार्यान्वयन पर बल दिया जाता है, जिसमें 'कला', या 'व्यावसायिक' या 'शैक्षणिक' धाराओं के बीच 'पाठ्यचर्या', 'पाठ्येतर', या 'सह-पाठ्यक्रम' के बीच कोई स्पष्ट अलगाव नहीं है। इसे कक्षा 10 तक प्रत्येक बच्चे के लिए अनिवार्य होना चाहिए और इसलिए इसे सभी संस्थानों (स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा और व्यावसायिक शिक्षा) में अनिवार्य रूप से कार्यान्वित किया जाना चाहिए। माध्यमिक स्तर पर, कला और शिल्प और व्यावसायिक कौशल में विभिन्न विषयों को वैकल्पिक विषयों के रूप में पेश किया जाएगा जिसका उच्च शिक्षा और करियर से जुड़ाव होगा। उचित पाठ्यक्रम विकसित करने, डिजिटल और प्रिंट में सामग्री के विकास, मूल्यांकन कार्यनीतियों, स्थानीय कला के बारे में मौजूदा सांस्कृतिक संगठनों (सरकारी और गैर-सरकारी दोनों) अधिगम के साथ सहयोग, सामग्री और स्थानीय कलाकारों और कारीगरों को शामिल करना, प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षा, बैग रहित दिवस, निवास कार्यक्रमों में कलाकार, संसाधनों और कार्यशालाओं को साझा करने आदि जैसी पहल उचित कार्यान्वयन को सक्षम करने के लिए विस्तार से चर्चा की गई है।

कर्नाटक म्यूजिक— वोकल एंड मेलोडिक इंस्ट्रूमेंट्स, कक्षा 12 की पाठ्यपुस्तक

कर्नाटक शास्त्रीय संगीत पर कक्षा 12 के लिए एक पाठ्यपुस्तक विकसित की गई है। इस पाठ्यपुस्तक में स्वर संगीत और मधुर वाद्य संगीत से संबंधित विषय शामिल हैं। यह कर्नाटक संगीत के सिद्धांतों और प्रायोगिक भाग दोनों को समझने के लिए है। इस सिद्धांत विषय में भारत में संगीत का ऐतिहासिक विकास शामिल है जो वैदिक युग से लेकर समकालीन समय तक नवीन रूप से विकसित होने वाली भारतीय ज्ञान परंपराओं और प्रथाओं में गहराई से निहित है। इसमें संगीत का वह ग्रंथ शामिल है जिसने शास्त्रीय संगीत में सिद्धांत दिशानिर्देश, शब्दावली निर्धारित की है, जो संगीत को परिभाषित करते हैं, संगीत रचनाओं के विभिन्न रूप, रागों, तालों का ज्ञान, अंतर विषयक दृष्टिकोण, संगीत वाद्ययंत्रों की चार श्रेणियाँ और कर्नाटक संगीत में दिग्गजों का योगदान शामिल है जो इसे वर्तमान समय में इन रूपों को लेकर आए हैं। प्रायोगिक भाग में रागों का वर्णन, विभिन्न रागों में रचनाएँ, ताल लिखने के संकेतन और लयबद्ध व्याख्याएँ शामिल हैं। यह पुस्तक आम लोगों के लिए भी उपयोगी होगी जिन्हें कर्नाटक शास्त्रीय संगीत की बारीकियों को समझने की ललक है।

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

मॉलीकुलर मॉडल किट का संशोधन

यह कार्यक्रम रसायन विज्ञान पढ़ाने के लिए मौजूदा आण्विक मॉडल की प्रभावशीलता में सुधार लाने, फुलरीन जैसे नए अणुओं को बनाने के लिए वस्तुओं को जोड़ने और आण्विक मॉडल किट के मैनुअल को तदनुसार अद्यतन करने और किट वस्तुओं को अधिक प्रयोक्ता-अनुकूल और एक वीडियो गाइड प्रदान करने के साथ-साथ समावेशी बनाने के लक्ष्य के साथ चलाया गया था। विशेषज्ञों से प्राप्त सुझावों और फीडबैक के आधार पर किट को अधिक समावेशी और प्रयोक्ता के अनुकूल बनाने के लिए किट आइटम और किट बॉक्स सहित नए प्रोटोटाइप आइटम की विशिष्टताओं को संशोधित किया जा रहा है।

हरित दृष्टिकोण पर फोकस के साथ उच्चतर माध्यमिक रसायन किट

इस कार्यक्रम की शुरुआत मौजूदा वरिष्ठ माध्यमिक रसायन किट मदों की डिजाइन के साथ-साथ विशिष्टताओं की समीक्षा और संशोधन करने, रसायन विज्ञान प्रयोगों के संचालन में किट की उपयोगिता को बढ़ाने, रसायन विज्ञान किट में नई मदों को शामिल करने, विभिन्न मदों के लिए उपयुक्त डिब्बों के साथ किट के डिजाइन को अंतिम रूप देने और किट के उचित उपयोग के लिए एक वीडियो गाइड विकसित करने के उद्देश्य से की गई थी। किट को अधिक समावेशी और प्रयोक्ता के अनुकूल बनाने के लिए नए प्रोटोटाइप आइटम और एस.एस.सी.एल.के. का किट बॉक्स बनाया गया है।

नई किट के लिए नए प्रोटोटाइप मद और संशोधन/प्रतिस्थापन तथा पहले से लॉन्च किए गए किट में मद

यह कार्यक्रम मौजूदा किट मदों की समीक्षा करने, प्रोटोटाइप मदों को विकसित करने, किटों को समावेशी और प्रयोक्ता के अनुकूल बनाने, गुणवत्ता परीक्षण करने और किटों के मैनुअल को संशोधित करने के उद्देश्यों के साथ शुरू किया गया था। विशेषज्ञों के सुझावों के आधार पर प्रभाग द्वारा विकसित किट, अर्थात् उच्च प्राथमिक विज्ञान किट (यू.पी.एस.के.), माध्यमिक विज्ञान किट (एस.एस.के.), वरिष्ठ माध्यमिक भौतिक प्रयोगशाला किट (एच.एस.पी.एल.के.), प्रारंभिक गणित शिक्षण किट (ई.एम.एल.के.), उच्च प्राथमिक गणित किट (यू.पी.एम.के.), माध्यमिक गणित लैब किट (एस.एम.एल.के.) और उच्चतर माध्यमिक गणित लैब किट (एच.एस.एम.एल.के.) को संशोधित किया गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में शैक्षिक किट संसाधन केंद्र (ई.के.आर.सी.) की स्थापना

यह कार्यक्रम प्रत्येक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान में शैक्षिक किट संसाधन केंद्र (ई.के.आर.सी.) विकसित करने के उद्देश्य से शुरू किया गया था। इसका उद्देश्य सेवा-पूर्व अध्यापक प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षित करने और संसाधन व्यक्तियों, राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के अधिकारियों और डी.एम.एस. अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रमों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. शैक्षिक किट का उपयोग करने में क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों (आर.आई.ई.) के संकाय की मदद करना भी है। शैक्षिक किट संसाधन केंद्र की स्थापना के लिए दिशानिर्देशों को अंतिम रूप दे दिया गया है और आर.आई.ई. के प्रधानाचार्यों के साथ साझा किया गया है।

शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

माध्यमिक स्तर (कक्षा 11 और 12) में मनोविज्ञान में अधिगम प्रतिफलों के आधार पर मद बैंकों और ई-सामग्री का विकास

यह परियोजना मनोविज्ञान में अधिगम के परिणामों के आधार पर योग्यता आधारित मद बैंक विकसित करने और प्रत्येक अधिगम प्रतिफल पर इंफोग्राफिक्स/मूल्यांकन प्रश्न/वर्कशीट/बाइट-साइज के वीडियो तैयार करने के उद्देश्य से शुरू की गई थी। इन उद्देश्यों के साथ, मनोविज्ञान में विषय के अध्यापकों की मदद से अधिगम प्रतिफलों के आधार पर मद बैंक और ई-सामग्री विकसित करने के लिए समय-समय पर कार्यशालाएँ और समीक्षा बैठकें आयोजित की गईं। मनोविज्ञान में पाठ्यपुस्तकों के कक्षा 11 के सात अध्यायों और कक्षा 12 के छह अध्यायों के अधिगम प्रतिफल से संबंधित मूल्यांकन प्रश्न और मार्कशीट इन संबंधित अध्यायों के इंफोग्राफिक के साथ विकसित की गई हैं। विकसित सामग्रियों की समीक्षा संकाय और विषय अध्यापकों द्वारा की गई और सुझावों को शामिल करने के बाद इन्हें अंतिम रूप दिया गया।

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

बहु-विषयक संस्थानों में समेकित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) के लिए कार्यान्वयन दिशानिर्देश

वर्तमान में एकल संस्थानों में अलग-अलग अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम पेश किए जा रहे हैं, जो कुछ अपवादों को छोड़कर केवल अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम पेश करते हैं। एन.ई.पी. 2020 की सिफारिश के अनुसार इसे बहुविषयक संस्थानों या विश्वविद्यालयों में स्थानांतरित किया जाना है। हमारे देश में कुछ संस्थान हैं, जो अन्य स्नातक और स्नातकोत्तर कार्यक्रमों के साथ-साथ बी.एससी. बी.एड और बी.ए. बी.एड जैसे 4 वर्षीय समेकित पाठ्यक्रम चलाते हैं। यदि हमें बड़ी संख्या में बहु-विषयक संस्थानों में आई.टी.ई.पी. पाठ्यक्रम पेश करने की आवश्यकता है तो दिशानिर्देशों के रूप में एक व्यापक रूपरेखा मददगार होगी।

दिशानिर्देशों को 10 खंडों में विभाजित किया गया है, जिनमें से प्रत्येक में एक विशिष्ट कार्यक्रम पहलू को कवर किया जाता है। पहले अध्याय में कार्यक्रम के संदर्भ की व्याख्या की गई है, जिसमें अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के ऐतिहासिक संदर्भ, अध्यापक शिक्षा पर दृष्टिकोण, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 और समेकित अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम (आई.टी.ई.पी.) के लिए एन.सी.टी.ई. नियम शामिल हैं। दूसरे अध्याय में पाँच संस्थानों में किए गए क्षेत्रीय अध्ययन से शिक्षा ली गई है। तीसरे अध्याय में बहु-विषयक संस्थानों में आई.टी.ई.पी. को कार्यान्वित करने के लिए इसकी अनिवार्य आवश्यकताओं और विचारोद्दीपक उपायों सहित कार्यान्वयन की तैयारियों पर चर्चा की गई है।

चौथे अध्याय में छात्र प्रेरण पर चर्चा की गई है, जिसमें प्रवेश और पात्रता और छात्र प्रेरण के घटक शामिल हैं। पाँचवें अध्याय में संकाय के क्षमता निर्माण की व्याख्या की गई है। शिक्षण गुणवत्ता में सुधार, नई शिक्षण पद्धतियों के विकास और शैक्षणिक संस्थानों की समग्र उन्नति के लिए संकाय सदस्यों का क्षमता निर्माण आवश्यक है। छठवें अध्याय में पाठ्यक्रम और उसके घटकों की पड़ताल की गई है जिन्हें इस कार्यक्रम में शामिल करने की आवश्यकता है। इस अध्याय में पेश किए जाने वाले विभिन्न प्रकार के पाठ्यक्रम और क्षेत्र सहभागिता भी शामिल हैं। सातवाँ अध्याय पाठ्यचर्या अंतरण पर केंद्रित है। विभिन्न विद्यार्थियों की आवश्यकताओं को पूरा करने वाले प्रभावी पाठ्यक्रम को डिजाइन करने में सिद्धांत, अभ्यास और अनुसंधान को समेकित करना महत्वपूर्ण है। इस अध्याय में पारंपरिक, आई.सी.टी. और वैकल्पिक तरीकों सहित पाठ्यक्रम अंतरण के विभिन्न तरीकों की पड़ताल की गई है और पता लगाया गया है कि वे कैसे विषयों और शिक्षणशास्त्र तत्वों को सार्थक रूप से समेकित कर सकते हैं। आठवें अध्याय में कार्यक्रम के मूल्यांकन पर केंद्रित विवरण है, जिसमें छात्र के प्रदर्शन का मूल्यांकन और कार्यक्रम के परिणामों की निगरानी शामिल है। नौवाँ अध्याय कार्यक्रम के फीडबैक तंत्र पर केंद्रित है, जिसमें शामिल किए जाने वाले फीडबैक घटक भी शामिल हैं। दसवाँ अध्याय कार्यक्रम के दस्तावेज़ीकरण और दस्तावेज़ीकरण के विभिन्न स्रोतों और तरीकों पर केंद्रित है।

ये दिशानिर्देश विभिन्न संस्थानों में कार्यक्रम के कार्यान्वयन को मानकीकृत करने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करेंगे। दिशानिर्देश कार्यक्रम, उसके उद्देश्यों और इसे सफलतापूर्वक कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक कार्यनीतियों की गहरी समझ प्रदान करेंगे। इसमें कार्यक्रम के विभिन्न पहलुओं को शामिल किया गया है, जिसमें इसकी वैचारिक रूपरेखा, संरचना, पाठ्यचर्या अंतरण, संकाय का क्षमता निर्माण, छात्रों का प्रेरण, कार्यक्रम के लिए मूल्यांकन प्रतिक्रिया और दस्तावेज़ीकरण शामिल है। इन दिशानिर्देशों से मानकीकरण, स्पष्टता, जवाबदेही, गुणवत्ता आश्वासन और कार्यक्रम की मान्यता सुनिश्चित करने में मदद मिल सकती है और देश में अध्यापक शिक्षा के समग्र सुधार में योगदान कर सकते हैं।

चिंतनशील शिक्षण— एक चिंतनशील अध्यापक तैयार करने की दिशा में एक हस्तपुस्तिका' (एन.ई.पी. 2020 के आधार पर संशोधित)

विद्यार्थियों और अध्यापकों के लिए चिंतन सफलतापूर्वक सीखने की कुंजी है। एक चिंतनशील और पेशेवर अध्यापक बनने के लिए यह एक आधारभूत मूल्य और आवश्यक शर्त है। हम क्या, क्यों और कैसे काम करते हैं, इस पर विचार करने और अपनी अधिगम-शिक्षण की प्रक्रियाओं को विकसित एवं समृद्ध करने में सक्षम होना, एक सक्षम अध्यापक की एक अनिवार्य विशेषता है। चूंकि एक सक्षम अध्यापक होने के नाते वह स्वयं के साथ-साथ अपने छात्रों को भी *'सीखना कैसे सीखें'* सिखाता है, इसलिए उसे चिंतनशील होना ही होगा।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में वर्तमान संदर्भ में शिक्षण में चिंतनशील अभ्यास की आवश्यकता पर जोर दिया जाता है। अध्यापकों की शैक्षणिक अभ्यासों को उनके स्वयं के अभ्यासों पर आलोचनात्मक प्रतिबिंब के माध्यम से, विविध आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए लगातार बदलने और बढ़ने की आवश्यकता है। इसलिए उभरती आकांक्षाओं के लिए शिक्षण को एक नई विधा में बदलने में मदद करने के लिए चिंतनशील अध्यापकों को तैयार करने की दिशा में हस्तपुस्तिका लाने की तत्काल आवश्यकता थी।

पुस्तक को तीन व्यापक खंडों में विभाजित किया गया है— वैचारिक रूपरेखा, विकासशील प्रतिबिंब और कार्रवाई पर प्रतिबिंब। वैचारिक रूपरेखा से युक्त खंड 1 में दो अध्याय शामिल हैं, जो चिंतनशील अधिगम और शिक्षण हैं और अध्यापक एक चिंतनशील अभ्यासकर्ता के रूप में हैं। जबकि विकासशील चिंतन को शामिल करते

रा.शै.अ.प्र.प.

हुए खंड 2 में तीन अध्याय शामिल हैं। ये चिंतन क्षेत्र हैं— चिंतनशील पत्रिका लिखना और चिंतनशील अधिगम और शिक्षण का मूल्यांकन। भाषा में चिंतनशील शिक्षण— अंग्रेजी; पर्यावरण अध्ययन में चिंतनशील शिक्षण; सामाजिक विज्ञान में चिंतनशील शिक्षण; विज्ञान में चिंतनशील शिक्षण; और गणित में चिंतनशील शिक्षण को खंड 3 के अंतर्गत शामिल किया गया है। एक चिंतनशील अभ्यासकर्ता इन अध्यायों से सीखेगा और अपनी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रियाओं में सुधार करेगा। यह पुस्तिका छात्र-अध्यापकों, अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और शोधकर्ताओं को चिंतनशील अभ्यासकर्ता बनने में सुविधा प्रदान करेगी।

एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. को मजबूत करना और डी.आई.ई.टी., एस.सी.ई.आर.टी., सी.टी.ई., आई.ए.एस.ई. और विश्वविद्यालय शिक्षा विभागों से अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण

एन.ई.पी. 2020 की सिफारिशों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए डी.आई.ई.टी. को शैक्षणिक के साथ-साथ भौतिक रूप से भी मजबूत करना आवश्यक है। इन संस्थानों को भविष्य में उत्पन्न होने वाले विभिन्न चुनौतीपूर्ण मुद्दों की गति को बनाए रखने के लिए मौजूदा भूमिकाओं और कार्यों के संदर्भ में तैयारी करने की जरूरत है। डी.आई.ई.टी. की भूमिकाओं और कार्यों पर पुनर्विचार करते समय हितधारकों की राय और सुझाव भी समान रूप से महत्वपूर्ण हैं।

डी.आई.ई.टी. और अन्य शैक्षणिक संस्थानों की बदलती भूमिका के संदर्भ में एन.ई.पी. 2020 की विभिन्न सिफारिशों पर चर्चा करने और सिफारिशों के साथ आने के उद्देश्य से पश्चिमी और पूर्वोत्तर राज्यों के डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के साथ एक चर्चा बैठक आयोजित की गई और स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा और वयस्क शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए जिला स्तर पर शैक्षणिक प्राधिकारियों के रूप में कार्य करना डी.आई.ई.टी. की भविष्य की जिम्मेदारियाँ हैं। इन चर्चा बैठकों में अरुणाचल प्रदेश, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय और नागालैंड के कुल 118 प्रतिभागियों ने भाग लिया। डी.आई.ई.टी. और एस.ई.सी.आर.टी. संकायों ने चर्चा बैठकों में एन.ई.पी. 2020 के आलोक में अपने सर्वोत्तम अभ्यासों, नवाचारों और चुनौतियों को साझा किया है। प्रतिभागियों ने अपने राज्यों में डी.आई.ई.टी. की अपेक्षित भूमिकाओं और जिम्मेदारियों के संदर्भ में अपनी राय और सुझाव भी साझा किए हैं। अंतिम मॉड्यूल के आधार पर डी.आई.ई.टी., एस.सी.ई.आर.टी., सी.टी.ई., आई.ए.एस.ई. और विश्वविद्यालय शिक्षा विभागों से अध्यापक प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण किया जाएगा।

एन.ई.पी. 2020 और विकास लक्ष्यों के आलोक में माध्यमिक स्तर पर अधिगम के प्रतिफलों पर पुनर्विचार करना

एन.ई.पी. 2020 ने वांछित अधिगम प्रतिफलों से संबंधित आउटपुट क्षमता पर अधिक जोर दिया है। इसमें आगे कहा गया है कि सभी स्तरों पर प्रायोगिक शिक्षा को अपनाया जाएगा, जिसमें अन्य के बीच, प्रायोगिक अधिगम, कला-समेकित और खेल-समेकित शिक्षा, कहानी-आधारित शिक्षणशास्त्र, प्रत्येक विषय के अंदर मानक शिक्षणशास्त्र के रूप में और विभिन्न विषयों के बीच संबंध अन्वेषण के साथ शामिल होगा। अधिगम प्रतिफलों की उपलब्धि में अंतर को कम करने के लिए, कक्षा में होने वाले अंतरण को योग्यता आधारित शिक्षा और शिक्षा की ओर स्थानांतरित किया जाएगा। मूल्यांकन उपकरण (अधिगम "जैसा" और "लिए" मूल्यांकन सहित) को किसी दिए गए कक्षा के प्रत्येक विषय के लिए निर्दिष्ट अधिगम प्रतिफलों, क्षमताओं और स्वभाव के साथ भी जोड़ा जाएगा। इन्हें ध्यान में रखते हुए इन दस्तावेज़ो को एन.ई.पी. 2020 की सिफारिशों के साथ संरेखित करने की आवश्यकता है। एन.ई.पी. 2020 के आलोक में माध्यमिक कक्षाओं के लिए अधिगम के परिणामों पर दोबारा गौर किया गया है और दो खंडों में संकलित किया गया है।

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

विभिन्न राज्य पदाधिकारियों के सहयोग से एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित परीक्षा सुधारों का संचालन (स्तर 2)

प्रभाग ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी. 2020) में परिकल्पित समग्र प्रगति कार्ड के विकास के लिए एक ऑफलाइन आमने-सामने परामर्श बैठक आयोजित की है। प्रतिनिधियों के साथ बैठक 12–13 जुलाई 2022 को निर्धारित की गई थी। एच.पी.सी. का एक प्रारूप तैयार किया गया और बैठक के सदस्यों के साथ साझा किया गया। बैठक के चर्चा बिंदुओं में एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित समग्र प्रगति कार्ड की तैयारी के संबंध में प्रतिनिधियों के सुझाव और फीडबैक शामिल थे। बैठक की दूसरी शृंखला 29–30 नवंबर 2022 को आयोजित की गई थी, जिसमें विभिन्न संस्थानों के विशेषज्ञ शामिल थे।

इसके बाद, जब बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के लिए एच.पी.सी. का अंतिम प्रारूप तैयार किया गया, इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (एन.ई.पी. 2020) में परिकल्पित समग्र प्रगति कार्ड के विकास के लिए दो दिवसीय कार्यशाला में एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधियों के साथ साझा किया गया था, जो 15–16 दिसंबर 2022 को आयोजित की गई थी।

स्कूली शिक्षा के माध्यमिक स्तर के लिए वैकल्पिक मूल्यांकन तकनीक (ए.ए.आई.)

प्रभाग ने माध्यमिक स्तर पर गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में उच्च स्तरीय सोच कौशल का आकलन करने के लिए अनुकरणीय परीक्षण मद विकसित करने के उद्देश्य से विकासात्मक परियोजना शुरू की है। परीक्षण मद विकसित करने के लिए 31 जनवरी 2022 से 4 फरवरी 2022 तक ऑनलाइन मोड में पाँच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई।

पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

रा.शै.अ.प्र.प. का संस्थागत भंडार (आई.आर.)

रा.शै.अ.प्र.प. के संस्थागत भंडार का विकास किसी संस्थान के बौद्धिक आउटपुट को डिजिटल रूप में एकत्र करने, संरक्षित करने और प्रसारित करने के लिए एक ऑनलाइन संग्रह है। रा.शै.अ.प्र.प. के पास एन.सी.एफ., पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, पूरक पुस्तकों, शोध रिपोर्ट आदि का एक समृद्ध संग्रह है। इस भंडार का उद्देश्य अनुसंधान को

सुविधाजनक बनाने और शैक्षणिक समुदाय के लिए व्यापक पहुँच प्रदान करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के सभी दुर्लभ और पुराने प्रकाशित संसाधनों को डिजिटल रूप में संरक्षित, व्यवस्थित और प्रसारित करना है। संसाधनों तक पहुँच प्रदान करने के लिए प्राप्त स्थिर आई.पी. एड्रेस एल.डी.डी. वेबसाइट पर स्थायी लिंक के माध्यम से आई.आर. पर उपलब्ध है। आई.आर. के उपयोग के लिए वेब पेज पर डिजिटल काउंटर शामिल किया गया है। वर्तमान में 1975 और 1988 के अनुसार आई.आर. पर 350 से अधिक पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध हैं। रा.शै.अ.प्र.प. का संस्थागत भंडार अब रा.शै.अ.प्र.प. के इंट्रानेट पर प्रयोक्ताओं द्वारा एक्सेस हेतु उपलब्ध है।

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

रा.शै.अ.प्र.प. घटक इकाइयों के पी.ए.सी./पी.ए.बी. कार्यक्रमों के लिए प्रबंधन सूचना प्रणाली (एम.आई.एस.)

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग रा.शै.अ.प्र.प. के शैक्षणिक कार्यक्रमों/गतिविधियों के संबंध में समाशोधन गृह के रूप में कार्य करता है। प्रभाग को रा.शै.अ.प्र.प. के पी.ए.सी./पी.ए.बी. द्वारा अनुमोदित कार्यक्रमों के बारे में समय-समय पर एम.ओ.ई. को आवश्यक जानकारी एकत्र करने की भी आवश्यकता है। एम.आई.एस. को रा.शै.अ.प्र.प. की पी.ए.सी./पी.ए.बी. अनुमोदित परियोजनाओं के लिए विकसित किया गया है ताकि रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाइयों द्वारा किए गए कार्यक्रमों की प्रगति की निगरानी की जा सके। प्राप्त सुझावों के आधार पर वेब पोर्टल विकसित किया गया है और पोर्टल की सुरक्षित लेखा परीक्षा की गई है। पोर्टल के लिए यू.आर.एल. एड्रेस 'yojana.ncert.gov.in' के साथ पोर्टल को 'योजना' (रा.शै.अ.प्र.प. की गतिविधियों का वार्षिक विवेकपूर्ण मूल्यांकन) नाम दिया गया है। प्रयोक्ताओं को पोर्टल की संपूर्ण कार्यप्रणाली की बेहतर समझ प्राप्त करने में सक्षम बनाने के लिए वेब पोर्टल का उपयोग करने के निर्देश देने वाला एक प्रयोक्ता मैनुअल विकसित किया गया है। मैनुअल बताता है कि एम.आई.एस. पोर्टल में कैसे लॉग इन करें, मूल्यांकन करें और रिपोर्ट करें ताकि संस्थानों/विभागों/प्रभागों में विभिन्न भूमिकाओं और जिम्मेदारियों वाले प्रयोक्ता व्यवस्थित निगरानी और मूल्यांकन कर सकें। एम.आई.एस. पोर्टल 'योजना' और प्रयोक्ता मैनुअल का लॉन्च और विमोचन 21 मार्च 2023 को 60वीं पी.ए.सी. बैठक के दौरान पी.ए.सी. सदस्यों की गरिमामय उपस्थिति में दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. और अन्य गणमान्य व्यक्तियों द्वारा किया गया था।

अर्थशास्त्र में गणित और सांख्यिकी के लिए अनुदेशात्मक कार्यनीतियों पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम (मिश्रित)

अर्थशास्त्र के अध्यापकों को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अर्थशास्त्र की पाठ्यपुस्तकों में उपयोग किए जाने वाले गणितीय अभिव्यक्तियों और सांख्यिकीय उपकरणों और विभिन्न नवीन आदान-प्रदान विधियों से युक्त करने के आशय से अर्थशास्त्र में गणित और सांख्यिकी के लिए अनुदेशात्मक कार्यनीतियों पर एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित और संचालित किया गया है। उम्मीद की जाती है कि इस पाठ्यक्रम से प्रतिभागियों को अर्थशास्त्र में गणित और सांख्यिकीय टूलों उपयोग करने के लिए आवश्यक विश्लेषणात्मक कौशल प्राप्त करने में मदद मिलेगी। इस दृष्टिकोण में, प्रतिभगियों को चयनित विषयों के माध्यम से विश्लेषणात्मक और मात्रात्मक कौशल के अनुप्रयोग का अभ्यास करने का अवसर मिलता है। प्रतिभागियों को ऑफलाइन अधिगम, खुले संसाधनों तक पहुँच, सौंपे गए कार्यों (एसाइनमेंट्स), वर्कआउट की समस्याओं आदि के लिए पूरक/संवर्धन व्याख्यान के माध्यम से ऑनलाइन सहायता प्रदान की जाती है, जिससे अध्यापकों को अपनी गति से सीखने में मदद मिलेगी। इससे बड़ी संख्या में अध्यापकों तक पहुँचने में मदद मिलेगी और उन्हें कक्षा में गणितीय अभिव्यक्तियों का कुशलतापर्वूक उपयोग

करते हुए आर्थिक सिद्धांतों का संचालन करने में सक्षम बनाया जाएगा। इसके अतिरिक्त, अधिग्रहित क्रेडिट से भी अध्यापकों के व्यावसायिक विकास में योगदान मिलता है। पाठ्यक्रम को चार वर्गों में एम.ओ.ओ.सी. (मूक) प्रारूप के अनुसार डिजाइन किया गया है जिसमें मॉड्यलू, ऑनलाइन वीडियो सत्र, प्रश्नोत्तरी, एसाइनमेंट और वेब स्रोत शामिल हैं। इस तरह के पाठ्यक्रम की भारी मांग है क्योंकि यह अर्थशास्त्र में कंप्यूटेशनल कौशल को समेकित करने में अध्यापकों की क्षमता को बढ़ाएगा। पाठ्यक्रम के पायलट रनिंग से प्राप्त फीडबैक के आधार पर, पाठ्यक्रम सामग्री को अंतिम रूप दिया गया है। प्रसार को बढ़ाने और बड़ी संख्या में अध्यापकों तक पहुँचने के लिए, इसे दीक्षा के अनुरूप बनाने के लिए मॉड्यूल और वीडियो संपादित किए जा रहे हैं। पाठ्यक्रम का भाग 1 दीक्षा प्रारूप में विकसित किया गया है। पाठ्यक्रम को एम.ओ.ओ.सी. (मूक) प्रारूप में डिजाइन किया जा रहा है तथा अब इसे दीक्षा के अनुरूप बनाया जा रहा है।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी)

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता स्तर पर ई-सामग्री

इस कार्यक्रम का उद्देश्य एफ.एल.एन. स्तर के लिए विभिन्न भाषाओं (हिंदी, उर्दू और अंग्रेजी) में ई-सामग्री, ऑडियो प्रोग्राम विकसित करना और इन ई-सामग्री को शैक्षणिक रूप से डिजाइन करना और एफ.एल.एन. स्तर पर सभी छात्रों के लिए प्रसारण और पॉडकास्ट के माध्यम से प्रसारित करना था। इस कार्यक्रम के तहत, निपुण भारत के तहत एफ.एल.एन. के लिए तीन भाषाओं— अंग्रेजी, हिंदी और उर्दू में 53 पांडुलिपियाँ विकसित की गईं। कुछ रेडियो कार्यक्रम भी तैयार किए गए जिन्हें पूर्वावलोकन समिति द्वारा अनुमोदित किया गया है। अधिक कार्यक्रमों की पांडुलिपियाँ तैयार की गई हैं और उत्पादन प्रक्रिया में है। इन पांडुलिपियों में बच्चों के विभिन्न पहलुओं और संख्याओं की समझ और भाषा विकास सहित बच्चों के समग्र विकास का ध्यान गया है।

संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) और आभासी वास्तविकता (वी.आर.) सिमुलेशन पर पाठ्यक्रम आधारित सामग्री और स्कूली शिक्षा के लिए 3-डी वीडियो

यह कार्यक्रम ए.आर.-वी.आर. और 3-डी सिमुलेशन जैसी नई तकनीकों पर केंद्रित है। कुल 29 ए.आर. आधारित 3डी सिमुलेशन विकसित किए गए और उन्हें अंतिम रूप दिया गया। 53 वीडियो प्रस्तुत किए गए और दीक्षा पर अपलोड किए गए। कुल 60 पांडुलिपि/स्टोरीबोर्ड भी लिखे गए और आठ सिमुलेशन विकास की प्रक्रिया में हैं। रा.शै.अ.प्र.प. के ई-पाठशाला ए.आर. ऐप को संस्करण 2 में अपडेट किया गया।

शैक्षिक मीडिया कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न प्रारूपों में विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम विकसित किए जाते हैं। कक्षा 6 के लिए विशेष रूप से कुल 681 वीडियो और 339 वीडियो पूरे किए गए और 23 सितंबर, 2022 को सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा लॉन्च किए गए। शोरील 2022–23 में निर्मित विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को इस लिंक द्वारा एक्सेस किया जा सकता है— https://drive.google.com/file/d/1rnuyWKnai3HSVFuoSzclukmMWHOk7gFr/view?usp=share_link

विभिन्न विषयों पर कुछ शृंखलाएँ भी विकसित की गईं— प्रतिष्ठित व्यक्तित्व 4 कार्यक्रम (चित्रण-आधारित कार्यक्रम); प्रौढ़ शिक्षा-13; भूगोल- ए.आर.-वी.आर. पर आधारित पृथ्वी की प्रक्रियाएँ 7 अंग्रेजी और 1 हिंदी; ए.आर.-वी.आर. पर आधारित जीवविज्ञान जीवन प्रक्रियाएँ 1; विज्ञान शिक्षा (डी.ई.एस.एम.)10; शैक्षिक प्रशासन (एन.आई.ई.पी.ए.) 23; योग का प्रदर्शन (आयुष)157; खोजे गए प्रश्न 8; ई-भुगतान-12 (पांडुलिपि समिति द्वारा

अनुमोदित पांडुलिपि)। इस कार्यक्रम के तहत विभिन्न विषयों पर लाइव सत्र भी आयोजित किए जाते हैं और इस वर्ष कुल 1,750 लाइव सत्र आयोजित किए गए।

ऑडियो कार्यक्रम— कुल 2,816 ऑडियो कार्यक्रम तैयार किए गए जिनमें 1,541 संवर्धन कार्यक्रम, 16 पुस्तकें (अध्याय 497), नई डेजी पुस्तकें (अध्याय 355), रिकॉर्डिंग (पुस्तकें/कार्यक्रम/योग प्रश्नोत्तरी/आई.एस.एल. शब्द) 2,031, आईरेडियो लाइव प्रसारण 900 कार्यक्रम (प्री-रिकॉर्डेड) + 18 लाइव = 918 प्रोग्राम और ए.आई.आर. 405 कैप्सूल (1,215 प्रोग्राम), सभी 10,000 शब्दों की ऑडियो रिकॉर्डिंग पूरी हो गई। वीडियो, प्रोमो, सोशल मीडिया एडवोकेसी आदि के लिए लगभग 800 ग्राफिक्स विकसित किए गए थे। लगभग 1,500 ई-सामग्री की समीक्षा ऑनलाइन और ऑफलाइन विधि में की गई थी।

स्कूली प्रणालियों के लिए शिक्षा में आई.सी.टी.

स्कूली प्रणाली के लिए शिक्षा में आई.सी.टी. के लिए पाठ्यक्रम के विकास के भाग के रूप में आई.सी.टी. की मूल बातों पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित किया गया है और 'आई.सी.टी. शिक्षण समेकन' पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित किया जा रहा है। आई.सी.टी. पाठ्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए दो पाठ्यक्रम पुस्तकें और ट्यूटोरियल विकसित किए गए और 'ऑनलाइन पाठ्यक्रम के विकास' पर प्रशिक्षण मैनुअल विकसित किया गया। साइबर सुरक्षा और सिक्योरिटी पर 11 डिजिटल संसाधन (52 दिन की टिप्स पॉकेट बुक, डिजिटल फुटप्रिंट पर ब्रोशर, डिजिटल फुटप्रिंट पर फ्लायर, साइबर सुरक्षा पर बुकलेट, उर्दू में अनुवादित सात संसाधन) विकसित किए गए हैं। विकसित ऑनलाइन पाठ्यक्रम 'साइबरस्पेस में सुरक्षा' की समीक्षा चल रही है।

इज़राइल में चार स्कूलों के साथ ऑनलाइन स्कूल सहयोग कार्यक्रम आयोजित किए गए और दक्षिण कोरिया में 11 स्कूलों के साथ स्कूल विनिमय कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन सहयोग गतिविधियों के दौरान छात्रों ने ऑनलाइन गतिविधियों और बातचीत के माध्यम से अपने देश की संस्कृति, त्योहारों, भोजन, नृत्य आदि को साझा किया। ई.टी. और आई.सी.टी. पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम के भाग के रूप में लगभग 199 वेबिनार सत्र आयोजित किए गए।

भारतीय सांकेतिक भाषा (आई.एस.एल.) का मानकीकरण

शिक्षा में समावेशिता बढ़ाने के लिए सी.आई.ई.टी. में अन्य संस्थानों और हितधारकों के सहयोग से सांकेतिक भाषा का मानकीकरण किया जा रहा है। इसके लिए, डेटा संग्रह के लिए एस.ओ.पी. तैयार किया गया था और राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों से साइन वेरिएंट एकत्र करने के लिए 2,785 शब्दों की एक सूची भी तैयार की गई थी। श्रवण बाधित व्यक्तियों के लिए आई.एस.एल.आर.टी.सी. और अन्य संगठनों के सहयोग से छह मॉड्यूल के पहले प्रारूप सहित पाठ्यक्रम संरचना का एक प्रारूप तैयार किया गया था। डेटा संग्रह क्षेत्रीय स्तर के निष्कर्षों के मिलान के लिए किया गया था। सभी 10,000 शब्दों की ऑडियो रिकॉर्डिंग पूरी हो चुकी है। लगभग 6,000 शब्दों के लिए ऑडियो एम्बेडिंग और उप शीर्षक विकसित किए गए हैं। कक्षा 6 के लिए लगभग 339 वीडियो विकसित किए गए और 23 सितंबर, 2022 को सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लोकार्पित किए गए।

प्रशस्त— स्कूलों के लिए पूर्व-मूल्यांकन समग्र छानबीन जाँचसूची

'प्रशस्त' को 6 सितंबर 2022 को अध्यापक पर्व के दौरान लोकार्पित किया गया था। यह एक वैज्ञानिक स्क्रीनिंग जाँचसूची है जिसका उपयोग स्कूली शिक्षा के सभी स्तरों पर नियमित अध्यापकों द्वारा सभी स्कूली बच्चों की जल्द से जल्द स्क्रीनिंग करने के लिए किया जाता है, ताकि मूल्यांकन और प्रमाणन शिविरों में आगे उपयोग के लिए शालावार विकलांगता स्क्रीनिंग डेटा प्राधिकारियों के साथ साझा किया जा सके। इसके व्यापक उपयोग और डेटा

साझा करने में आसानी के लिए प्रशस्त एक एंड्रॉइड ऐप के रूप में डिजिटल रूप में उपलब्ध है। छात्र, अध्यापक, माता-पिता और शैक्षिक प्रशासक इसके प्रमुख लाभार्थी हैं। प्रशस्त अपनी तरह का एक स्क्रीनिंग उपकरण है जो विकलांग व्यक्तियों के अधिकार (आर.पी.डब्ल्यू.डी.) अधिनियम 2016 में मान्यता प्राप्त सभी 21 विकलांगता स्थितियों की स्क्रीनिंग की सुविधा प्रदान करता है और यह स्कूली शिक्षा के सभी चरणों पर लागू होता है। लोकार्पित वीडियो को इस लिंक से एक्सेस किया जा सकता है— https://www.youtube.com/watch?v=-IZzVx_XfmM. प्रशस्त ऐप को गूगल प्ले स्टोर से https://play.google.com/store/apps/details?id=com.dscs.app लिंक पर डाउनलोड किया जा सकता है। अब तक, देशभर में 45,512 प्रयोक्ताओं ने प्रशस्त ऐप पर पंजीकरण कराया है। अधिक जानकारी के लिए, प्रशस्त फ्लिपबुक हिंदी संस्करण https://ncert.nic.in/pdf/DSCS_booklet_Hi.pdf पर और अंग्रेजी संस्करण https://ncert.nic.in/flipbook/DSCS_booklet/#page=1 पर उपलब्ध है।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल

विभिन्न क्षेत्रों में कार्यभूमिकाओं के विभिन्न विषयों पर डिजिटल संसाधन

वर्ष 2022–23 के दौरान कक्षा 9–12 के लिए विभिन्न क्षेत्रों में कार्य की भूमिकाओं (जॉब रोल्स) के विभिन्न विषयों पर वीडियो फिल्मों और एनिमेशन सहित डिजिटल संसाधन विकसित किए गए हैं। कक्षा 9–12 के लिए विभिन्न कार्य की भूमिकाओं पर लगभग 150 वीडियो फिल्में और व्यावसायिक विषयों के अध्यापकों और विद्यार्थियों की ऑनलाइन पहुँच के लिए पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा पर 35 वीडियो विकसित किए गए और वेबसाइट पर अपलोड किए गए। वीडियो फिल्मों को कृषि, परिधान, मेड-अप्स और होम फर्निशिंग, टेलीकॉम, प्लंबिंग, रिटेल, इलेक्ट्रॉनिक्स, ऑटोमोटिव और स्वास्थ्य कार्यक्षेत्र जैसे जॉब रोल्स पर विकसित किया गया था।

पी.एस.एस.सी.आई.वी. वेबसाइट के लिए वेब एप्लिकेशन और समर्थन

संस्थान की वेबसाइट की सामग्री को लगातार अद्यतन करने के लिए संस्थान ने अपनी वेबसाइट के लिए वेब अनुप्रयोगों के विकास और समर्थन के लिए कार्यक्रम शुरू किया है। वेब एप्लिकेशन के विकास के लिए व्यवहार्यता अध्ययन और आवश्यकता विश्लेषण किया गया और व्यवहार्यता और आवश्यकता विश्लेषण के आधार पर, संगत वेब एप्लिकेशन को विकास के लिए चुना गया। फ्रंट एंड डिजाइन एंड डेवलपमेंट कोडिंग के साथ-साथ इंटरफेस का उपयोग करके किया गया था। सभी विकसित अनुप्रयोगों को पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. वेबसाइट पर स्थापित किया गया था। 2021–22 के दौरान संस्थान की वेबसाइट को नवीनतम वेब एप्लिकेशन जोड़कर एक गतिशील अंत:क्रियात्मक वेबसाइट में बदल दिया गया है। संस्थान की वेबसाइट के इन वेब एप्लिकेशन से संस्थान की गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा। यह सूचना के समाशोधन गृह, व्यावसायिक शिक्षा और ऑनलाइन संसाधनों पर बहस के लिए एक मंच के रूप में कार्य करेगा।

परिधान, मेडअप्स और होम फर्निशिंग सेक्टर के लिए वर्चुअल टूर

परिधान, मेडअप्स और होम फर्निशिंग कार्यक्षेत्र के विभिन्न जॉब रोल के लिए पाठ्यपुस्तकें विकसित की गई हैं। इन जॉब रोल के तहत ज्ञान और कौशल के आदान-प्रदान के लिए, संस्थान ने ए.एम.एच.एफ. क्षेत्र के लिए वर्चुअल टूर के विकास पर एक कार्यक्रम शुरू किया है। संबंधित कार्यक्षेत्रों के विशेषज्ञों की मदद से पांडुलिपि की सामग्री के विकास के लिए कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। परिधान क्षेत्र से संबंधित टूल, उपकरणों, प्रक्रियाओं और संचालन

के बारे में जानकारी प्रदान करने के लिए मीडिया तत्व (पांडुलिपि लिखना/रिकॉर्ड करना, साक्षात्कार आयोजित करना, कैमरे से बात करना, वॉयसओवर, उद्योग की तस्वीरें और छोटी क्लिप) तैयार किए गए थे। शूटिंग और वीडियो एडिटिंग के बाद वर्चुअल टूर तैयार हुआ। यह दौरा दूरी और समय की बाधाओं के बावजूद व्यापक संख्या में लक्ष्य समूह तक पहुँचने में मददगार होगा। यह सभी शिक्षण शैलियों के लोगों के प्रशिक्षण के लिए उपयोगी होगा और विशेष रूप से ए.एम.एच.एफ. क्षेत्र के व्यावसायिक अध्यापकों और छात्रों के लिए फायदेमंद होगा।

व्यावसायिक अध्यापकों के लिए व्यावसायिक मानक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में अध्यापकों के बीच 'उच्च पेशेवर मानकों' का प्रस्ताव दिया गया है, जिसके लिए दिशानिर्देश विकसित किए जाने हैं। इसे ध्यान रखते हुए, संस्थान ने व्यावसायिक अध्यापकों के लिए पेशेवर मानकों के विकास के लिए कार्यक्रम शुरू किया, जिससे शिक्षा के विभिन्न स्तरों में उनकी भूमिकाओं और जिम्मेदारियों का मार्गदर्शन किया जाएगा। 21वीं सदी में छात्रों की कौशल आवश्यकताओं और भविष्य की नौकरियों को पूरा करने के लिए अध्यापकों की भूमिकाओं और जिम्मेदारियों की पहचान करने के लिए विशेषज्ञों के साथ कार्यसमूह की बैठकें आयोजित की गईं; व्यावसायिक अध्यापकों के लिए आवश्यक दक्षताओं और व्यावसायिक कौशल की पहचान करना; व्यावसायिक अध्यापकों के लिए व्यावसायिक गुणों, व्यावसायिक ज्ञान और व्यावसायिक कौशल के संदर्भ में व्यावसायिक मानक विकसित करना। व्यावसायिक मानक विकसित किए गए और व्यावसायिक अध्यापकों के लाभ के लिए इन्हें राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में प्रसारित किया जाएगा।

परिधान, मेडअप्स और होम फर्निशिंग क्षेत्र की 12 जॉब रोल के लिए लोकप्रियकरण फोल्डर

परिधान और घरेलू साज-सज्जा क्षेत्र में 12 जॉब रोल के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें प्रकाशन के विभिन्न स्तरों में हैं। ए.एम.एच.एफ. क्षेत्र की कार्यभूमिकाओं के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए, ब्रोशर विकसित किए गए थे। इन फोल्डरों में टेक्स्ट और ग्राफिक्स दोनों शामिल होंगे और इसमें इसके दायरे, रोज़गार के अवसरों, करियर और ऊर्ध्वाधर गतिशीलता, पाठ्यक्रम सामग्री आदि से संबंधित जॉब रोल की जानकारी होगी। ए.एम.एच.एफ. क्षेत्र के बारह जॉब रोल के लिए बारह फोल्डर्स विकसित किए गए— इनलाइन चेकर, फैब्रिक चेकर, सहायक फैशन डिजाइनर, स्टोर कीपर, एम्ब्रोइडरी मशीन ऑपरेटर, निर्यात सहायक, पैकर, हैंड एम्ब्रोइडरी, हैंड एम्ब्रोइडरी (अड्डावाला), स्व-रोज़गार टेलर, सिलाई मशीन ऑपरेटर और विशेष सिलाई मशीन ऑपरेटर।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

मध्य स्तर (कक्षा 6–8) पर संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) आधारित ऐप के साथ गणित शिक्षण और अधिगम को सशक्त बनाना

'आर.आई.ई.ए. मैथ्स' ऐप एक डिजिटल समाधान है जिसका उद्देश्य गणित के मध्य और माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए है। इसका प्राथमिक उद्देश्य अधिगम की गुणवत्ता को बढ़ाना और छात्रों के बीच स्वायत्त शिक्षा को बढ़ावा देना है। ऐप को रा.शै.अ.प्र.प. के तत्वावधान में आर.आई.ई. अजमेर द्वारा विकसित किया गया था। इससे छात्रों को पाठ्यपुस्तक से परे जाकर समस्या-समाधान, सहयोग और रचनात्मकता सहित उनकी सीखने की क्षमता का विस्तार करने का अवसर प्रदान किया जाता है। इससे छात्रों के बीच संज्ञानात्मक, स्थानिक और गत्यात्मकता कौशल के विकास को भी बढ़ावा मिलता है। जिन छात्रों को तीन आयामों में ज्यामितीय वस्तुओं की कल्पना करने में कठिनाई होती है, उनकी सहायता के लिए, 'आर.आई.ई.ए. मैथ्स' संवर्धित वास्तविकता (ए.आर.) तकनीक का उपयोग करता है। इस तकनीक को मोबाइल लर्निंग पर प्रभावी तरीके से लागू किया जा सकता है, जिससे सीखने की प्रक्रिया की दक्षता और प्रभावशीलता में सुधार होगा। ऐप क्षेत्र, आयतन और ज्यामिति जैसे विषयों में विशेष

रूप से उपयोगी है, जिन्हें त्रि-आयामी विज़ुअलाइजेशन की कमी के कारण कक्षा कक्ष व्यवस्था में समझना अक्सर मुश्किल होता है। 'आर.आई.ई.ए. मैथ्स ऐप' के साथ, छात्रों की सीखने की जिज्ञासा और प्रेरणा मिलती है, जिससे अधिगम की प्रक्रिया में वृद्धि होती है। आर.आई.ई.ए. मैथ्स ऐप को मध्य और माध्यमिक शिक्षा गणित की बुनियादी अवधारणाओं को पूरा करने के लिए विकसित किया गया था। यह कक्षा 9वीं और 10वीं के छात्रों को त्रि-आयामी तरीके से एक बेहतर गणितीय समाधान प्रदान करता है, जिससे उन्हें अपनी रचनात्मकता और रचनावादी ज्ञान का पता लगाने की अनुमति मिलती है। इस एप्लिकेशन के साथ, छात्र पाठ्यपुस्तक से आगे जाकर गतिविधियों के माध्यम से अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं।

स्कूल और अध्यापक शिक्षा पाठ्यचर्या के लिए ई-संसाधन

माध्यमिक स्तर पर रसायन विज्ञान सहित विभिन्न स्तरों पर विभिन्न विषयों के लिए कुल 41 ऑडियो/वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए। विकसित कार्यक्रम पी.एम. ई-विद्या डिजिटल चैनलों के लिए सी.आई.ई.टी. पोर्टल पर साझा किए गए थे। विकसित किए गए मल्टीमीडिया का विवरण नीचे दिया गया है—

क्र.सं.	कक्षा	अध्याय सं.	मॉड्यूल / वीडियो का नाम	वीडियो की संख्या
1.	11	10	s– ब्लॉक तत्व (भाग– 1,2,3,4) (39:38), (36:20), (33:15), (30:25)	4
2.	12	6	तत्वों के निष्कर्षण के सिद्धांत एवं प्रक्रम (भाग–1,2,3) (26:55), (34:38), (39:28)	3
3.	12	8	d- एवं f- ब्लॉक के तत्व (भाग– 1,2,3) (29:01), (35:32), (46:04)	3
4.	12	15	बहुलक (भाग– 1,2,3) (35:08) (34:00) (23:00)	3
5.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट एसीटेट आयन इन इंग्लिश (09:17)	1
6.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट सल्फाइड आयन इन इंग्लिश (09:08)	1
7.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट नाइट्रिक आयन इन इंग्लिश (07:45)	1
8.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट सल्फाइट आयन इन इंग्लिश (08:26)	1
9.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट क्लोराइड आयन इन इंग्लिश	1
10.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट कार्बोनेट आयन इन इंग्लिश	1
11.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट एसीटेट आयन इन हिंदी (07:25)	1
12.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट नाइट्रिक आयन इन हिंदी (06:19)	1
13.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट सल्फाइड आयन इन हिंदी (08:02)	1
14.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट सल्फाइड आयन इन हिंदी (06:28)	1

15.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट ब्रोमाइड आयन इन हिंदी (06:57)	1
16.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट लोडाइड आयन इन हिंदी (06:03)	1
17.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट नाइट्रेट आयन इन हिंदी (07:23)	1
18.	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट ऑक्सलेट आयन इन हिंदी (07:35)	1
19	11 और 12 एवं टी.ई.	प्रायोगिक वीडियो	एम.सी.एल. किट क्लोराइड आयन इन हिंदी (10:33)	1
	कुल			**28**

आर.आई.ई., अजमेर का संस्थागत भंडार

इंस्टीट्यूशनल रिपोजिटरी (आई.आर.) के लिए संस्थान के अनुसंधान आउटपुट की व्यापक पहुँच और दृश्यता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से दस्तावेज़ों को संस्थान की वेबसाइट पर अपलोड किया गया है। संस्थान के शोध प्रबंध, किताबें, शोध रिपोर्ट, आई.क्यू.ए.सी. रिपोर्ट और कार्यक्रम रिपोर्ट जैसे दस्तावेज़ दीर्घकालिक पहुँच के लिए आई. आर. पर अपलोड किए गए हैं।

मेटाडेटा अपडेट और नया कीवर्ड	230 दस्तावेज़
निबंध-मार्गदर्शिका का नाम अद्यतन किया गया	1484 दस्तावेज़
अपलोड किए गए निबंध	70 दस्तावेज़
अपलोड की गई पुस्तकें	10 दस्तावेज़
संस्थान के प्रकाशन	27 दस्तावेज़
अपलोड की गई रिपोर्ट	8 दस्तावेज़
ओ.सी.आर. रन	7554 पृष्ठ (शोध प्रबंध, जर्नल, रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकें और रिपोर्ट, प्रश्न पत्र (बी.एड. I II, एम.एड. I II, बी.एससी. बी.एड. I II III IV, बी.ए. बी.एड. I II III IV, डी.सी.जी.सी. आदि)
संपादन	14399 पृष्ठ (शोध प्रबंध, जर्नल, पुस्तकें, पुस्तक चालान, दान की गई पुस्तकों की आई.क्यू.ए.सी. रिपोर्टिंग सूची के लिए तकनीकी रिपोर्ट, मासिक प्रयोक्ता सांख्यिकी आदि)
स्कैनिंग	12105 पृष्ठ (शोध प्रबंध, पुस्तकें, पुस्तक चालान, दान की गई पुस्तकों की आई.क्यू.ए.सी. रिपोर्टिंग सूची के लिए तकनीकी रिपोर्ट, मासिक प्रयोक्ता सांख्यिकी
अपलोड किए गए प्रश्न पत्र (बी.ए.बी.एड, बी.एससी.बी.एड, बी.एड, एम.एड.)	145 दस्तावेज़ (बी.एड. I II, एम.एड. I II, बी.एससी. बी.एड. I II III IV वर्ष, बी.ए. बी.एड. I II III IV, डी.सी.जी.सी. के प्रश्न पत्र)
निबंधों के लिए सी.डी. की जाँच	29 निबंध

विज्ञान, गणित और पर्यावरण शिक्षा थीम पार्क

इस कार्यक्रम के अंतर्गत थीम पार्क के विभिन्न घटकों के रखर-खाव का कार्य आयोजित किया गया। औषधीय पौधे, खट्टे फल वाले पौधे और अन्य फलों के पौधों का प्रदर्शन करने वाले क्षेत्र विकसित किए गए। साइंस थीम पार्क के लिए जगह और हॉल विकसित किया गया। 06 से 8 फरवरी 2023 के दौरान विभिन्न पर्यावरण संबंधी मुद्दों से संबंधित गतिविधियों को विकसित करने के लिए एक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया था। 09 से 11 फरवरी 2023 तक प्रकृति मेला भी आयोजित किया गया था। मेला (प्रदर्शनी) में पर्यावरण शिक्षा के विभिन्न विषयों पर प्रकाश डाला गया।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

एन.ई.पी. 2020 की सिफारिशों के आधार पर डी.ई.एस.एस.एच., आर.आई.ई. भोपाल में सेल्फ-लर्निंग लैंग्वेज रिसोर्स सेंटर (एल.आर.सी.)

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य था— (क) एन.ई.पी. 2020 की सिफारिश के अनुसार मौजूदा भाषा प्रयोगशाला को भाषा संसाधन केंद्र में विकसित करना; (ख) एल.आर.सी. के लिए अधिगम प्रबंधन प्रणाली तैयार करना; (ग) ज्ञानार्जकों के लिए इसके उचित और प्रभावी उपयोग के लिए एल.आर.सी. के उपयोग का एक मैनुअल तैयार करना; (घ) संस्थान के सभी पाठ्यक्रमों के सेवा-पूर्व अध्यापकों के लिए एल.आर.सी. में प्रशिक्षण की सुविधा का विस्तार करना; और (ङ) चयनित/सेवा-पूर्व अध्यापकों के साथ एल.आर.सी. मॉड्यूल के उपयोग का प्रयास करना। यह कार्यक्रम पश्चिमी क्षेत्र पर केंद्रित था और इसके प्रमुख आकर्षण थे— (क) पिछले वित्तीय वर्ष में, पी.ए.सी. 23.16 के तहत भाषा संसाधन केंद्र में निम्नलिखित कार्य किया गया था; (ख) कुछ एल.आर.सी. उपकरण खरीदे गए थे जिनमें 1 अध्यापक कंसोल, 15 विद्यार्थी कंसोल, 30 हेडफोन, 41 कुर्सियाँ, 15 विद्यार्थी कक्ष, 15 स्टूल, 1 गोल मेज, 1 भंडारण कैबिनेट शामिल थे; (ग) 'भाषा अधिगम गतिविधियों के लिए हस्तपुस्तिका' विकसित की गई है जिसमें 52 गतिविधियाँ हैं जिनका उपयोग भाषा कौशल सीखने के लिए किया जा सकता है; (घ) बी.ए.बी.एड., और बी.एससी.बी.एड. के मौजूदा पाठ्यक्रम का विश्लेषण किया गया है और पाठ्यक्रम को अधिक प्रायोगिक बनाने के लिए पाठ्यक्रम में भाषा संसाधन केंद्र की गतिविधियों को शामिल किया गया है; (ङ) आई.आई.टी. बॉम्बे के साथ सहयोग किया गया है और एक वेब आधारित सॉफ्टवेयर विकसित करने की प्रक्रिया में हैं जिससे किसी भी अध्यापक को स्व-विनियमित भाषा सीखने की गतिविधियों को करने के लिए तैयार किया जा सकता है, और (च) एल.आर.सी. में उपयोग के लिए कुछ निःशुल्क ऑडियो, वीडियो, ई-पुस्तकें और अन्य भाषा सीखने के संसाधनों का चयन किया गया है।

समेकित ट्विन स्नातकोत्तर डिग्री (तीन वर्षीय एम.एससी. एम.एड. पाठ्यक्रम) की ओर अग्रसर विज्ञान शिक्षा (गणित, भौतिकी, रसायन विज्ञान, जैविक विज्ञान) में नवाचारी पाठ्यक्रम

एकीकृत एम.एससी. एम.एड. कार्यक्रम एक व्यावसायिक विकास कार्यक्रम है जिसका उद्देश्य भौतिकी, रसायन विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, प्राणिविज्ञान; गणित और शिक्षा जैसे सभी विज्ञान विषयों में अध्यापक और अध्यापक शिक्षा पेशेवरों को तैयार करना है। इस नवोन्मेषी समेकित कार्यक्रम को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि इसमें न केवल अध्यापक या अध्यापक प्रशिक्षक को शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन गतिविधियों के लिए आवश्यक योग्यता प्रदान की जाएगी, बल्कि 4 वर्षों में एम.एससी. और एम.एड की अलग-अलग सामान्य डिग्री के बजाय 3 वर्षों में एम.एससी. एम.एड की एकीकृत डिग्री भी प्रदान की जाएगी। इसका मूल उद्देश्य गणित शिक्षा पाठ्यक्रम में आर.आई.ई. के उत्तीर्ण छात्रों को उन्नत शैक्षणिक अवसर और गतिशीलता प्रदान करने के लिए मास्टर इन साइंस

और मास्टर इन एजुकेशन योजना और पाठ्यचर्या विकसित करना और मास्टर इन साइंस और मास्टर इन एजुकेशन का पाठ्यक्रम विकसित करना है। पाठ्यक्रम के विकास, समीक्षा और अंतिम रूप देने के लिए आर.आई.ई., भोपाल में छह अलग-अलग विषयवार कार्यशालाएँ आयोजित की गई।

आर.आई.ई., भोपाल में कला और शिल्प संसाधन केंद्र

इस संसाधन केंद्र का उद्देश्य छात्रों, अध्यापकों, अध्यापक प्रशिक्षकों को कला और शिल्प का पता लगाने, अनुभव करने और समझने, स्कूलों, अध्यापक शिक्षा संस्थानों में कला और संस्कृति को समेकित करने और सांस्कृतिक संस्थानों के माध्यम से कला में शिक्षा को समेकित करने, औपचारिक शिक्षा प्रणाली में लाकर स्थानीय और क्षेत्रीय कला रूपों को बढ़ावा देने और देश के विभिन्न हिस्सों में प्रचलित विभिन्न कला रूपों का दस्तावेज़ीकरण करने और छात्रों तक उनकी पहुँच बनाने के अवसर और संसाधन प्रदान करना था।

इस पाठ्यक्रम में कला और सौंदर्यशास्त्र शामिल है। संस्थान के अंदर पश्चिमी भारत की पारंपरिक कला और शिल्प की सीमित समझ है। प्रतिक्रिया के रूप में हमने इस उद्देश्य के लिए एक संसाधन केंद्र के रूप में काम करने का निर्णय लिया। हमने विभिन्न राज्यों के पारंपरिक कलाकारों को संस्थान में आने का निमंत्रण दिया, जिससे हमें उनकी कलाओं के बारे में जानने और उनका प्रदर्शन देखने का मौका मिला (प्रधानाचार्य का नोट)। प्रसिद्ध आदिवासी कलाकारों और शिल्पकारों के लिए 10 दिवसीय कार्यशाला के तहत, कलाकारों के जिस शुरुआती समूह का हमने स्वागत किया, वह मध्य प्रदेश से था। यह एक नवाचारी और समृद्ध अनुभव साबित हुआ, जिससे छात्रों और अध्यापकों दोनों को कला की दुनिया का व्यावहारिक अनुभव मिला। मध्य प्रदेश, गोंड कला की अपनी समृद्ध परंपरा के साथ, सांस्कृतिक रूप से जीवंत क्षेत्र के रूप में खड़ी है। पद्मश्री भज्जू श्याम और स्वर्गीय जनगढ़ सिंह श्याम की कलात्मक विरासत कई समकालीन कलाकारों के काम के माध्यम से जारी है। मंगरु उइके और मोहन सिंह श्याम ने गोंड कला की परंपरा को परिश्रमपूर्वक संरक्षित किया है। जीवन की सूक्ष्म भावनाओं और रोजमर्रा की परंपराओं में, हम गहन कलात्मक दर्शन (मंगरू उइके और मोहन श्याम की अंतर्दृष्टि) की खोज करते हैं। केवल 24 क्षणों में जीवन की खुशियों और रंगों को चित्रित करने वाली भील पेंटिंग ने हमारी कार्यशाला में केंद्र स्तर पर कब्जा कर लिया। पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित पुरूषोत्तम भूरी बाई ने अपने बेटे रमेश वारिया और बेटी शांता बाई के साथ हमारी कार्यशाला के दौरान भील पेंटिंग प्रस्तुत की। हम अपने संस्थान के अंदर ऐसे कलाकारों और उनकी कलाओं के लिए एक मंच प्रदान करने में गर्व महसूस करते हैं।

एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के लिए मिडिल स्कूल स्तर के लिए कोडिंग मॉड्यूल

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के लिए ई-बुक और हार्ड कॉपी के रूप में ओपन-सोर्स फ्री प्लेटफॉर्म का उपयोग करके कक्षा 6 के छात्रों के लिए कोडिंग मॉड्यूल विकसित करना था। लक्षित समूह माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्र थे। इसमें तीन अध्याय शामिल हैं— (क) कोडिंग का परिचय; (ख) सी-डेन (रा.शै.अ.प्र.प. का कोडिंग डेवलपमेंट एनवायरमेंट); और (ग) कोडिंग पाठ योजनाएँ। यह कार्यक्रम एन.ई.पी. 2020 के आलोक में डिजाइन और विकसित किया गया था।

कोडिंग से विद्यार्थियों को कंप्यूटर पर उनके संचार, सहयोग, आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता, तार्किक सोच और लेखन कौशल को बढ़ाने में मदद मिलती है। चार कार्यशालाओं में से एक पूरी हो गई। इस कार्यशाला में, एक स्क्रैच 3.0 (https://scratch.mit.edu/) जो मैसेचुसेट्स इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी (एम.आई.टी.) द्वारा विकसित एक ओपन-सोर्स और फ्री-टू-यूज प्लेटफॉर्म है, जिस पर आधारित ब्लॉक-आधारित-प्रोग्रामिंग सॉफ़्टवेयर को अनुकूलित किया गया था। पी.ए.सी. टीम द्वारा सुझाए गए हमारे सॉफ़्टवेयर का नाम सी-डेन (रा.शै.अ.प्र.प. का कोडिंग डेवलपमेंट एनवायरमेंट) है। सी-डेन स्क्रैच 3.0 आधारित ब्लॉक प्रोग्रामिंग सॉफ्टवेयर है जो स्कूलों और

अन्य कम प्रतिनिधित्व वाले समूहों के छात्रों को कोडिंग सिखाने और सीखने के लिए समर्पित है। सी-डेन, सी.सी. बी.वाई.- एस.ए. 2.0 लाइसेंस (https://creativecommons.org/licenses/by-sa/2.0/) के तहत ओपन-सोर्स और फ्री-टू-यूज सॉफ्टवेयर है। इस सॉफ्टवेयर के पीछे हमारा दृष्टिकोण यह है कि प्रत्येक स्कूल का प्रत्येक छात्र भारत और विदेश में कोडिंग सीख सके। अगली कार्यशाला वित्तीय वर्ष 2023–2024 से प्रस्तावित होगी। प्रस्तावित कार्यशाला में कक्षा 6 मानक के लिए 10 ड्राफ्ट मॉड्यूल विकसित किए जाएँगे।

एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के लिए माध्यमिक विद्यालय स्तर के लिए एस.टी.ई.ए.एम. मॉड्यूल

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 के कार्यान्वयन के लिए ई-बुक और हार्ड कॉपी के रूप में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के लिए एस.टी.ई.ए.एम. (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित) मॉड्यूल विकसित करना था। लक्षित समूह माध्यमिक विद्यालय स्तर के छात्र थे। चूंकि एस.टी.ई.ए.एम. शिक्षा मुख्य रूप से सहयोग और अभ्यास के माध्यम से छात्रों का मार्गदर्शन करने के लिए परियोजना आधारित अधिगम दृष्टिकोण पर आधारित है। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली में, ज्ञान किताबों और याद रखने की प्रक्रिया के माध्यम से प्रदान किया जाता है जबकि एस.टी.ई.ए.एम. शिक्षा में छात्रों को ज्ञान के विखंडन से दूर रहने की सुविधा दी जाती है, मौजूदा ज्ञान के बीच अंतर को कम किया जाता है और अभ्यास के माध्यम से छात्रों को तकनीकी कौशल प्रदान किए जाते हैं। इससे व्यावसायिक ज्ञान के साथ-साथ छात्र के रोजगार और प्रतिस्पर्धात्मकता को भी बढ़ाया जाता है। कार्यशाला में कक्षा 6 मानक के लिए 10 ड्राफ्ट मॉड्यूल विकसित किए गए। मॉड्यूल को दो भागों में विभाजित किया गया है— (क) एस.टी.ई.ए.एम. शिक्षा का परिचय और (ख) परियोजना-आधारित एस.टी.ई.ए.एम. पाठ योजना।

एस.टी.ई.ए.एम. पार्क और मौसम स्टेशन

इस कार्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित के बीच समेकन पर संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाने के लिए एस.टी.ई.ए.एम. अधिगम का वातावरण बनाना है। इसमें छात्रों को एस.टी.ई.ए.एम. की तर्ज पर पूछताछ, संवाद और आलोचनात्मक सोच की प्रक्रिया में संलग्न करने के लिए कामकाजी मॉडल, दृश्य कला, चार्ट, गतिविधियाँ, पहेलियाँ आदि जैसे पहुँच बिंदुओं के रूप में वातावरण प्रदान करने पर भी ध्यान केंद्रित किया गया। इस कार्यक्रम के अन्य उद्देश्य हैं— बच्चों, अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को अधिगम के माध्यम से प्रायोगिक अनुभव की सुविधाएँ प्रदान करना, छात्रों में वैज्ञानिक स्वभाव और जाँच की भावना पैदा करना, एस.टी.ई.ए.एम. और समाज के बीच संबंध बनाना और जन विज्ञान को बढ़ावा देना और मौसम और जलवायु स्थितियों का वास्तविक समय डेटा संग्रह सक्षम करना।

एस.टी.ई.ए.एम. (विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित) पार्क का मुख्य उद्देश्य छात्रों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित के बीच समेकन पर संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाने के लिए एस.टी.ई.ए.एम. अधिगम का माहौल प्रदान करना है। यह छात्रों को एस.टी.ई.ए.एम. की तर्ज पर पूछताछ, संवाद और आलोचनात्मक सोच की प्रक्रिया में संलग्न करने के लिए कामकाजी मॉडल, दृश्य कला, चार्ट, गतिविधियाँ, पहेलियाँ आदि जैसे पहुँच बिंदुओं के रूप में एक आकर्षक माहौल प्रदान करता है। एस.टी.ई.ए.एम. पार्क रचनात्मक खेल के माध्यम से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित (एस.टी.ई.ए.एम.) की दुनिया को बनाने, तलाशने और जाँच करने की बच्चे की प्राकृतिक जिज्ञासा और इच्छा को विकसित करने में सफल रहा है। यह छात्रों को विभिन्न वैज्ञानिक अवधारणाओं को सीखने और उनसे परिचित होने के लिए एक प्राकृतिक और मुक्त वातावरण प्रदान करता है। पार्क में प्रदर्शित मॉडल बच्चों को विज्ञान, प्रौद्योगिकी, कला और गणित की विभिन्न प्रदर्शनियों के साथ खेलने की अनुमति देते हैं। औषधीय पादप उद्यान पर्यावरण को भी समृद्ध बनाता है। पार्क में खेलते हुए बच्चों के लिए सीखने का यह जीवनभर का अनुभव है। पिछले शैक्षणिक वर्ष में लगभग 200 छात्रों

और 50 अध्यापकों ने एस.टी.ई.ए.एम. पार्क का दौरा किया। उन्होंने पाया कि यह स्थान नवोन्मेषी है जो अध्यापकों और छात्रों के बीच डिजाइन सोच को प्रभावी ढंग से बढ़ावा देता है। छात्रों और अध्यापकों ने पार्क में जाना एक अद्भुत और आनंददायक अनुभव बताया। वे पार्क में प्रदर्शित विभिन्न मॉडलों के माध्यम से विज्ञान, प्रौद्योगिकी, इंजीनियरिंग, कला और गणित की विभिन्न मूलभूत अवधारणाओं को आसान और दिलचस्प तरीके से समझ सकते हैं। उन्होंने पार्क क्षेत्र में विभिन्न वनस्पतियों और जीवों के बारे में भी जाना। छात्रों और अध्यापकों के लिए पूरा अनुभव स्फूर्तिदायक, उत्साहवर्धक और ज्ञानवर्धक था।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण था— एस.टी.ई.ए.एम. पार्क आर.आई.ई. भोपाल में 45 अंत:क्रियात्मक मॉडल और पाँच कलाकृतियाँ हैं, 200 छात्रों और 50 अध्यापकों ने एस.टी.ई.ए.एम. पार्क का दौरा किया, एस.टी.ई.ए.एम. पार्क में प्रत्येक मॉडल के माध्यम से, छात्र और अध्यापक अनुभवों में डूब गए, इससे उन्हें आश्चर्य करने और सवाल करने तथा फिर गतिविधियों को सहयोग करने, बनाने एवं विकसित करने का अवसर मिला, जिसे वे अपने स्कूलों और कॉलेजों में वापस ले जा सकते थे और एस.टी.ई.ए.एम. पार्क विभिन्न वनस्पतियों और जीवों का एक समृद्ध स्रोत है और इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा को बढ़ावा मिलता है।

स्टूडियो का रखरखाव, ई-सामग्री का विकास

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य संस्थान में स्थापित स्टूडियो का रखरखाव करना, ई-सामग्री के विकास और शिक्षा पर फिल्म के निर्माण के लिए कर्मचारियों की नियुक्ति करना, स्टूडियो सेट-अप का उपयोग करके ऑडियो, वीडियो और डिजिटल संसाधनों का उत्पादन, मौजूदा प्रिंट और गैर-प्रिंट संसाधनों का डिजिटलीकरण, एन.आर.ओ.ई.आर./ दीक्षा पर डिजिटल संसाधनों की स्थापना, ऑनलाइन पाठ्यक्रम सामग्री का विकास और विभिन्न कक्षाओं के लिए विभिन्न विषयों में ई-सामग्री विकसित करना था। कुल 185 ई-सामग्री विकसित की गई है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

डी.एम.एस. पुस्तकालय, आर.आई.ई., भुवनेश्वर का स्वचालन

डी.एम. स्कूल पुस्तकालय का स्वचालन एक सतत कार्यक्रम है जो शैक्षणिक वर्ष 2021–22 में शुरू हुआ। इस कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य डी.एम.एस. लाइब्रेरी के संग्रह और सेवाओं को आधुनिक बनाना है, जिससे प्रयोक्ता आसानी से और कुशलता से सामग्री तक पहुँच प्राप्त कर सकें। स्वचालन का उद्देश्य बुनियादी पुस्तकालय प्रक्रियाओं को सुव्यवस्थित करना और एक इलेक्ट्रॉनिक डेटाबेस बनाना है। इसके अतिरिक्त, कार्यक्रम में रा.शै.अ.प्र.प. की एक यूनियन कैटलॉग की तैयारी के लिए पुस्तकों के ग्रंथ सूची संबंधी डेटा को साझा किया जाना है, जिसमें रा.शै.अ.प्र.प. से जुड़े सभी पुस्तकालयों को आपस में जोड़ना शामिल है। पुस्तकालय के ग्राहक समूह में छात्र, अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षक, पुस्तकालयाध्यक्ष और अन्य पुस्तकालय प्रयोक्ता शामिल हैं। स्वचालन प्रक्रिया के भाग के रूप में, एक समेकित पुस्तकालय ओपन-सोर्स सॉफ्टवेयर, कोहा का उपयोग करके कुल 8078 पुस्तकों का ग्रंथ सूची संबंधी डेटा डेटाबेस में अपलोड किया गया है। प्रयोक्ताओं को पुस्तकालय की पुस्तकों को खोजने और पुनः प्राप्त करने में सुविधा प्रदान करने के लिए, कोहा के ऑनलाइन पब्लिक एक्सेस कैटलॉग (ओ.पी.ए.सी.) मॉड्यूल को अपग्रेड किया गया है। इस संवर्द्धन से लाइब्रेरी प्रयोक्ताओं को डी.एम.एस. लाइब्रेरी में स्थापित सूचना कियोस्क के माध्यम से ओपेक प्रणाली तक पहुँचने की सुविधा मिलती है। सूचना कियोस्क प्रणाली का उपयोग अक्सर पुस्तकालय प्रयोक्ताओं द्वारा उन सामग्रियों को खोजने के लिए किया जाता है जिनकी उन्हें जल्दी और आसानी से आवश्यकता होती है। पुस्तकालय प्रक्रियाओं को स्वचालित करके और ओ.पी.ए.सी. प्रणाली को कार्यान्वित करके, डी.एम.

स्कूल पुस्तकालय का उद्देश्य प्रयोक्ता अनुभव को बढ़ाना और अपने संसाधनों तक पहुँच में सुधार करना है, अंततः अपने विविध प्रयोक्ताओं की शैक्षणिक और अनुसंधान आवश्यकताओं का समर्थन करना है।

आर.आई.ई., भुवनेश्वर का संस्थागत भंडार

संस्थागत भंडार (आई.आर.) संस्थान के बौद्धिक आउटपुट की डिजिटल प्रतियों को एकत्र करने, संरक्षित करने और प्रसारित करने के लिए एक ऑनलाइन संग्रह के रूप में कार्य करता है। इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य आर.आई.ई., भुवनेश्वर के अनुसंधान आउटपुट की व्यापक पहुँच और दृश्यता को बढ़ावा देना और संस्थान के प्रकाशनों को डिजिटल रूप से संरक्षित करना और दीर्घकालिक पहुँच प्रदान करना है। डिजिटलीकरण और संस्थागत भंडार (आई. आर.) में अपलोड किए जाने वाले दस्तावेजों की पहचान की गई और उसके बाद एक नीति रूपरेखा तैयार की गई। स्कैनिंग, सफाई, ओ.सी.आर. जाँच, मेटा डेटा निर्माण, दस्तावेज़ों को अध्यायों में विभाजित करना आदि करके लगभग 969 दस्तावेज़ आई.आर. में अपलोड किए गए हैं। अपलोड किए गए दस्तावेज़ों का विवरण इस प्रकार है : वर्तमान सामग्री- 11, सम्मेलन की कार्यवाही- 9, नीति दस्तावेज़- 26, पी.ए.सी. रिपोर्ट- 182, शिक्षण सामग्री/संसाधन (पी.ए.सी.)- 60, प्रशिक्षण/कार्यशाला- 12, प्रशिक्षण मॉड्यूल/सामग्री- 32 , निबंध और थीसिस- 535, सर्वेक्षण रिपोर्ट- 06, डी.पी.ई.पी. परियोजना रिपोर्ट- 13, दुर्लभ पुस्तकें- 2, सार- 29, पिछले वर्ष के प्रश्न पत्र-26 और अन्य रिपोर्ट- 17.

सेवाकालीन और सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के लिए शैक्षिक थीम पार्क, अधिगम संसाधन केंद्र और हर्बल गार्डन

सेवाकालीन और सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों के लिए शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को सुविधाजनक बनाने के लिए शिक्षा संसाधन केंद्र (ई.आर.सी.) का विकास एक गतिविधि-आधारित अनुभवात्मक शिक्षण केंद्र के रूप में किया गया था। इसे देखते हुए, ई.आर.सी. को तीन अलग-अलग वर्गों में विभाजित किया गया है— लर्निंग रिसोर्स रूम, हर्बल गार्डन और थीम पार्क। रिसोर्स रूम में 300 से अधिक गतिविधियाँ और मॉडल हैं, जबकि हर्बल गार्डन में 250 से अधिक किस्मों के औषधीय पौधे हैं। इसके अतिरिक्त, थीम पार्क में विज्ञान, गणित और सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में 28 थीम-आधारित मॉडल शामिल हैं। शैक्षिक संसाधनों के सभी तीन घटकों का उपयोग विद्यालयी बच्चों, सेवारत अध्यापकों और सेवापूर्व अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों द्वारा उनकी विशिष्ट आवश्यकताओं के अनुसार लगातार किया जाता है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

शैक्षिक मीडिया संसाधन

शैक्षिक ऑडियो/वीडियो संसाधनों के माध्यम से शिक्षण और अधिगम को बढ़ाने, परस्पर क्रिया मल्टीमीडिया तत्वों के साथ वीडियो कार्यक्रमों के लिए सहायक सामग्री बनाने, संसाधन साझा करने के लिए सी.आई.ई.टी. और अन्य शैक्षिक एजेंसियों के साथ सहयोग करने और टेलीकास्ट (पी.एम. ई-विद्या), प्रसारण, पॉडकास्ट, आई रेडियो, वेब पोर्टल (दीक्षा), यूट्यूब, मोबाइल ऐप, सामुदायिक रेडियो, ज्ञान वाणी और आकाशवाणी जैसे विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से इन संसाधनों को वितरित करने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। यह परियोजना एन.आर.ओ.ई.आर., ई-पाठशाला, पी.एम. ई-विद्या, दीक्षा, स्वयं, यूट्यूब जैसे प्लेटफार्मों और सी.डी./डी.वी.डी. जैसे भौतिक प्रारूपों के माध्यम से संसाधनों के प्रसार पर प्रकाश डालती है। ऑडियो और वीडियो कार्यक्रमों के लिए सामग्री डिजाइनिंग और स्क्रिप्टिंग में विभिन्न कार्यक्रमों के छात्रों को प्रशिक्षित करने के उद्देश्य से दो दिवसीय कार्यशाला 20–21 अगस्त, 2022 को आयोजित की गई थी।

दक्षिणी राज्यों के माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विज्ञान में कुछ नवीन शिक्षण और अधिगम अभ्यासों का संग्रह

यह कार्यक्रम माध्यमिक विद्यालय स्तर पर विज्ञान में नवीन शिक्षण और अधिगम की अभ्यासों को प्रदर्शित करने वाले एक व्यापक सार-संग्रह को तैयार करने के लिए समर्पित था। परियोजना के मुख्य उद्देश्यों में मौजूदा संसाधनों की पहचान, उपयुक्त सामग्रियों का संग्रह, संसाधन पूल का विस्तार और अंततः, बेहतरीन नवीन शिक्षण और अधिगम के संसाधनों को प्रकट करने वाले एक क्यूरेटेड सार-संग्रह का निर्माण शामिल है। परियोजना की प्रगति में कार्यशालाओं की एक शृंखला शामिल है— 16–18 नवंबर, 2022 तक 3 दिवसीय सत्र, सार-संग्रह की संरचना पर केंद्रित; 29 नवंबर से 3 दिसंबर, 2022 तक चलने वाली पाँच दिवसीय कार्यशाला, जो सार-संग्रह का विवरण देने के लिए समर्पित है; और 2–4 फरवरी, 2023 तक एक तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य सार-संग्रह को अंतिम रूप देना था। इसके अलावा, संस्थान द्वारा संचालित प्रशिक्षण पहलों को समेकित तरीके से संक्षेपित किया गया है, जिसमें प्रत्येक कार्यक्रम के लिए प्रमुख क्षेत्रों, उद्देश्यों, लक्षित दर्शकों और फीडबैक को समाहित किया गया है।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

कार्यक्रमों की ट्रैकिंग, प्रोग्राम डेटाबेस बनाने और साझाकरण तथा प्रतिक्रिया तंत्र के लिए गतिशील वेबसाइट

कार्यक्रम का उद्देश्य था— (i) रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संचालित सभी कार्यक्रमों पर नजर रखने के लिए तंत्र का निर्माण करना, (ii) सभी हितधारकों के लिए एक कार्यक्रम के बारे में एक साझाकरण और प्रतिक्रिया तंत्र बनाना, (iii) रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा संचालित कार्यक्रमों का ई-डेटाबेस बनाना, (iv) राज्यों द्वारा संचालित कार्यक्रमों का विवरण अपलोड करने के लिए राज्यों को एक मंच प्रदान करना, और (v) वेबसाइट को बनाए रखना और संचालित करना। इस हेतु वेबसाइट विकसित की गई, जहाँ संस्थागत कार्यक्रमों की सभी जानकारी अपलोड की जाती है। संकाय सदस्य अपने कार्यक्रम का विवरण अर्थात तिथियाँ, स्थान, प्रतिभागियों की संख्या, कार्यक्रम, रिपोर्ट आदि अपलोड कर रहे हैं। कार्यक्रम के लिए पंजीकरण करते समय, प्रतिभागियों से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे वेबसाइट में पंजीकरण करें और सीधे वेबसाइट पर कार्यक्रमों की प्रतिक्रिया दें। राज्य अपने द्वारा संचालित कार्यक्रमों की जानकारी भी अपलोड कर सकते हैं। जानकारी प्रयोक्ताओं के स्तर के अनुसार उपलब्ध है। डायनमिक वेबसाइट सभी आर.आई.ई. और एन.आई.ई. द्वारा उपयोग के लिए तैयार है।

स्कूल और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के लिए ई-संसाधन

कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य— (i) स्टूडियो सेटअप का उपयोग करके ऑडियो, वीडियो और डिजिटल संसाधनों का उत्पादन, (ii) ऑडियो, वीडियो और डिजिटल संसाधनों का उत्पादन फ्री एंड ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर (एफ.ओ.एस.एस.), (iii) एन.आर.ओ.ई.आर./स्वयं/पी.एम. ई-विद्या पर डिजिटल स्थापित संसाधन, और (iv) स्कूली विषयों में ई-संसाधन का विकास करना है। इसके लिए 25 लिपियाँ विकसित की गई हैं। पांडुलिपि विज्ञान, गणित, अंग्रेजी और सामाजिक विज्ञान से भिन्न होती हैं। विकसित पांडुलिपि के लिए वॉयस ओवर की रिकॉर्डिंग और शूटिंग एक साथ चलती रहती है। पी.एम. ई-विद्या चैनल के लिए नियमित रूप से वीडियो अपलोड किए जा रहे हैं। इनके अलावा, एन.ई.आर.आई.ई. स्टूडियो सभी संस्थागत कार्यक्रमों को कवर करने, ब्रोशर, बैनर, लाइब्रेरी पेज के हेडर और फुटर आदि को डिजाइन करने में संलग्न है।

पूर्वोत्तर भारत की मणिपुरी, थाडौ-कुकी, रुंगमेई तांगखुल, आदि और गालो भाषाओं में लोक गीतों और छंदों का संकलन

ये कार्यक्रम तीन चरणों (पहला चरण 8–12 अगस्त 2022, दूसरा चरण 23–25 नवंबर 2022 और तीसरा चरण 16–23 जनवरी 2023) में आयोजित किए गए। कार्यक्रम का सामान्य उद्देश्य उल्लिखित भाषा में उपलब्ध लोक गीतों और छंदों का संकलन और उसकी रिकॉर्डिंग है। पहले चरण की कार्यशाला में प्रत्येक भाषा का प्रतिनिधित्व करने वाले कुल 15 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रत्येक भाषा से अनेक लोक गीत और कविताएँ एकत्रित की गई। आदि से कुल 18 लोक गीत और 17 छंद, रूंगमेई से कुल 32 लोक गीत और 22 छंद, गैलो से कुल 8 लोक गीत और 30 छंद, तांगखुल से कुल 60 और 24 छंद और थडौ कुकी से कुल 16 लोक गीत और 11 कविताएँ एकत्र की गई। एन.ई.आर.आई.ई. में आयोजित कार्यक्रम के दूसरे चरण में आदि जनजाति के लोकगीतों को रिकॉर्ड किया गया। मणिपुर राज्य फिल्म और टेलीविजन संस्थान, इंफाल में आयोजित तीसरे चरण की कार्यशाला में मणिपुरी, थडौ कुकी, तांगखुल और रुआंग्मी के लगभग 70 प्रतिशत लोकगीतों की ऑडियो रिकॉर्डिंग की गई थी।

सीखने के स्वदेशी और पारंपरिक तरीकों पर संसाधन

विकसित संसाधनों में माप की स्वदेशी प्रणाली और आकाश को देखने की पारंपरिक विधि, ज्ञान के प्रसार के साधन के रूप में कहानी सुनाना, दौड़ के माध्यम से पूर्वजों के निशान और सांस्कृतिक जड़ों की फिर से यात्रा, बुद्धिमानी की बातें और कहावतें, शांति निर्माण और संचार के पारंपरिक तरीके, फोम नागा जनजाति का पारंपरिक शिक्षण संस्थान, लोकतांत्रिक जातीय संस्था और संघर्ष समाधान, ट्रैगोपैन और दुनिया के सबसे ऊँचे पेड़ की कहानी, एल्डर-आधारित कृषि पद्धति, स्वदेशी कृषि-खेती प्रणाली, विज्ञान अधिगम के पारंपरिक तरीके आदि शामिल हैं।

पूर्वोत्तर भारत के लिए एन.ई.पी. 2020 के आलोक में 21वीं सदी के कौशल पर अध्यापक हस्तपुस्तिका

एन.ई.आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., शिलांग में 27 फरवरी से 3 मार्च 2023 तक 'पूर्वोत्तर भारत के लिए एन.ई.पी. 2020 के आलोक में 21वीं सदी के कौशल पर अध्यापक हस्तपुस्तिका का विकास' पर पाँच दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। कार्यक्रम के उद्देश्य— (i) 21वीं सदी के कौशल की आवश्यकता और महत्व पर जागरूकता पैदा करना; (ii) जीवन कौशल पर राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा सहित 21वीं सदी के कौशल के विभिन्न घटकों को समझना; (iii) कक्षाओं में 21वीं सदी के कौशल को कार्यान्वित करने के लिए नियोजित गतिविधियों को शामिल करना; (iv) विभिन्न कौशलों का आकलन करने के लिए विभिन्न कार्यनीतियों को शामिल करना; (v) 21वीं सदी के कौशल के उद्देश्य, कार्यनीतियों और परिणामों पर हितधारकों को शिक्षित करना, और (vi) उच्चतम महत्व के साथ रोजगार कौशल के गुणों के रूप में संचार, समस्या-समाधान और निर्णय लेने के कौशल तथा टीम वर्क की सार्थकता के बारे में जागरूकता पैदा करना है।

पूर्वोत्तर राज्यों के लिए शाला-पूर्व शिक्षा के लिए अनुभवात्मक अधिगम पर हस्तपुस्तिका

इस कार्यक्रम के उद्देश्य हैं— (i) अधिगम के अनुभव प्रदान करने पर सामग्री विकसित करना, उभरते एफ.एल.एन. कौशल का समर्थन करना; (ii) समग्र रिपोर्ट कार्ड तैयार करने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण सोच, संचार, रचनात्मकता और सामाजिक-भावनात्मक विकास जैसी कौशल की प्रगति और मूल्यांकन का समर्थन करने वाली अनुकरणीय गतिविधियाँ विकसित करना; (iii) अध्यापकों और अभिभावकों के महत्व पर विभिन्न अधिगम प्रतिफलों को सूचीबद्ध करना जिनकी शाला-पूर्व कार्यक्रम में घर पर अधिगम के परिवेश के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका है; (iv) शाला-पूर्व शिक्षा में अनुभवात्मक शिक्षा की संगत के बारे में हितधारकों के लिए जागरूकता पैदा करना। 10 मुख्य कौशलों, जैसे— संज्ञानात्मक कौशल, पढ़ने से पहले कौशल, लिखने से पहले कौशल, अंकगणित

से पहले कौशल, स्व-सहायता कौशल, सामाजिक और भावनात्मक कौशल, गत्यात्मक कौशल, संवेदी कौशल, खेल कौशल और भाषा और संचार कौशल की पहचान की गई। निपुण भारत में वर्णित तीन लक्ष्यों के आधार पर इसके तीन स्तरों (शाला-पूर्व – 1, 2, 3) के लिए लगभग 200 अनुकरणीय गतिविधियों को विकसित किया गया। ये तीन लक्ष्य हैं— लक्ष्य 1 : बच्चे भोजन स्वास्थ्य और कल्याण का रखरखाव करते हैं, लक्ष्य 2 : बच्चे प्रभावी संचारक बनते हैं, लक्ष्य 3 : बच्चे संबद्ध विद्यार्थी बन जाते हैं और प्रत्येक स्तर के अधिगम प्रतिफल को शामिल करके अपने आस-पास के परिवेश से जुड़ जाते हैं।

5. क्षमता निर्माण कार्यक्रम

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) पाठ्यचर्या के बारे में की गई घोषणाओं और जमीनी वास्तविकताओं के बीच मौजूद अंतर को कम करने के उद्देश्य से, शिक्षा के हितधारकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित करती है। परिषद् ने छात्रों के अधिगम के परिणामों को बेहतर बनाने के लिए विद्यार्थी-केंद्रित शिक्षणशास्त्र पर प्रारंभिक स्तर पर अध्यापकों और स्कूल प्रमुखों की क्षमता निर्माण के लिए ऑनलाइन 'निष्ठा' का आयोजन किया। इस विशाल प्रशिक्षण कार्यक्रम के अलावा, परिषद् स्कूल और अध्यापक शिक्षा के सभी स्तरों पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए मास्टर प्रशिक्षकों या प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए क्षमता निर्माण/अभिविन्यास/प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करती है।

वर्ष के दौरान, परिषद् ने मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता, सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए जेंडर संबंधी चिंताओं पर ध्यान देने के साथ समावेशी शिक्षा, ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के साथ डाटा विश्लेषण, शैक्षिक परियोजना योजना, कार्यान्वयन, निगरानी एवं मूल्यांकन, ई-सामग्री का विकास, क्लासरूम लाइब्रेरी का उपयोग, स्कूल पुस्तकालय में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सी.सी.एस.एल.), खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र, बहुकक्षीय और बहुभाषी कक्षा-कक्ष, सुनने और बोलने के कौशल को बढ़ाने, गतिविधि आधारित शिक्षा और विज्ञान किटों का उपयोग, एफ.एल.एन. के लिए सीखने के प्रतिफल आधारित शिक्षण संसाधनों का विकास, वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.), अनुसंधान उपकरणों का विकास, व्यावसायिक अध्यापकों के लिए व्यावसायिक विकास, मान्यता प्राप्त जनजातीय भाषाओं के पाठ्यपुस्तक लेखक, सामाजिक विज्ञान में ई-सामग्री के लिए स्क्रिप्ट लेखन, विज्ञान और गणित में अधिगम के परिणाम, मूल्यांकन और आकलन, प्रश्नपत्र सेटिंग, एम.ओ.ओ.सी. का विकास, व्यावसायिक शिक्षा को मजबूत बनाना, आई.सी.टी. समेकित शिक्षणशास्त्र के माध्यम से सीखने के प्रतिफलों की प्राप्ति, अनुभवात्मक शिक्षण कार्यनीतियाँ, अनुसंधान पद्धति और डाटा विश्लेषण, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि के क्षेत्रों में कार्यक्रम आयोजित किए।

परिषद् माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा पर विभिन्न डिप्लोमा पाठ्यक्रम, मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डी.सी.जी.सी.), मध्य स्तर पर विज्ञान शिक्षण में पाठ्यक्रम, और प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम अर्थात सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों के विकास पर छह महीने का प्रमाणपत्र कार्यक्रम, अन्य पाठ्यचर्या सामग्री, स्कूल लाइब्रेरी में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सी.सी.एस.एल.), ई.सी.सी.ई. में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम आदि चलाती है।

एस.सी.ई.आर.टी./डी.ई.ओ./सी.बी.एस.ई./के.वी.एस./एन.वी.एस. के लिए 'स्कूली छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण' और स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप पर अभिविन्यास कार्यक्रम, स्कूली शिक्षकों के लिए मूल्यपरक शिक्षा में ऑनलाइन पाठ्यक्रम, उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए जैव प्रौद्योगिकी की नव विकसित पाठ्यपुस्तक पर शिक्षकों का उन्मुखीकरण, अनुसंधान पद्धति में क्षमता निर्माण कार्यक्रम, पोस्ट एन.ए.एस. इंटरवेंशन और पोस्ट फाउंडेशनल लर्निंग स्टडी

(एफ.एल.एस.) इंटरवेंशन कार्यशालाएँ, परिषद् द्वारा 'माध्यमिक स्तर पर मूल्यांकन अभ्यासों के परिवर्तन' पर तीन-तीन दिनों की क्षेत्रीय क्षमता निर्माण कार्यशालाएँ भी शुरू की गई हैं।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए संख्यात्मकता पर अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों का शैक्षणिक समर्थन और क्षमता निर्माण

बच्चों के बीच साक्षरता और संख्यात्मक कौशल की प्रवाह, समझ और दक्षता को निर्धारित करने के लिए मार्च 2022 में राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) के सहयोग से मंत्रालय द्वारा एक बड़े पैमाने पर बुनियादी अधिगम अध्ययन (एफ.एल.एस.) आयोजित किया गया था। अध्ययन में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर कक्षा 3 के छात्रों द्वारा प्राप्त सीखने के प्रतिफलों के बारे में डाटा प्रदान किया। अध्ययन के आधार पर उन राज्यों की पहचान की गई, जिन्हें शैक्षणिक सहायता की आवश्यकता है। आंध्र प्रदेश उन राज्यों में से एक था, जहाँ अध्ययन से पता चला कि विद्यार्थियों के पास संख्यात्मकता और साक्षरता के संबंध में अपर्याप्त ज्ञान और कौशल हैं।

बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए साक्षरता और संख्यात्मकता पर अध्यापकों/ अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए तीन दिवसीय क्षमता निर्माण कार्यक्रम 14–16 सितंबर, 2022 तक एस.सी.ई.आर.टी., विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश में आयोजित किया गया था। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य साक्षरता और संख्यात्मकता के विभिन्न पहलुओं और दृष्टिकोणों पर अध्यापक की क्षमता का निर्माण करना था।

अध्यापकों को बच्चों में साक्षरता और संख्यात्मक कौशल विकसित करने की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित किया गया और इस बात पर जोर दिया गया कि ये सिर्फ कौशल नहीं हैं, बल्कि जीवन कौशल हैं जिन्हें हर बच्चे को हासिल करना और विकसित करना चाहिए। अध्यापकों से कहा गया कि वे बुनियादी स्तर पर अधिगम की गतिविधियों की योजना बनाने के लिए अनुभवात्मक शिक्षण पद्धति का उपयोग करें और बच्चों की घरेलू भाषा का भी उपयोग करें। सभी सत्र इनमें भाग लेने वाले अध्यापकों को संख्यात्मकता और साक्षरता के विभिन्न पहलुओं पर व्यावहारिक अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाइन किए गए थे।

बुनियादी स्तर के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित गणित शिक्षण किट का भी प्रदर्शन किया गया और अध्यापकों को प्रत्येक अवधारणा पर बच्चों के साथ कक्षा में आयोजित की जा सकने वाली विभिन्न गतिविधियों को संगत बनाने का अवसर दिया गया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	दीव में अल्प निष्पादन वाले जिलों के लिए एफ.एल.एन. पर संवेदीकरण कार्यक्रम	दीव 10–12 मई, 2022
2.	संबलपुर, ओडिशा में अल्प निष्पादन वाले जिलों के लिए एफ.एल.एन. पर संवेदीकरण कार्यक्रम	संबलपुर 21–23 जून, 2022
3.	मणिपुर राज्य के प्रमुख सलाहकारों के लिए मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.-निपुण भारत) पर एक राज्य स्तरीय अभिविन्यास-सह-प्रशिक्षण कार्यक्रम	मणिपुर 20–22 सितंबर, 2022
4.	यू-ट्यूब के माध्यम से जादुई पिटारा पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	ऑनलाइन मार्च, 2023

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए जेंडर संबंधी चिंताओं पर ध्यान देने के साथ समावेशी शिक्षा पर ज्ञानोदय विद्यालय (मध्य प्रदेश) के अध्यापकों का क्षमता निर्माण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 के आलोक में अध्यापकों को जेंडर और समावेशी शिक्षा पर संवेदनशील बनाना, उन्हें अनुसूचित जाति के बच्चों के मुद्दों और चिंताओं के बारे में जागरूक करना और उन्हें जेंडर अनुकूल और समावेशी शैक्षणिक प्रक्रियाओं के बारे में बताना था। अध्यापकों की प्रशिक्षण आवश्यकता का आकलन किया गया और अध्यापकों की आवश्यकता के आकलन के आधार पर प्रशिक्षण कार्यक्रम के उद्देश्यों, विषयों की पहचान की गई। प्रशासनिक शैक्षणिक, भोपाल, मध्य प्रदेश में ज्ञानोदय विद्यालय के प्रारंभिक अध्यापकों के लिए दो क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। यह कार्यक्रम दो चरणों में 30 जनवरी, 2023 से 3 फरवरी, 2023 तथा 6–10 फरवरी, 2023 तक आयोजित किया गया। *निष्ठा प्रशिक्षण पैकेज* सामग्री, शिक्षा में समावेशन— स्कूल प्रबंधन समिति

के लिए संदर्शिका, समावेशी स्कूलों के लिए सूचकांक, जेंडर समानता और सशक्तीकरण पर अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण सामग्री के खंड 1, 2 और 3, गुणवत्तापूर्ण शिक्षा को बढ़ाने के लिए मॉड्यूल— अनुसूचित जाति के लोगों के मुद्दे, चुनौतियाँ और चिंताएँ, का प्रचार-प्रसार किया गया। प्रशिक्षण कार्यक्रम के समापन के बाद प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया ली गई।

छत्तीसगढ़ में जनजातीय सघन जिलों के पोटा केबिन स्कूलों में प्रारंभिक स्तर पर सेवारत अध्यापकों का व्यावसायिक विकास

यह कार्यक्रम विभिन्न पोटा केबिन स्कूलों में अध्यापकों को उनकी आवश्यकताओं के अनुसार प्रशिक्षित करने के लिए शुरू किया गया था। तदनुसार, छत्तीसगढ़ के तीन जिलों दंतेवाड़ा, सुकमा और बीजापुर के छह स्कूलों में आवश्यकता मूल्यांकन अध्ययन किया गया था। स्कूलों से एकत्र किए गए डाटा का विश्लेषण किया गया और विषयों की पहचान की गई। परिणामस्वरूप, एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर, छत्तीसगढ़ में पाँच दिवसीय सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। सत्र के अनुरूप प्रतिभागियों की समझ बढ़ाने के लिए चर्चा,

प्रयोग, पी.पी.टी. आधारित प्रस्तुतियाँ, समूहकार्य आदि किए गए। प्रतिभागियों के बीच विभिन्न प्रशिक्षण सामग्री, जैसे— हिंदी और अंग्रेजी दोनों में आवश्यकता मूल्यांकन रिपोर्ट, *निष्ठा प्रशिक्षण पैकेज*, सेवाकालीन अध्यापक प्रशिक्षण और पोटा केबिन स्कूलों से संबंधित साहित्य आदि वितरित किए गए।

समावेशी शिक्षा पर राज्य प्रमुख संसाधन व्यक्ति (के.आर.पी.) के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

एस.सी.ई.आर.टी. त्रिपुरा ने समावेशी शिक्षा पर राज्य के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों के लिए आवश्यकता आधारित क्षमता निर्माण कार्यक्रम का अनुरोध किया। अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रम को डिजाइन और व्यवस्थित करने में शैक्षणिक सहायता प्रदान की गई। इसके विषयगत क्षेत्रों पर 28 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए, जैसे— विविधता, न्यायसंगत और समावेशी शिक्षा, विशेष आवश्यकता वाले बच्चों की अधिगम की आवश्यकता, जल्दी पहचान करने, समावेशन में मुद्दे और चुनौतियाँ, अधिगम में सामाजिक-आर्थिक स्थितियों और नि:शक्तताओं के निहितार्थ, बहुभाषी, व्यवहारिक, सामाजिक, विकासात्मक, शैक्षणिक और चिकित्सीय हस्तक्षेप, पाठ्यक्रम अनुकूलन, आई.एस.एल. और ब्रेल लिपि को पढ़ाने के अभ्यास, अभिगम्यता, सहायक उपकरण, किशोरावस्था से संबंधित मुद्दों को संबोधित करना और सीखने में कठिनाइयों वाले बच्चों को पढ़ाना आदि। इस कार्यक्रम में एस.सी.ई.आर.टी., डी.आई.ई.टी., विश्वविद्यालय, शैक्षणिक संस्थानों के संकाय सदस्यों, मनोवैज्ञानिकों, अध्यापकों आदि ने भाग लिया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों, विशेष रूप से अनुसूचित जाति के बच्चों के लिए जेंडर संबंधी चिंताओं पर ध्यान देने के साथ समावेशी शिक्षा पर ज्ञानोदय विद्यालय (मध्य प्रदेश) के अध्यापकों का क्षमता निर्माण	प्रशासनिक अकादमी, भोपाल, मध्य प्रदेश, 30 जनवरी से 3 फरवरी, 2023
		प्रशासनिक अकादमी, भोपाल, मध्य प्रदेश, 6–10 फरवरी, 2023
2	छत्तीसगढ़ में जनजातीय केंद्रित जिलों के पोटा केबिन स्कूलों में प्रारंभिक स्तर पर सेवाकालीन अध्यापकों का व्यावसायिक विकास	एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर, छत्तीसगढ़ 20–24 जनवरी, 2023
3.	समावेशी शिक्षा पर राज्य प्रमुख संसाधन व्यक्ति (के.आर.पी.) के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	प्रज्ञा भवन, एस.सी.ई.आर.टी., अगरतला, त्रिपुरा, 27 जून से 2 जुलाई, 2022

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्यचर्या सामग्री के विकास पर छह माह का प्रमाणपत्र कार्यक्रम

इस कार्यक्रम के भाग के रूप में, 16 क्रेडिट वाले चार पाठ्यक्रम अर्थात, (i) स्कूल सामाजिक विज्ञान शिक्षा— परिप्रेक्ष्य निर्माण (4 क्रेडिट); (ii) ज्ञान मीमांसा और सामाजिक विज्ञान (4 क्रेडिट); (iii) पाठ्यचर्या संबंधी संसाधनों

और शैक्षणिक सरोकारों का विकास (4 क्रेडिट); और (iv) मूल्यांकन और अधिगम (4 क्रेडिट) विकसित किए गए हैं। पाठ्यक्रम पाठ्यचर्या और मसौदा मॉड्यूल पाठ्यक्रम सलाहकार समिति द्वारा तैयार किए गए थे।

यह प्रमाणपत्र कार्यक्रम मिश्रित मोड में पेश किया गया था जिसमें पाठ्यक्रम प्रतिभागियों ने नियमित रूप से तीन चरणों में कार्यक्रम में भाग लिया और शेष अवधि के दौरान असाइनमेंट पर काम किया। तीन चरणों की अवधि इस प्रकार थी— चरण 1: 14 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2022 (ऑनलाइन); चरण 2: 23 जनवरी से 11 फरवरी, 2023 (आमने-सामने); चरण 3: 18–31 मार्च, 2023 (ऑनलाइन)।

संसाधन व्यक्तियों में विभाग के संकाय सदस्य, सलाहकार समिति के सदस्य, रा.शै.अ.प्र.प. के अन्य घटकों और अन्य विश्वविद्यालयों के संकाय सदस्य शामिल हैं। पाठ्यक्रम में भाग लेने वाले राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों नागालैंड, पश्चिम बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, बिहार, गुजरात, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख, दिल्ली, हरियाणा, चंडीगढ़, पंजाब, मध्य प्रदेश और उत्तर प्रदेश से थे।

क्र.सं.	प्रशिक्षण कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	सामाजिक विज्ञान पाठ्यपुस्तकों और अन्य पाठ्यचर्या सामग्रियों के विकास पर छह महीने का प्रमाणपत्र कार्यक्रम	चरण 1: 14 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2022 (ऑनलाइन) चरण 2: एन.आई.ई., नई दिल्ली 23 जनवरी से 11 फरवरी, 2023 (ऑनलाइन) चरण 3: 18–31 मार्च, 2023

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए जैव प्रौद्योगिकी की नव विकसित पाठ्यपुस्तक पर अध्यापकों का उन्मुखीकरण

कक्षा 11 और 12 के लिए जैव प्रौद्योगिकी की नव विकसित पाठ्यपुस्तक के आधार पर पाठ्यक्रम के संशोधन के साथ-साथ पुस्तक के दृष्टिकोण और सामग्री के बारे में जैव प्रौद्योगिकी अध्यापकों के लिए एक अभिविन्यास कार्यक्रम की योजना बनाई गई थी। तदनुसार, सबसे पहले संशोधित पाठ्यक्रम और नव विकसित पाठ्यपुस्तकों पर आधारित प्रशिक्षण मैनुअल विकसित किया गया था जिसमें सामग्री के सीखने के उद्देश्यों और विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से सीखने के अपेक्षित परिणाम की पहचान की गई थी। साथ ही, विशिष्ट अवधारणाओं के लिए आवश्यक पूर्व ज्ञान को मैनुअल में परिभाषित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम 21–25 फरवरी, 2023 तक क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु में (दक्षिणी क्षेत्र के अध्यापकों के लिए), 28 फरवरी से 4 मार्च, 2023 तक मुंबई में के.वी.एस. के क्षेत्रीय शैक्षणिक प्रशिक्षण संस्थान (जेड.आई.ई.टी.) और रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय, नई दिल्ली में (केंद्रीय और पश्चिमी क्षेत्र के अध्यापकों के लिए) 14–18 मार्च, 2023 तक (उत्तरी, पूर्वी और पूर्वोत्तर क्षेत्र के अध्यापकों के लिए) आयोजित किए गए। इस अभिविन्यास कार्यक्रम के दौरान भाग लेने वाले अध्यापकों को कक्षा 11 और 12 में जैव प्रौद्योगिकी के पाठ्यक्रम में नए शुरू किए गए विषयों के अलावा जैव प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में अनुप्रयोगों के साथ अवधारणाओं और पूर्व ज्ञान को जोड़ने के दृष्टिकोण से अवगत कराया गया। इसके कार्यान्वयन के लिए पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तकें पहले ही केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के साथ साझा की जा चुकी हैं।

मध्य स्तर पर विज्ञान के शिक्षण में ऑनलाइन पाठ्यक्रम

बड़ी संख्या में अध्यापकों को सशक्त बनाने के लिए मध्य स्तर पर विज्ञान पढ़ाने वाले अध्यापकों के लिए एक ऑनलाइन पाठ्यक्रम विकसित किया गया है, जिन्हें अपनी सामग्री के साथ-साथ शैक्षणिक ज्ञान को मजबूत करने

की आवश्यकता है। 'ओपन एडएक्स' का उपयोग करते हुए एक एम.ओ.ओ.सी. प्लेटफॉर्म (http://www.ncertx.in) स्थापित किया गया है। स्वयं में हाइलाइट किए गए चार चतुर्थांशों को इस पाठ्यक्रम में समेकित तरीके से पूरी तरह से शामिल किया गया है। इस पाठ्यक्रम में 40 मॉड्यूल शामिल किए गए हैं। प्रत्येक मॉड्यूल बुनियादी बातों से शुरू होता है और विद्यार्थी की समझ को महत्वपूर्ण वैचारिक गहराई तक विकसित करने का प्रयास करता है। ये मॉड्यूल शिक्षणशास्त्र और मूल्यांकन के प्रति रचनात्मक दृष्टिकोण प्रदर्शित करते हैं। वर्ष 2022–23 में देशभर से करीब 347 प्रतिभागियों ने इस पाठ्यक्रम में दाखिला लिया है। प्रतिभागी अपने प्रश्नों को चर्चा मंच पर अग्रेषित करते हैं और उनका समाधान करते हैं। अब तक, 347 प्रतिभागियों ने जारी मॉड्यूल को सफलतापूर्वक पूरा कर लिया है। इसके अन्य विवरण https://www.ncertx.in/ पर उपलब्ध हैं।

मध्य स्तर पर विज्ञान शिक्षण में ऑनलाइन डिप्लोमा पाठ्यक्रम का होमपेज

शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

मिश्रित विधि के माध्यम से मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का आयोजन (स्व-वित्तपोषित)

इस डिप्लोमा पाठ्यक्रम का उद्देश्य अध्यापकों, अध्यापक-प्रशिक्षकों, शैक्षिक और मार्गदर्शन कर्मियों को विद्यालयों या संबंधित व्यवस्था में अध्यापक परामर्शदाताओं के रूप में कार्य करने के लिए प्रशिक्षण देना है। वर्ष 2022 सत्र के लिए मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम जनवरी, 2022 में शुरू हुआ। दूरस्थ शिक्षा के पहले चरण में मासिक ट्यूटोरियल, असाइनमेंट पूरा करना और पोर्टफोलियो का विकास शामिल था। दूसरा चरण अर्थात तीन माह का संपर्क कार्यक्रम मिश्रित मोड के माध्यम से आयोजित किया गया। इसमें गहन और पर्यवेक्षित वर्चुअल विद्यालय अभ्यास, ऑनलाइन कक्षाएँ और कौशल विकास हेतु विशेष व्याख्यान शामिल हैं। मौखिक परीक्षा के बाद लिखित परीक्षा भी आमने-सामने की विधि में आयोजित की गई। प्रशिक्षुओं की इंटर्नशिप परियोजनाएँ तीन माह के लिए संचालित की गईं। पाठ्यक्रम के सफल समापन पर 33 प्रशिक्षुओं को डिप्लोमा प्रमाण-पत्र प्रदान किया गया। वर्ष 2023 का नया सत्र जनवरी, 2023 में 53 प्रतिभागियों के साथ शुरू हुआ।

स्कूली अध्यापकों के लिए नैतिक शिक्षा में ऑनलाइन पाठ्यक्रम

नैतिक शिक्षा पर ऑनलाइन पाठ्यक्रम का उद्देश्य अध्यापकों के बीच नैतिक शिक्षा के लिए संपूर्ण स्कूल दृष्टिकोण अपनाने के लिए आवश्यक कौशल विकसित करना है। पाठ्यक्रम 7 अक्तूबर, 2022 को शुरू किया गया था। पाठ्यक्रम में 19 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और केंद्रीय विद्यालय संगठन का प्रतिनिधित्व करते हुए कुल 43 स्कूल अध्यापकों ने भाग लिया। सप्ताह में एक दिन की अंतरक्रिया कक्षाएँ आयोजित की गईं और पाठ्यक्रम के लिए विकसित मॉड्यूल प्रतिभागियों के साथ साझा किए गए। ऑनलाइन पाठ्यक्रम 30 दिसंबर, 2022 को संपन्न हुआ। इसमें भाग लेने वाले अध्यापकों ने फीडबैक भी प्रस्तुत किया है।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	मिश्रित विधि (स्व-वित्तपोषण) के माध्यम से मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम का आयोजन	एन.आई.ई. कैंपस, नई दिल्ली 1 जनवरी, 2022 से 31 दिसंबर, 2022 तक
		ट्यूटोरियल आयोजित किए गए— 27–28 जनवरी, 2022 25–28 फरवरी, 2022 30–31 मार्च, 2022 25–26 अप्रैल, 2022 26–27 मई, 2022
2.	स्कूली अध्यापकों के लिए नैतिक शिक्षा में ऑनलाइन पाठ्यक्रम (ऑनलाइन)	7 अक्तूबर, 2022 से 30 दिसंबर, 2022

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

अनुसंधान पद्धति में क्षमता निर्माण कार्यक्रम

एस.सी.ई.आर.टी. के सहयोग से अनुसंधान पद्धति पाठ्यक्रम का आयोजन नियमित रूप से डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय के लिए किया गया है। इस कार्यक्रम में, अनुसंधान पद्धति के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा के अलावा, प्रतिभागियों को अनुसंधान में कंप्यूटर का उपयोग करने का व्यावहारिक अनुभव प्रदान किया जाता है। साथ ही, प्रत्येक प्रतिभागी एक शोध प्रस्ताव विकसित करता है, जिसे पाठ्यक्रम में प्रस्तुत और चर्चा की जाती है। इस कार्यक्रम के प्रमुख उद्देश्य हैं— (i) कार्यक्रम में उपयोग के लिए विकसित प्रशिक्षण सामग्री को अद्यतन करना; (ii) शैक्षिक अनुसंधान के महत्व के बारे में अध्यापक प्रशिक्षकों के बीच समझ विकसित करना; (iii) उन्हें गुणात्मक और मात्रात्मक शैक्षिक अनुसंधान की प्रक्रिया के बारे में उन्मुख करना; और (iv) प्रतिभागियों को उनके संदर्भों से संबंधित विषय पर अनुसंधान प्रस्तावों के विकास में सहायता करना।

एन.ई.आर.आई.ई., उमियम में 14–18 नवंबर, 2022 तक डी.आई.ई.टी./एस.सी.ई.आर.टी./ रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें चार राज्यों, अरुणाचल प्रदेश, असम, मेघालय और सिक्किम के डी.आई.ई.टी./ एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय ने भाग लिया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	अनुसंधान पद्धति पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) 14–18 नवंबर, 2022

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

एन.ए.एस. पश्चात के हस्तक्षेप

राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण 2021 के निष्कर्षों का प्रसार करने और हस्तक्षेप की योजना बनाने के लिए समय-समय पर क्षेत्रीय स्तर की कार्यशालाएँ आयोजित की जाती हैं। सभी राज्य और संघ राज्य क्षेत्र प्रसार के अगले चरण के रूप में रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से जिला-स्तरीय एन.ए.एस. पश्चात प्रसार कार्यशालाओं का भी आयोजन कर रहे हैं। ये कार्यशालाएँ एन.ए.एस. परिणामों के प्रसार और परिणामों को संप्रेषित करने और अधिगम के स्तर में सुधार के लिए कार्ययोजनाओं की कार्यनीति बनाने के लिए एन.ए.एस. के बाद के हस्तक्षेपों के लिए हैं। यह एक महत्वपूर्ण अभ्यास है क्योंकि इससे यह सुनिश्चित किया जाएगा कि प्रमुख अधिकारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 में बताए अनुसार अधिगम के स्तर में सुधार के लिए एन.ए.एस. रिपोर्ट का विवेकपूर्ण उपयोग करें। इसके आलोक में, सरकार शिक्षण विधियों और पाठ्यक्रम का पुनर्मूल्यांकन करने का प्रस्ताव करती है। अधिगम अध्यापन सामग्री भी नई राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा के अनुसार ही तैयार की जाएगी।

एन.ए.एस. 2021 पश्चात के हस्तक्षेप विवरण इस प्रकार हैं—

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	एन.ए.एस. पश्चात की हस्तक्षेप योजना और गतिविधियों पर विचार-विमर्श करने के लिए राज्य पदाधिकारियों ने 'अधिगम के प्रतिफल हासिल करने' पर राष्ट्रीय कार्यशाला में भाग लिया	शिक्षा मंत्रालय और रा.शै.अ.प्र.प. 28–29 जुलाई, 2022
2.	डी.ई.ओ., बी.आर.सी. सी.आर.सी., शिक्षणशास्त्र विशेषज्ञों और कक्षा अध्यापकों द्वारा जिला स्तर पर रिपोर्ट के प्रसार और समझ को सुनिश्चित करने के लिए एन.ए.एस. पश्चात हस्तक्षेप पर क्षेत्रीय कार्यशाला	
	2.1 भाग लेने वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र— राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, दिल्ली, हिमाचल प्रदेश, चंडीगढ़, जम्मू और कश्मीर, लद्दाख	आर.आई.ई., अजमेर 14–15 जुलाई, 2022
	2.2 भाग लेने वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र— तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, पुदुच्चेरी, कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, लक्षद्वीप, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव, गोवा (13)	एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना 21–22 जुलाई, 2022
	2.3 भाग लेने वाले राज्य— ओडिशा, छत्तीसगढ़, पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, असम, अरुणाचल प्रदेश, नागालैंड, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, त्रिपुरा, सिक्किम (13)	एस.सी.ई.आर.टी., मिजोरम 25–26 जुलाई, 2022

3.	एन.ए.एस. पश्चात की हस्तक्षेप योजना और गतिविधियों पर राज्य/जिला/ब्लॉक स्तरीय कार्यशालाएँ	**राज्य/संघ राज्य क्षेत्र में एस.सी.ई.आर.टी./ डी.आई.ई.टी.**	**एन.ए.एस. पश्चात के हस्तक्षेप की दिनांक**
		अरुणाचल प्रदेश	18–19 अक्तूबर, 2022
		असम	19–20 अक्तूबर, 2022
		बिहार	19–21 दिसंबर, 2022
		चंडीगढ़	19 अक्तूबर, 2022
		छत्तीसगढ	9 दिसंबर, 2022
		दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव	12–16 सितंबर, 2022
		दिल्ली	4–5 अगस्त, 2022
		गोवा	16–17 जून और 20–21 जून 2022
		गुजरात	10 नवंबर, 2022
		हरियाणा	7 और 21 अक्तूबर, 2022
		हिमाचल प्रदेश	20 जुलाई और 7 सितंबर, 2022
		जम्मू और कश्मीर	24–25 अगस्त, 2022
		झारखंड	12–13 दिसंबर, 2022
		कर्नाटक	3–4, 11–12 नवंबर, 2022
		केरल	9 मार्च, 2023
		लद्दाख	1, 3 और 8 दिसंबर, 2022
		मध्य प्रदेश	6–7 अक्तूबर, 2022
		महाराष्ट्र	21–22 सितंबर, 2022
		मणिपुर	17–18 अगस्त, 2022
		मेघालय	11 अक्तूबर, 2022
		मिजोरम	3–4 अगस्त, 16 सितंबर, 11 नवंबर, 2022
		नागालैंड	4–11 नवंबर, 2022
		आंध्र प्रदेश	नवंबर, 2022
		ओडिशा	15–16 जुलाई और 20 अक्तूबर, 2022
		पंजाब	2 मार्च, 2023
		राजस्थान	17–18 अगस्त, 2022

		सिक्किम	2 दिसंबर, 2022
		तमिलनाडु	23 जून, 2022
		तेलंगाना	27–29 अक्तूबर, 1–3 नवंबर, 15–19 नवंबर, 2022
		त्रिपुरा	15–16 दिसंबर, 2022
		उत्तर प्रदेश	15–20 जनवरी, 2023
		उत्तराखंड	22 अगस्त, 2023
		पश्चिम बंगाल	23 मार्च, 2023

पोस्ट फाउंडेशनल लर्निंग स्टडी (एफ.एल.एस.) हस्तक्षेप कार्यशालाएँ

राष्ट्रीय, क्षेत्रीय, राज्य और जिला सहित विभिन्न स्तरों पर सीखने के प्रतिफलों में सुधार लाने और प्रभावी हस्तक्षेप विकसित करने के उद्देश्य से, पोस्ट फाउंडेशनल लर्निंग स्टडी (एफ.एल.एस.) हस्तक्षेप कार्यशालाएँ आयोजित की जा रही हैं। इन कार्यशालाओं में एफ.एल.एस. के निष्कर्षों पर विचार-विमर्श करने और शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए कार्यनीति तैयार करने के लिए शिक्षा अधिकारियों, नीति निर्माताओं और हितधारकों को एक साथ लाया जा रहा है।

एफ.एल.एस. के बाद का चरण केवल एफ.एल.एस. रिपोर्टों को सार्थक रूप से पढ़ने और उनके प्रसार पर केंद्रित नहीं है, बल्कि इससे बुनियादी शिक्षा को सुविधाजनक बनाने के लिए व्यापक स्तर पर एक व्यापक आधार संवाद भी उत्पन्न होता है, जिससे एफ.एल.एन. मिशन के लक्ष्यों को आगे बढ़ाया जा सके, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कक्षा 3 के अंत तक सभी बच्चे वर्ष 2026–27 तक मूलभूत शिक्षण मानकों को प्राप्त कर लें।

एफ.एल.एस. 2022 के पश्चात हस्तक्षेप का विवरण इस प्रकार हैं—

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	मूलभूत साक्षरता डोमेन के लिए बेंचमार्किंग और नीति लिंकिंग कार्यशाला—समझ के साथ मौखिक पढ़ने का प्रवाह (ओ.आर.एफ.)	
	1.1 हिंदी, गुजराती, पंजाबी, उर्दू भाषा के प्रभुत्व वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	आर.आई.ई., अजमेर 21–24 जून, 2022
	1.2 अंग्रेजी, कोंकणी, मराठी, उड़िया भाषा के प्रभुत्व वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	आर.आई.ई., भोपाल 28 जून से 1 जुलाई, 2022
	1.3 कन्नड़, मलयालम, तमिल, तेलुगु भाषा के प्रभुत्व वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	आर.आई.ई., मैसूरु 28 जून से 1 जुलाई, 2022
	1.4 असमिया, बोडो, गारो, खासी, बंगाली, मणिपुरी, मिजो, नेपाली भाषा के प्रभुत्व वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र	एस.सी.ई.आर.टी., अगरतला 4–7 जुलाई, 2022
2.	मूलभूत सांख्यिकता प्रक्षेत्र के लिए बेंचमार्किंग और पॉलिसी लिंकिंग कार्यशाला में विभिन्न राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों के अध्यापकों और संख्यात्मकता विशेषज्ञों ने भाग लिया, जिसका उद्देश्य बुनियादी सांख्यिकता में छात्रों के प्रदर्शन को बेंचमार्क करना है।	शिक्षा मंत्रालय और रा.शै.अ.प्र.प. 22–26 अगस्त, 2022

3.	एफ.एल.एस. 2022 की रिपोर्ट को अंतिम रूप देना और जारी करना	शिक्षा मंत्रालय और रा.शै.अ.प्र.प. 6 सितंबर, 2022
4.	क्षेत्रीय स्तर पर एफ.एल.एस. पश्चात हस्तक्षेप कार्यशाला	शिक्षा मंत्रालय, रा.शै.अ.प्र.प. और यूनिसेफ 17–18 नवंबर, 2022
5.	जिला स्तर पर एफ.एल.एस. पश्चात हस्तक्षेप कार्यशाला	रा.शै.अ.प्र.प., एस.सी.ई.आर.टी. और यूनिसेफ **स्थान और दिनांक**
		एस.सी.ई.आर.टी., पुणे, महाराष्ट्र 21–22 सितंबर, 2022
		लद्दाख स्वायत्त पहाड़ी विकास परिषद् कारगिल, लद्दाख 5 दिसंबर, 2022
		एस.सी.ई.आर.टी., झारखंड 12–13 दिसंबर, 2022
		एस.सी.ई.आर.टी., कश्मीर 30 जनवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., जम्मू, जम्मू एवं कश्मीर, 2 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., लक्षद्वीप 4 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., विजयवाड़ा, आंध्र प्रदेश 8 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., गांधीनगर, गुजरात और दादरा एवं दमन 9 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., देहरादून, उत्तराखंड 10 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., इंफाल, मणिपुर 10 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना 13 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., बेंगलुरू, कर्नाटक 13 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., सोलन, हिमाचल प्रदेश 13 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर, छत्तीसगढ़ 14 फरवरी, 2023
		एस.आई.ई., पुदुच्चेरी 15 फरवरी, 2023

		एस.सी.ई.आर.टी., चंडीगढ़ 16 फरवरी, 2023
		डी.आई.ई.टी., कोयंबटूर, तमिलनाडु 17 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., गुरुग्राम, हरियाणा 17 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., लखनऊ, उत्तर प्रदेश 22 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., उदयपुर, राजस्थान 27 फरवरी, 2023 और 4 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली नवंबर–दिसंबर, 2022
		एस.सी.ई.आर.टी., पटना, बिहार 19–21 दिसंबर, 2022; 9–11 जनवरी, 2023; 17–19 जनवरी, 2023; 30 जनवरी, 2023 से 2 फरवरी, 2023; 06–08 फरवरी, 2023 और 13–15 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., भोपाल, मध्य प्रदेश 1–2 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., गुवाहाटी, असम 2 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., मोहाली, पंजाब 2–3 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम 4 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., तिरुवनंतपुरम, केरल 9–10 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., भुवनेश्वर, ओडिशा 9–10 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., अगरतला, त्रिपुरा 13 मार्च, 2023
		एस.पी.डी., कोलकाता, पश्चिम बंगाल 24–25 मार्च, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., कोहिमा, नागालैंड 20–24 मार्च, 2023

परीक्षा सुधारों का कार्यान्वयन

'माध्यमिक स्तर पर मूल्यांकन अभ्यासों के परिवर्तन' पर तीन-तीन दिनों की तीन क्षेत्रीय क्षमता निर्माण कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। इन कार्यशालाओं का फोकस माध्यमिक स्तर पर उच्च स्तरीय सोच कौशल के आधार पर परीक्षण आइटम विकसित करने में प्रश्नपत्र बनाने वालों में क्षमता निर्माण को बढ़ावा देना था। कार्यशालाओं के

दौरान विद्यालयी शिक्षा के विभिन्न बोर्डों के प्रश्नपत्र बनाने वालों को उच्च क्रम सोच कौशल की अवधारणा को समझने, उच्च क्रम सोच कौशल के आधार पर परीक्षण आइटम विकसित करने और उच्च क्रम सोच परीक्षण आइटम को शामिल करने के पैरामीटर पर पिछले वर्ष के परीक्षण पत्रों की समीक्षा करने की ओर उन्मुख किया गया।

इन कार्यशालाओं के दौरान सैद्धांतिक रूपरेखा, समूह-कार्य और समूह प्रस्तुतियों पर उचित जोर दिया गया। साथियों के अनुभवों से अधिगम के पर्याप्त अवसर प्रदान किए गए। आमने-सामने आयोजित की गई इन कार्यशालाओं में, स्कूली शिक्षा के प्रत्येक बोर्ड से पाँच से लेकर 10 वरिष्ठ संकाय सदस्यों ने कार्यशाला में भाग लिया, जिनके पास भाषाओं (अंग्रेजी और क्षेत्रीय भाषा), गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान (एक-एक) के विषयों में कक्षा 10 की सार्वजनिक परीक्षा के लिए परीक्षण आइटम के विकास में विशेषज्ञता है। विभिन्न सामग्री क्षेत्रों (भाषाओं, गणित, विज्ञान और सामाजिक विज्ञान) से संसाधन व्यक्तियों को एन.आई.ई. विभागों और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों से लिया गया था। यह परिकल्पना की गई थी कि इन प्रतिभागियों को राज्यों में मास्टर प्रशिक्षु माना जाएगा, जो राज्यों में अन्य प्रश्नपत्र बनाने वालों को प्रशिक्षित करेंगे। भविष्य में इन सेवाओं का उपयोग राष्ट्रीय संसाधन पूल के लिए किया जाएगा।

जनसंख्या शिक्षा पर संसाधन व्यक्तियों के लिए अंतरक्रियात्मक कार्यशाला

ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के साथ डाटा विश्लेषण पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम 12–16 दिसंबर, 2022 तक ऑनलाइन मोड में और 13–17 फरवरी 2023 तक आमने-सामने की विधि में आयोजित किया गया था। ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर जे.ए.एम.ओ.वी.आई. (सांख्यिकी सॉफ्टवेयर) का उपयोग प्रदर्शन उद्देश्यों के लिए किया गया था। पुणे विश्वविद्यालय, अमरावती विश्वविद्यालय, मुंबई विश्वविद्यालय, एम.ए.एफ.एस.यू. विश्वविद्यालय और एम.एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिष्ठत बाहरी विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए। रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों द्वारा ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके सांख्यिकी और डाटा विश्लेषण से संबंधित विभिन्न विषयों पर व्याख्यान आयोजित किए गए। प्रतिभागी ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर का उपयोग करके सांख्यिकीय डाटा विश्लेषण करने में सक्षम हैं। कार्यक्रम के दौरान, सभी प्रतिभागियों ने संसाधन व्यक्तियों के साथ व्यावहारिक कार्य किए और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	राज्य और संघ राज्य क्षेत्र	स्थान और दिनांक
1.	परीक्षा सुधारों का संचालन	कर्नाटक, केरल, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना	आर.आई.ई., मैसूरु 13–15 फरवरी, 2023
		पंजाब, हिमाचल प्रदेश, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर, गुजरात, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गोवा	आर.आई.ई., अजमेर 9–11 मार्च, 2023
		जम्मू और कश्मीर, नागालैंड, मिजोरम, मेघालय, त्रिपुरा और सिक्किम	एस.सी.ई.आर.टी., जम्मू और कश्मीर 15–17 मार्च, 2023
2.	ओपन सोर्स सॉफ्टवेयर के साथ डाटा विश्लेषण में प्रशिक्षण कार्यक्रम (ऑनलाइन)		12–16 दिसंबर, 2022 13–17 फरवरी, 2023

योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

शिक्षा परियोजना नियोजन, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में डी.आई.ई.टी. संकाय का प्रशिक्षण

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम परियोजना नियोजन के क्षेत्र में डी.आई.ई.टी. संकाय की क्षमता निर्माण के उद्देश्यों के साथ आयोजित किया गया। कार्यक्रमों के उद्देश्यों के अनुसार परियोजनाओं को लागू करने के लिए विकासशील कार्यनीतियों में इनपुट प्रदान करने और परियोजना मूल्यांकन तकनीकों के साथ डी.आई.ई.टी. संकाय को परिचित कराने के उद्देश्य से आयोजित किया गया। शैक्षिक परियोजना योजना, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन नामक प्रशिक्षण पैकेज को अद्यतन करने के लिए 1–3 फरवरी, 2023 तक एन.आई.ई., नई दिल्ली में तीन दिवसीय कार्यशाला आयोजित की गई थी। प्रशिक्षण कार्यक्रम 11–15 मार्च, 2023 तक एन.आई.ई., नई दिल्ली में आयोजित किया गया था। पूर्वोत्तर राज्यों, जैसे— मिजोरम, असम, अरुणाचल प्रदेश और सिक्किम के अनुसूचित जनजाति बहुल क्षेत्रों में कार्यरत डी.आई.ई.टी. संकाय ने कार्यक्रम में भाग लिया।

कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
शिक्षा परियोजना नियोजन, कार्यान्वयन, निगरानी और मूल्यांकन में डी.आई.ई.टी. संकाय का प्रशिक्षण	एन.आई.ई., नई दिल्ली 11–15 मार्च, 2023

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

सी.आई.ई.टी. ने प्रशिक्षण के अपने अधिदेश के तहत, सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के राज्य संसाधन समूहों (एस.आर.जी.) को ई-सामग्री के विकास, गुणवत्तापूर्ण ई-सामग्री विकसित करने की प्रक्रिया, ई-सामग्री के क्यूरेशन, ई-सामग्री की लाइसेंसिंग और इसके बारे में परिचित कराने के लिए आभासी प्रशिक्षण कार्यक्रमों की एक शृंखला आयोजित की। कक्षा में समेकन से डिजिटल विभाजन को दूर करना संभव हुआ। अभिविन्यास कार्यक्रम और अन्य प्रशिक्षण कार्यक्रमों का विवरण नीचे दी गई तालिका में दिया गया है—

2022–23 के दौरान आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	राज्य और संघ राज्य क्षेत्र	दिनांक
1.	ई-सामग्री विकास चरण 1 पर प्रशिक्षण	बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, गोवा महाराष्ट्र, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, दादरा और नगर हवेली तथा दमन और दीव	14–18 नवंबर, 2022
2.	चरण 2	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, कर्नाटक, अंडमान और पुदुच्चेरी और लद्दाख और निकोबार	21–25 नवंबर, 2022
3.	चरण 3	असम, अरुणाचल प्रदेश, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, सिक्किम, त्रिपुरा, केरल और लक्षद्वीप	5–09 दिसंबर, 2022
4.	चरण 4	गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, पंजाब, राजस्थान, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली, चंडीगढ़ तथा जम्मू और कश्मीर	12–16 दिसंबर, 2022
5.	ई-सामग्री विकास पर प्रशिक्षण	असम के अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षक और डी.आई.ई.टी. संकाय सदस्य	21–24 मार्च, 2023

6.	पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों के चरण 1 के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के चैनल समन्वयकों और विषय विशेषज्ञों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	चंडीगढ़, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, जम्मू और कश्मीर तथा पंजाब	17–19 अगस्त, 2022
7.	चरण 2	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, राजस्थान, बिहार, दिल्ली, झारखंड और लक्षद्वीप	12–14 अक्तूबर, 2022
8.	चरण 3	अंडमान और निकोबार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात और महाराष्ट्र	19–21 अक्तूबर, 2022
9.	चरण 4	मध्य प्रदेश, केरल, कर्नाटक, दादरा और नगर हवेली, दमन और दीव, तेलंगाना, पश्चिम बंगाल, लद्दाख और आंध्र प्रदेश	1–3 फरवरी, 2023
10	चरण 5	अरुणाचल प्रदेश, असम, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और सिक्किम	8–10 फरवरी, 2023
11.	चरण 6	सी.बी.एस.ई., के.वी.एस., एन.वी.एस., एन.आई.ओ.एस.	17–19 अप्रैल, 2023
12.	चरण 7	सी.बी.एस.ई., पुदुच्चेरी, त्रिपुरा	24–27 अप्रैल, 2023
13.	'सामाजिक विज्ञान के लिए डिजिटल सामग्री का विकास' पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	ऑनलाइन पाठ्यक्रम 'सामाजिक विज्ञान में पाठ्यपुस्तकों का विकास' के प्रतिभागी	6–8 फरवरी, 2023
14.	ई-सामग्री के विकास पर अरुणाचल प्रदेश के टी.जी.टी. (गणित) के लिए प्रशिक्षण	माध्यमिक स्तर पर गणित अध्यापक/ व्याख्याता	12–17 सितंबर, 2022
15.	डिजिटल संसाधनों के विकास पर झारखंड के मास्टर प्रशिक्षुओं के लिए प्रशिक्षण	झारखंड के डी.आई.ई.टी. और जे.एस. सी.ई.आर.टी. के प्रतिभागी	19–23 सितंबर, 2022
16.	लद्दाख के डी.आई.ई.टी. संकाय के लिए डिजिटल संसाधनों के विकास पर प्रशिक्षण	लद्दाख से डी.आई.ई.टी. के मास्टर प्रशिक्षु और संकाय सदस्य	17–21 अक्तूबर, 2022
17.	दीक्षा पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	चंडीगढ़ से प्रशिक्षु अध्यापक और अध्यापक प्रशिक्षक	26–30 सितंबर, 2022
18.	असम के अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए दीक्षा के तहत ई-सामग्री विकास पर क्षमता निर्माण प्रशिक्षण	असम के मास्टर ट्रेनर	21–24 मार्च, 2023

19.	‘ई-सामग्री और ऑनलाइन पाठ्यक्रमों का विकास और प्रसार’ पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	नागालैंड के एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के अध्यापक प्रशिक्षक	27–28 मार्च, 2023
20.	ऑनलाइन पाठ्यक्रम के विकास पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के राज्य संसाधन समूहों (एस.आर.जी.) और स्वायत्त संगठन के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण	राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों/स्वायत्त संगठन के डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. से अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षक और संकाय सदस्य	27 फरवरी से 3 मार्च, 2023
21.	राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और स्वायत्त संगठनों के मास्टर प्रशिक्षकों के लिए साइबर सुरक्षा और सुरक्षा पर ऑनलाइन प्रशिक्षण— चरण 1 (अंग्रेजी)	अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षक और संकाय सदस्य	8–9 दिसंबर, 2022
22.	राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और स्वायत्त संगठनों के मास्टर प्रशिक्षुओं के लिए साइबर सुरक्षा और सुरक्षा पर ऑनलाइन प्रशिक्षण— चरण 2 (हिंदी)	अध्यापक, अध्यापक प्रशिक्षक और संकाय सदस्य	12–13 दिसंबर, 2022
23.	साइबर अंबेसडर प्रशिक्षण	राष्ट्रीय आई.सी.टी. पुरस्कार विजेता, राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के संसाधन व्यक्ति, डी.एम.एस. अध्यापक, आर.आई.ई., एन.आई.ई., पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और सी.आई.ई.टी. के संकाय सदस्य	22 अगस्त, 2022
24.	मुक्त शैक्षिक संसाधनों (ओ.ई.आर.) और लाइसेंस पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूली अध्यापक, डी.एल.एड./बी.एड./एम.एड. के छात्र और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र	25–29 अप्रैल, 2022
25.	विशिष्ट विषयों के शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन के लिए डिजिटल उपकरणों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल अध्यापक, डी.एल.एड./बी.एड./एम.एड. के छात्र और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र	23–27 मई, 2022
26.	खेल आधारित अधिगम पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल अध्यापक, डी.एल.एड./बी.एड./एम.एड. के छात्र और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र	20–24 जून, 2022

27.	डिजिटल शिक्षाशास्त्र पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल अध्यापक और डी.एल. एड./बी.एड./एम.एड. के छात्र	25–29 जुलाई, 2022
28.	शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन के लिए मल्टीमीडिया संसाधनों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल प्रशासक, डी.एल.एड/बी.एड/एम.एड के छात्र, स्कूल के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल अध्यापक और माता-पिता	22–26 अगस्त, 2022
29.	शिक्षण, अधिगम और मूल्यांकन के लिए वर्चुअल लैब पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल अध्यापक और डी.एल. एड./बी.एड./एम.एड. के छात्र	26–30 सितंबर, 2022
30.	आइए, साइबर योद्धा बनें विषय पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक, अनुसंधान विद्यार्थी और माता-पिता	25–28 अक्तूबर, 2022
31.	सुलभ डिजिटल संसाधनों और सहायक प्रौद्योगिकियों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूली छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूली अध्यापक, डी.एल.एड./ बी.एड./एम.एड. के छात्र और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों के छात्र	21–25 नवंबर, 2022
32	शिक्षण–अधिगम के लिए डिजिटल संसाधन के रूप में एनीमेशन पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल अध्यापक और माता-पिता	26–30 दिसंबर, 2022
33.	शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को बढ़ाने के लिए अधिगम प्रबंधन प्रणाली (एल.एम.एस.) पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक, डी.एल. एड./बी.एड./एम.एड. के छात्र, माता-पिता, स्कूल प्रशिक्षक, स्कूल के छात्र और अनुसंधान विद्यार्थी	23–27 जनवरी, 2023
34.	मीडिया साक्षरता पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूली छात्र, अनुसंधान विद्यार्थी, उच्च शिक्षा संकाय, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूली अध्यापक, डी.एल.एड./ बी.एड./एम.एड. के छात्र और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों के छात्र	20–24 फरवरी, 2023
35.	ज्ञान साझा करने के लिए डिजिटल मूलसंरचना पर ऑनलाइन प्रशिक्षण—दीक्षा	स्कूल अध्यापक, स्कूल प्रशासक, अध्यापक प्रशिक्षक, अनुसंधान विद्यार्थी, स्कूल के छात्र, डी.एल.एड./बी.एड/एम.एड. के छात्र, माता-पिता, उच्च शिक्षा संकाय और अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रमों के छात्र	27–31 मार्च, 2023

36.	साइबर स्पेस में मानसिक और भावनात्मक कल्याण पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	अप्रैल, 2022
37.	सोशल इंजीनियरिंग हमलों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	मई, 2022
38.	साइबर स्पेस में वित्तीय सुरक्षा पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	जून, 2022
39.	साइबर दुनिया में सुरक्षित रहने पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	जुलाई, 2022
40.	सुरक्षित डिजिटल गेमिंग पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	अगस्त, 2022
41.	सुरक्षित और जिम्मेदार डिजिटल नागरिक पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	सितंबर, 2022
42.	साइबर सुरक्षा के तकनीकी पहलुओं पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	अक्तूबर, 2022
43.	सोशल मीडिया पर ऑनलाइन प्रशिक्षण— सुरक्षा और कल्याण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	नवंबर, 2022
44.	साइबर खतरों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	दिसंबर, 2022
45.	नई उभरती प्रौद्योगिकियों पर ऑनलाइन प्रशिक्षण— खतरे और अवसर	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	जनवरी, 2023

46.	साइबर अपराधों से निपटने पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	फरवरी, 2023
47.	उभरते डिजिटल क्षेत्र में नैतिकता पर ऑनलाइन प्रशिक्षण	स्कूल के छात्र, स्कूल अध्यापक, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम के छात्र, अध्यापक प्रशिक्षक, स्कूल प्रशासक और उच्च शिक्षा संकाय सदस्य	मार्च, 2023

शिक्षापर्व के भाग के रूप में 'स्कूली शिक्षा में सकारात्मक डिजिटल पदचिह्न' पर एक पैनल चर्चा 9 सितंबर, 2022 को आयोजित की गई थी और लगभग 533 प्रतिभागियों को प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। 7 फरवरी, 2023 को सभी संकाय सदस्यों और परियोजना कर्मचारियों के लिए 'साइबरवर्ल्ड में सुरक्षित रहें' विषय पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई थी। इसके बाद आई.एस.ई.ए., सी.डी.ए.सी., एम.ई.आई.टी.वाई. के सहयोग से कई प्रतियोगिताओं का आयोजन करके G20 साइबर जागरूकता अभियान चलाया गया। साइबर पीस फाउंडेशन के सहयोग से ई-रक्षा प्रतियोगिता का चौथा संस्करण आयोजित किया गया था। साइबर जागृति दिवस के भाग के रूप में, आई.एस.ई.ए.-सी.डी.ए.सी., एम.ई.आई.टी.वाई. के सहयोग से 12 प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), अजमेर

आई.सी.टी. सक्षम अधिगम, एम.ओ.ओ.सी. के विकास, व्यावसायिक शिक्षा को मजबूत करने, अनुभवात्मक अधिगम, अनुसंधान पद्धति और डाटा विश्लेषण और कृत्रिम बुद्धिमत्ता पर विभिन्न हितधारकों के लिए छह प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रशिक्षित व्यक्तियों को संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए राज्य संसाधन समूह या मास्टर प्रशिक्षकों के रूप में उपयोग किया जा रहा है।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	एम.ओ.ओ.सी. के विकास पर उत्तरी क्षेत्र के एस.आर.जी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 9–13 जनवरी, 2023
		आर.आई.ई., अजमेर 13–15 मार्च, 2023
2.	व्यावसायिक शिक्षा को मजबूत करने में प्रमुख पदाधिकारियों और एस.आर.जी. का अभिविन्यास कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 16–20 जनवरी, 2023
3.	माध्यमिक स्तर पर आई.सी.टी. समेकित शिक्षणशास्त्र के माध्यम से सीखने के प्रतिफल प्राप्त करने पर उत्तरी क्षेत्र के एस.आर.जी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 5–9 दिसंबर, 2022
4.	माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में अनुभवात्मक शिक्षण कार्यनीतियों में एस.आर.जी. का क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., अजमेर 12–16 दिसंबर, 2022

5.	राजस्थान राज्य के लिए अनुसंधान पद्धति और डाटा विश्लेषण पर डी.आई.ई.टी. के संकाय के लिए क्षमता निर्माण— संघ राज्य क्षेत्र जम्मू और कश्मीर तथा लद्दाख के लिए	आर.आई.ई., अजमेर 6–10 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., कश्मीर प्रभाग 27 फरवरी से 03 मार्च, 2023
6.	आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर एस.आर.जी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	आर.आई.ई., अजमेर 30 जनवरी से 03 फरवरी, 2023

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भोपाल

एम.ए.पी. पठन कौशल पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण और महाराष्ट्र के माध्यमिक विद्यालय स्तर के अध्यापकों के लिए युवा संसद का संचालन

इस कार्यक्रम का उद्देश्य के.आर.पी. को युवा संसद को प्रभावी तरीके से संचालित करने के लिए प्रशिक्षित करना, मानचित्र पढ़ने के कौशल, मानचित्र प्रक्षेपण और जी.आई.एस. पर के.आर.पी. को प्रशिक्षित करना और राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों को प्रशिक्षण रिपोर्ट प्रसारित करना है। प्रशिक्षण कार्यक्रम 23–27 जनवरी, 2023 के बीच आर.आई.ई., भोपाल में आयोजित किया गया था। गोवा और महाराष्ट्र राज्य से कुल 34 प्रमुख संसाधन व्यक्तियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया। इस कार्यक्रम के परिणामों में शामिल थे— (क) के.आर.पी. को मानचित्रों को डिजिटल बनाने के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी (क्यू.जी.आई.एस.) सॉफ्टवेयर पर व्यावहारिक प्रशिक्षण दिया गया था, (ख) के.आर.पी. को स्कूल में युवा संसद का संचालन करने के तरीके पर प्रशिक्षित किया गया था, और (ग) के.आर.पी. स्कूलों में युवा संसद आयोजित करने के लिए भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी (क्यू.जी.आई.एस.) सॉफ्टवेयर और कार्यनीतियों को संभालने में सक्षम थे। जी.सी.ई.डी. प्रशिक्षण में एन.सी.एफ. 2005 और यूनेस्को द्वारा परिकल्पित क्षेत्रों पर सामग्री शामिल की गई। इसने रा.शै.अ.प्र.प. की पाठ्यपुस्तकों को ध्यान में रखते हुए परिवर्तनकारी शिक्षणशास्त्र का भी सुझाव दिया। वैश्विक नागरिकता शिक्षा प्रशिक्षण का प्राथमिक उद्देश्य अध्यापकों को सामान्य मानवता से संबंधित होने की भावना विकसित करने के लिए प्रशिक्षित करना था।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और तिथि
1.	एन.ई.पी. 2020 (चरण 1) के संदर्भ में योग और शारीरिक शिक्षा पर पश्चिमी क्षेत्र के के.आर.पी. का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 7–11 नवंबर, 2022
2.	एन.ई.पी. 2020 (चरण 2) के संदर्भ में योग और शारीरिक शिक्षा पर पश्चिमी क्षेत्र के के.आर.पी. का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 30 फरवरी से 3 मार्च, 2023
3.	मानचित्र पढ़ने के कौशल पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण और महाराष्ट्र और गोवा के माध्यमिक अध्यापकों के लिए युवा संसद का संचालन करना	आर.आई.ई., भोपाल 23–27 जनवरी, 2023
4.	21वीं सदी के लिए वैश्विक नागरिकता शिक्षा पर के.आर.पी. का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., भोपाल 14–18 नवंबर, 2022
5.	माध्यमिक विज्ञान किट के उपयोग पर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र के माध्यमिक विद्यालय विज्ञान अध्यापकों का उन्मुखीकरण	आर.आई.ई., भोपाल 19–23 नवंबर, 2022

6.	छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्य के के.आर.पी. के लिए रसायन विज्ञान में एच.ओ.टी. प्रश्नों के विकास पर प्रशिक्षण (चरण 2)	आर.आई.ई., भोपाल 12–16 दिसंबर, 2022
7.	छत्तीसगढ़ और महाराष्ट्र राज्य के के.आर.पी. के लिए भौतिकी में एच.ओ.टी. प्रश्नों के विकास पर प्रशिक्षण (चरण 1)	आर.आई.ई., भोपाल 26–30 सितंबर, 2022
8.	मिडिल स्कूल स्तर पर प्रतिभाशाली छात्रों की प्रतिभा के पोषण और संवर्धन पर प्रमुख संसाधन व्यक्तियों का क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., भोपाल 20–24 फरवरी, 2023
9.	आर.आई.ई., भोपाल के सेवा-पूर्व प्रशिक्षुओं के लिए थिएटर कार्यशाला और प्रदर्शन (चरण 1)	आर.आई.ई., भोपाल 28 मई से 6 जून, 2022
10.	आर.आई.ई., भोपाल के सेवा-पूर्व प्रशिक्षु के लिए थिएटर कार्यशाला और प्रदर्शन (चरण 2)	आर.आई.ई., भोपाल 23 जनवरी से 1 फरवरी, 2023
11.	एन.ई.पी. 2020 के संबंध में मूल्यांकन कार्यनीतियों और प्रक्रियाओं पर गोवा के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण (23.44 के साथ विलय)	एस.सी.ई.आर.टी., गोवा 12–16 दिसंबर, 2022
12.	मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (दूरस्थ/ऑनलाइन और आमने-सामने के माध्यम से)	अप्रैल, 2022 से मार्च, 2023
13.	माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफलों के आधार पर विभिन्न योग्यता स्तर के प्रश्नों को डिजाइन करने में अध्यापक प्रशिक्षकों का उन्मुखीकरण (एन.पी.ई. 2020 के अनुसार)	21–25 नवंबर, 2022

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल

स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण के सुदृढ़ीकरण के लिए एन.ई.पी 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम

संस्थान ने अल्पसंख्यक संस्थानों के लिए एक कार्यक्रम समेत उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर राज्यों, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पुदुच्चेरी, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा राज्यों के लिए नौ अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए। कुल मिलाकर, 532 प्रमुख पदाधिकारियों ने इन कार्यक्रमों में भाग लिया और लाभान्वित हुए। कोविड-19 दिशानिर्देशों के कारण ये कार्यक्रम वर्चुअल विधि द्वारा आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों की रिपोर्ट तैयार कर ली गई है।

संस्थान द्वारा वर्ष 2022–23 के दौरान वर्चुअल विधि से स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण (वी.ई.टी.) को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रमुख पदाधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रमों की सूची नीचे दी गई है—

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 28–30 जून, 2022

2.	जम्मू-कश्मीर, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, बिहार और नागालैंड के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 30 मई से 3 जून, 2022
3.	पंजाब, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 30 मई से 3 जून, 2022
4.	असम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 12–14 जुलाई, 2022
5.	गुजरात, दमन और दीव तथा दादर नगर हवेली के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	डी.ओ.ई., अहमदाबाद 28–30 सितंबर, 2022
6.	उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड और दिल्ली के स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों का अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 10–12 अक्तूबर, 2022
7.	स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण को सशक्त बनाने के लिए एन.ई.पी. 2020 पर प्रमुख पदाधिकारियों के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 4 –6 जनवरी, 2023

व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों के विकास के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान ने उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, बिहार, पश्चिम बंगाल, पूर्वोत्तर राज्यों, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, कर्नाटक, केरल, तमिलनाडु, पुदुच्चेरी, आंध्र प्रदेश, तेलंगाना, ओडिशा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह, जम्मू और कश्मीर और लक्षद्वीप राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों के विकास के लिए 10 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए। कुल मिलाकर, 777 अध्यापकों ने इन कार्यक्रमों में भाग

नागालैंड के प्रमुख पदाधिकारियों और अध्यापकों के लिए व्यावसायिक शिक्षा पूर्व के कार्यान्वयन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

लिया और लाभान्वित हुए। अधिकांश कार्यक्रम पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल में आयोजित किए गए और एक कार्यक्रम नागालैंड में आयोजित किया गया। इन कार्यक्रमों की रिपोर्ट तैयार कर ली गई है।

संस्थान द्वारा वर्ष 2022–23 के दौरान वर्चुअल विधि से व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र और रोजगार कौशल पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए आयोजित अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची नीचे दी गई है—

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	जम्मू-कश्मीर, अंडमान-निकोबार द्वीप समूह, बिहार और नागालैंड राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 06–10 जून 2022
2.	पंजाब, हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 06–10 जून 2022,
3.	आंध्र प्रदेश, तेलंगाना और कर्नाटक के व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 11–15 जुलाई, 2022
4.	कक्षा 6 से 8 तक व्यावसायिक शिक्षा-पूर्व के कार्यान्वयन पर पूर्वोत्तर राज्यों के अध्यापकों का प्रशिक्षण (ऑनलाइन मोड)	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 1–5 अगस्त, 2022,
5.	असम, त्रिपुरा, अरुणाचल प्रदेश और मेघालय राज्यों के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 19–23 सितंबर, 2022
6.	गुजरात, दमन और दीव तथा दादरा और नगर हवेली के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 14–18 नवंबर, 2022,
7.	व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 21–25 नवंबर, 2022,
8.	विद्यार्थी संबल प्रणाली (विद्यार्थी सहायता प्रणाली) पर कौशल मित्र/अल्पसंख्यक वर्ग के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 09–13 जनवरी, 2023,
9.	गोवा, केरल, मणिपुर, मिजोरम के लिए व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर मास्टर प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (ऑनलाइन मोड)	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 16–20 जनवरी, 2023,
10.	नागालैंड के प्रमुख पदाधिकारियों और अध्यापकों के लिए व्यावसायिक शिक्षा-पूर्व के कार्यान्वयन पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	ए.आई.डी.ए. डॉन बॉस्को स्कूल परिसर, सर्कुलर रोड, दीमापुर 7–9 मार्च, 2023

समग्र शिक्षा के तहत कार्यान्वित विभिन्न व्यावसायिक विषयों (कार्यभूमिकाओं) पर अध्यापक प्रशिक्षण

संस्थान में कार्यभूमिकाओं ऑटोमोबाइल टेक्नोलॉजी, एनिमेटर और टेक्सचरिंग आर्टिस्ट, अपरेल और होम फर्निशिंग, रिटेल, स्वास्थ्य देखभाल के अध्यापकों के लिए 6 प्रशिक्षण कार्यक्रम और कृषि कार्यक्षेत्र की कार्यभूमिका के लिए दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। इन कार्यक्रमों में कुल 187 अध्यापकों ने भाग लिया और विभिन्न कार्यक्षेत्रों की संबंधित कार्यभूमिका के क्षेत्र में नवीनतम तकनीक और रुझानों से परिचित हुए। ये कार्यक्रम पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल में संपर्क विधि से आयोजित किए गए थे। कार्यक्रमों की रिपोर्ट तैयार कर ली गई है।

मनीषा सेंतिया, आई.ए.एस., अपर परियोजना निदेशक, सर्व शिक्षा अभियान ने मध्य प्रदेश, भोपाल में राज्यों के लिए समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय परामर्श बैठक-सह-कार्यशाला के प्रतिभागियों को संबोधित किया

राज्यों के लिए समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन हेतु राष्ट्रीय परामर्श बैठक-सह-कार्यशाला में राज्य के प्रतिनिधि और विभिन्न संगठनों के अधिकारी

वर्ष 2022–23 के दौरान संस्थान द्वारा वर्चुअल विधि से आयोजित विभिन्न कार्यभूमिकाओं पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रमों की सूची नीचे दी गई है—

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	एनिमेटर और टेक्सचरिंग आर्टिस्ट की कार्यभूमिकाओं पर प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 23–27 मई, 2022

2.	समग्र शिक्षा के तहत कार्यान्वित प्रौद्योगिकी ऑटोमोबाइल पर अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 22–26 अगस्त, 2022
3.	अपेरल मेड अप्स और होम फर्निशिंग कार्यक्षेत्र के तहत कार्यभूमिकाओं के लिए व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 22–26 अगस्त, 2022
4.	रिटेल क्षेत्र के अंतर्गत कार्यभूमिकओं के लिए व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 17–21 अक्तूबर, 2022
5.	स्वास्थ्य देखभाल (जी.डी.ए.) के तहत कार्यभूमिकाओं के लिए व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण और व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 9–16 जनवरी, 2023
6.	कृषि क्षेत्र में पुष्प वैज्ञानिक (ओ.सी.) की कार्यभूमिकाओं के लिए व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 16–20 जनवरी, 2023
7.	कृषि क्षेत्र के अंतर्गत सूक्ष्म सिंचाई तकनीशियन की कार्यभूमिकाओं के लिए व्यावसायिक अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 16–20 फरवरी, 2023

व्यावसायिक शिक्षा के लिए रोजगार कौशल पर अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

व्यावसायिक शिक्षा के लिए रोजगार कौशल पर अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम पूर्वोत्तर क्षेत्र सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों के लिए शुरू किया गया था। वर्ष के दौरान संस्थान में चार क्षमता निर्माण कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रत्येक कार्यक्रम की अलग-अलग रिपोर्ट तैयार की गई है।

वर्ष 2022–23 के दौरान संस्थान द्वारा व्यावसायिक शिक्षा के लिए रोजगार कौशल पर अध्यापकों के लिए आयोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रम की सूची नीचे दी गई है—

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	व्यावसायिक शिक्षा में रोजगार कौशलों पर अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 26–30 सितंबर, 2022
2.	पूर्वोत्तर क्षेत्रों के लिए व्यावसायिक शिक्षा के लिए रोजगार कौशलों पर अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	डॉन बॉस्को इंस्टीट्यूट गुवाहाटी, असम 16–20 नवंबर, 2022
3.	व्यावसायिक शिक्षा के लिए रोजगार कौशल पर अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम (मध्य क्षेत्र के लिए)	पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल 5–9 दिसंबर, 2022,
4.	पश्चिमी क्षेत्र के लिए व्यावसायिक शिक्षा के लिए रोजगार कौशल पर अध्यापकों के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	समग्र शिक्षा, जूनागढ़ 22–24 फरवरी, 2023

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), भुवनेश्वर

ई-सामग्री के विकास पर बिहार, झारखंड और ओडिशा के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण

इस कार्यक्रम का उद्देश्य प्रतिभागियों के बीच स्क्रिप्ट डिजाइन करने और उच्च गुणवत्ता वाली ई-सामग्री तैयार करने में बुनियादी कौशल विकसित करना था। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित ई-सामग्री विकास दिशानिर्देशों का उपयोग अध्यापकों को प्रशिक्षित करने के लिए एक संदर्भ के रूप में किया गया था। क्षमता निर्माण कार्यक्रम

12–16 दिसंबर, 2022 तक आर.आई.ई., भुवनेश्वर में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में बिहार, ओडिशा और झारखंड से कुल 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया। कार्यक्रम के दौरान, प्रतिभागियों को सी.आई.ई.टी. और आई.सी.टी. स्टूडियो द्वारा विकसित सर्वोत्तम ई-सामग्री से अवगत कराया गया, जिसके बाद स्क्रिप्ट विकास की प्रक्रिया, उत्पादन के तौर-तरीके, समीक्षा प्रक्रिया आदि पर चर्चा हुई। सभी प्रतिभागियों ने प्रशिक्षण कार्यक्रम की गुणवत्ता पर संतोष व्यक्त किया।

माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम

एन.ई.पी. 2020 में शिक्षा की सामाजिक अनिवार्यताओं, विशेष रूप से विज्ञान शिक्षा को बहुत महत्व दिया गया है। कुशल विज्ञान अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को तैयार करने के लिए समकालीन समय में विज्ञान शिक्षा में डिप्लोमा कार्यक्रम की आवश्यकता बढ़ गई है, जिससे स्कूल स्तर पर विज्ञान शिक्षा में सुधार होगा। इसलिए संस्थान ने माध्यमिक स्तर पर विज्ञान शिक्षा, प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित अध्यापकों, इच्छुक अध्यापकों के लिए ऑनलाइन/दूरस्थ और आमने-सामने दोनों तरीकों की पेशकश, विज्ञान अध्यापक प्रशिक्षक और विज्ञान शिक्षा शोधकर्ता में एक वर्षीय डिप्लोमा कार्यक्रम शुरू किया है, उनका लक्ष्य उनकी पेशेवर दक्षताओं को समृद्ध करना और उनके शैक्षणिक करियर को बढ़ाना है। डिप्लोमा कार्यक्रम में सुधार की संभावनाओं का परीक्षण और आकलन करने के लिए एक प्रायोगिक अध्ययन आयोजित किया गया था। कार्यक्रम को योजना के अनुसार निष्पादित करने और भविष्य के वर्षों के लिए इसकी योजना को बढ़ाने के लिए व्यवस्थित रूप से फीडबैक एकत्र करने का प्रयास किया गया। आवेदनों की जाँच के बाद ऑनलाइन परीक्षा के आधार पर प्रवेश दिया गया। इसमें पंद्रह उम्मीदवारों ने नामांकन किया और कार्यक्रम आधिकारिक तौर पर 8 जुलाई, 2022 को शुरू किया गया जो मार्च, 2023 तक जारी रहेगा। कार्यक्रम ने एक मिश्रित मोड का पालन किया, जहाँ पहले चरण में क्रमशः तीन दिन और पाँच दिनों के दो आमने-सामने संपर्क कार्यक्रम शामिल थे। दूसरे चरण में पाँच दिन और आठ दिन के आमने-सामने कार्यक्रम शामिल थे। इसके अतिरिक्त, पूरे कार्यक्रम के दौरान क्षेत्र के विशेषज्ञों द्वारा ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित की गईं। दोनों चरणों में, छात्रों को असाइनमेंट जमा करने की आवश्यकता थी और सिद्धांत और व्यावहारिक दोनों परीक्षाएँ थीं। दूसरे चरण के अंत में छात्रों ने प्रोजेक्ट रिपोर्ट जमा की और मौखिक परीक्षा आयोजित की। नामांकित 15 उम्मीदवारों में से 12 प्रतिभागियों ने कार्यक्रम की सभी आवश्यकताओं को पूरा किया और उन्हें उनके प्रदर्शन के आधार पर ग्रेड प्रदान किया गया। फीडबैक फॉर्म और प्रतिभागियों और संसाधन व्यक्तियों के साथ खुली चर्चा के माध्यम से फीडबैक एकत्र किया गया था।

मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डी.सी.जी.सी.)

वर्ष 2022 के लिए 47 उम्मीदवारों को डी.सी.जी.सी. कार्यक्रम में प्रवेश दिया गया था। पाठ्यक्रम की आवश्यकताओं के अनुसार, पहला अभिविन्यास 27–29 जनवरी, 2022 तक आयोजित किया गया था। इस अभिविन्यास के दौरान, उन्हें तीन अलग-अलग चरणों के बारे में जानकारी दी गई, जिसमें तीनों चरणों में गतिविधियों के लिए अभ्यास और समय-सीमा का विवरण शामिल था। अप्रैल से जून तक, मॉड्यूल पर संदेह को दूर करने और असाइनमेंट और पोर्टफोलियो लेखन पर मार्गदर्शन करने के लिए कुछ ट्यूटोरियल सत्र आयोजित किए गए थे। प्रैक्टिकम का आमने-सामने संपर्क चरण 4 जुलाई से 30 सितंबर, 2022 तक आयोजित किया गया था। इस चरण का प्राथमिक फोकस प्रैक्टिकम को पूरा करना और मॉड्यूल/पेपर के अनुसार विभिन्न गतिविधियों के साथ व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करना था। इस चरण में सहायता के लिए विभिन्न विशेषज्ञताओं से अनुभवी बाहरी संसाधन व्यक्तियों को

भी आमंत्रित किया गया था। परीक्षा 21 सितंबर, 2022 को शुरू हुई और परीक्षा के आखिरी दिन 27 सितंबर को मौखिक परीक्षा आयोजित की गई। इसके साथ ही संरक्षक की मदद से इंटर्नशिप के विषयों और कार्यप्रणाली को अंतिम रूप दिया गया और प्रस्ताव प्रस्तुत किए गए। इंटर्नशिप को साकार करने से पहले स्कूलों तक पहुँचने और बाहरी पर्यवेक्षकों का चयन करने के लिए स्पष्ट दिशानिर्देश और एक प्रारूप तैयार किया गया था। प्रत्येक छात्र को आंतरिक और बाह्य दोनों पर्यवेक्षकों द्वारा समर्थन और मार्गदर्शन दिया गया था।

तालिका— आयोजित प्रशिक्षण/अभिमुखीकरण/क्षमता निर्माण कार्यक्रमों का विवरण

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	डी.सी.जी.सी. 2022 का प्रवेश सह अभिविन्यास (ऑनलाइन मोड)	27–29 जनवरी, 2022
2.	डी.सी.जी.सी. 2022 का दूसरा ट्यूटोरियल	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 18–22 अप्रैल, 2022
3.	असाइनमेंट मूल्यांकन कार्यशाला डी.सी.जी.सी. 2022	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 6–8 जून, 2022
4.	डी.सी.जी.सी. 2022 का तीसरा ट्यूटोरियल	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 13–17 जून, 2022
5.	डी.सी.जी.सी. 2022 का आमने-सामने चरण संपर्क कार्यक्रम	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 4 जुलाई से 30 सितंबर, 2022
6.	डी.सी.जी.सी. 2022 का क्षेत्र दौरा	अली यावर जंग नेशनल इंस्टीट्यूट फॉर हियरिंग हैंडीकैप्ड, भुवनेश्वर और चेतना इंस्टीट्यूट फॉर द एम्पावरमेंट ऑफ पर्सन्स विद इंटेलेक्चुअल डिसेबिलिटी, भुवनेश्वर 29 अगस्त, 2022
7.	डी.सी.जी.सी. 2022 की करियर प्रदर्शनी	के.वी. नंबर 2 सी.आर.पी.एफ. कैंपस, भुवनेश्वर 12–13 सितंबर, 2022
8.	डी.सी.जी.सी. 2022 का परामर्श सेमिनार	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 9 सितंबर, 2022
9.	डी.सी.जी.सी. 2022 की इंटर्नशिप प्रस्ताव प्रस्तुति	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 28–29 सितंबर, 2022
10.	डी.सी.जी.सी. 2022 का पोर्टफोलियो और प्रैक्टिकम मूल्यांकन कार्यशाला	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 2–4 नवंबर, 2022
11.	डी.सी.जी.सी. 2023 की आवेदन जाँच	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 23–25 नवंबर, 2022
12.	डी.सी.जी.सी. 2023 की प्रवेश परीक्षा	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 12 दिसंबर, 2022
13.	प्रवेश डी.सी.जी.सी. 2023	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 10 जनवरी, 2023

14.	डी.सी.जी.सी. 2023 का अभिविन्यास कार्यक्रम	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 11–13 जनवरी, 2023
15.	डी.सी.जी.सी. 2022 की सिद्धांत शोध पत्र मूल्यांकन कार्यशाला	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 23–25 जनवरी, 2023
16.	ई-सामग्री के विकास पर बिहार, झारखंड और ओडिशा के के.पी.आर. का क्षमता निर्माण	आर.आई.ई., भुवनेश्वर 12–16 दिसंबर, 2022

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.), मैसूरु

आंध्र प्रदेश के बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के स्कूलों के लिए ऑन-साइट सहायता कार्यक्रमों की योजना और कार्यान्वयन पर डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (वाई.एस.आर. प्री-स्कूल और ए.पी. कक्षा 1–4 के प्राथमिक स्कूल)

डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. के संकाय सदस्यों के लिए एक व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार किया गया है, जिसमें वाई.एस.आर. प्री-स्कूलों और प्रारंभिक विद्यालयों (कक्षा 1–4) सहित आंध्र प्रदेश में बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के स्कूलों के लिए ऑन-साइट समर्थन पहल की प्रभावी योजना और कार्यान्वयन पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य ऑन-साइट स्कूल समर्थन के लिए एकाग्रता के विशिष्ट क्षेत्रों की पहचान करना, उन्हें प्रत्येक स्कूल की अनूठी जरूरतों के साथ संरेखित करना और शैक्षणिक निगरानी उपकरणों के निर्माण के साथ-साथ इन पहचाने गए क्षेत्रों को संबोधित करने के लिए तैयार की गई सहयोगी कार्ययोजनाओं का विकास करना है। इसके अतिरिक्त, प्रशिक्षण शैक्षणिक निगरानी अभ्यासों को समेकित करते हुए, बुनियादी अधिगम के लिए निपुण भारत दस्तावेज़ में दिए गए दिशानिर्देशों के अनुसार ऑन-साइट स्कूल सहायता गतिविधियों को आयोजित करने के लिए डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्यों को आवश्यक कौशल से युक्त करने का प्रयास किया जाता है। अंत में, कार्यक्रम में डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्यों के बीच साझा बैठकों की सुविधा शामिल है, जो सहयोगात्मक प्रयासों और शैक्षणिक निगरानी परिणामों के मूल्यांकन पर केंद्रित है। इस पहल के प्रत्याशित प्रभाव में प्रत्येक डी.आई.ई.टी. के अंदर शिक्षण समुदायों की स्थापना शामिल है, जो अध्यापकों के लिए लगातार ऑन-साइट समर्थन सुनिश्चित करता है। ये समुदाय अध्यापकों के पेशेवर विकास को सुविधाजनक बनाने के लिए मोबाइल ऐप जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म और फील्ड विजिट सहित ऑफलाइन तरीकों को नियोजित करेंगे।

आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तर के विद्यालय अध्यापकों के लिए कक्षा पुस्तकालय के संगठन और उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (कक्षा 1–8)

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य आंध्र प्रदेश और तेलंगाना में कक्षा 1–8 तक के अध्यापकों को कक्षा पुस्तकालयों के संगठन और उपयोग के संबंध में मूल्यवान कौशल और अंतर्दृष्टि से युक्त करना है। इस कार्यक्रम के उद्देश्य बहुआयामी हैं। सबसे पहले, यह अध्यापकों में कक्षा पुस्तकालय की आवश्यकता और महत्व की व्यापक समझ पैदा करने का प्रयास करता है। इसके अतिरिक्त, यह आवश्यक व्यावसायिक दक्षताओं को विकसित करने का प्रयास करता है जो अध्यापकों को इन शैक्षिक संसाधनों की योजना बनाने, व्यवस्थित करने और प्रबंधित करने में सक्षम बनाता है।

इसके अलावा, यह कार्यक्रम कक्षा पुस्तकालयों के लिए उपयुक्त पुस्तकों की पहचान करने, चयन करने और खरीदने की कला में अध्यापकों को प्रशिक्षित करने पर केंद्रित है। इसमें कक्षा के वातावरण में इन संसाधनों के प्रभावी उपयोग को बढ़ाने के लिए डिजाइन किए गए विभिन्न कौशल और तकनीकें भी प्रदान की जाती हैं। इस प्रशिक्षण

का एक महत्वपूर्ण पहलू है, पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देना जिसमें अध्यापकों को यह निर्देशित किया जाता है कि वे अपने छात्रों में पढ़ने के प्रति जुनून कैसे जगाएँ और पढ़ने की आदतें कैसे विकसित करें। इन प्रयासों को पूरा करने के लिए, अध्यापकों को विविध गतिविधियों का संचालन करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है जो इष्टतम छात्र जुड़ाव और अधिगम के लिए कक्षा पुस्तकालयों की क्षमता का लाभ उठाते हैं।

इस प्रशिक्षण पहल की प्रतिक्रिया और परिणामों के संबंध में, विचार करने के लिए कई महत्वपूर्ण बिंदु हैं। प्रशिक्षित अध्यापकों को अपने संबंधित स्कूलों में अपने साथियों को निर्देश देकर अपना ज्ञान साझा करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे विशेषज्ञता के प्रसार का व्यापक प्रभाव पैदा होता है। इस बात पर जोर दिया जाता है कि अध्यापकों को अपनी शिक्षण पद्धतियों के भाग के रूप में कक्षा पुस्तकालयों का लगातार उपयोग करना चाहिए। इस कार्यक्रम की प्रभावशीलता सुनिश्चित करने के लिए, प्राथमिक शिक्षा विभाग (डी.पी.ई.) और राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.) को प्रशिक्षित अध्यापकों की गतिविधियों की निगरानी करने और अपने सहयोगियों के निरंतर व्यावसायिक विकास के लिए उनकी विशेषज्ञता का उपयोग करने के लिए कहा जाता है। यह व्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम इन राज्यों में छात्रों के लाभ के लिए जीवंत और प्रभावी कक्षा पुस्तकालय वातावरण बनाने के लिए आवश्यक उपकरणों और ज्ञान के साथ अध्यापकों को सशक्त बनाने का प्रयास करता है।

स्कूल पुस्तकालय में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सी.सी.एस.एल.)

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम को स्कूल पुस्तकालय के लिए उच्च गुणवत्ता वाले संग्रह की सावधानीपूर्वक योजना और खरीद के साथ-साथ पुस्तकालय के कुशल और प्रभावी संगठन और प्रबंधन के उद्देश्यों के साथ डिजाइन किया गया था। पाठ्यक्रम का उद्देश्य डिजिटल दायरे में छात्रों और अध्यापकों दोनों के लिए पुस्तकालय सेवाओं को बढ़ाना, स्कूली बच्चों के बीच पढ़ने की संस्कृति को बढ़ावा देना और सहयोगात्मक शिक्षण प्रयासों को बढ़ावा देना है। एक अन्य लक्ष्य छात्रों और अध्यापकों के बीच वेब संसाधनों के उपयोग को प्रोत्साहित करना है, साथ ही डिजिटल और वेब-आधारित संसाधनों का इष्टतम उपयोग सुनिश्चित करने के लिए सूचना साक्षरता कार्यक्रमों को व्यवस्थित करना है।

तेलंगाना राज्य के लिए गणित में माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए गतिविधि/ प्रौद्योगिकी-आधारित शिक्षण अधिगम के माध्यम से सामग्री-सह-शिक्षणशास्त्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस कार्यक्रम का उद्देश्य माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर के गणित के अंदर विभिन्न क्षेत्रों की पहचान करना है जहाँ विभिन्न विषयों को कवर करने वाले अनुकरणीय पाठ बनाने के लिए विविध शिक्षण कार्यनीतियों को प्रभावी तरीके से लागू किया जा सकता है, और शिक्षण अभ्यासों में सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) को समेकित किया जा सकता है।

दक्षिणी राज्यों के स्कूलों के बुनियादी स्तर के के.आर.पी. के लिए विषयवार खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (के.जी., पहली कक्षा और दूसरी कक्षा)

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम खिलौनों की शैक्षिक क्षमता का लाभ उठाने पर केंद्रित है। इसमें यह माना जाता है कि खिलौनों में एक अंतर्निहित आकर्षण होता है जो उम्र की बाधाओं को पार करता है और सीखने के अनुभव को महत्वपूर्ण रूप से बढ़ा सकता है। कार्यक्रम का उद्देश्य खिलौना आधारित शिक्षण विधियों को पाठ्यक्रम में समेकित करके इस शक्ति का उपयोग करना है, विशेष रूप से छात्रों को उनकी शिक्षा यात्रा के बुनियादी स्तर (के.जी., पहली और दूसरी कक्षा) में लाभ पहुँचाना है। दक्षिणी राज्यों के प्रमुख संसाधन व्यक्तियों (के.आर.पी.) को प्रशिक्षण प्रदान

करके, यह पहल प्राथमिक विद्यालय के अध्यापकों को नवीन शैक्षणिक दृष्टिकोण से युक्त करना चाहती है जो सभी विषयों में सीखने में आनंद लाती है। कार्यक्रम की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने के लिए, एक संरचित प्रश्नावली के माध्यम से हितधारकों से फीडबैक इकट्ठा किया जाएगा, जिससे शैक्षिक उद्देश्यों के साथ निरंतर सुधार और संरेखण सुनिश्चित किया जा सके।

तेलंगाना के बहुकक्षीय और बहुभाषी कक्षा-कक्ष पर बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के अध्यापकों (कक्षा के.जी., पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पाँचवीं) के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम कई प्रमुख उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए डिजाइन किया गया था। सबसे पहले, इसका उद्देश्य बहुभाषी वातावरण के संदर्भ में बहु-कक्षा कक्षाओं की चुनौतियों और गतिशीलता के बारे में अध्यापकों के बीच जागरूकता बढ़ाना है। दूसरे, इस कार्यक्रम का उद्देश्य अध्यापकों को उन विषयों को शामिल करने के लिए प्रभावी तकनीकों और तरीकों से युक्त करना है जिन्हें विभिन्न कक्षाओं और भाषा संबंधी पृष्ठभूमि के छात्र समझ सकें। इसके अलावा, यह विविध भाषा संबंधी कौशल वाले छात्रों को बेहतर तरीके से समायोजित करने के लिए अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान करने पर केंद्रित है।

इसके अलावा, इस प्रशिक्षण कार्यक्रम में अध्यापकों को विभिन्न भाषाओं और उनकी कक्षाओं में मिलने वाले विभिन्न स्तरों के छात्रों के बीच सार्थक संबंध और संबंध स्थापित करने में सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है। अंततः, कार्यक्रम की सफलता का मूल्यांकन प्रतिभागियों की प्रतिक्रिया के माध्यम से किया जाएगा और इसी तरह की पहल के भविष्य की पुनरावृत्तियों को बेहतर बनाने के लिए आवश्यकतानुसार समायोजन किया जाएगा। इस समग्र दृष्टिकोण का उद्देश्य तेलंगाना राज्य के भीतर बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों में छात्रों के लिए शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाना है।

अंग्रेजी में छात्रों के सुनने और बोलने के कौशल को बढ़ाने पर तमिलनाडु और तेलंगाना के बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तर के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य कई प्रमुख लक्ष्यों को प्राप्त करना था। सबसे पहले, कार्यक्रम में माध्यमिक अध्यापकों को व्यापक प्रशिक्षण प्रदान किया जाना है, जो विशेष रूप से उनके संचार कौशल को बढ़ाने पर ध्यान केंद्रित होगा। दूसरे, इसका उद्देश्य इन अध्यापकों को चार आवश्यक भाषा संबंधी कौशल— सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना सिखाने के लिए प्रभावी कार्यनीतियों से युक्त करना है। महत्वपूर्ण बात यह है कि प्रशिक्षण सत्र छात्रों और अध्यापकों दोनों की आवश्यकताओं के अनुरूप तैयार किए गए हैं।

गतिविधि आधारित शिक्षा और रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित विज्ञान किटों के उपयोग पर तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के जनजातीय कल्याण माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 9 और 10) के के.आर.पी. और अध्यापकों का प्रशिक्षण

इस कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य दोहरा है। सबसे पहले, इसका उद्देश्य के.आर.पी. को प्रभावी हाई स्कूल विज्ञान प्रयोगों और प्रदर्शनों के संचालन में कुशल कौशल से युक्त करना है। इसके माध्यम से, प्रशिक्षण का उद्देश्य कक्षा 9 और 10 के छात्रों को आकर्षक और प्रभावशाली विज्ञान शिक्षा प्रदान करने की उनकी क्षमता को बढ़ाना है। दूसरे, कार्यक्रम के.आर.पी. को राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) द्वारा विकसित विज्ञान किटों के उपयोग से परिचित कराने का प्रयास करता है। प्रशिक्षण का यह पहलू अध्यापकों को इन विशेष किटों का उपयोग करके प्रायोगिक, व्यावहारिक सीखने के अनुभवों को अपनी शिक्षण पद्धतियों में प्रभावी तरीके से समेकित करने में सक्षम बनाने के लिए डिजाइन किया गया है।

इस प्रशिक्षण प्रयास में इन उद्देश्यों को संबोधित करते हुए आदिवासी कल्याण स्कूलों में विज्ञान शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने, अध्यापकों और छात्रों दोनों के लिए सीखने के अनुभव को समृद्ध करने का आशय है। कार्यक्रम में न केवल के.आर.पी. को उन्नत शिक्षण तकनीकों के साथ सशक्त बनाया जाता है, बल्कि रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित विज्ञान किटों को शामिल करके इन विधियों के प्रायोगिक अनुप्रयोग की सुविधा भी प्रदान की जाती है। यह समग्र दृष्टिकोण एक सर्वांगीण और प्रभावशाली शिक्षण वातावरण सुनिश्चित करता है, जिससे छात्रों में विज्ञान की गहरी समझ पैदा होती है।

क्र. सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	आंध्र प्रदेश के बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के स्कूलों के लिए ऑनसाइट सहायता कार्यक्रमों की योजना और कार्यान्वयन पर डी.आई.ई.टी. और एस.सी.ई.आर.टी. संकाय सदस्यों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम (वाई.एस.आर. प्री-स्कूल और ए.पी. कक्षा 1–4 के प्राथमिक विद्यालय)	ऑनलाइन मोड 16–18 मार्च, 2023
2.	आंध्र प्रदेश और तेलंगाना के बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तर के विद्यालय अध्यापकों के लिए कक्षा पुस्तकालय के संगठन और उपयोग पर प्रशिक्षण कार्यक्रम (कक्षा 1–8)	आर.आई.ई., मैसूरु 21–25 नवंबर, 2022
3.	स्कूल पुस्तकालय में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम (सी.सी.एस.एल.) छह दिवसीय आमने-सामने संपर्क का प्रथम कार्यक्रम छह दिवसीय आमने-सामने संपर्क का दूसरा कार्यक्रम	आर.आई.ई., मैसूरु 17–22 अक्तूबर, 2022 6–11 मार्च, 2023
4.	तेलंगाना राज्य के लिए गणित में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों के लिए गतिविधि/प्रौद्योगिकी आधारित शिक्षण अधिगम के माध्यम से सामग्री-सह-शिक्षणशास्त्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	आर.आई.ई., मैसूरु 31 जनवरी से 4 फरवरी, 2023
5.	दक्षिणी राज्यों के बुनियादी स्तर के विद्यालयों (के.जी., पहली और दूसरी कक्षा) के के.आर.पी. के लिए विषयवार खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र पर प्रशिक्षण कार्यक्रम	ऑनलाइन मोड 27 फरवरी से 3 मार्च, 2023
6.	तेलंगाना के बहुकक्षीय और बहुभाषी कक्षा-कक्ष पर बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के अध्यापकों (के.जी., पहली, दूसरी, तीसरी, चौथी और पाँचवीं कक्षा) के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	आर.आई.ई., मैसूरु 16–18 फरवरी, 2023
7.	अंग्रेजी में छात्रों के सुनने और बोलने के कौशल को बढ़ाने पर तमिलनाडु और तेलंगाना के बुनियादी, प्रारंभिक और मध्य स्तर के अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम	आर.आई.ई., मैसूरु 2–6 अगस्त, 2022
8.	गतिविधि आधारित शिक्षा और रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा विकसित विज्ञान किटों के उपयोग पर तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के जनजातीय कल्याण माध्यमिक विद्यालय (कक्षा 9 और 10) के अध्यापकों के के.आर.पी. का प्रशिक्षण	आर.आई.ई., मैसूरु 21–25 नवंबर, 2022

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

ई.सी.सी.ई. में प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम

प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.) पर छह महीने का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम एक मिश्रित मोड (कार्यस्थल पर आमने-सामने और क्षेत्र के अनुभव का संयोजन) में आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य गुणवत्तापूर्ण प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा (ई.सी.सी.ई.); ई.सी.सी.ई. से संबंधित विभिन्न सैद्धांतिक मुद्दों पर प्रशिक्षुओं को ज्ञान प्रदान करना; प्रशिक्षुओं को प्रारंभिक बाल्यावस्था के पाठ्यक्रम में सांस्कृतिक रूप से संगत अभ्यासों को समझने और शामिल करने में सक्षम बनाना; और प्रशिक्षुओं को ई.सी.सी.ई. में सौंपे गए अनुभव प्रदान करने के लिए पेशेवरों को तैयार करना था। कार्यक्रम तीन चरणों में आयोजित किया गया। प्रशिक्षुओं को कुछ व्यावहारिक घटकों के साथ ई.सी.सी.ई. की सैद्धांतिक पृष्ठभूमि से परिचित कराने के लिए कार्यक्रम का पहला चरण तीन महीने की अवधि के लिए संस्थान में आमने-सामने मोड में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का दूसरा चरण एक महीने की अवधि के लिए स्कूल इंटर्नशिप के लिए समर्पित था। इस चरण में, प्रशिक्षुओं को अपने सैद्धांतिक ज्ञान को क्षेत्र के अनुभव के साथ जोड़ने और उन्हें प्रकरण अध्ययन, सांस्कृतिक रूप से संगत सामग्रियों के दस्तावेज़ीकरण और सर्वेक्षण जैसी संरचित रिपोर्ट के रूप में रिकॉर्ड करने में सक्षम बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया था। इस कार्यक्रम का तीसरा चरण आमने-सामने मोड में आयोजित किया गया था और ज्यादातर प्रशिक्षुओं को कई व्यावहारिक ई.सी.सी.ई. गतिविधियों, जैसे— क्ले मॉडलिंग, सामाजिक और भावनात्मक विकास, संज्ञानात्मक विकास, सकल गत्यात्मक, सूक्ष्म गत्यात्मक और कठपुतली बनाना, में शामिल करने के लिए समर्पित था। इस चरण में प्रारंभिक संख्यात्मकता, बच्चों के व्यक्तिगत सामाजिक गुणों और व्यवहार संशोधन और स्कूल दौरों पर कुछ सिद्धांत सत्र भी आयोजित किए गए थे। कार्यक्रम प्रशिक्षुओं द्वारा असाइनमेंट की प्रस्तुति, एक लिखित परीक्षा, असाइनमेंट के मूल्यांकन और अंत में प्रमाणन के साथ समाप्त हुआ।

पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर एफ.एल.एन. के लिए सीखने के प्रतिफल आधारित शिक्षण संसाधनों के विकास पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम

यह प्रशिक्षण कार्यक्रम 31 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2022 तक एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम में आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम में मणिपुर, मेघालय, नागालैंड और सिक्किम के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इसमें शामिल प्रमुख विषय हैं— राज्यों में मूलभूत शिक्षा की स्थिति, एफ.एल.एन. कौशल की समझ, विकासात्मक लक्ष्यों, दक्षताओं और सीखने के प्रतिफलों के बीच संबंध, प्रारंभिक भाषा विकास और कौशल के लिए कक्षा में आदान-प्रदान, मूलभूत संख्यात्मकता के लिए आदान-प्रदान संबंधी कार्यनीति, बुनियादी स्तर पर शिक्षण मूल्यांकन। इन अनुकरणीय गतिविधियों की सूची में आकस्मिक पढ़ना और लिखना, गतिविधियों के माध्यम से संख्यात्मकता और गणितीय कौशल विकसित करने के लिए वातावरण का निर्माण, पर्यावरण जागरूकता के लिए गतिविधियाँ, गणितीय कौशल के लिए महत्वपूर्ण सोच और मूल्यांकन रूपरेखा शामिल हैं। भाषा और साक्षरता के लिए शैक्षणिक योजना के साथ-साथ गणितीय कौशल के लिए कक्षा संचालन की योजना पर समूह कार्य की रिपोर्ट प्रतिभागियों द्वारा राज्यवार प्रस्तुत की गई।

वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) पर पूर्वोत्तर राज्यों के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण

यह कार्यक्रम 13–17 फरवरी, 2023 तक एन.ई.आर.आई.ई., उमियम में आयोजित किया गया था, जिसका उद्देश्य जी.सी.ई.डी. की प्रमुख अवधारणाओं पर के.आर.पी. को संवेदनशील बनाना, के.आर.पी. को जी.सी.ई.डी. के सिद्धांतों से अवगत कराना और के.आर.पी. को विभिन्न जी.सी.ई.डी. के अंतर्गत क्षेत्र के मुद्दों पर उन्मुख करना था।

इन प्रतिभागियों को वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.), शांति और जेंडर समानता की संस्कृति के लिए शिक्षा, सतत विकास लक्ष्य (एस.डी.जी.), नागरिकता के ऐतिहासिक विकास/जी.सी.ई.डी., स्कूल पाठ्यक्रम में जी.सी.ई.डी. को समेकित करने, जी.सी.ई.डी. के मूल्यांकन, शैक्षणिक सिद्धांत, लोककथाओं के माध्यम से जी.सी.ई.डी., एस.डी.जी. की परस्पर निर्भरता, मानवाधिकार और सामाजिक न्याय के बारे में शिक्षा, संवाद और संचार कौशल, जी.सी.ई.डी. के लिए अध्यापक संसाधन, वैश्विक नागरिकता के लिए शिक्षा, 21वीं सदी की चुनौतियों के लिए विद्यार्थियों और अध्यापकों को तैयार करने के बारे में जागरूक किया गया और समझ विकसित की गई।

अनुसंधान उपकरणों के विकास पर सभी पूर्वोत्तर राज्यों के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम

प्रशिक्षण कार्यक्रम तीन राज्यों अर्थात असम, मणिपुर और त्रिपुरा के लिए अलग-अलग आयोजित किया गया था। कवर किए गए क्षेत्र हैं— अनुसंधान में अनुसंधान टूल का महत्व और सार्थकता, अनुसंधान टूल के प्रकार और विशेषताएँ और सांख्यिकी की मूल बातें, अनुसंधान टूल की विश्वसनीयता और वैधता स्थापित करने के तरीके, परिचालन परिभाषा लिखने के लिए सौंपी गई गतिविधियाँ, परिकल्पना का निर्माण, थीसिस लेखन, मद विश्लेषण, विकास प्रश्नावली, साक्षात्कार अनुसूची, फोकस समूह चर्चा और अवलोकन अनुसूची की डिजाइनिंग, टूल और उपकरण के प्रकार, टूल विकास के चरण और टूल का मानकीकरण, विश्वसनीयता स्थापित करना और फोकस समूह चर्चा डिजाइन करना, अधिकांश विषयों को अनुकरणीय प्रदर्शन के साथ प्रस्तुत किया गया था। प्रशिक्षण में शामिल प्रमुख गतिविधियाँ परिचालन परिभाषा लिखना, मद लिखना, मद विश्लेषण, क्लोज एंडेड और ओपन एंडेड प्रश्नावली के लिए नमूना प्रश्न लिखना, संरचित और अर्ध-संरचित साक्षात्कार अनुसूची के लिए नमूना प्रश्न लिखना, मालसूची के लिए मद लिखना आदि हैं।

माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक अध्यापकों के लिए व्यावसायिक विकास पर प्रशिक्षण

प्रशिक्षण पाँच राज्यों अर्थात मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड और सिक्किम के लिए अलग-अलग आयोजित किया गया था। सिक्किम को छोड़कर बाकी चार राज्यों में आई.टी. और आई.टी.ई.एस. वोकेशनल जॉब रोल पढ़ाने वाले अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया गया। हालाँकि, प्रशिक्षण कार्यक्रम का फोकस क्षेत्र राज्यों के अध्यापकों की आवश्यकताओं के अनुसार था। सिक्किम राज्य के लिए, प्रशिक्षण रिटेल वोकेशनल जॉब रोल के लिए था। प्रशिक्षण कार्यक्रम की सामग्री राज्यवार दी गई है।

मणिपुर: प्रशिक्षण कार्यक्रम में एन.ई.पी. 2020 और व्यावसायिक शिक्षा, मणिपुर के स्कूलों में आई.टी.ई.एस. की स्थिति, चुने हुए उद्यम की योजना, व्यावसायिक शिक्षा में उद्यमशीलता का महत्व, व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र और कौशल विकास, डॉक्यूमेंट्स तैयार करना और संकलन और छंटाई, डॉक्यूमेंट्स के स्रोत और सटीकता की जाँच, डाटा का सत्यापन और सुधार, व्यावसायिक पाठ्यक्रमों का मूल्यांकन और आकलन के क्षेत्र शामिल किए गए थे। इन सभी विषयों पर चर्चा के बाद एन.आई.टी., इंफाल का दौरा करके सौंपी गई गतिविधियों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षुओं को एम.एस. वर्ड से संबंधित कुछ एडवांस कमांड, जैसे— आर.ए.एन.डी., कॉपीराइट, टेबल क्रिएशन मैथड, एप्लिकेशन ऑफ अर्थमेटिक ऑपरेशंस विद इन नंबर्स, टेक्स्ट डॉक्यूमेंट, नंबर एंड बुलेट्स में स्माइली फेस को एड करना, फाइंड और रिप्लेस का उपयोग करके वर्ड में लाइन ब्रेक को रिमूव करना, पासवर्ड के साथ डॉक्यूमेंट की सुरक्षा करना आदि सिखाया गया।

मेघालय: कार्यक्रम में फोकस के क्षेत्र में शामिल हैं— व्यावसायिक शिक्षा में पाठ्यक्रम आदान-प्रदान और मूल्यांकन में सहयोगात्मक दृष्टिकोण की समझ, एम.एस. ऑफिस पैकेज और इसके विभिन्न उपयोग, वैकल्पिक कार्यालय एप्लिकेशन और उपयोग, डॉक्यूमेंट बनाना और फॉर्मेट करना, रिलेशनशिप अवधारणा और तालिकाओं

में शामिल करना, प्राइमरी की (key) और फॉरेन की (key) की अवधारणा, डिजिटल प्रस्तुति और इसकी मूल बातें, टेम्प्लेट का उपयोग करके प्रेजेंटेशन बनाना, इमेज को फॉर्मेट करना और इमेज को बनाना, ऑब्जेक्ट को ग्रुप करना और ग्रुप से हटाना, डॉक्यूमेंट को फॉर्मेट करना और एडिट करना, स्प्रेडशीट डाटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम से संबंधित गतिविधियाँ आदि। टाइपिंग एर्गोनॉमिक्स, डी.बी.एम.एस. ऑब्जेक्ट्स का निर्माण, डॉक्यूमेंट को फॉर्मेट करना और मेल मर्ज तकनीक को अप्लाई करना, वर्ड प्रोसेस, टेबल, क्वेरी एंड फॉर्म डिजाइनिंग में संदर्भ तकनीकों का उपयोग करने, स्प्रेडशीट के एडवांस फंक्शन, फोटोशॉप टूल का उपयोग करके बेसिक ग्राफिक डिजाइनिंग पर स्वयं कार्य द्वारा सीखने का कौशल सत्र आयोजित किया गया था।

मिजोरम: कार्यक्रम में शामिल मुख्य विषय थे— ऑफिस पैकेज और इसके विभिन्न उपयोग, वैकल्पिक ऑफिस एप्लिकेशन और उपयोग, प्राइमरी की (key) और फॉरेन की (key) की अवधारणा, टेम्पलेट्स का उपयोग करके प्रस्तुतियाँ बनाना, इमेज को सम्मिलित करना और इमेज को तैयार करना, आब्जेक्ट्स को ग्रुप और अनग्रुप करना, डॉक्यूमेंट को फॉर्मेट और एडिट करना, स्प्रेडशीट डाटाबेस प्रबंधन प्रणाली आदि से संबंधित गतिविधियाँ, टाइपिंग एर्गोनॉमिक्स, डी.बी.एम.एस. ऑब्जेक्ट्स का निर्माण, डॉक्यूमेंट बनाने और मेल मर्ज तकनीक का क्रियान्वयन, वर्ड प्रोसेस, टेबल, क्वेरी और फॉर्म डिजाइनिंग में संदर्भ तकनीकों के उपयोग, स्प्रेडशीट के उन्नत कार्य, फोटोशॉप टूल का उपयोग करके बेसिक ग्राफिक डिजाइनिंग करने आदि पर व्यावहारिक कौशल सत्र किए गए थे।

नागालैंड: मुख्य विषय में आई.सी.टी. का महत्व और इसके उपयोग, व्यावसायिक शिक्षा में अध्यापन-अधिगम में नवाचार, कार्यालय पैकेज और इसके विभिन्न उपयोग, वैकल्पिक कार्यालय एप्लिकेशन और उपयोग, रेंज सेल और वर्कशीट का निर्माण, प्राइमरी की (key) की अवधारणा, डॉक्यूमेंट निर्माण और फॉर्मेटिंग और फॉरेन की (key), टेम्प्लेट का उपयोग करके प्रेजेंटेशन बनाना, इमेज इंसर्ट करना और इमेज फॉर्मेट करना, ऑब्जेक्ट्स को ग्रुप करना और अनग्रुप करना, डॉक्यूमेंट को फॉर्मेट और एडिट करना, स्प्रेडशीट डाटाबेस मैनेजमेंट सिस्टम आदि से संबंधित गतिविधियाँ, टाइपिंग एर्गोनॉमिक्स, डी.बी.एम.एस. ऑब्जेक्ट्स बनाना, डॉक्यूमेंट फॉर्मेट करना और मेल मर्ज तकनीक को अप्लाई करने, वर्ड प्रोसेस, टेबल, क्वेरी और फॉर्म डिजाइनिंग, स्प्रेडशीट के एडवांस फंक्शन, फोटोशॉप टूल का उपयोग करके बेसिक ग्राफिक डिजाइनिंग आदि के लिए संबंधित गतिविधियाँ शामिल हैं। उपरोक्त उल्लिखित विषयों का प्रदर्शन और सौंपा गया। टाइपिंग एर्गोनॉमिक्स, डी.बी.एम.एस. ऑब्जेक्ट्स बनाना, डॉक्यूमेंट फॉर्मेट करना और मेल मर्ज तकनीक को अप्लाई करने, वर्ड प्रोसेस, टेबल, क्वेरी और फॉर्म डिजाइनिंग, स्प्रेडशीट के एडवांस फंक्शन, फोटोशॉप टूल का उपयोग करके बेसिक ग्राफिक डिजाइनिंग आदि में संदर्भ तकनीकों का उपयोग करने पर स्वयं कार्य द्वारा सीखने का कौशल सत्र आयोजित किया गया था।

सिक्किम: व्यावसायिक शिक्षा पाठ्यक्रम पर सिक्किम राज्य के लिए प्रशिक्षण के फोकस के मुख्य क्षेत्र में शामिल हैं— रिटेल बिक्री के प्रकार, व्यावसायिक रिटेल बिक्री के संदर्भ में उद्यमशीलता, भंडारण में स्टॉक स्तर और पहचान, मानकीकरण और प्रभावशीलता के संदर्भ में ग्राहक सेवाएँ, वस्तुओं की प्रदायगी, रिटेल स्टोर ऑपरेटर, सिद्धांत और तकनीकें समझ, हाउसकीपिंग और सेवा संचालन, मॉल और रिटेल दुकानों के दौरे के माध्यम से गतिविधियों पर सौंपे गए कार्य, रिटेल से संबंधित पहलुओं पर समूह गतिविधि और व्यक्तिगत गतिविधि कवर किए गए रिटेल क्षेत्र हैं।

मणिपुर की मान्यता प्राप्त जनजातीय भाषाओं के पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए क्षमता निर्माण

जनजातीय अनुसंधान संस्थान, इंफाल में कार्यक्रम 27 जून से 1 जुलाई, 2022 तक आयोजित किया गया था। कार्यक्रम में थाडौ कुकी, माओ, मिज़ो, मारम, रुआंगमेई, पौमई, गंगटे, अनल, कोम, सिम्ते, हमार, वैफेई, पाइते मारिंग और ज़ू समुदाय के 34 पाठ्यपुस्तक लेखकों ने भाग लिया। पाठ्यपुस्तक लेखकों को पाठ्यपुस्तक विकास, सामग्री चयन और अनुकूलन, अभ्यासों के विकास आदि के विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया गया।

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर पूर्वोत्तर क्षेत्र के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण

यह क्षमता निर्माण कार्यक्रम दो चरणों में आयोजित किया गया था। पहला चरण जो 26 से 30 सितंबर, 2022 तक एन.ई.आर.आई.ई. में आयोजित किया गया था, इसमें मेघालय और त्रिपुरा के के.आर.पी. ने भाग लिया था। दूसरा चरण असम, मणिपुर, नागालैंड और सिक्किम के के.आर.पी. के लिए 20 से 24 दिसंबर, 2022 तक एस.सी.ई.आर.टी. असम के सहयोग से आयोजित किया गया था।

पूर्वोत्तर क्षेत्र के सामाजिक विज्ञान में ई-सामग्री के लिए स्क्रिप्ट लेखन में के.आर.पी. की क्षमता निर्माण

यह कार्यक्रम दो चरणों में एन.ई.आर.आई.ई. में 21 से 25 नवंबर, 2022 और 27 फरवरी से 3 मार्च, 2023 तक आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर सामाजिक विज्ञान में ई-सामग्री के विकास के लिए स्क्रिप्ट तैयार करने के लिए आवश्यक कौशल के साथ के.आर.पी. को सशक्त बनाना था। इस सत्र में ई-सामग्री के विकास की प्रक्रियाएँ, ई-सामग्री के प्रकार और प्रारूप, ई-सामग्री की ऑडियो और वीडियो रिकॉर्डिंग, एनीमेशन और मुफ्त ऑनलाइन संसाधन, सी.डब्ल्यू.एस.एन. के लिए ई-सामग्री, एन.ई.पी. 2020 और आई.सी.टी. पहल, निर्देशात्मक डिजाइन और ई-सामग्री की प्रक्रिया, फ्री एंड ओपन सॉफ्टवेयर, एफ.ओ.एस.एस. और एडिटिंग टूल का उपयोग करने पर सौंपे गए सत्र, अंतरक्रिया संसाधन, ऑडियो और वीडियो संसाधनों का विकास, ओ.ई.आर., लाइसेंसिंग और कॉपीराइट मुद्दे, स्क्रिप्ट लेखन/स्टोरी बोर्ड प्रक्रिया और प्रारूप, ई-कंटेंट ऑथरिंग टूल (ई.एक्स.ई.), एच5पी का उपयोग करके ई-संसाधन बनाना, उदाहरणों के साथ राजनीति विज्ञान, इतिहास, भूगोल और अर्थशास्त्र में ई-सामग्री का विकास शामिल थे।

सभी पूर्वोत्तर राज्यों के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान और गणित में सीखने के प्रतिफलों पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य अध्यापकों को पाठ्यचर्या की अपेक्षाओं के अनुसार सीखने के प्रतिफलों को समझने और प्राप्त करने में मदद करना, कक्षा-कक्ष में अधिगम की स्थिति बनाने के लिए संगत संसाधनों का उपयोग करने में प्रायोगिक अनुभव प्रदान करना, पाठ्यचर्या क्षेत्रों में एक शैक्षणिक प्रक्रिया के रूप में प्रायोगिक शिक्षण आयोजित करने में अध्यापकों की योग्यता को बढ़ाना, गणित और विज्ञान के अध्यापक अधिगम की गुणवत्ता में सुधार के लिए संज्ञानात्मक, साइकोमोटर और भावात्मक डोमेन पर उच्च क्रम सोच कौशल और सीखने के प्रतिफलों को विकसित करना था। इस सत्र के दौरान कवर किए गए विषयों में शामिल हैं, एन.ई.पी. 2020 की मुख्य विशेषताएँ और अवलोकन, सीखने के प्रतिफल और इसके कार्यान्वयन को समझना, अधिगम के उद्देश्य, संकेतक और परिणाम— दस्तावेज़ की एक संक्षिप्त रूपरेखा 'माध्यमिक स्तर पर सीखने के प्रतिफल', विज्ञान और गणित में मूल्यांकन और सीखने के प्रतिफल, विज्ञान और गणित में पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ और योग्यता आधारित शिक्षा, गणित के शिक्षण में धारणाएँ, माध्यमिक स्तर पर विज्ञान और गणित में शैक्षणिक प्रक्रियाएँ, गणित अध्यापन की पद्धति, गणित और विज्ञान में अध्यापन और अधिगम में कला और आई.सी.टी. का समेकन, स्वदेशी और पारंपरिक संदर्भ अध्यापन और अधिगम, गणित फोबिया— कारण और उपचार, माध्यमिक स्तर पर सचेतन और गणित अधिगम के लिए योग और ध्यान, अधिगम में बहुविषयक दृष्टिकोण, गणित और ओरिगेमी में सीखने का पूर्ण आनंद, विज्ञान और गणित और समूह प्रस्तुतियों के विशिष्ट सामग्री क्षेत्रों के लिए सीखने के प्रतिफलों का विकास करना।

पूर्वोत्तर राज्यों के लिए प्रारंभिक स्तर पर मूल्यांकन और आकलन पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य मूल्यांकन और आकलन के विभिन्न उपकरणों और तकनीकों के साथ उन्हें सशक्त बनाना, मूल्यांकन और आकलन कार्यनीतियों के प्रकारों पर प्रायोगिक अनुभव प्रदान करना, परीक्षण कौशल और

उच्च मानसिक क्षमताओं की तकनीकों, और विभिन्न सीखने के प्रतिफलों के रचनात्मक मूल्यांकन पर के.आर.पी. को सशक्त बनाने पर अध्यापकों को प्रायोगिक मार्गदर्शन प्रदान करना था। इस सत्र के दौरान कवर किए गए विषय थे— स्कूल आधारित मूल्यांकन, एन.ई.पी. 2020 मूल्यांकन सुधार, व्यक्तिगत और सामाजिक गुणों का आकलन, मूल्यांकन उपकरण और तकनीक प्रदर्शन मूल्यांकन; रुब्रिक्स, पोर्टफोलियो, उपाख्यान; गुणात्मक मूल्यांकन, उच्च स्तरीय सोच कौशल (एच.ओ.टी.एस.) और मूल्यांकन, पाठ्यचर्या संबंधी अपेक्षाएँ शैक्षणिक प्रक्रियाएँ, सीखने के प्रतिफल और मूल्यांकन, समग्र विकास के लिए टूल और तकनीक विकसित करने पर सौंपी गई गतिविधियाँ और समूह कार्य, एन.ई.पी. 2020 के मद्देनजर रचनात्मक मूल्यांकन को समझना, टूल, तकनीक और रचनात्मक मूल्यांकन, रचनावाद और विद्यार्थी मूल्यांकन और मापन और मूल्यांकन की कार्यनीतियाँ।

सभी पूर्वोत्तर राज्यों के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में प्रश्न पत्र तैयार करने पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण

इस प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य के.आर.पी. को प्रश्न निर्धारण के विभिन्न आयामों के साथ सशक्त बनाना और प्रश्नों के विभिन्न रूपों और स्तरों के निर्माण पर प्रायोगिक अनुभव प्रदान करना है। सत्र के दौरान शामिल विषय हैं परीक्षा सुधार— एक सिंहावलोकन, एन.ई.पी. 2020 के आलोक में मूल्यांकन सुधार, परीक्षण, मूल्यांकन और आकलन, रचनात्मक मूल्यांकन और योगात्मक मूल्यांकन, प्रश्नों के प्रकार और रूप, प्रश्नपत्र तैयार करने के लिए दिशानिर्देश, योगात्मक मूल्यांकन के तरीके, परीक्षण मद और ब्लू प्रिंट, प्रश्नपत्र विश्लेषण और समूह प्रस्तुतियों का निर्माण।

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	पूर्वोत्तर क्षेत्र में प्राथमिक स्तर पर एफ.एल.एन. के लिए एल.ओ. आधारित शिक्षण संसाधनों के विकास पर क्षमता निर्माण कार्यक्रम	एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम 31 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2022
2.	वैश्विक नागरिकता शिक्षा (जी.सी.ई.डी.) पर के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण	एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 13–17 फरवरी, 2023
3.	अनुसंधान उपकरणों के विकास पर सभी पूर्वोत्तर राज्यों के के.आर.पी. के लिए क्षमता निर्माण कार्यक्रम	मणिपुर 5–9 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., असम 20–24 फरवरी, 2023
		त्रिपुरा 6–10 मार्च, 2023
4.	माध्यमिक स्तर पर व्यावसायिक अध्यापकों के लिए व्यावसायिक विकास पर प्रशिक्षण	एस.सी.ई.आर.टी., मणिपुर 26–30 सितंबर, 2022
		एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 23–27 फरवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., नागालैंड 10–14 जनवरी, 2023
		एस.सी.ई.आर.टी., सिक्किम 14–18 फरवरी, 2023
5.	मणिपुर की मान्यता प्राप्त जनजातीय भाषाओं के पाठ्यपुस्तक लेखकों के लिए क्षमता निर्माण	मणिपुर 27 जून से 1 जुलाई, 2022

6.	मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर पूर्वोत्तर क्षेत्र के के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	चरण 1 एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 26–30 सितंबर, 2022 चरण 2 एस.सी.ई.आर.टी., असम 19–23 दिसंबर, 2022
7.	पूर्वोत्तर क्षेत्र के सामाजिक विज्ञान में ई-सामग्री के लिए स्क्रिप्ट लेखन में के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	चरण 1 एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 21–25 नवंबर, 2022 चरण 2 एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 27 फरवरी से 3 मार्च, 2023
8.	सभी पूर्वोत्तर राज्यों के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान और गणित में सीखने के प्रतिफलों पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	चरण 1 एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 18–22 जुलाई, 2022 चरण 2 एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 7–11 नवंबर, 2022
9.	पूर्वोत्तर राज्यों के लिए प्रारंभिक स्तर पर मूल्यांकन और आकलन पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 12–17 सितंबर, 2022
10.	सभी पूर्वोत्तर राज्यों के लिए माध्यमिक स्तर पर विज्ञान में प्रश्नपत्र तैयार करने पर के.आर.पी. का क्षमता निर्माण	एन.ई.आर.आई.ई., उमियम 20–24 फरवरी, 2023

6. विस्तार गतिविधियाँ

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने देशभर में अपने हितधारकों तक पहुँचने के लिए राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय बैठकों के साथ-साथ क्षेत्रीय बैठकों/संगोष्ठियों, राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर की प्रतिस्पर्द्धाओं, क्षेत्रीय समीक्षा कार्यशालाओं, परिसरों एवं संवेदीकरण कार्यशालाओं, विस्तार व्याख्यानों, पुस्तक प्रदर्शनियों आदि के रूप में अपने कार्यों का विस्तार किया है। यहाँ व्यापक विस्तार कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, जो एन.आई.ई., आर.आई.ई., सी.आई.ई.टी. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के विभाग पदाधिकारियों तक पहुँचने और राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों को शैक्षणिक सहायता प्रदान करने की गतिविधियों में संलग्न हैं।

वर्ष के दौरान परिषद् द्वारा आयोजित विस्तार कार्यक्रमों में शामिल हैं— बुनियादी और प्रारंभिक स्तर के लिए खिलौनों पर आधारित शिक्षणशास्त्र (टॉय बेस्ट पेडागॉजी) को लोकप्रिय बनाने और समेकित करने के लिए क्षेत्रीय सम्मेलन; बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी (एस.एल.एस.एम.ई.ई.); बच्चों के लिए जवाहरलाल नेहरू राष्ट्रीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी (जे.एन.एन.एस.एम.ई.ई.) 2022; विज्ञान और गणित शिक्षा संसाधन केंद्र; स्कूली बच्चों के लिए राष्ट्रीय जूनियर वैज्ञानिक पुरस्कार; सभी क्षेत्रीय शिक्षा संस्थानों में शैक्षिक किट संसाधन केंद्र (ई.के.आर.सी.) की स्थापना; विज्ञान को लोकप्रिय बनाने का केंद्र; नेशनल लाइब्रेरी ऑफ एजुकेशनल एंड साइकोलॉजिकल टेस्ट (एन.एल.ई.पी.टी.); रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल फेलोशिप 2022; रा.शै.अ.प्र.प. रिसर्च एसोसिएट-शिप (शिक्षाविद्/शोधकर्ता) पूल योजना; ई.आर.आई.सी. गतिविधियों का आयोजन; एस.पी.एम.सी. और ई.आर.आई.सी. की सामान्य निकाय बैठकें और स्वीकृत ई.आर.आई.सी. परियोजनाओं के लिए धन जारी करना; एस.सी.ई.आर.टी./एस.आई.ई. के निदेशकों का सम्मेलन; एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. का सुदृढ़ीकरण; राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना पुरस्कार विजेताओं के लिए पोषण कार्यक्रमों का संचालन; राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना का कार्यान्वयन; रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय के प्रयोक्ताओं के लिए प्रयोक्ता शिक्षा कार्यक्रम; स्कूल और अध्यापक शिक्षा के लिए ई.टी./आई.सी.टी. में संसाधन-सह-गतिविधि केंद्र; वेबसाइटों, मोबाइल ऐप्स और अन्य डिजिटल गतिविधियों का विकास और रखरखाव; इंटर्नशिप के लिए सहयोगी स्कूलों के प्रमुखों और समन्वयक शिक्षकों के लिए कार्यशाला; आर.आई.ई. पूर्व-सेवा शिक्षक कार्यक्रम में स्कूल इंटर्नशिप का संगठन; अनुसंधान और बहु-सांस्कृतिक पहलुओं पर आर.आई.ई. छात्रों को सामुदायिक अनुभव प्रदान करना; डिजिटल युग में माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के बीच पढ़ने की आदत को बढ़ावा देने पर राष्ट्रीय बैठक; राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के संदर्भ में विज्ञान शिक्षा पर पुनर्विचार पर राष्ट्रीय सम्मेलन; बुनियादी स्कूली विषयों और गणित शिक्षा में शिक्षण संसाधनों के विकास और उपयोग में नवाचार; राष्ट्रीय परियोजना प्रगति समीक्षा (पी.पी.आर.) राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) की कार्यशालाएँ, जनसंख्या और किशोरावस्था शिक्षा पर जीवन कौशल विकास आधारित गतिविधियों का आयोजन; महान भारतीय विचारकों के जीवन और कार्यों को मान्यता देने के लिए 'अभिव्यक्ति शृंखला' का आयोजन और विस्तार व्याख्यान; प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूलों में प्री-स्कूल केंद्र; मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (स्व-वित्तपोषित, मिश्रित विधि); डिजिटल युग में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पर राष्ट्रीय वेबिनार; स्कूली पाठ्यक्रम में फोकस को संदर्भ आधारित से योग्यता आधारित शिक्षा

और जनसंख्या शिक्षा पर स्थानांतरित करने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी; वेबिनार शृंखला— सीखना सुनना; मातृभाषा दिवस और 'संवाद' का उत्सव— भाषा, संस्कृति, समाज; और भाषा शिक्षा पर व्याख्यान शृंखला आदि।

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र को लोकप्रिय बनाने के लिए क्षेत्रीय सम्मेलन

वर्ष 2022–23 के लिए प्रस्तावित पाँच में से तीन क्षेत्रीय सम्मेलन तीन आर.आई.ई. में आयोजित किए गए थे, जिसमें उनके अधिकार क्षेत्र के सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को शामिल किया गया था। इन सम्मेलनों में राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। आर.आई.ई. में प्रतिभागियों ने बुनियादी और प्रारंभिक स्तर पर खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के बारे में अपनी पहल साझा की। टॉय बेस्ड पेडागॉजी पर अनुकरणीय कार्य करने वाले स्थानीय कलाकारों को यह दिखाने के लिए आमंत्रित किया गया था कि बच्चों और शिक्षकों के साथ-साथ अभिभावकों और समुदाय को अपने हाथों से खिलौने बनाने और अवधारणाओं को अधिक स्थायी तरीके से सीखने में किस तरह शामिल किया जा सकता है। आर.आई.ई. के छात्र-शिक्षकों को यह प्रदर्शित करने के लिए उचित अवसर दिए गए कि खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र कक्षा की प्रक्रियाओं का अभिन्न अंग कैसे हो सकता है। राज्यों और संघ राज्य क्षेत्र के लिए सभी प्रतिभागियों द्वारा कम या बिना लागत वाली सामग्री के साथ स्थानीय खिलौनों, बोर्ड गेम और अन्य स्व-विकसित खिलौनों की एक प्रदर्शनी लगाई गई थी और यह हर किसी के लिए मनोरंजन के साथ एक बहुत अच्छी सीख थी, क्योंकि यह हमारे देश की विशेषता 'विविधता में एकता' से परिपूर्ण थी।

पढ़ने की समझ और संख्यात्मक ज्ञान के साथ पढ़ने में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत मिशन) के कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय परामर्श बैठकें

शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2021 में पढ़ने की समझ और संख्यात्मकता के साथ पढ़ने में प्रवीणता के लिए राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत) शुरू की गई थी। नई शिक्षा नीति 2020 में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता (एफ.एल.एन.) में सफल होने पर बहुत अधिक ध्यान केंद्रित किया गया है, जिसमें उल्लेख किया गया है कि देश के प्रत्येक बच्चे को 2026–27 तक तीसरी कक्षा के अंत तक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता में सफल होना होगा। शिक्षा मंत्रालय द्वारा 2021 में पढ़ने की समझ और संख्यात्मकता के साथ पढ़ने में प्रवीणता के लिए एक राष्ट्रीय पहल (निपुण भारत) शुरू की गई थी। जैसी कि परिकल्पना की गई है, निपुण भारत मिशन में प्री-स्कूल से कक्षा 3 तक के बच्चों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जो 3 से 9 वर्ष की आयु के बीच हैं। कक्षा 4 और 5 के बच्चे जिन्होंने अभी तक मौलिक क्षमताओं में महारथ हासिल नहीं की है, उन्हें आवश्यक कौशल प्राप्त करने में मदद करने के लिए शिक्षक सहायता और समर्थन, सहकर्मी समर्थन और वर्गीकृत शिक्षण सामग्री भी मिलेगी।

मिशन के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रमुख कार्यनीतियों में कार्यान्वयन के लिए निपुण भारत दिशानिर्देशों का विकास, निष्ठा— मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता 3.0 (12 मॉड्यूल और वीडियो कार्यक्रम) के तहत शिक्षकों का ऑनलाइन प्रशिक्षण, दीक्षा पोर्टल पर विद्या प्रवेश मॉड्यूल और मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता वर्टिकल का विकास शामिल है।

निपुण भारत राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों में क्रियाधीन है। एक ऐसा मंच प्रदान करना महत्वपूर्ण है, जो आमने-सामने हो, जहाँ विभिन्न राज्य और संघ राज्य क्षेत्र अपनी कार्यनीतियों और परिणामों पर चर्चा कर सकें। भौतिक बैठकें कार्यक्रम के भीतर और बाहर आपसी चर्चा और सीखने की सुविधा प्रदान करेंगी। सभी राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों को कवर करते हुए आमने-सामने की चार परामर्श बैठकें आयोजित की गईं। इन बैठकों के दौरान, प्रत्येक राज्य के प्रतिनिधियों ने निपुण भारत मिशन को लागू करने के लिए अपनी वर्तमान और भविष्य की योजनाओं पर एक प्रस्तुति दी।

राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों की प्रस्तुतियों के अलावा कार्यक्रम के दौरान इन महत्वपूर्ण विषयों, जैसे— एन.सी.एफ.-एफ.एस. 2022, बच्चों में विकलांगता की शीघ्र पहचान के लिए 'प्रशस्त', मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के तहत दीक्षा संसाधनों का उपयोग, राज्य स्तरीय हस्तक्षेपों के लिए एफ.एल.एस. 2022 को समझना और भाग लेने वाले राज्यों तथा संघ राज्य क्षेत्रों के अनुरोध पर अन्य विषयों पर शैक्षणिक सत्र निर्धारित किए गए थे। इन संपूर्ण परामर्श बैठकों में भागीदारी और चर्चा विधि का उपयोग किया गया।

भाषा शिक्षण विभाग (डी.ई.एल.)

भारतीय भाषा दिवस उत्सव

सुब्रमण्यम भारती की जयंती के अवसर पर 11 दिसंबर 2022 को भारतीय भाषा दिवस समारोह आयोजित किया गया। तमिल भाषा के साहित्यकार और आलोचक थिरु इसाइक्कवि रामानन ने "सुब्रमण्यम भारती और भारतीय भाषाओं" पर विचार-विमर्श किया। सुब्रमण्यम भारती (11 दिसंबर, 1882–11 सितंबर, 1921) प्रसिद्ध तमिल लेखक, कवि, पत्रकार और भारतीय समाज सुधारक थे। वे आधुनिक तमिल कविता के अग्रणी थे और उन्हें सर्वकालिक महान तमिल साहित्यकारों में से एक माना जाता है।

इस दौरान भाषाओं में एकता और भारत में भाषाओं के संरचनात्मक, साहित्यिक और शैक्षणिक संदर्भ पर चर्चा हुई। भारत जैसे बहुभाषी देश में विविधता कोई मजबूरी नहीं बल्कि स्वीकार्यता है और विविधता प्रकृति का उपहार है, हमें इसका सम्मान करना चाहिए।

थिरु इसाइक्कवि रामानन ने कहा कि भाषाएँ अनेक हैं, रीति-रिवाज भिन्न हैं, यहाँ तक कि रंग-रूप भी अलग-अलग स्थानों पर भिन्न हैं, लेकिन साहित्य एक है। सुब्रमण्यम भारती ने भारत को जोड़ने के लिए भाषा को एक उपकरण के रूप में चुना। इसाइक्कवि ने दर्शकों से सुब्रमण्यम भारती के लेखन में दर्शाए गए उनके आशावाद को समझने का भी आग्रह किया। भारत के भाषा संबंधी परिदृश्य पर प्रस्तुतियाँ; एक कवि, राष्ट्रवादी और पत्रकार के रूप में सुब्रमण्यम भारती की यात्रा पर वीडियो प्रस्तुति और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गईं। नेशनल बुक ट्रस्ट इंडिया की पुस्तक प्रदर्शनी के साथ-साथ 2011 की जनगणना पर आधारित भारतीय भाषाओं, भाषाओं की लिपियों, सुब्रमण्यम भारती की कविता आदि पर पोस्टर प्रस्तुतियाँ भी दी गईं।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस 21 फरवरी, 2023 को मनाया गया। यह दिन भाषा और सौंदर्यशास्त्र के एकीकरण को समझने के उद्देश्य से भाषा कला विषय के तहत मनाया गया। वक्ता ने इस विचार पर जोर दिया कि भारत एक बहुभाषी देश है और भाषाएँ हमारे देश का संसाधन और ताकत हैं। बच्चों की सीखने की क्षमता और रचनात्मक सोच के लिए उनकी मातृभाषा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। प्राचीन काल से ही भाषाओं ने विभिन्न मुद्दों पर सार्थक संवाद को बढ़ाया है और लोगों में सौंदर्य बोध पैदा किया है। स्कूली शिक्षा में बच्चों के सीखने के लिए उनकी भाषाओं के उपयोग पर बल दिया जाना चाहिए। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पाठ्यसामग्री, पूरक सामग्री ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम, जैसे— समझ का माध्यम और भाषा संगम प्रकाशित किए जाते हैं। इस अवसर को चिह्नित करने के लिए सुभद्रा कुमारी चौहान द्वारा *झाँसी की रानी* कविता की नाटकीय प्रस्तुति और सूर्य नमस्कार का चित्रण करने वाला भरतनाट्यम और सुब्रमण्यम भारती की एक कविता प्रस्तुत की गई थी।

कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न (रोकथाम, निषेध और निवारण) अधिनियम 2013, की अधिनियम संख्या 14 पर सप्ताह का आयोजन

रा.शै.अ.प्र.प. ने महिला यौन उत्पीड़न, यौन उत्पीड़न के खिलाफ कानूनी प्रावधानों और कार्यस्थलों पर सुरक्षित और स्वस्थ वातावरण के उपायों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए गतिविधियों का आयोजन किया। पी.ओ.एस.एच. समिति के सदस्यों ने प्रसार के लिए पोस्टर, पी.पी.टी. तैयार किए और एन.आई.ई. और आर.आई.ई. में ऑनलाइन कार्यक्रम आयोजित किए गए।

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की बैठक

इस वर्ष के लिए अल्पसंख्यक प्रकोष्ठ की पहली बैठक 22 अगस्त, 2022 को एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) में आयोजित की गई थी। बैठक में कुल 09 सदस्यों ने भाग लिया। दूसरी बैठक 17 फरवरी, 2023 को आर.आई.ई., मैसूरु में आयोजित की गई, जिसमें 14 सदस्यों ने ऑफलाइन और ऑनलाइन विधि के माध्यम से भाग लिया।

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

वेबिनार शृंखला— सीखने के लिए सुनना

टेलीविजन पर पी.एम. ई-विद्या चैनलों और रा.शै.अ.प्र.प. के यूट्यूब चैनल के माध्यम से सीखने के लिए एक प्रसारण कार्यक्रम वेबिनार शृंखला का आयोजन किया गया है। रा.शै.अ.प्र.प. के इस मंच से स्कूली शिक्षा के समसामयिक और संगत मुद्दों से जुड़े विविध मुद्दों के बारे में जानने का अवसर प्रदान किया जाता रहा है। रा.शै.अ.प्र.प. ने भारतीय प्रवासियों को मातृभूमि से जोड़ने के लिए भारत सरकार के प्रवासी भारतीय शैक्षणिक और वैज्ञानिक संपर्क (प्रभास) कार्यक्रम के साथ भी सहयोग किया है। वर्ष 2022–23 के दौरान; पी.एम. ई-विद्या चैनल 9, 10, 11, 12 पर ऐसे 21 सत्र आयोजित किए गए। रा.शै.अ.प्र.प. की वेबिनार शृंखला के सभी सत्रों के बारे में

वेबिनार शृंखला— 'सीखने के लिए सुनना' की कुछ झलकियाँ

विवरण— इस शृंखला में सीखने के लिए सुनना https://youtube.com/playlist?list=PLUgLcpnv1YifsVIYiNsbEBF7vPg9YdEnm पर देखा जा सकता है। इन्हें रा.शै.अ.प्र.प. के अधिकारिक यूट्यूब चैनल NCERT Official और www.ncert.nic.in पर इवेंट सेक्शन के माध्यम से भी एक्सेस किया जा सकता है। उम्मीद है कि विभिन्न अनुसंधान और विकास संस्थानों, विश्वविद्यालयों, भारतीय प्रवासियों और विभिन्न सरकारी विभागों और मंत्रालयों के विभिन्न विशेषज्ञों के साथ ऐसे अंतरक्रियात्मक सत्रों की शृंखला जारी रहेगी।

विज्ञान की लोकप्रियता के लिए केंद्र

विज्ञान की लोकप्रियता प्रमुख क्षेत्रों में से एक है, जिसके अंतर्गत साइंस पार्क और हर्बल गार्डन नामक दो केंद्र संचालित किए जाते हैं। साइंस पार्क एक खुला पार्क है, जिसमें कार्य करने वाले विभिन्न मॉडल बच्चों, अध्यापकों, अध्यापक-प्राध्यापकों, गैर सरकारी संगठनों और स्कूलों में विज्ञान के शिक्षण से संबंधित अन्य पदाधिकारियों को विज्ञान के कुछ चयनित सिद्धांतों को समझने और उनकी सराहना करने के लिए व्यावहारिक अनुभव प्रदान करते हैं। 'साइंस पार्क' में देश के विभिन्न हिस्सों से पर्यटक आए। इस विस्तार कार्यक्रम से स्कूलों और शैक्षिक योजनाकारों की माँग पर अपने संस्थानों में समान मॉडल विकसित करने में मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है।

2022–23 के दौरान आयोजित विज्ञान लोकप्रियता कार्यक्रमों की झलकियाँ

सभी के बीच वैज्ञानिक सोच पैदा करने के लिए विज्ञान को समर्पित कई महत्वपूर्ण दिन मनाए जा रहे हैं। 27–28 फरवरी, 2023 को 'भारत के स्वदेशी मोटे अनाज और उनके संरक्षण' पर शिक्षाविदों, वैज्ञानिकों और समुदायों की एक अंतरक्रियात्मक बैठक आयोजित करके राष्ट्रीय विज्ञान दिवस 2023 मनाया गया। राष्ट्रीय संवाद की इस बैठक के दौरान, देश के 10 राज्यों से अनुसूचित जनजाति समुदाय के प्रतिनिधियों, वैज्ञानिकों, विद्वानों और शिक्षाविदों ने भाग लिया और मोटे अनाजों की विविधता, उनके संरक्षण, उनके स्वास्थ्य लाभों और संबंधित विषयों पर चर्चा की। भारत के वन समुदायों के प्रतिनिधियों द्वारा सामान्य जागरूकता के लिए मोटे अनाजों की विभिन्न किस्मों को प्रदर्शित किया गया। बैठक के माध्यम से जीवन के विभिन्न क्षेत्रों के लोगों और हितधारकों के बीच स्वदेशी ज्ञान और उसके अभ्यासों से संबंधित जागरूकता और गौरव पैदा करने तथा इसे प्रसारित करने का भी प्रयास किया गया।

साइंस पार्क और हर्बल गार्डन में सेवा-पूर्व अध्यापक और सामुदायिक प्रतिनिधि

बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी (एस.एल.एस.एम.ई.ई.)

इस प्रदर्शनी का उद्देश्य बच्चों को उनकी प्राकृतिक जिज्ञासा, रचनात्मकता, नवीनता और आविष्कारशीलता को आगे बढ़ाने के लिए एक मंच प्रदान करना; बच्चों को यह महसूस कराना कि विज्ञान और गणित हमारे आस-पास है; ज्ञान प्राप्त करने के साथ-साथ सीखने की प्रक्रिया को भौतिक और सामाजिक वातावरण से जोड़कर कई समस्याओं का समाधान करना; पर्यावरण संबंधी मुद्दों और चिंताओं के बारे में जागरूकता पैदा करना; और बच्चों को उनकी रोकथाम तथा शमन आदि के लिए नए विचार तैयार करने के लिए प्रेरित करना है। बच्चों के लिए राज्य स्तरीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी (एस.एल.एस.एम.ई.ई.) 2022–23 और राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.बी.वी.पी.)–2023 का विषय 'प्रौद्योगिकी और खिलौने' था। इसके उप-विषय थे— सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी में उन्नति; पर्यावरण के अनुकूल सामग्री; स्वास्थ्य एवं स्वच्छता; परिवहन एवं नवाचार; और हमारे लिए वर्तमान नवाचार और गणित के साथ ऐतिहासिक विकास। 26 राज्यों एवं संघ राज्य क्षेत्रों ने रा.शै.अ.प्र.प. से उत्प्रेरक अनुदान लिया है। कुछ राज्यों ने राज्य स्तरीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया है और कुछ प्रक्रियाधीन हैं।

राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (आर.बी.वी.पी.) 2022

बच्चों की स्वाभाविक जिज्ञासा और आविष्कारशीलता को आगे बढ़ाने, उनकी रचनात्मकता की ललक को पूरा करने और बच्चों तथा जनता के बीच विज्ञान को लोकप्रिय बनाने के लिए एक मंच प्रदान करने के लिए, रा.शै.अ.प्र.प.

हर वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन करता है। इस वर्ष 49वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2022 का आयोजन 22–27 नवंबर, 2022 तक असम के गुवाहाटी में रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग, असम सरकार के सहयोग से किया गया था। आर.बी.वी.पी. 2022 का उद्घाटन 22 नवंबर, 2022 को श्रीमंत शंकरदेव कला क्षेत्र अंतरराष्ट्रीय सभागार में असम के माननीय राज्यपाल जगदीश मुखी द्वारा किया गया था। रनोज पेगु, *शिक्षा मंत्री*, असम सरकार; श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प.; प्रशांत गोस्वामी, वैज्ञानिक, शिक्षा विभाग, असम सरकार के *सलाहकार*; नानी गोपाल महंत, *सचिव*, स्कूल शिक्षा विभाग, असम सरकार; एस.एन. चौधरी और एम.डी., एस.एस.ए. और ओम प्रकाश भी उद्घाटन समारोह में उपस्थित थे।

आर.बी.वी.पी. 2022 का विषय छह उप-विषयों के साथ 'प्रौद्योगिकी और खिलौने' पर्यावरण के अनुकूल सामग्री; स्वास्थ्य और स्वच्छता; सॉफ्टवेयर और ऐप्स; परिवहन; पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन; और गणितीय मॉडलिंग था। इस प्रदर्शनी में 149 प्रदर्शों को भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था। ये प्रदर्श 25 राज्यों या संघ राज्य क्षेत्रों और अन्य संगठनों से लाए गए थे, जिनमें 78 ग्रामीण क्षेत्रों से और 56 शहरी क्षेत्रों से थे। आस-पास के स्थानों के 15,000 से अधिक लोगों को अनुभव प्राप्त हुआ और उन्होंने उभरते वैज्ञानिकों से बातचीत की।

इस प्रदर्शनी में आयोजित अन्य गतिविधियों में पक्षी अवलोकन, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और भविष्य की मानव जाति जैसे विभिन्न विषयों पर बातचीत; विज्ञान अधिगम में भारतीय ज्ञान प्रणालियों की जड़ें; भारतीय अंतरिक्ष मिशन— उपलब्धियाँ और संभावनाएँ; विज्ञान, अध्यात्मवाद और भारत के विशेष संदर्भ में मानवीय मूल्य; आर.एस.ए. क्रिप्टोग्राफी का परिचय; स्पेस ऑन व्हील', एन.ई.एस.ए.सी., इसरो की एक पहल; विज्ञान के साथ खेलना; त्वरित प्रश्नोत्तरी; विज्ञान शो; कला प्रतियोगिता; रात्रि में आकाश का अवलोकन; और असम के सामुदायिक संसाधनों का प्रदर्शन शामिल था।

26 नवंबर, 2022 को आयोजित समापन समारोह में 27 नवंबर, 2022 को मुख्य अतिथि के रूप में असम के *शिक्षा मंत्री* रनोज पेगु उपस्थित थे। सभी प्रतिभागियों के लिए बुनकरों के गाँव सुआलकुची में एक भ्रमण का आयोजन किया गया था।

विज्ञान और गणित शिक्षा संसाधन केंद्र

स्कूली शिक्षा में विज्ञान और गणित हमेशा अध्ययन के महत्वपूर्ण क्षेत्र रहे हैं। विभिन्न संसाधनों वाला संसाधन केंद्र (पुस्तकें, पत्रिकाएँ, मॉडल, किट आदि) विज्ञान और गणित शिक्षा से संबंधित एक ही स्थान पर शोधकर्ताओं, पाठ्यक्रम डिजाइनरों, सामग्री विकासकर्ताओं, अध्यापक-प्रशिक्षकों, शिक्षकों, विज्ञान और गणित शिक्षा में अन्य सभी हितधारकों के लिए एक उपयोगी सुविधा है। पुस्तकों के वर्गीकरण के लिए डेवी दशमलव वर्गीकरण (डी.डी.सी.) योजना का उपयोग किया जा रहा है और संसाधन केंद्र के स्वचालन के लिए कोहा

[आई.एल.एम.एस.] का उपयोग किया जाता है। विज्ञान और गणित शिक्षा से संबंधित संसाधनों का नियमित रूप से रखरखाव और अद्यतन किया जाता था। पठन सामग्री के प्रसार और उसके लिए रिकॉर्ड बनाए रखने से संबंधित कार्य; संसाधन केंद्र के अन्य अभिलेखों का रखरखाव, संदर्भ/रेफरल सेवाओं में सहायता प्रदान करना भी नियमित रूप से किया गया।

स्कूली बच्चों के लिए राष्ट्रीय जूनियर साइंटिस्ट पुरस्कार

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को विचार में लेकर, माध्यमिक स्तर पर स्कूली छात्रों के लिए एक कार्यक्रम के रूप में राष्ट्रीय जूनियर साइंटिस्ट पुरस्कार नामक कार्यक्रम को युवा और महत्वाकांक्षी छात्रों में अनुसंधान दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के प्रयास के रूप में फिर से नाम दिया गया है। इस विचार के पीछे का उद्देश्य स्कूली छात्रों की वैज्ञानिक जाँच की अंतर्निहित क्षमताओं को पहचानना और नवाचार करने के लिए उनकी जिज्ञासा का पोषण करना है। इस कार्यक्रम में, स्कूली छात्रों से सामाजिक मुद्दों के समाधान के लिए अनुसंधान परियोजना का प्रस्ताव रखने की अपेक्षा की जाती है। इस अभ्यास में वे अनुसंधान/जाँच करते समय अनायास ही विज्ञान प्रक्रिया कौशल से अवगत हो जाते हैं। इसके अलावा, स्कूली छात्रों को एच.आई.ई. मूल संरचना तक पहुँचने का लाभ भी मिलता है। इस कार्यक्रम के लिए दिशानिर्देश रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट www.ncert.nic.in पर विकसित और अपलोड किए गए हैं।

पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस.डी.)

पाठ्यचर्या और आकलन सुधारों पर स्कूल शिक्षा बोर्डों की राष्ट्रीय परामर्श बैठक

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में परिकल्पित पाठ्यचर्या और आकलन सुधारों पर स्कूल शिक्षा बोर्डों की एक राष्ट्रीय परामर्श बैठक 21 नवंबर, 2022 को आयोजित की गई थी, जिसमें 22 स्कूल शिक्षा बोर्डों ने भाग लिया था। आकलन, परीक्षा सुधार और विषय क्षेत्रों में लचीलेपन, राष्ट्रीय क्रेडिट रूपरेखा और राष्ट्रीय उच्च शिक्षा योग्यता फ्रेमवर्क के संबंध में *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020* की अनुशंसाओं पर चर्चा हुई। इस परामर्श से प्राप्त इनपुट को एन.सी.एफ. के लिए राष्ट्रीय संचालन समिति के समक्ष प्रस्तुत किया गया था।

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

ज्ञानोत्सव 2079 प्रदर्शनी में बच्चों से विमर्श करते परिषद् के निदेशक

प्रदर्शित माडलों का अवलोकन करते संसदीय समिति के सदस्य

परिषद् स्थापना दिवस कार्यक्रम में शैक्षिक किट प्रभाग द्वारा विस्तारित गतिविधियों का अवलोकन करते अतिथि

नीचे दिए गए विवरण के अनुसार, शैक्षिक किटों को देश भर में विभिन्न राष्ट्रीय कार्यक्रमों/पुस्तक मेलों में प्रदर्शित किया गया है—

क्र.सं.	कार्यक्रम का नाम	संगठन	दिनांक
1.	19वाँ पुणे पुस्तक मेला	पी.एन.आर. राजन, संयोजक, पुणे पुस्तक मेला	28 अप्रैल–1 मई, 2022
2.	संसदीय समिति का दौरा	रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	22 जून, 2022
3	रा.शै.अ.प्र.प. का स्थापना दिवस समारोह	रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	1 सितंबर, 2022
4.	गोमती पुस्तक महोत्सव लखनऊ, उत्तर प्रदेश	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली	29 अक्तूबर–6 नवंबर, 2022
4.	ज्ञानोत्सव 2079 प्रदर्शनी	शिक्षा संस्कृत उत्थान न्यास	17–19 नवंबर, 2022
5.	राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी	डी.ई.एस.एम., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	22–27 नवंबर, 2022
6.	नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेले का 31वाँ संस्करण	राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, नई दिल्ली	25 फरवरी–5 मार्च, 2023

राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी का दीप प्रज्वलित कर उद्घाटन करते मुख्य अतिथि

पुणे पुस्तक मेले में परिषद् के संकाय की उपस्थिति

शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

राष्ट्रीय शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक परीक्षण पुस्तकालय (एन.एल.ई.पी.टी.)

इस कार्य का उद्देश्य परीक्षण पुस्तकालय को लगातार समृद्ध करना और शोधकर्ताओं को परीक्षण सामग्री की पहचान और उपयोग के संबंध में परामर्श प्रदान करना है। एन.एल.ई.पी.टी. में उपलब्ध परीक्षणों की सूची को अद्यतन किया गया और रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट पर अपलोड किया गया। शोधकर्ताओं एवं चिकित्सकों के लाभ के लिए समायोजन, व्यक्तित्व, लचीलापन, भावनात्मक बुद्धिमत्ता, करियर विचार, तनाव और बौद्धिक विकलांगता के क्षेत्रों में शैक्षिक और मनोवैज्ञानिक परीक्षण मदों का प्रापण किया गया था।

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

ई.आर.आई.सी. गतिविधियों का आयोजन— एस.पी.एम.सी. और ई.आर.आई.सी. की महानिकाय बैठकें और अनुमोदित ई.आर.आई.सी. परियोजनाओं के लिए धन जारी करना

रा.शै.अ.प्र.प. संस्थागत नेटवर्किंग में शैक्षिक अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए, भीतर और बाहर दोनों जगह शोधकर्ताओं के बीच शैक्षिक अनुसंधान में रुचि पैदा करने और बनाए रखने के लिए उपाय कर रही है। अनुसंधान

को बढ़ावा देने के लिए शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति (ई.आर.आई.सी.) के नाम से जानी जाने वाली इस स्थायी समिति की स्थापना वर्ष 1974 में की गई थी। समिति के अध्यक्ष *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. और सह-अध्यक्ष *संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. हैं। ई.आर.आई.सी. सदस्यों में विश्वविद्यालयों और अनुसंधान संस्थानों के शिक्षा और संबद्ध विषयों के प्रतिष्ठित शोधकर्ता और एस.आई.ई. और एस.सी.ई.आर.टी. के प्रतिनिधि शामिल हैं। डी.ई.आर. शैक्षणिक, प्रशासनिक और वित्तीय सहायता का सचिवालय है। रा.शै.अ.प्र.प. के माननीय अध्यक्ष (शिक्षा मंत्री, भारत सरकार) द्वारा आठ बाह्य विशेषज्ञ नामित किए गए।

इस कार्यक्रम के मुख्य उद्देश्य हैं— (i) ई.आर.आई.सी. के तहत वित्त पोषण के लिए प्राप्त नए अनुसंधान प्रस्तावों के मूल्यांकन के लिए अनुवीक्षण-सह-प्रगति निगरानी समिति (एस.पी.एम.सी.) की बैठक आयोजित करना; (ii) चल रही ई.आर.आई.सी. अनुसंधान परियोजनाओं की प्रगति की निगरानी करना और उनकी प्रगति की निगरानी के साथ-साथ रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टरेट फेलोशिप के अनुप्रयोगों पर विचार करना; (iii) विभिन्न ई.आर.आई.सी. गतिविधियों की जाँच के लिए ई.आर.आई.सी. की आम सभा की बैठक आयोजित करना; और (iv) अनुमोदित ई.आर.आई.सी. परियोजनाओं के लिए धनराशि जारी करना।

ई.आर.आई.सी. की अनुवीक्षण-सह-प्रगति निगरानी समिति (एस.पी.एम.सी.) की दो बैठकें 2–3 फरवरी, 2023 और 1–2 मार्च, 2023 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में आयोजित की गईं। फेलोशिप के लिए 10 डॉक्टरेट फेलो की सिफारिश की गई थी। ई.आर.आई.सी. के तहत वित्तपोषण के लिए चार नई अनुसंधान परियोजनाओं की सिफारिश की गई थी। 3 मार्च, 2023 को एन.आई.ई., नई दिल्ली में एक दिवसीय ई.आर.आई.सी. बैठक आयोजित की गई। वर्तमान में 36 अनुसंधान परियोजनाएँ प्रगति पर हैं। 19 ई.आर.आई.सी. परियोजनाएँ पूरी हो गईं और रिपोर्ट प्राप्त हो गईं। नियमानुसार धनराशि जारी करने की कार्रवाई चल रही है।

राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर आयोजित अनुसंधान सारों का संकलन

रा.शै.अ.प्र.प. ने उचित वर्गीकरण के तहत अपलोड करने और आम जनता के लिए उपलब्ध कराने के लिए एक वेब पोर्टल बनाने की दृष्टि से एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. द्वारा किए गए शोध के शोध सार तैयार करने का काम शुरू किया है। इसके सार-संक्षेप विकसित करने का प्रारूप तैयार कर लिया गया है। विकसित प्रारूप के आधार पर सार संग्रहित किया गया है। कमियों/अनुपस्थित पक्षों की पहचान करने के लिए सार की जाँच की जा रही है और संशोधन और पुनः प्रस्तुत करने के लिए संबंधित समन्वयकों के साथ प्रतिक्रिया भी साझा की जा रही है। कुछ संशोधनों के बाद प्राप्त सार को रा.शै.अ.प्र.प. पोर्टल पर अपलोड करने के लिए अंतिम रूप दिया जा रहा है।

रा.शै.अ.प्र.प. रिसर्च एसोसिएटशिप (शिक्षाविद्/शोधकर्ता पूल योजना)

यह योजना रा.शै.अ.प्र.प. में उन युवा शिक्षाविदों/शैक्षिक शोधकर्ताओं के अनुभव का उपयोग करने के लिए शुरू की गई है, जिन्होंने स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित विषयों पर पी.एचडी. की है, लेकिन अभी तक उन्हें नियमित नौकरी नहीं मिली है। इससे इन युवाओं को स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा से संबंधित अपने संगत क्षेत्रों में योगदान करने और अनुभव प्राप्त करने का मौका मिलेगा।

इस कार्यक्रम के दो प्रमुख उद्देश्य हैं— (i) युवा अनुसंधान प्रतिभा का उपयोग करना और उन्हें कुछ अवधि के लिए रा.शै.अ.प्र.प. में काम करने का अवसर देकर स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार और अनुसंधान जारी रखने के लिए प्रोत्साहित करना; और (ii) स्कूल शिक्षा पर राष्ट्रीय कार्य सूची के अनुरूप, प्राथमिकता वाले क्षेत्रों पर काम करने के लिए कुछ नए अतिरिक्त प्रयासों के लिए रा.शै.अ.प्र.प. में एक तंत्र रखना।

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

स्कूलों और अध्यापक शिक्षा संस्थानों के लिए शिक्षा में नए अभ्यासों और प्रयोगों के लिए राष्ट्रीय पुरस्कार

इस योजना का मुख्य उद्देश्य शिक्षण अधिगम में सुधार के लिए नए अभ्यासों और प्रयोगों की क्षमता के बारे में अध्यापकों/अध्यापक प्रशिक्षकों को संवेदनशील बनाना; स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा के विभिन्न क्षेत्रों में सुधार के लिए नए विचारों और अभ्यासों को आजमाने के लिए अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को प्रोत्साहित करना; अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को उनके सामने आने वाली समस्याओं की पहचान करने और उनके समाधान खोजने के लिए यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाने के लिए प्रोत्साहित करना, नवाचारों को प्रोत्साहित करके स्कूलों और अध्यापक शिक्षा संस्थानों में एक ऐसा माहौल तैयार करना जिससे उनकी स्थिरता सुनिश्चित हो सके; अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को सभी हितधारकों के साथ अपने नए विचारों को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करना है। स्कूल के अध्यापकों/अध्यापक प्रशिक्षकों को दिए जाने वाले पुरस्कारों की कुल संख्या 60 (स्कूलों के लिए 40— अध्यापक और अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए 20) है। प्रत्येक चयनित अध्यापक/अध्यापक प्रशिक्षक को प्रमाणपत्र के साथ 10,000 रुपये की धनराशि प्रदान की जाती है।

वर्ष के दौरान, स्कूली अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों से परियोजना प्रस्ताव आमंत्रित किए गए थे। आर.आई.ई. स्तर पर चयनित परियोजना प्रस्तावों का मूल्यांकन डी.टी.ई., रा.शै.अ.प्र.प. स्तर पर किया गया। डी.टी.ई, रा.शै.अ.प्र.प. स्तर पर कुल 26 (04 अजमेर, 05 भुवनेश्वर, 11 मैसूरु, 05 भोपाल और 01 एन.ई.आर.आई.ई. शिलांग) परियोजना प्रस्तावों का चयन किया गया। इन चयनित परियोजना प्रस्तावों के समन्वयकों एवं विद्यालयों/संस्थानों के प्रमुखों को चयन के बारे में सूचित किया गया तथा नवाचारों को आगे बढ़ाने के लिए कहा गया। शैक्षणिक मार्गदर्शन प्रदान किया गया है और मौके पर अवलोकन और मार्गदर्शन के लिए शैक्षणिक दौरों की योजना बनाई गई है। चयनित अध्यापकों और अध्यापक प्रशिक्षकों को राष्ट्रीय संगोष्ठी में रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा। इसमें 10,000 रुपये नकद देने का अंतिम चयन परियोजना रिपोर्ट की संयुक्त रेटिंग और राष्ट्रीय संगोष्ठी में इसकी प्रस्तुति के आधार पर किया जाएगा।

शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना का कार्यान्वयन

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना (एन.टी.एस.एस.) रा.शै.अ.प्र.प. का एक प्रमुख कार्यक्रम है। इसका आयोजन 1963 से किया जा रहा है। इस योजना का उद्देश्य हर साल दो स्तरीय प्रक्रिया के माध्यम से चयनित छात्रों की पहचान करना और उनका पोषण करना है। एन.टी.एस.एस. में प्रतिभाशाली छात्रों को मासिक छात्रवृत्ति के रूप में वित्तीय सहायता प्रदान करके मदद की जाती है और उनके लिए पोषण कार्यक्रम भी संचालित किया जाता है। वर्तमान योजना के तहत प्रत्याशियों को छात्रवृत्ति विज्ञान और सामाजिक विज्ञान में डॉक्टरेट स्तर तक पाठ्यक्रम और चिकित्सा और इंजीनियरिंग जैसे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में द्वितीय-डिग्री स्तर तक पाठ्यक्रम करने के लिए सहायता प्रदान की जाती है। इस समय तक देश में 2000 छात्रवृत्तियाँ प्रदान की जाती हैं, जिनमें अनुसूचित जाति के लिए 15 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति के लिए 7.5 प्रतिशत, अन्य पिछड़े वर्ग के लिए 27 प्रतिशत, आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए 10 प्रतिशत और प्रत्येक श्रेणी के अंदर बेंचमार्क विकलांगता वाले छात्रों के समूह के लिए 4 प्रतिशत आरक्षण होता है। वर्ष 2020–21 में राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा 24 अक्तूबर, 2021 को देशभर के 50 शहरों में 68 केंद्रों पर

ऑफलाइन मोड में आयोजित की गई थी। एन.टी.एस.ई. छात्रवृत्ति पुरस्कार के लिए कुल 2033 छात्रों को सफल घोषित किया गया।

एन.टी.एस. पुरस्कार विजेताओं के लिए पोषण कार्यक्रम

एन.टी.एस. पुरस्कार विजेताओं के लिए पोषण कार्यक्रम मुख्य रूप से वृद्धि और विकास के लिए अनुकूल स्थिति बनाकर पुरस्कार विजेताओं को उनकी रुचि के शैक्षणिक क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए जागरूकता और अवसर प्रदान करने पर केंद्रित है। ये कार्यक्रम मुख्य रूप से पुरस्कार विजेताओं के लिए आयोजित किए जाते हैं जो कक्षा 11वीं या 12वीं में हैं। वर्ष 2021–22 के दौरान तीन पोषण कार्यक्रम आयोजित किए गए और वर्ष 2022–23 में, आई.आई.टी., आई.आई.एस.ई.आर., एन.आई.टी., टी.आई.एस.एस. आदि जैसे उच्च प्रतिष्ठित संस्थानों के सहयोग से छह पोषण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

G20 गतिविधियाँ

भारत के G20 देशों की अध्यक्षता संभालने के गौरवपूर्ण क्षण के रूप में, शिक्षा कार्य समूह के तहत गतिविधियों की एक शृंखला शुरू की गई है। चूँकि भारत के पास जनवरी से दिसंबर 2023 तक G20 की अध्यक्षता है, इसलिए शिक्षा मंत्रालय के तत्वावधान में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा निम्नलिखित गतिविधियाँ की गईं—

स्कूल और कॉलेज के छात्रों के लिए पठन सामग्री

स्कूलों और विश्वविद्यालयों में छात्रों हेतु सदस्य देशों के बीच आर्थिक सहयोग और विकास के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच के रूप में G20 से छात्रों को परिचित कराने के लिए पठन सामग्री G20 सामग्री की उत्पत्ति, उद्देश्य और महत्व को दर्शाती है। यह भारत की अध्यक्षता पर भी प्रकाश डालता है, जिसे देश के लिए अपनी संस्कृति, मूल्यों, उपलब्धियों को प्रदर्शित करने और अन्य देशों से सीखने के लिए एक महत्वपूर्ण अवधि के रूप में देखा जाता है।

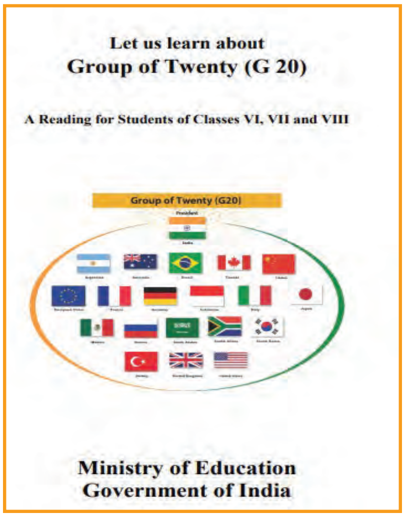

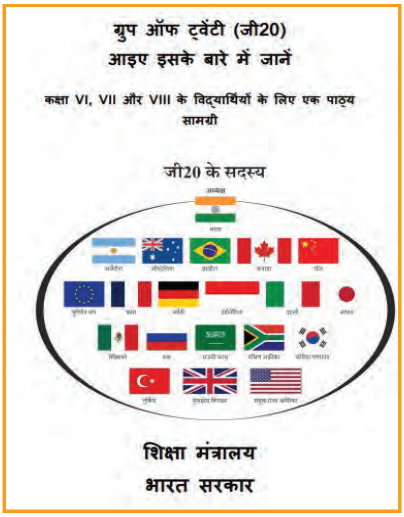

तैयार की गई पठन सामग्री का उपयोग राष्ट्रीय स्तर की स्कूल प्रणालियों के साथ-साथ विभिन्न देशों में छात्रों और अध्यापकों द्वारा किया जा रहा है। ये सामग्रियाँ विद्यार्थियों के लिए G20 क्विज़ में शामिल होने के लिए फायदेमंद हैं, और बड़ी संख्या में छात्र इन्हें पढ़ रहे हैं और प्रतियोगिता में भाग ले रहे हैं।

रा.शै.अ.प्र.प.

G20 पर वीडियो कार्यक्रम

G20 पर चर्चा कार्यक्रम में सहभागिता करते छात्र

अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी (सी.आई.ई.टी.) की मदद से विकसित किया गया है। अंग्रेजी और हिंदी में G20 पर एक अध्यापक और दो छात्रों के साथ एक वीडियो चर्चा कार्यक्रम विकसित किया गया है। इस वीडियो चर्चा कार्यक्रम का उद्देश्य माध्यमिक और वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर छात्रों को G20, इसके दर्शन, सदस्य देशों और संगठन के बारे में परिचित कराना है कि भारत की अध्यक्षता कैसे अद्वितीय है और यह दुनिया के लिए किस तरह योगदान कर रहा है? राष्ट्रीय और राज्य दोनों स्तरों पर सभी स्कूल प्रणालियों में विद्यार्थी इसे दीक्षा, पी.एम. ई-विद्या चैनलों पर चैनल 6 से 12 और रा.शै.अ.प्र.प. के यूट्यूब चैनल अर्थात NCERT Official पर देख रहे हैं। देशभर में स्कूल प्रणालियों ने चर्चा के आधार पर प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिताओं, वार्ता और बहस का आयोजन किया, G20 और भारत की अध्यक्षता पर सामान्य विषय और G20 की अध्यक्षता में भारत के नेतृत्व में एक क्षेत्र के रूप में शिक्षा कैसे लाभान्वित हो सकती है।

G20 की विभिन्न शिक्षा कार्य समूह की बैठक एवं प्रदर्शनी में भागीदारी

देशभर में विभिन्न स्थानों पर आयोजित शिक्षा कार्य समूह की बैठक के हिस्से के रूप में आयोजित कार्यक्रमों में रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न विभागों और घटकों की गतिविधियों और परिणामों को प्रदर्शित किया। इसमें प्रस्तुत किए गए प्रदर्शों में विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग द्वारा आयोजित राष्ट्रीय विज्ञान प्रदर्शनी के विज्ञान प्रदर्श, विज्ञान, गणित, भाषा जैसे विषयों में शैक्षिक किट और शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.) द्वारा विकसित अन्य प्रदर्श शामिल हैं।

इसके अतिरिक्त, जादुई पिटारा, प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.) द्वारा बनाई गई मूलभूत साक्षरता सामग्री, केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) द्वारा डिजाइन की गई डिजिटल पहल और सामग्री, व्यावसायिक शिक्षा पहल और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.), भोपाल द्वारा विकसित सामग्री के साथ-साथ स्कूली शिक्षा में रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अन्य महत्वपूर्ण नवाचार और प्रयास शामिल हैं।

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय के प्रयोक्ताओं के लिए प्रयोक्ता शिक्षा कार्यक्रम

रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय के प्रयोक्ताओं के लिए 'प्रयोक्ता शिक्षा कार्यक्रम' पुस्तकालय के प्रयोक्ताओं की संस्थागत अनुसंधान आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए एक महत्वपूर्ण गतिविधि है। सूचना साक्षरता क्षमताओं का एक समूह है, जिसके लिए "व्यक्तियों को जानकारी की आवश्यकता होने पर पहचानने की आवश्यकता होती है और आवश्यक जानकारी का पता लगाने, मूल्यांकन करने और प्रभावी तरीके से उपयोग करने की क्षमता" आवश्यक होती है। रा.शै.अ.प्र.प. पुस्तकालय के प्रयोक्ताओं के लिए 06 दिसंबर, 2022 को पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा वी.के. जगजीवन, यूनिवर्सिटी लाइब्रेरियन, इग्नू, नई दिल्ली द्वारा शिक्षा में प्रशिक्षण और अनुसंधान के लिए सक्षम जानकारी पर प्रयोक्ता शिक्षा कार्यक्रम आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में प्रयोक्ताओं को पुस्तकालय संसाधनों और सेवाओं का उपयोग करने के लिए पुस्तकालय के साथ जुड़ाव बनाए रखने में मदद की जाती है।

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

60वीं कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) की बैठक

कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.), परिषद् की सर्वोच्च शैक्षणिक संस्था है, जिस पर सभी योजनाओं, कार्यक्रमों, अनुसंधान प्रस्तावों आदि पर विचार करने और परिषद् के काम के शैक्षणिक पहलुओं की जाँच करना और कार्यक्रमों के विकास के लिए एक समन्वित दृष्टिकोण सुनिश्चित करने की जिम्मेदारी है। ए.सी./एम.सी. के

पी.ए.सी. की 60वीं बैठक

अनुमोदन के बाद घटक इकाइयों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम प्रस्तावों को अनुमोदन के लिए पी.ए.सी. के समक्ष रखा जाता है। कार्यक्रम के प्रस्ताव को मंजूरी के लिए पी.ए.सी. में रखने से पहले, इसकी जाँच आई.ए.बी./डी.ए.बी. और एम.सी./ए.सी. द्वारा की जाती है। पी.ए.सी. में पाँच बाहरी विशेषज्ञ, एस.सी.ई.आर.टी. के पाँच निदेशक, सी.आई.ई.टी. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल के संयुक्त निदेशक, आर.आई.ई. के प्रधानाचार्य और डीन ऑफ इंस्ट्रक्शन, एन.आई.ई. विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठ के प्रमुख और प्रत्येक एन.आई.ई. विभाग/प्रभाग/प्रकोष्ठ, सी.आई.ई.टी., पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल और एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) से एक संकाय सदस्य शामिल हैं।

वर्ष 2023–24 के कार्यक्रमों को मंजूरी देने के लिए, 60वीं पी.ए.सी. बैठक 21–22 मार्च, 2023 को दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. और पी.ए.सी. अध्यक्ष की अध्यक्षता में मिश्रित विधि में आयोजित की गई थी। इस बैठक की शुरुआत दिनेश कुमार, *डीन* (अनुसंधान) एवं *अध्यक्ष* पी.एम.डी. के स्वागत भाषण के साथ हुई और श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक* और *उपाध्यक्ष,* पी.ए.सी. ने वर्ष 2022–23 की परिषद् की उपलब्धियों को प्रस्तुत किया। माननीय शिक्षा मंत्री द्वारा नामित बाहरी *सदस्यों*, के. रामासुब्रमण्यम, भारतीय संस्कृत विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ, आई.आई.टी., मुंबई; ऋषि गोयल, *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी. हरियाणा; और विरूपाक्ष वी जद्दीपाल, *सचिव*, महर्षि संदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन ने 60वीं पी.ए.सी. बैठक में भाग लिया और बैठक के दौरान बहुमूल्य सुझाव दिए, जिससे देश में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा लाने के लिए संगत शैक्षणिक कार्यक्रम तैयार करने और अनुमोदित करने में मदद मिली।

वित्तीय-सह-प्रशासनिक स्वीकृतियों का प्रसंस्करण

पी.एम.डी. एवं पी.ए.सी. अनुमोदित कार्यक्रमों के संचालन के लिए विभिन्न संस्थानों और विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों/समूहों को धन आवंटित करता है। सी.आई.ई.टी. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. के संयुक्त निदेशक और आर.आई.ई. के प्रधानाचार्य संबंधित संस्थानों के निधि के व्यय के लिए नियंत्रण प्राधिकारी हैं। हालाँकि, एन.आई.ई. विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठ द्वारा संचालित कार्यक्रमों के मामले में, वित्तीय-सह-प्रशासनिक मंजूरी जारी करने से पहले संबंधित इकाइयों द्वारा प्रस्तुत कार्यक्रम प्रस्तावों की जाँच पी.एम.डी. द्वारा की जाती है। इसके अलावा, एन.आई.ई. विभाग/प्रभाग/प्रकोष्ठ शिक्षा मंत्रालय के पी.ए.बी. द्वारा अनुमोदित समग्र शिक्षा के तहत कार्यक्रम आयोजित करता है। पी.एम.डी. प्रस्तावों की भी जाँच करता है और पी.ए.बी. द्वारा वित्तपोषित विभिन्न विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठ द्वारा प्रस्तुत गतिविधियों/कार्यक्रमों के लिए मंजूरी जारी करता है। विभिन्न कार्यक्रमों के संचालन के लिए पी.एम.डी. द्वारा 600 से अधिक स्वीकृतियाँ जारी की गईं।

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

स्कूल और अध्यापक शिक्षा के लिए ई.टी./आई.सी.टी. में संसाधन-सह-गतिविधि केंद्र

लगभग 100 प्रतिभागियों के लिए 6–17 जून, 2022 तक डिजिटल लर्निंग और मल्टीमीडिया पर बच्चों (6–10) के लिए एक ग्रीष्मकालीन शिविर आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में 8,661 सामान्य पुस्तकों और 5,920 बाल साहित्य के साथ-साथ पत्रिकाओं और समाचार पत्रों के साथ सी.आई.ई.टी. की पुस्तकें तथा मीडिया लाइब्रेरी भी शामिल हैं। संसाधन-सह-गतिविधि केंद्र में विभिन्न संगठनों के लिए आयोजित एक्सपोजर विजिट और इंटर्नशिप भी शामिल हैं।

तालिका—अप्रैल 2022–मार्च 2023 के दौरान एक्सपोजर विजिट का विवरण

क्र.सं.	संस्थान/कॉलेज/संगठन का नाम	छात्रों की कुल संख्या	संकाय सदस्य	यात्रा की तिथि
1.	बी.एड., जे.आई.एम.एस., ग्रेटर नोएडा के छात्र	74		6 अप्रैल, 2022
2.	एडी एवं पी.आर. विभाग, आई.आई.एम.सी., दिल्ली के छात्र	77		8 अप्रैल, 2022
3.	बी.एड., एफ.आई.एम.टी., दिल्ली के छात्र	74		21 अप्रैल, 2022
4.	बी.एड., सेंट लॉरेंस कॉलेज, दिल्ली के छात्र	95		27 अप्रैल, 2022
5.	बी.एड. और बी.एल.एड., के.आर. मंगलम विश्वविद्यालय, गुरुग्राम, हरियाणा के छात्र	53		13 मई, 2022
6.	बी.एड. महर्षि वाल्मिकी कॉलेज ऑफ एजुकेशन, दिल्ली विश्वविद्यालय के छात्र	140		7–8 जुलाई, 2022
7.	बी.एड., डी.आई.आर.डी., गुरु गोविंद सिंह इंद्रप्रस्थ विश्वविद्यालय के छात्र	100		26 सितंबर, 2022
8.	फिनलैंड से जी.आई.एन.टी.एल. भारत प्रतिनिधिमंडल	7		19 सितंबर, 2022
9.	चिल्ड्रेन्स यूनिवर्सिटी, गांधीनगर, गुजरात	60		20 सितंबर, 2022
10.	बी.एड., आर.आई.ई. भोपाल के छात्र	14		4 नवंबर, 2022
11.	शैक्षिक योजना और प्रशासन के स्नातकोत्तर डिप्लोमा में अध्ययनरत एन.आई.ई.पी.ए. प्रतिभागी	18		18 नवंबर, 2022
12.	एम.एड., हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय के छात्र	15	1	25 नवंबर, 2022
13.	बी.एड., एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली के छात्र	123		30 नवंबर, 2022
14.	बी.सी.पी. एस.के.वी., बाबरपुर, शाहदरा, दिल्ली	53	4	8 दिसंबर, 2022
15.	बी.ए. (जे.एम.सी.) द्वितीय वर्ष के एम.ई.आर.आई. कॉलेज के छात्र	111	2	12 दिसंबर, 2022
16.	बी.ए. (जे.एम.सी.) प्रथम वर्ष के एम.ई.आर.आई. कॉलेज के छात्र	41	1	13 दिसंबर, 2022
17.	बी.ए. (जे.एम.सी.) तृतीय वर्ष के एम.ई.आर.आई. कॉलेज के छात्र	41	1	14 दिसंबर, 2022
18.	बी.एड., एम.एड., महाराजा श्रीराम चंद्र भंजदेव विश्वविद्यालय, ओडिशा के छात्र	84	4	23 दिसंबर, 2022
19.	एस.ए.आर.डी., दिल्ली से अकादमिक फैसिलिटेटर	63	2	11 जनवरी, 2023
20.	आर.आई.ई. मैसूरु के एम.एससी.मेड. छात्र	31	1	31 जनवरी, 2023
21.	कक्षा 5–7, पल्लवंजलि इंस्टीट्यूट, गुरुग्राम के छात्र	21	4	3 फरवरी, 2023
22.	एम.एससी., लेडी इरविन कॉलेज, नई दिल्ली के छात्र	25	1	16 फरवरी, 2023
23.	डी.एल.एड., विद्या प्रशिक्षण संस्थान, दिल्ली के छात्र	135	5	24 फरवरी, 2023
24.	बी.एल.एड., होम इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक, दिल्ली के छात्र	75	1	2 मार्च, 2023
25.	बी.एड., एस.सी.ई.आर.टी. दिल्ली से छात्र	75	4	3 मार्च, 2023

तालिका— 2022–23 के दौरान सी.आई.ई.टी. द्वारा आयोजित इंटर्नशिप कार्यक्रमों का विवरण

क्र.सं.	संस्थान/कॉलेज/संगठन का नाम	छात्रों की कुल संख्या	संकाय सदस्य	यात्रा की तिथि
1.	आई.एस.एल.आर.टी.सी., नई दिल्ली से आई.एस.एल. इंटरप्रिटेशन (डी.आई.एस.एल.आई.) में डिप्लोमा के छात्रों के लिए फील्ड वर्क	43		11–29 अप्रैल, 2022
2.	भारतीय जनसंचार संस्थान (आई.आई.एम.सी.), दिल्ली	20		4 अप्रैल–30 मई, 2022
3.	एन.आई.ई.पी.ए. से एम.फिल., पीएच.डी. के छात्र	1		20 जून–31 जुलाई, 2022
4.	ऋषिहुड विश्वविद्यालय, सोनीपत	2		11–29 जुलाई, 2022
5.	बी.टेक. वर्ल्ड कॉलेज ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमेंट, गुरुग्राम के छात्र	1		22 अगस्त–22 सितंबर, 2022
6.	बी.एड., आर.आई.ई., भोपाल के छात्र	6		31 अक्तूबर–4 नवंबर, 2022
7.	बी.एड., नागालैंड विश्वविद्यालय के छात्र	14	2	31 अक्तूबर–4 नवंबर, 2022
8.	डॉक्टरेट स्कॉलर के लिए रा.शै.अ.प्र.प. फेलोशिप	1		21 नवंबर–22 दिसंबर, 2022
9.	एम.एड., जामिया मिलिया इस्लामिया, दिल्ली के छात्र	13		26 दिसंबर 2022–6 जनवरी, 2023

वेबसाइट, मोबाइल ऐप्स और अन्य डिजिटल गतिविधियाँ

सी.आई.ई.टी. 13 वेबसाइटों का विकास और रखरखाव करता है और ऐप नियमित आधार पर विकसित और रखरखाव किए जाते हैं। इसके तहत विभिन्न गतिविधियाँ की गईं, जिनमें शामिल हैं— रा.शै.अ.प्र.प. की नवीनतम पाठ्यपुस्तकों को वेबसाइट पर अपडेट किया गया और सभी पाठ्यपुस्तकों का क्यू.आर. कोड परीक्षण किया गया। इन्हें फ्लिपबुक प्रारूप में ई-पाठशाला पोर्टल पर भी अपडेट किया गया। आई.सी.टी. पुरस्कारों के लिए पोर्टल को पूरे भारत से प्रविष्टियों के लिए लाइव किया गया। वर्ष 2022–23 की पाठ्यपुस्तकों के लिए ई.पी.यू.बी. बनाया गया और ई-पाठशाला पर अपलोड किया गया। कक्षा 9–12 के प्रयोगशाला मैनुअल दीक्षा (विद्यादान) पर अपलोड किए गए थे। एन.सी.एफ. सर्वेक्षण मोबाइल ऐप का ब्लू स्टैक प्लेयर के तहत परीक्षण किया गया। ई-पाठशाला और दीक्षा के लिए एक्सेसिबिलिटी-स्तरीय प्रयोक्ता सर्वेक्षण फॉर्म और पोस्टर विकसित किए गए। नवीनतम ए.पी.के. फाइल/नवीनतम संस्करण (एंड्रॉइड/आई.ओ.एस.) ई-पाठशाला कंसोल में प्रकाशित किया गया। प्रशस्त ऐप-स्कूलों के लिए एक विकलांगता स्क्रीनिंग चेकलिस्ट लॉन्च की गई। ई-पाठशाला मोबाइल ऐप जियो बुक पर अपलोड किया गया और दीक्षा पर कुल 1,335 आई.एस.एल. वीडियो अपलोड किए गए। आवेदन आमंत्रित करने के लिए स्कूलों और शिक्षकों की शिक्षा के लिए अखिल भारतीय बाल शैक्षिक सामग्री प्रतियोगिता (ए.आई.सी.ई.सी.सी.सी.) के लिए एक पोर्टल विकसित किया गया। रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट के तहत लोक शिकायत पोर्टल बनाया गया और साप्ताहिक आधार पर इसकी निगरानी की जाती है। सी.आई.ई.टी. की नई वेबसाइट को लाइव किया गया और परीक्षा पर चर्चा 2023 के डेटा को समेकित और पृथक्करण किया गया।

वर्ष 2022–2023 के लिए स्कूल शिक्षकों, अध्यापक प्रशिक्षकों और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए दीक्षा/आई.सी.टी. उत्कृष्टता पुरस्कार

इन पुरस्कारों की घोषणा के लिए विज्ञापन 1 मई, 2022 को समाचार पत्रों में प्रकाशित किया गया था और नियमित संपार्श्विक एवं रचनात्मक सामग्री सोशल मीडिया हैंडल के माध्यम से प्रसारित की गई थी। पोर्टल को वर्ष 2020 और

2021 के लिए अपडेट किया गया था, क्योंकि वर्ष 2021 के लिए दो और श्रेणियाँ अर्थात, अध्यापक प्रशिक्षक और सर्वश्रेष्ठ अभ्यास करने वाले राज्य/संघ राज्य क्षेत्र पेश की गई थीं। कुल मिलाकर 1,292 शिक्षकों, 98 अध्यापक प्रशिक्षकों और 20 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों ने पोर्टल पर सफलतापूर्वक आवेदन किया। सभी राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र द्वारा पोर्टल पर प्राप्त प्रविष्टियों की जाँच की है और राष्ट्रीय चयन के लिए 258 शॉर्टलिस्ट किए गए शिक्षकों और 54 अध्यापक प्रशिक्षकों का विवरण भेजा है। जूरी बैठकें और एक पुरस्कार समारोह की योजना बनाई जा रही थी।

गुणवत्तापूर्ण डिजिटल सामग्री के निर्माण और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के साथ समन्वय में सुधार के लिए महोत्सव, आई.सी.टी. मेला, प्रतियोगिताओं का आयोजन

अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया में ई-सामग्री के निर्माण और उपयोग को प्रोत्साहित करने के लिए हर साल अखिल भारतीय प्रतियोगिता आयोजित की जाती है। वर्ष 2021 की प्रतियोगिता 31 मार्च, 2022 को आयोजित की गई थी। इस वर्ष की प्रतियोगिता के लिए प्रविष्टियाँ नवंबर, 2022 के लिए भेजने की घोषणा की गई थी। ए.आई.सी.ई.ई.सी. सी. का समापन समारोह 27 मार्च, 2023 को सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली में आयोजित की गई थी। दिन के दौरान छह सत्रों में अध्यक्षों और संयोजकों द्वारा चर्चा के बाद विजेता कार्यक्रमों का पूर्वावलोकन/प्लेबैक किया गया। जूरी इंटरेक्शन पर एक सत्र भी आयोजित किया गया था। समापन सत्र के दौरान, 657 प्रविष्टियों में से 77 प्रविष्टियों को विभिन्न श्रेणियों में पुरस्कृत किया गया। सभी विजेताओं को स्मृति चिह्न, प्रमाणपत्र और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इस समारोह की शोभा पद्मश्री डॉ. जे.के. बजाज, *अध्यक्ष* आई.सी.एस.एस.आर.; श्रीधर श्रीवास्तव, *संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. और प्रत्यूष कुमार मंडल, *सचिव*, रा.शै.अ.प्र.प. थे। प्रतियोगिता के समापन समारोह के साथ-साथ शिक्षा में ई.टी./आई.सी.टी. के क्षेत्र में सर्वोत्तम अभ्यासों और नए नवाचारों पर प्रदर्शनी भी आयोजित की गई।

स्वयं पर एम.ओ.ओ.सी. के लिए पाठ्यक्रमों का विकास और रोल-आउट (कक्षा 9वीं–12वीं के लिए स्कूल एम.ओ.ओ.सी. और अध्यापक शिक्षा के लिए एम.ओ.ओ.सी.एस.)

पाठ्यक्रम समन्वयकों के लिए एक अभिविन्यास आयोजित किया गया और विकास एवं प्रसार की प्रक्रिया को साझा किया गया। पी.एम. ई-विद्या के वीडियो को मौजूदा पाठ्यक्रम के साथ मैप किया गया और वीडियो को पाठ्यक्रम में समेकित किया गया। निम्नलिखित चक्र आयोजित किए गए और प्रमाणपत्र जारी किए गए—

- चक्र 8 (दिसंबर, 2021–मई, 2022)— 11 विषयों में 28 पाठ्यक्रम पेश किए गए और 29,723 पाठ्यक्रम में शामिल हुए।
- चक्र 9 (अप्रैल–अक्तूबर, 2022)— 11 विषयों में 28 पाठ्यक्रम पेश किए गए और 22,653 पाठ्यक्रम में शामिल हुए।
- चक्र 10 (अक्तूबर 2022–मार्च, 2023)— 11 विषयों में 28 पाठ्यक्रम पेश किए गए और 21,792 पाठ्यक्रम में शामिल हुए।

अन्य प्लेटफार्मों के माध्यम से पेश करने के लिए पाठ्यक्रमों का अनुकूलन प्रगति पर है।

पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल

विस्तार व्याख्यान शृंखला

संस्थान ने इस विस्तार व्याख्यान शृंखला के तहत दो व्याख्यान आयोजित किए गए। अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद् (ए.आई.सी.टी.ई.) के नीरज सक्सेना, *सलाहकार,* शिक्षा मंत्रालय द्वारा 'शिक्षा और अधिगम का बदलता परिदृश्य' और योगेश खाकरे, *कंपनी सचिव*, सी.ओ.ओ. बी-नेस्ट इनक्यूबेशन सेंटर, और अनुपालन कार्यालय, भोपाल

स्मार्ट सिटी डेवलपमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड द्वारा 'इनक्यूबेशन और इनोवेशन सेंटर का महत्व और स्थापना प्रक्रिया' पर व्याख्यान दिए गए। व्याख्यान में सत्र 2022–23 के लिए सभी संकाय, कर्मचारी, संविदा कर्मचारी और डी.वी.ई.टी. छात्रों ने भाग लिया।

इनक्यूबेशन और इनोवेशन सेंटर के महत्व पर विचार रखते बी-नेस्ट इन्क्यूवेशन सेंटर के सी.ओ.ओ. योगेश खाकरे

व्यावसायिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण में डिप्लोमा (डी.वी.ई.टी.)

पंडित सुंदरलाल शर्मा, केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल दूरस्थ-सह-संपर्क विधि में एक वर्षीय डिप्लोमा इन वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग (डी.वी.ई.टी.) कार्यक्रम प्रदान करता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य व्यावसायिक शिक्षकों/प्रशिक्षकों को प्रशिक्षित करना और व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र और प्रशिक्षण के क्षेत्र में उनकी क्षमताओं का निर्माण करना है। कार्यक्रम को चार तिमाही में विभाजित किया गया है। इस कार्यक्रम में 8 अनिवार्य पत्र और 2 वैकल्पिक पत्र (क्षेत्र विशिष्ट) शामिल हैं। प्रारंभिक दो तिमाही (दूरस्थ विधि) में छात्रों को व्यावसायिक शिक्षणशास्त्र से परिचित कराया जाता है। तीसरी तिमाही (संपर्क विधि) में, छात्रों को ऑटोमोटिव, स्वास्थ्य देखभाल, आई.टी.-आई.टी.ई.एस., कृषि, परिधान और रिटेल जैसे अपने क्षेत्र से संबंधित आई.सी.टी. कौशल और कौशल में व्यावहारिक अनुभव से अवगत कराया जाता है। छात्रों को संपर्क विधि में उद्योग का वास्तविक अनुभव भी मिलता है। छात्रों को चौथी तिमाही में इंटर्नशिप और परियोजना कार्य भी पूरा करना होगा। छात्रों का मूल्यांकन असाइनमेंट, पोर्टफोलियो, लिखित परीक्षा, कौशल आकलन और मौखिक परीक्षा के तहत किया जाता है। दूरस्थ विधि में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण कार्यक्रम में डिप्लोमा का दूसरा सत्र अक्तूबर, 2022 में शुरू हुआ और इस वर्ष देशभर से 40 छात्रों को स्नातक किया और एक ऑनलाइन स्नातक समारोह में उन्हें डिप्लोमा से सम्मानित किया गया। तीसरा सत्र पहले ही शुरू हो चुका है और दूसरी तिमाही पूरी हो चुकी है।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर

डी.एम.एस., आर.आई.ई., अजमेर में कला समेकित अनुभवात्मक शिक्षा का कार्यान्वयन

शिक्षा में कला को शैक्षणिक उपकरण के रूप में समेकित करने और कला समेकित शिक्षण दृष्टिकोण को बढ़ावा देने के लिए, डी.एम.एस., आर.आई.ई. अजमेर में अनुभवात्मक शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न कला रूपों

को लागू किया गया है। डी.एम.एस. शिक्षकों (प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षकों) को 18–22 जुलाई, 2022 के दौरान क्षमता निर्माण कार्यक्रम के माध्यम से कला समेकित शिक्षणशास्त्र और शिक्षण सीखने की प्रक्रिया में कला के विभिन्न रूपों को कैसे समेकित किया जाए, इसके बारे में उन्मुख किया गया। इस परियोजना के तहत 2000 वर्ग फीट क्षेत्र में स्कूल की दीवारों पर विजुअल आर्ट फॉर्म पेंटिंग की गई है।

ए.आई.एल. गतिविधियों का प्रदर्शन करते छात्र

इसमें भारतीय कला और संस्कृति को दर्शाया जाता है और इसका उद्देश्य छात्रों में विषय के प्रति रुचि विकसित करना है।

विषयों के साथ कला को समेकित करने के लिए छात्रों के अभिविन्यास पर विभिन्न कार्यक्रम किए गए हैं। प्रदर्शन कला में छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर रोलप्ले किया गया।

"मुस्कुराता बचपन"— एक प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल शिक्षा (ई.सी.सी.ई.)

इस प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा (ई.सी.सी.ई.), जिसे मुस्कुराता बचपन नाम दिया गया है। कार्यक्रम के अंतर्गत कई कार्यक्रम मनाए जा रहे हैं, स्वच्छता गतिविधियाँ आयोजित की गई हैं, माता-पिता से प्रतिक्रिया प्राप्त करने और आगे सुधार के लिए हर महीने अभिभावक-अध्यापक बैठकें आयोजित की जा रही हैं। सामाजिक मेल-जोल, गत्यात्मक और संचार क्षेत्रों में छात्रों को विकसित करने के लिए *पिक ए बुक*, प्राथमिक चिकित्सा प्रशिक्षण, त्यौहारों के लिए पोशाक, खान-पान की आदतें, स्कूल और घर में स्वच्छता बनाए रखना, दूसरों का अभिवादन करना जैसी विशेष गतिविधियाँ आयोजित की गई हैं।

डी.एम.एस., आर.आई.ई., अजमेर में कला समेकित अनुभवात्मक शिक्षा का कार्यान्वयन

इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न विषयों के साथ भारतीय कला एवं संस्कृति का एकीकरण कर शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया का संचालन किया जा रहा है। डी.एम.एस. के शिक्षकों का उन्मुखीकरण उन्हें शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में कला को समेकित करने के लिए प्रशिक्षित करने के लिए किया गया था। इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने तिलोनिया गाँव का भ्रमण कर उन्हें भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रति जागरूक किया। शिक्षार्थियों में 21वीं सदी के कौशल के विकास के लिए एक कार्यशाला के बाद कला समेकित प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। विद्यालय के एन.सी.सी. कैडेट्स ने 23 सितंबर से 30 सितंबर तक कायड़ विश्राम स्थली में आयोजित वार्षिक शिविर में भाग लिया, जिसमें छात्रों का प्रतिनिधित्व एकल गायन— कैडेट मोहित देवड़ा; एक भारत श्रेष्ठ भारत (भरतपुर) कैडेट आदित्य प्रताप सिंह ट्रैकिंग; और कैंप (कोल्हापुर)— कैडेट शकील अहमद का संबंधित श्रेणियों में प्रदर्शन सराहनीय था।

सत्र 2022–23 में हेरिटेज पेंटिंग प्रतियोगिता और भारत सरकार द्वारा चलाए जा रहे आजादी का अमृत महोत्सव के अंतर्गत डाक विभाग द्वारा डाक टिकट प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें मुजम्मिल खान 9-ए, शकील अहमद 10-बी, और गौरांशी शर्मा 7-ए विजेता रहे।

G20 अध्यक्षता कार्यक्रम में छात्रों को G20 सदस्य देशों, उनके मिशन, लोगो और अध्यक्ष देश द्वारा संचालित गतिविधियों, जैसे— सतत विकास, स्वास्थ्य, कृषि, ऊर्जा और पर्यावरण, जलवायु परिवर्तन और भ्रष्टाचार विरोधी जागरूकता के प्रति जागरूक करने के लिए डी.एम.एस. ने 23 फरवरी, 2023 को जूनियर और सीनियर के लिए पोस्टर मेकिंग प्रतियोगिता, जूनियर और सीनियर के लिए स्लोगन मेकिंग प्रतियोगिता, जूनियर और सीनियर के लिए क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया।

जनसंख्या शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

हितधारकों को अपने अनुभव, शोध और नवीन अभ्यासों को साझा करने का मंच प्रदान करने के लिए 15–17 नवंबर, 2022 के दौरान जनसंख्या शिक्षा पर राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित की गई थी। अनिल कुमार शुक्ला, *कुलपति*, एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर मुख्य अतिथि थे और राजीव रतन शर्मा, *संकायध्यक्ष*, जम्मू विश्वविद्यालय, सम्मानित अतिथि थे। आर.आई.ई., अजमेर के *प्रधानाचार्य* एस.वी. शर्मा ने संगोष्ठी का उद्घाटन भाषण दिया। इसमें तीन पूर्ण व्याख्यान और छह मुख्य भाषणों के अलावा 12 समानांतर तकनीकी सत्र आयोजित किए गए थे। कुल 246 सार-संक्षेप प्राप्त हुए, जिनमें से सर्वश्रेष्ठ 126 सार-संक्षेपों की संवीक्षा समिति द्वारा छानबीन की गई। कुल 83 (19 आंतरिक एवं 64 बाहरी) प्रतिभागियों ने अपने शोधपत्र प्रस्तुत किए। संगोष्ठी में इन प्रमुख मुद्दों पर प्रकाश डाला गया— जनसंख्या शिक्षा— आवश्यकता और महत्व; जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने में शिक्षा की भूमिका; और एन.ई.पी. 2020 में जेंडर परिप्रेक्ष्य का विश्लेषण। इसके समापन सत्र के दौरान मुख्य अतिथि के.के. शर्मा, *पूर्व कुलपति*, एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर थे और टी.आर. रैना और आर.एम. मोहला सम्मानित अतिथि थे। आर.आई.ई., अजमेर के *प्रधानाचार्य* एस.वी. शर्मा ने भी संगोष्ठी के सफल समापन पर समापन भाषण दिया।

शिक्षा के बुनियादी और प्रारंभिक स्तरों के लिए खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र के समेकन पर क्षेत्रीय सम्मेलन

संस्थान ने प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली के सहयोग से 29–30 नवंबर, 2022 को खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र पर दो दिवसीय क्षेत्रीय सम्मेलन का आयोजन किया। सम्मेलन का उद्देश्य उत्तरी क्षेत्र के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों को यह प्रस्तुत करने के लिए एक मंच प्रदान करना है कि स्वदेशी और स्थानीय खिलौनों का उपयोग कक्षा प्रक्रिया के लिए किस तरह किया जा सकता है। इसमें 10 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों के प्रतिभागियों ने अपने क्षेत्रीय खिलौने प्रस्तुत किए हैं। प्रतिभागियों और रा.शै.अ.प्र.प. के संसाधन व्यक्तियों ने शिक्षण पद्धतियों में स्थानीय खिलौनों और खेलों के कार्यान्वयन पर विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की और चर्चा की। इस सम्मेलन में खिलौनों और खेलों के समेकन के लिए चुने गए विभिन्न विषयों पर 8 सत्र आयोजित किए गए हैं जैसे कि खिलौना-आधारित शिक्षणशास्त्र और एन.ई.पी. 2020; बुनियादी और प्रारंभिक शिक्षा के लिए क्षेत्रीय खिलौनों/खेलों/नाटकों का समेकन; राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा प्रस्तुति, खिलौनों/खेलों/नाटकों की प्रदर्शनी; खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र का अभ्यास करना; अभ्यास के लिए सिद्धांत, खिलौने; बच्चे की झुकाव और सीखने के प्रतिफलों को जोड़ने की दुनिया में खेल और खेल; और खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र की अवधारणा। इस सम्मेलन के दौरान बुनियादी स्तर के खिलौनों की एक प्रदर्शनी आयोजित की गई जिसमें उत्तरी क्षेत्र के 110 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया।

सम्मेलन के दौरान खिलौनों की प्रदर्शनी

एन.ई.पी. 2020 के बाद एन.सी.एफ. के विकास के लिए जिला स्तरीय परामर्श

संस्थान ने एन.ई.पी. 2020 के बाद राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा विकसित करने के लिए, उत्तरी क्षेत्र के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में राष्ट्रीय जिला स्तरीय परामर्श (डी.एल.सी.) आयोजित किए हैं। संस्थान ने उत्तरी क्षेत्र के 10 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में 15 डी.एल.सी. आयोजित किए। संस्थान द्वारा आयोजित बैठकों में रा.शै.अ.प्र.प. के दिशानिर्देशों के अनुसार सभी श्रेणियों में कुल 1092 प्रतिभागियों ने भाग लिया और निर्धारित प्रश्नों पर अपने बहुमूल्य इनपुट, टिप्पणियाँ और सुझाव दिए। परामर्शों को प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक और प्रिंट मीडिया द्वारा भी कवर किया गया। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर विभिन्न हितधारकों की प्रतिक्रियाएँ एकत्र, संकलित और एन.सी.एफ. टेक. प्लेटफॉर्म पर प्रस्तुत की गईं।

सिविल सोसायटी समूहों के साथ परामर्श कार्यशाला

संस्थान ने एन.ई.पी. 2020 के संदर्भ में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा पर उत्तरी क्षेत्र के लिए शैक्षणिक संस्थानों और नागरिक समाज समूहों की तीसरी परामर्श कार्यशाला का आयोजन किया। परामर्श बैठकें 10 अगस्त, 2022 को लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ; 14 अगस्त, 2022 को पंजाब विश्वविद्यालय, चंडीगढ़; और 17 नवंबर, 2022 को जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू में आयोजित की गईं।

कक्षा 3 के लिए प्रदर्शन बेंचमार्क स्थापित करने के लिए नीति जुड़ाव की कार्यशालाओं की शृंखला

संस्थान ने शिक्षा सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.), रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से 21–24 जून, 2022 के दौरान कक्षा 3 के लिए प्रदर्शन मानक स्थापित करने के लिए कार्यशाला का आयोजन किया। कक्षा 3 में मूलभूत साक्षरता के लिए प्रदर्शन मानकों की स्थापना के लिए एफ.एल.एस. के माध्यम से एकत्र किए गए डेटा के आधार पर मानक-सेटिंग और बेंचमार्किंग अभ्यास आयोजित किए गए हैं।

क्षेत्रीय एन.ए.एस. 2021 के पश्चात हस्तक्षेप कार्यशाला

उत्तरी क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों के लिए रिपोर्टों के प्रसार और समझ को सुनिश्चित करने के लिए 14–15 जुलाई 2022 के दौरान ई.एस.डी., रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से दो दिवसीय एन.ए.एस. पश्चात हस्तक्षेप कार्यशाला का आयोजन किया गया था। इस कार्यशाला के दौरान जिला और राज्य स्तर पर हस्तक्षेप का शमन करने के लिए एन.ए.एस. रिपोर्टों के अनुसार प्रतिभागियों द्वारा विकसित सीखने की कमियों की पहचान की गई है।

नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के कार्यान्वयन पर कार्यक्रम

संस्थान ने सी.एन.सी.एल., प्रारंभिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से ऑनलाइन मोड में नव भारत साक्षरता कार्यक्रम (एन.आई.एल.पी.) के कार्यान्वयन पर दो दिवसीय आयोजन किया। एन.आई.एल.पी. के कार्यान्वयन पर पहला कार्यक्रम 25 मई, 2022 को आयोजित किया गया था। एन.आई.एल.पी. के लिए संसाधन सामग्री के विकास पर दूसरा कार्यक्रम 20 जून, 2022 को आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम में एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. के संकाय को लक्षित किया गया और महत्वपूर्ण जीवन कौशल के माध्यम से मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर सामग्री विकास पर ध्यान केंद्रित किया गया। इसमें प्रमुख वैचारिक बिंदुओं पर प्रकाश डाला गया, जैसे— प्राइमर का विकास, दीक्षा पोर्टल का अनुप्रयोग, वीडियो प्रोग्राम/ऑनलाइन मॉड्यूल का विकास, स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण मॉड्यूल का विकास, सूचना ग्राफिक्स/आई.सी.टी./ई-सामग्री का विकास और स्थानीय लोगों के साथ अभिसरण और सहयोग।

मनोदर्पण और सहयोग— शिक्षा मंत्रालय सहयोग के मानसिक कल्याण पर कार्यक्रम

संस्थान हर चार सप्ताह के बाद पाँच दिवसीय सहयोग कार्यक्रम आयोजित करता है, जिसे सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पी.एम. ई-विद्या, रा.शै.अ.प्र.प. के आधिकारिक यूट्यूब चैनल और विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों के टी.वी. चैनलों पर शाम 05:00 बजे से शाम 05:30 तक प्रसारित किया जाता है। वर्ष 2022–23 में आयोजित विभिन्न सहयोग के दौरान बातचीत/चर्चा के दौरान किशोर समूह से संबंधित विभिन्न प्रकार के मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों (जैसे परीक्षा का तनाव, नशीली दवाओं का उपयोग और अवसाद/चिंता आदि) को कवर किया गया।

मनोदर्पण

शुक्रवार को दोपहर 02:30 से 04:00 बजे तक डेढ़ घंटे का ऑनलाइन संगोष्ठी/चर्चा आयोजित की गई। जिसका प्रसारण सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा किया गया। प्रत्येक पाँचवें शुक्रवार को 90 मिनट का यह ऑनलाइन कार्यक्रम आर.आई.ई., अजमेर द्वारा आयोजित किया जाता है। यह कार्यक्रम देश के किशोर विद्यार्थियों के मानसिक कल्याण के लिए एक सहायता के रूप में आयोजित किया गया था। किशोर समूह के विभिन्न प्रकार के मानसिक स्वास्थ्य मुद्दों (जैसे परीक्षा तनाव, नशीली दवाओं का उपयोग और अवसाद/चिंता आदि) को बातचीत/चर्चा के दौरान मनोवैज्ञानिक-सामाजिक और शैक्षिक हस्तक्षेप के साथ गहराई से कवर किया जाता है। इस कार्यक्रम का प्रसारण सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा पी.एम. ई-विद्या, रा.शै.अ.प्र.प. के आधिकारिक यूट्यूब चैनल और विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों के टी.वी. चैनलों पर किया जाता है।

पाठ्यक्रम मार्गदर्शन और परामर्श में डिप्लोमा पाठ्यक्रम (डी.सी.जी.सी.)

डी.सी.जी.सी. हर साल जनवरी से दिसंबर तक आयोजित किया जाने वाला 12 महीने का कार्यक्रम है। पाठ्यक्रम के दूरस्थ शिक्षा का पहला चरण जनवरी से मार्च तक आयोजित किया जाता है, जिसमें असाइनमेंट और ऑनलाइन ओरिएंटेशन और ट्यूटोरियल पर काम करना शामिल है। दूरस्थ शिक्षा का दूसरा चरण अप्रैल से मई तक आयोजित किया जाता है और कार्यान्वित गतिविधियों में असाइनमेंट का काम, हर 15 दिनों के बाद ऑनलाइन ट्यूटोरियल और बाहरी विशेषज्ञों के सहयोग से तीन दिवसीय ऑनलाइन अभिविन्यास कार्यक्रम शामिल थे। असाइनमेंट, पोर्टफोलियो और अन्य गतिविधियों से संबंधित स्पष्टीकरण प्रदान करने के लिए विभिन्न ट्यूटोरियल ऑनलाइन मोड में आयोजित किए जाते हैं। प्रशिक्षुओं को एक पोर्टफोलियो के रूप में दूरस्थ शिक्षा चरण से शुरू होने वाले पाठ्यक्रम के दौरान किए गए काम का रिकॉर्ड बनाए रखने के लिए निर्देशित किया जाता है। असाइनमेंट और पोर्टफोलियो का मूल्यांकन दो महीने में एक बार किया जाता है। डी.सी.जी.सी. पाठ्यक्रम के तीसरे चरण में तीन महीने (जुलाई–सितंबर) का संपर्क कार्यक्रम है जिसमें स्कूलों में गहन व्यावहारिक प्रशिक्षण और क्षेत्र का अनुभव प्रदान किया जाता है और पर्यवेक्षण किया जाता है। इस अवधि के दौरान इंटर्नशिप परियोजनाओं को भी अंतिम रूप दिया जाता है। लिखित परीक्षा और मौखिक परीक्षा 19–30 सितंबर, 2022 तक आयोजित की गईं। कार्यक्रम के अंतिम चरण (अक्तूबर–दिसंबर) में इंटर्नशिप है। इस समय के दौरान, प्रशिक्षु एक बाहरी पर्यवेक्षक और संस्थान के आंतरिक संकाय सदस्य की देखरेख में स्कूल/नैदानिक सेटिंग/अस्पताल सेटिंग में मार्गदर्शन और परामर्श से संबंधित क्षेत्रों में अपनी परियोजना को पूरा करते हैं। इंटर्नशिप का मूल्यांकन आंतरिक और बाह्य पर्यवेक्षकों द्वारा दिए गए फीडबैक और प्रशिक्षु द्वारा प्रस्तुत रिपोर्ट के आधार पर किया जाता है। इस पाठ्यक्रम में 39 प्रत्याशी उत्तीर्ण हुए और अन्य छह प्रत्याशी संपर्क कार्यक्रम और लिखित परीक्षाओं के लिए उपस्थित नहीं हुए, जिन्हें पाठ्यक्रम पूरा करने के लिए एक और वर्ष दिया जाएगा। इसका नया बैच जनवरी, 2023 में शुरू किया गया था। राजीव रंजन और मीनाक्षी मीना इस कार्यक्रम के *समन्वयक* और *सह-समन्वयक* हैं।

शैक्षणिक व्याख्यान शृंखला

संस्थान के अकादमिक मंच के तहत, आई.क्यू.ए.सी. ने संकाय सदस्यों और विद्यार्थियों के लिए व्याख्यान आयोजित किए। वर्ष 2022–23 के लिए विषय एन.ई.पी. 2020 के पहलू और इसका कार्यान्वयन है। शैक्षणिक मंच का मुख्य उद्देश्य संस्थान के संकाय सदस्यों के बीच शैक्षणिक शिक्षण वातावरण और व्यावसायिक विकास को बढ़ावा देना है। आयोजित किए गए कुछ प्रमुख व्याख्यान गुणवत्ता संकेतक रूपरेखाएँ इस प्रकार हैं— राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 (6 जुलाई, 2022) के संदर्भ में उच्च शिक्षा संस्थानों में उत्कृष्टता की तलाश, एन.ई.पी. 2020 (13 जुलाई, 2022) के संदर्भ में विद्यार्थियों के बीच बुनियादी मूल्यों को विकसित करने का एक दृष्टिकोण, एन.ई.पी. 2020— जीवन कौशल और संवैधानिक मूल्य (जुलाई 27, 2022), एन.ई.पी. 2020— रचनात्मकता और नवीनता (8 अगस्त, 2022), और वर्तमान परिदृश्य में गांठ वाले वायरस— कारण, सावधानी और इलाज (14 सितंबर, 2022)।

प्रख्यात शिक्षाविदों के विस्तार व्याख्यान

प्रख्यात शिक्षाविदों के विस्तार व्याख्यान की शृंखला संस्थान के विद्यार्थियों और संकाय सदस्यों के लिए प्रख्यात शिक्षाविदों के साथ अकादमिक बातचीत के लिए तैयार किया गया एक मंच है। इस कार्यक्रम में संस्थान के विद्यार्थियों और शिक्षकों को जानकारी देने के लिए प्रतिष्ठित शिक्षाविदों को संस्थान में आमंत्रित किया जाता है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य अकादमिक उत्कृष्टता को बढ़ावा देना, नवीन सोच और अनुसंधान को प्रोत्साहित करना है। वर्ष 2022–23 के लिए, विस्तार व्याख्यान का विषय एन.ई.पी. 2020 के अनुप्रयोग पहलू है, जिसमें 'व्यावसायिक विकास के लिए अभिविन्यास' पर जोर दिया गया है। प्रख्यात शिक्षाविदों द्वारा विभिन्न विषयों पर कुल सात

विस्तार व्याख्यान दिए गए। व्याख्यान में शामिल हैं— 29 जुलाई, 2022 को ग्रीन स्कूल और ग्रीन यूनिवर्सिटी के प्रवर्तक वीरेंद्र रावत द्वारा ग्रीन स्कूल—टिकाऊ भविष्य के लिए जिम्मेदार शिक्षा; 30 अगस्त, 2022 को उदयपुर में राजस्थान विद्यापीठ की *पूर्व कुलपति* दिव्या नागर द्वारा एन.ई.पी. 2020 के आलोक में शिक्षक शिक्षा में सुधार; राजेश पी खंबायत, *पूर्व संयुक्त निदेशक*, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. और एन.टी.टी.टी.आर., भोपाल द्वारा एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित व्यावसायिक शिक्षा की पुनर्कल्पना (1 सितंबर, 2022); पाठ्यक्रम में बदलाव, शिक्षा में परिवर्तन, आर.पी. तिवारी, *कुलपति*, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय द्वारा (11 नवंबर, 2022); एन.ई.पी. 2020 के आलोक में अल्पसंख्यक शिक्षा, ऐजाज अहमद, *जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी*, अजमेर (12 दिसंबर, 2022); एन.ई.पी. 2020 के गणितीय आयाम, जी. रवींद्र, *पूर्व निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा (17 जनवरी, 2023); और वैश्विक कल्याण के लिए वैश्विक विज्ञान सुधीर कुमार मिश्रा, वैज्ञानिक और *पूर्व महानिदेशक* (ब्रह्मोस), डी.आर.डी.ओ. (28 फरवरी, 2023)।

प्रख्यात व्यक्तित्वों पर अभिव्यक्ति शृंखला

इस कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न अवसरों पर सात व्याख्यान आयोजित किए गए। इन अवसरों पर विभिन्न प्रतियोगिताओं जैसे निबंध, पोस्टर बनाना, भूमिका निर्वहन, क्विज, रैली और फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 आदि का भी आयोजन किया गया। व्याख्यानों का विवरण इस प्रकार है—

अवसर	वक्ता
डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन पर अभिव्यक्ति शृंखला (शिक्षक दिवस, 5 सितंबर, 2022)	विनोद शर्मा (ब्रेनीवुड के *सी.ई.ओ.* और *सह-संस्थापक*)
महात्मा गांधी पर अभिव्यक्ति शृंखला (2 अक्तूबर, 2022)	विनोद टेकचंदानी, *प्राचार्य*, जी.एस.एस.एस. हर्राजपुरा, मसूदा अजमेर
सरदार वल्लभ भाई पटेल पर अभिव्यक्ति शृंखला (राष्ट्रीय एकता दिवस, 31 अक्तूबर, 2022)	अनूप कुमार अत्रे, एस.पी.जी.सी., अजमेर
मौलाना अबुल कलाम आज़ाद पर अभिव्यक्ति शृंखला (राष्ट्रीय शिक्षा दिवस, 11 नवंबर, 2022)	रीना व्यास, एस.पी.जी.सी., अजमेर
संविधान दिवस पर अभिव्यक्ति शृंखला (नवंबर 26, 2022)	मनोज अवस्थी, एस.पी.जी.सी., अजमेर
श्रीनिवास रामानुजन अयंगर पर अभिव्यक्ति शृंखला (राष्ट्रीय गणित दिवस, 22 दिसंबर, 2022)	छवि शर्मा, आर.पी.एस.
राष्ट्रीय युवा दिवस के अवसर पर अभिव्यक्ति शृंखला (12 जनवरी, 2023)	स्वतंत्र शर्मा, *प्रमुख*, स्वामी विवेकानंद केंद्र

इंटर्नशिप के लिए सहयोगी स्कूलों के प्रमुखों और समन्वयक शिक्षकों के लिए कार्यशाला

एक साझा मंच प्रदान करने और सहयोगी स्कूलों के प्रमुखों और शिक्षकों को अवलोकन उपकरण और इंटर्नशिप के दौरान इंटर्न द्वारा पूरा किए जाने वाले विभिन्न कार्यों के बारे में उन्मुख करने; रिफ्लेक्टिव जर्नल का लेखन, विभिन्न स्कूल गतिविधियों में शिक्षकों और सहकर्मी प्रशिक्षुओं की भागीदारी आदि के पाठों का अवलोकन के उद्देश्य से इंटर्नशिप के लिए सहयोगी स्कूलों के प्रमुखों और समन्वयक शिक्षकों की कार्यशाला 10–11 नवंबर, 2022 को मिश्रित विधि में आयोजित की गई है। सहयोगी स्कूलों में शिक्षक कार्यक्रम (इंटर्नशिप) के रूप में कार्य करने के लिए शिक्षण के सुचारू संचालन हेतु 42 जवाहर नवोदय विद्यालयों के अधिकारियों ने कार्यशाला में भाग लिया है। कार्यशाला के दौरान हुई बातचीत से विद्यार्थियों की इंटर्नशिप के सुचारू संचालन में मदद मिलती है।

आर.आई.ई., अजमेर में गणित प्रयोगशाला का निष्पादन और रखरखाव

संस्थान में स्थापित की गई गणित प्रयोगशाला विद्यार्थियों के लिए प्रयोगों और अनौपचारिक अन्वेषण के माध्यम से गणित की खोज करने का एक स्थान है। यहाँ विद्यार्थियों को व्यावहारिक अनुभव प्रदान किए जाते हैं जिससे वे गणितीय अवधारणाओं का पता लगाने में सक्षम बनते हैं जो पारंपरिक कक्षा शिक्षण के माध्यम से संभव नहीं है। प्रयोगशाला अधिगम को पिछले अनुभवों से जोड़ती है और जरूरत पड़ने पर नए अनुभव प्रदान करती है, जिससे विद्यार्थियों को जाँच के लिए दिलचस्प समस्याएँ पेश होती हैं। इससे विद्यार्थियों को अपने सीखने की जिम्मेदारी लेने और अपनी गति से प्रगति करने की सुविधा मिलती है, जिससे अधिगम के लिए एक जोखिमरहित माहौल तैयार होता है। गणित प्रयोगशाला का उपयोग संकाय सदस्यों द्वारा एक प्रभावी शिक्षण प्रक्रिया के रूप में किया जाता है जिससे नवाचारी मॉडल बनाए जाते हैं, अधिगम की प्रक्रिया में सुधार आता है, नए तरीकों की जाँच की जाती है, गणित में विद्यार्थियों की रुचि को बढ़ावा मिलता है और गणितीय अवधारणाओं के बारे में उनकी समझ बढ़ती है। प्रयोगशाला में गतिविधियों का एक सेट रेखांकित किया गया है जो कक्षा 6 से 10 तक के विद्यार्थियों के लिए स्कूल गणित प्रयोगशाला के लिए उपयुक्त है। इन गतिविधियों को अध्यापक के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों द्वारा स्वतंत्र रूप से किया जा सकता है, या विद्यार्थियों के छोटे समूह के लिए प्रदर्शित किया जा सकता है। इसके अतिरिक्त, कुछ गतिविधियों का उपयोग कक्षा सेटिंग में शिक्षण सहायक सामग्री के रूप में भी किया जा सकता है।

अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी दिवस का उत्सव

अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी दिवस 22 अप्रैल, 2022 को मनाया गया। इस कार्यक्रम का विषय 'हमारे ग्रह में निवेश करें' था। इस अवसर पर भूज्ञान सोसायटी का विधिवत गठन किया गया। जलवायु संकट के मूल्य और तात्कालिकता को प्रकट करने और पृथ्वी संरक्षण के प्रति विद्यार्थियों में जागरूकता लाने के लिए एक पोस्टर निर्माण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। कार्यक्रम का समापन परिसर में वृक्षारोपण अभियान के साथ हुआ, जिससे धरती माँ को बचाने के लिए सहयोग और टीम भावना विकसित हुई।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का उत्सव

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 21 जून, 2022 को मनाया गया। विवेकानन्द केंद्र, अजमेर से स्वतंत्र कुमार शर्मा को 'हमारे दैनिक जीवन में योग का मूल्य और महत्व' विषय पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था। कर्मचारियों और विद्यार्थियों ने योग के मूल्यवान गुणों को आत्मसात करते हुए आसन किए और मन, शरीर और आत्मा के अच्छे स्वास्थ्य के बारे में समाज में जागरूकता पैदा की।

राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग दिवस का उत्सव

12 अगस्त, 2022 को प्रख्यात वैज्ञानिक विक्रम साराभाई की जयंती को राष्ट्रीय रिमोट सेंसिंग दिवस के रूप में मनाया गया। डॉ. विक्रम साराभाई के जीवन और उपलब्धियों के बारे में जागरूकता पैदा करने और जानकारी प्रदान करने के लिए विद्यार्थियों के बीच पोस्टर निर्माण और नारा लेखन प्रतियोगिताओं के साथ-साथ भू-स्थानिक प्रौद्योगिकी पर एक प्रश्नोत्तरी आयोजित की गई। इस उत्सव से विद्यार्थियों को रिमोट सेंसिंग तकनीक के महत्व को समझने में भी मदद मिली।

स्वतंत्रता दिवस समारोह

राष्ट्र का 76वाँ स्वतंत्रता दिवस आर.आई.ई. परिसर में आर.आई.ई. और डी.एम.एस. के विद्यार्थियों और कर्मचारियों द्वारा मनाया गया। इस अवसर पर संस्थान के *प्रधानाचार्य* एस.वी. शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया। यह कार्यक्रम संस्थान और डी.एम.एस. के विद्यार्थियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ मनाया गया और उसके बाद परिसर में वृक्षारोपण अभियान चलाया गया।

स्वछता पखवाड़ा

देश के नागरिकों के नैतिक और नागरिक कर्तव्य के रूप में स्वच्छता के महत्व को दर्शाने के लिए 1–15 सितंबर, 2022 तक स्वच्छता पखवाड़ा मनाया गया। एस.वी. शर्मा, आर.आई.ई. अजमेर के *प्रधानाचार्य* ने स्टाफ और विद्यार्थियों को स्वच्छ और हरा-भरा वातावरण बनाए रखने की शपथ दिलाई। सप्ताहभर चलने वाले अभियान के दौरान 'स्वच्छ भारत मिशन' का संदेश देने और विद्यार्थियों के बीच जागरूकता पैदा करने के लिए परिसर में सफाई अभियान, कर्मचारियों और विद्यार्थियों द्वारा रैली, पोस्टर और नारा बनाने की प्रतियोगिता जैसी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं।

शिक्षक दिवस का उत्सव

शिक्षक दिवस 5 सितंबर, 2022 को मनाया गया। किसी व्यक्ति के जीवन में अध्यापक के मूल्य और महत्व पर ब्रेनीवुड के *सी.ई.ओ.* और *सह-संस्थापक* विनोद शर्मा द्वारा एक व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान देश की आधुनिक शिक्षा प्रणाली को समृद्ध करने के लिए अध्यापक-विद्यार्थी दर्शन की प्राचीन संस्कृति को बनाए रखने पर केंद्रित था। संस्थान के सेवानिवृत्त संकाय सदस्यों और पूर्व विद्यार्थियों ने इस अवसर की शोभा बढ़ाई और उन्हें कार्यक्रम में सम्मानित किया गया। विद्यार्थियों ने एक अध्यापक के प्रयासों को श्रद्धांजलि के रूप में सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया।

उत्सव के दौरान संस्थान के सेवानिवृत्त संकाय सदस्य और पूर्व विद्यार्थी

गांधी जयंती का उत्सव

संस्थान ने 2 अक्तूबर, 2022 को गांधी जयंती और शास्त्री जयंती मनाई। फिट और स्वस्थ भारत का संदेश फैलाने के लिए उसी दिन 'फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0' का भी आयोजन किया गया। यह पहल फिटनेस को बढ़ावा देने और

जागरूकता पैदा करने के लिए 'आजादी का अमृत महोत्सव' के एक भाग के रूप में शुरू की गई थी। लोगों से आग्रह किया गया कि वे किसी भी रूप में अपनी शारीरिक फिटनेस के लिए कुछ समय निकालें, सक्रिय जीवनशैली की उपलब्धियों का जश्न मनाएँ और भारत की आजादी के 75वें वर्ष अर्थात 'आजादी के 75 साल, फिटनेस रहे बेमिसाल' के भव्य अवसर पर फिट रहने का संकल्प लें। संस्थान के विद्यार्थियों, अध्यापकों और अन्य स्टाफ सदस्यों ने *प्रधानाचार्य* एस.वी. शर्मा के नेतृत्व में दौड़ में सक्रिय रूप से भाग लिया। फिट इंडिया फ्रीडम रन के बाद, संस्थान और डी.एम.एस. के विद्यार्थियों ने गांधी बनो प्रतियोगिता और भजन गायन प्रतियोगिता जैसी विभिन्न गतिविधियों में भाग लिया, जिसके बाद विजेताओं को पुरस्कार वितरण किया गया।

संस्थान के 61वाँ स्थापना दिवस का आयोजन

संस्थान का 61वाँ स्थापना दिवस 30 अक्तूबर, 2022 को मनाया गया। रा.शै.अ.प्र.प. के *सचिव* प्रत्युष कुमार मंडल इस अवसर के मुख्य अतिथि थे। उन्होंने बुनियादी स्तर पर गुणात्मक और सुलभ शिक्षा प्रदान करने में रा.शै.अ.प्र.प. और आर.आई.ई. के सहयोगात्मक प्रयासों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने राजस्थानी संस्कृति के रंग बिखेरते हुए सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया। राजेश मिश्रा, *अनुदेश संकाय अध्यक्ष* ने मुख्य अतिथि का उनकी बहुमूल्य अंतर्दृष्टि के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम के बाद पुस्तकालय में पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के कर्मचारियों और विद्यार्थियों के लिए उपलब्ध शैक्षणिक सामग्री की विविधता का उदाहरण प्रस्तुत किया गया। समारोह का समापन परिसर में वृक्षारोपण अभियान के साथ किया गया।

61वें स्थापना दिवस समारोह के दौरान गतिविधियाँ

राष्ट्रीय एकता दिवस का उत्सव

राष्ट्रीय एकता दिवस 31 अक्तूबर, 2022 को मनाया गया। एकता दौड़ के बाद अनूप कुमार अत्रिया, *असिस्टेंट प्रोफेसर*, एस.पी.सी. गवर्मेंट कॉलेज, अजमेर का व्याख्यान हुआ। संस्थान के *प्रधानाचार्य*, एस.वी. शर्मा ने स्टाफ सदस्यों और विद्यार्थियों को देश में एकता को बढ़ावा देने की शपथ दिलाई। विद्यार्थियों द्वारा सरदार वल्लभ भाई पटेल के जीवन और प्रमुख उपलब्धियों को प्रस्तुत करने वाली एक प्रदर्शनी भी प्रदर्शित की गई।

समुदाय के साथ काम करना

सत्र 2021–22 के लिए बी.एड. के लिए सामुदायिक कार्यक्रम के साथ कार्य करना। प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए 25 अप्रैल– 4 मई, 2022 तक आयोजित किया गया था जिसमें सलाहकारों और प्रोफेसरों ने विद्यार्थियों को समुदाय के साथ समझ विकसित करने में इसके आंतरिक मूल्य के बारे में मार्गदर्शन और परामर्श दिया। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को एक मंच प्रदान करना है जहाँ वे समुदाय के साथ संबंध स्थापित करने के लिए गतिविधियों का प्रदर्शन कर सकें और शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूक होने के लिए समुदाय के हितधारकों के साथ बातचीत कर सकें। सत्र 2022–23 के लिए, बी.ए. बी.एड. द्वितीय वर्ष, बी.एससी. बी.एड. द्वितीय वर्ष एवं बी.एड. प्रथम वर्ष के विद्यार्थियों के लिए कार्यक्रम 29 नवंबर–8 दिसंबर, 2022 तक आयोजित किया गया था। विद्यार्थियों ने आसपास के गाँवों, विशेष स्कूलों, वृद्धाश्रम और ब्रह्माकुमारी केंद्र का दौरा किया और समुदाय में आपसी विश्वास, सम्मान और सहयोग की समझ विकसित करने के लिए लोगों के साथ बातचीत की।

सामुदायिक कार्यक्रम के साथ कार्य करने के दौरान गतिविधियाँ

विद्यार्थियों का इंटर्नशिप कार्यक्रम

कार्यक्रम के दौरान प्रदर्शनी

बी.एड. द्वितीय वर्ष, बी.एससी. बी.एड. चतुर्थ वर्ष और बी.ए. बी.एड. चतुर्थ वर्ष के अध्यापक के रूप में कार्य करने हेतु शिक्षण (इंटर्नशिप कार्यक्रम) का उद्घाटन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रम के एक अभिन्न अंग के रूप में 8 सितंबर, 2022 को आर.आई.ई., अजमेर के असेंबली हॉल में आयोजित किया गया था। विभिन्न पाठ्यक्रमों में नामांकित विद्यार्थियों और भावी अध्यापकों को व्यावसायिक दक्षता के लिए शिक्षित और प्रशिक्षित किया गया था। विद्यार्थियों को इंटर्नशिप के कौशल, इंटर्न के रूप में उनकी भूमिकाओं, कार्यों और फील्ड असाइनमेंट पर भी उन्मुख किया गया।

एन.एस.एस. गतिविधियाँ

वर्ष 2022–23 के लिए, संस्थान ने 100 विद्यार्थियों के लिए एन.एस.एस. की दो इकाइयाँ आवंटित की हैं।

'पुनीत सागर' एक सफाई अभियान चलाएँ

संस्थान के एन.सी.सी. कैडेटों ने 23 सितंबर, 2022 को एन.सी.सी. यूनिट, अजमेर द्वारा आयोजित फॉय सागर झील अजमेर में सफाई अभियान 'पुनीत सागर' में भाग लिया। उन्होंने स्वच्छ जल निकायों और हरित परिवेश के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए नुक्कड़ नाटक भी प्रस्तुत किए।

रा.शै.अ.प्र.प.

संस्थान ने एन.सी.सी. कैडेट्स द्वारा सफाई अभियान चलाया

संचार कौशल पर मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम

कौशल विकास गतिविधियों के तहत संचार कौशल पर पाँच दिवसीय मूल्यवर्धित पाठ्यक्रम 29 सितंबर–6 अक्तूबर, 2022 तक आयोजित किया गया था। पाठ्यक्रम में संचार कौशल के विभिन्न पहलुओं जैसे भाषा की अवधारणा और कार्य, सॉफ्ट कौशल और शिष्टाचार, आत्मविश्वास से कैसे बोलना है, भाषा और संचार तथा भाषा और व्यक्तित्व विकास को शामिल किया गया।

कार्यक्रम के दौरान गतिविधियाँ

अंतर-सदनीय गतिविधियाँ

विभिन्न सदनों के पदाधिकारियों का चुनाव 11 नवंबर, 2022 को हुआ। विद्यार्थियों ने सत्र 2022–23 के लिए लोकतांत्रिक तरीके से अपने प्रतिनिधियों को चुना। यह प्रक्रिया संस्थान के विभिन्न संकाय और स्टाफ सदस्यों की देखरेख में हुई। चुनाव के बाद *प्रधानाचार्य* एस.वी. शर्मा ने निर्वाचित प्रतिनिधियों को शपथ दिलाई। अंतर-सदनीय गतिविधियों और सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन 12–14 दिसंबर, 2022 के बीच किया गया जिसमें सभी सदनों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विभिन्न प्रतियोगिताएँ जैसे वाद-विवाद (अंग्रेजी और हिंदी), रंगोली, नारा लेखन और नृत्य प्रतियोगिताएँ आदि आयोजित की गईं।

अंतर-सदनीय प्रतियोगिताओं के दौरान गतिविधियाँ

अंतर-सदनीय खेल प्रतियोगिताएँ

अंतर-सदनीय खेल प्रतियोगिताएँ 15–16 और 19 दिसंबर, 2022 के बीच आयोजित की गईं। एक वार्षिक एथलेटिक बैठक 20 दिसंबर, 2022 को आयोजित की गई जिसमें विभिन्न सदनों के विद्यार्थियों ने विभिन्न खेल प्रतियोगिताओं में भाग लिया।

अंतर-सदनीय खेल प्रतियोगिताएँ

अंतर-महाविद्यालय एथलेटिक्स प्रतियोगिता

एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर की 35वीं इंटर-कॉलेज एथलेटिक्स प्रतियोगिता क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर द्वारा 22–24 दिसंबर, 2022 तक आयोजित की गई थी। *प्रधानाचार्य* एस.वी. शर्मा ने कार्यक्रम की मुख्य अतिथि छवि शर्मा, आर.पी.एस., अजमेर का स्वागत किया, जिन्होंने आधिकारिक तौर पर एथलेटिक्स बैठक की शुरुआत की घोषणा की। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एम.डी.एस.यू., अजमेर के खेल एवं खेल बोर्ड के *सचिव* दिग्विजय चौहान थे। क्षेत्र के 80 से अधिक कॉलेजों के 750 से अधिक विद्यार्थियों ने विभिन्न खेल गतिविधियों, जैसे— रिले दौड़, बाधा दौड़, भाला फेंक, 200 मीटर दौड़ और गोला फेंक आदि में भाग लिया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि अनिल शुक्ला, *उप-कुलपति*, एम.डी.एस.यू., अजमेर थे। एथलेटिक बैठक का समापन विभिन्न खेल स्पर्धाओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरण समारोह के साथ हुआ।

गणतंत्र दिवस समारोह

देश का 74वाँ गणतंत्र दिवस 26 जनवरी, 2023 को मनाया गया। *प्रधानाचार्य* एस.वी. शर्मा ने राष्ट्रीय ध्वज फहराया जिसके बाद डी.एम.एस. और संस्थान के विद्यार्थियों ने सांस्कृतिक गतिविधियाँ आयोजित कीं। समारोह का समापन विद्यार्थियों, अध्यापकों और कर्मचारियों द्वारा परिसर में वृक्षारोपण अभियान के साथ हुआ।

गणतंत्र दिवस समारोह के दौरान गतिविधियाँ

राष्ट्रीय समाज सेवा (एन.एस.एस.) के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम

राष्ट्रीय समाज सेवा (एन.एस.एस.) के लिए अभिविन्यास कार्यक्रम और किसी के समाज और परिवेश के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित करने में सामाजिक सेवा के मूल्य पर प्रकाश डालने वाला एक स्वच्छता अभियान 18 जनवरी, 2023 को आयोजित किया गया था।

एन.एस.एस. अभिविन्यास कार्यक्रम के दौरान गतिविधियाँ

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा भाषा दिवस का आयोजन

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा भाषा दिवस 21 फरवरी, 2023 को मनाया गया। संस्थान के संकाय सदस्यों ने अपनी क्षेत्रीय भाषा में मातृभाषा के महत्व पर अपने विचार साझा किए। विद्यार्थियों ने देश की क्षेत्रीय भाषाओं के संरक्षण और संवर्धन के महत्व के बारे में कविताएँ और कथाएँ प्रस्तुत कीं।

कार्यक्रम के दौरान गतिविधियाँ

प्रकृति मेला

विभिन्न पर्यावरण संबंधी मुद्दों से संबंधित गतिविधियों के विकास पर 6–8 फरवरी, 2023 तक तीन दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। इसके बाद थीम पार्क में 9–11 फरवरी, 2023 तक तीन दिवसीय 'प्रकृति मेला' मनाया गया। उद्घाटन के मुख्य अतिथि रूपेंद्र सिंह, *पुलिस महानिरीक्षक*, अजमेर रेंज और नागेंद्र सिंह थे। ड्राइंग प्रतियोगिता, नारा लेखन प्रतियोगिता, प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता और खजाने की खोज जैसी विभिन्न गतिविधियाँ आयोजित की गईं, जिसमें विभिन्न आमंत्रित स्कूलों के विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया और प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संस्थान के *प्रधानाचार्य* द्वारा पुरस्कृत किया गया। समापन समारोह में राजेश कुमार, *प्रमुख*, पर्यावरण शिक्षा विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, अजमेर और के.के. शर्मा, *पूर्व वी.सी.*, एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर उपस्थित थे।

प्रकृति मेला प्रदर्शनी

ई-ऑफिस प्रशिक्षण कार्यक्रम

संस्थान और डी.एम.एस. के संकाय सदस्यों और कर्मचारियों के लिए ई-ऑफिस प्रशिक्षण कार्यक्रम 13 जुलाई, 2022 को आयोजित किया गया था जिसमें शैक्षणिक और प्रशासनिक कार्यों में आई.सी.टी. का उपयोग करने के विभिन्न उपकरणों और तकनीकों पर चर्चा की गई थी।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

गणतंत्र दिवस समारोह

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प. भोपाल ने 74वाँ गणतंत्र दिवस धूमधाम से मनाया। इस कार्यक्रम में राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन.सी.सी.) और राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) के छात्रों की परेड शामिल थी। इस कार्यक्रम की शुरुआत आर.आई.ई., भोपाल के प्रधानाचार्य जयदीप मंडल के आगमन के साथ हुई, जिसमें मुख्य सलाहकार छात्र परिषद्, एन.सी.सी. और एन.एस.एस. अधिकारी, सुरक्षा पर्यवेक्षक और गार्ड के साथ राष्ट्रीय ध्वज ध्वजारोहण किया गया। ध्वजारोहण और राष्ट्रगान के बाद, एन.सी.सी. कैडेटों और एन.एस.एस. स्वयंसेवकों ने अपने प्लाटून कमांडरों और परेड कमांडर के साथ मार्च पास्ट और परेड शुरू की तथा राष्ट्रीय ध्वज को सम्मान दिया और देश की एकता और अखंडता का उत्सव मनाया।

परेड समाप्त होने के बाद प्राचार्य के संदेश और प्राचार्य द्वारा भारतीय संविधान की प्रस्तावना के वाचन तथा वक्तत्व के साथ कार्यक्रम को आगे बढ़ाया गया। प्रधानाचार्य ने अपने संबोधन में विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं के बारे में बात की जो संस्थान के संकाय सदस्यों द्वारा चलाई जा रही हैं। उन्होंने नई शिक्षा नीति की संगतता और महत्व के बारे में भी बात की। कार्यक्रम में आर.आई.ई., पूर्व छात्रों और अध्यापकों तथा महाराष्ट्र और गोवा के टीम प्रतिनिधियों ने भी भाग लिया।

इस कार्यक्रम में छात्रों ने संगीत, नृत्य और नाटक में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियाँ दी। कलाकारों की ऊर्जा और उत्साह से दर्शक मंत्रमुग्ध हो गए। सांस्कृतिक कार्यक्रमों की शुरुआत डी.एम.एस., भोपाल के प्री-प्राइमरी के बच्चों द्वारा किए गए डांस से हुई। डी.एम.एस. गायक समूह द्वारा समूह गीत के बाद आर.आई.ई. के छात्रों ने समूह गीत "ऐ वतन मेरे आबाद रहे तू" प्रस्तुत कर सभी को भारत माता के प्रति उत्साह से भर दिया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का समापन आज के समाज में महिलाओं की स्थिति पर आर.आई.ई. द्वारा समूह नृत्य के साथ हुआ। सांस्कृतिक कार्यक्रम के बाद एन.एस.एस. स्वयंसेवक और एन.सी.सी. कैडेट अपने-अपने गीत अर्थात लक्ष्य गीत और एन.सी.सी. गीत के लिए आए। कार्यक्रम आर.आई.ई. और डी.एम.एस. के प्रधानाचार्य और कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण और जलपान वितरण के साथ सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। कुल मिलाकर, यह देशभक्ति की भावना और राष्ट्र का हिस्सा होने पर गर्व की भावना से भरा दिन था।

विज्ञान दिवस समारोह

आर.आई.ई., भोपाल में 28 फरवरी, 2023 को विज्ञान दिवस मनाया गया। वैश्विक कल्याण के लिए वैश्विक विज्ञान विषय के तहत छात्रों के लिए विभिन्न गतिविधियाँ, जैसे—पोस्टर बनाना, वाद-विवाद, नारा लेखन और प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता आयोजित की गई।

इंटर्नशिप कार्यक्रम

कार्यक्रम उन्मुखीकरण पर केंद्रित है— (क) शैक्षणिक दृष्टिकोण पर सहयोग करने वाले स्कूलों के प्रधानाचार्य और अध्यापक, पाठ योजना का 5ई मॉडल, इंटर्नशिप कार्यक्रम के लिए अपनाई गई चिंतनशील डायरी, अवलोकन प्रोफाइल और मूल्यांकन प्रोफाइल लिखना; (ख) इंटर्नशिप कार्यक्रम के दौरान सहयोगी स्कूलों के प्रधानाचार्यों और अध्यापकों को उनकी भूमिकाओं एवं जिम्मेदारियों के बारे में; तथा (ग) प्रशिक्षुओं को उन स्कूलों के बारे में, जिनमें उन्हें रखा जाएगा और स्कूल में उनकी अपेक्षित भूमिका के बारे में उनका उन्मुखीकरण किया गया।

यह बी.ए.-बी.एड., बी.एससी.-बी.एड. सातवें सेमेस्टर और 2 वर्षीय बी.एड. तीसरा सेमेस्टर पाठ्यक्रम के शिक्षण में हमारे प्रमुख पाठ्यक्रम में से एक है। पाठ्यक्रम का उद्देश्य छात्रों को उनके आने वाले भविष्य के लिए समग्र शिक्षण अनुभव प्रदान करना है। यह पाठ्यक्रम वास्तविक जीवन की कक्षा स्थितियों की चुनौतियों और समस्याओं पर भी गौर करने की पेशकश करता है। इससे शिक्षण के क्षेत्र को वास्तविक जीवन से सीखने और अनुभव करने का अवसर मिलता है। इस पाठ्यक्रम के तहत राज्य बोर्ड स्कूलों, केंद्रीय विद्यालयों और जवाहर नवोदय विद्यालयों जैसे विभिन्न स्कूलों के सभी प्रधानाचार्यों और प्रधानाध्यापकों को शिक्षण कार्यक्रम में इंटर्नशिप के बारे में बेहतर समझ के लिए छात्रों के साथ बातचीत करने के लिए आमंत्रित किया जाएगा।

आर.आई.ई., भोपाल के पी.एस.एस.सी.आई.वी. ऑडिटोरियम में 20 सितंबर, 2022 को एक दिवसीय सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें अलग-अलग गतिविधियों का आयोजन किया गया अर्थात संबंधित विषयों में मॉडल पाठों का प्रदर्शन, अवलोकन, मूल्यांकन प्रोफाइल का उपयोग करने में अनुभव साझा करना, स्कूल में आयोजित की जाने वाली सह-पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियों पर चर्चा करना और प्रशिक्षुओं की उनके आवंटित संबंधित सहयोगी स्कूल प्रधानाचार्यों और अध्यापक के साथ समूहवार चर्चा करना, अपने अनुभव साझा करना, प्रशिक्षुओं को स्कूलों में उपलब्ध सुविधाओं और प्रशिक्षुओं से स्कूलों की अपेक्षाओं के बारे में सूचित करना।

सम्मेलन में संस्थान के प्रशिक्षुओं को उन स्कूलों के प्रधानाचार्यों के साथ बातचीत के लिए एक मंच प्रदान किया गया, जहाँ उन्हें शिक्षण कार्यक्रम में इंटर्नशिप के लिए रखा गया था। इससे उन्हें उन अपेक्षाओं और विभिन्न जिम्मेदारियों को समझने में मदद मिली, जो उन्हें स्कूल में इस अवधि के दौरान निभानी थीं।

समुदाय के साथ कार्य करना

वर्किंग विद कम्युनिटी (डब्ल्यू.डब्ल्यू.सी.) एक अनूठा कार्यक्रम है, जिसे आर.आई.ई., भोपाल के छात्रों को गाँव का वास्तविक जीवन अनुभव प्रदान करने के लिए डिजाइन किया गया है, जिसका उद्देश्य आर.आई.ई., भोपाल के छात्रों को सामुदायिक अनुभव/एक्सपोजर प्रदान करना; साक्षरता, जेंडर की समानता, आर.टी.ई., बाल अधिकार, एड्स, कोविड, अंधविश्वास, हठधर्मिता, स्वच्छता आदि पर जागरूकता अभियान शुरू करना; छात्रों को सर्वेक्षण और अनुसंधान करने का ज्ञान प्रदान करना; ड्रॉप-आउट, किसानों, पशुपालन, औषधालय, किसान की पत्नी, आँगनवाड़ी केंद्रों/अध्यापकों आदि पर प्रकरण अध्ययन/सर्वेक्षण करना; छात्रों को बहु-सांस्कृतिक अनुभव प्रदान करना; गाँव की वास्तविक स्कूली स्थितियों का अनुभव प्रदान करना; लड़कियों की शिक्षा, साक्षरता, कोविड आदि जैसे विभिन्न मुद्दों पर समुदाय के बीच जागरूकता लाने के लिए विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करना है।

कार्यक्रम के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए गाँवों का चयन किया गया। संस्थान के छात्र-अध्यापकों ने पाँच दिनों तक गाँवों का दौरा किया और विभिन्न गतिविधियाँ कीं। वे इस तरह की गतिविधियों में लगे हुए थे— गाँव का शैक्षिक सर्वेक्षण करना, परिवारों, किसानों, आँगनवाड़ी की महिला किसानों का प्रकरण अध्ययन करना। उन्होंने नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से साक्षरता, स्वच्छता, एड्स, कोविड पर जागरूकता कार्यक्रम भी किए। कार्यक्रम को प्रभावी एवं सफलतापूर्वक संचालित करने हेतु दैनिक कार्यक्रम की समय सारणी तैयार की गई। सुबह 9.30 बजे से शाम 5.30 बजे तक विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया। सर्वेक्षण/प्रकरण अध्ययन करने के लिए विभिन्न उपकरण कार्यक्रम आयोजित करने से पहले शिक्षाविदों और विशेषज्ञों के परामर्श से विकसित किए गए थे। इन उपकरणों का उपयोग डेटा संग्रह के लिए किया जाता था।

विद्यालय की स्थापना समाज द्वारा अपने बच्चों की शिक्षा हेतु की जाती है। नागरिक विद्यालय के माध्यम से बच्चों की आकांक्षाओं को पूरा करना चाहते हैं। शिक्षण के सिद्धांत और व्यवहार के बीच की खाई को मिटाने के लिए स्कूल और समाज को उच्च शिक्षा संस्थानों, अर्थात अध्यापक शिक्षा संस्थानों से जोड़ना आवश्यक है। अध्यापक शिक्षा संस्थानों के संकाय सदस्यों को ग्रामीणों, शिक्षार्थियों और शिक्षा के अन्य हितधारकों के साथ लगातार बातचीत करने की आवश्यकता है। सामान्य रूप से समाज और विशेष रूप से शिक्षा से संबंधित मुद्दों और समस्याओं पर स्वयं को जागरूक रखने के लिए इन हितधारकों के साथ चर्चा करना आवश्यक है। अध्यापक-प्रशिक्षक हस्तक्षेप कर सकते हैं और स्कूल में सीखने की कुछ नई तकनीकों और दृष्टिकोणों को पेश कर सकते हैं। स्कूल के अध्यापकों को शिक्षण सहायता प्रदान करना आवश्यक है और वे सूक्ष्म स्तर पर शिक्षा पर उभरते कुछ मुद्दों पर शोध कर सकते हैं। शिक्षा के क्षेत्र के विशेषज्ञ स्कूल का दौरा कर सकते हैं और स्कूल में शिक्षा के समग्र गुणात्मक सुधार के लिए सुझाव दे सकते हैं। इसलिए, यह महसूस किया गया कि भोपाल शहर के पास एक गाँव को गोद लिया जा सकता है और संस्थान के संकाय सदस्य लगातार अध्यापकों के साथ बातचीत करेंगे और स्कूल के गुणात्मक सुधार के लिए अध्यापकों को इनपुट प्रदान कर सकते हैं।

आजकल शिक्षण के सिद्धांत और व्यवहार में उल्लेखनीय अंतर महसूस किया जा रहा है। इसका कारण समाज, उसकी आवश्यकताओं और आकांक्षाओं के बारे में अध्यापकों के अनुभव की कमी हो सकती है। अध्यापक के रूप में नियुक्त होने के बाद छात्र-अध्यापकों को वास्तविक शिक्षण स्थितियों में स्वयं को ढालने में कठिनाई होती है। यह अनुभव किया गया कि वे अपनी शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में नवीन अभ्यासों को लागू करने में असमर्थ थे। यह छात्र-अध्यापकों की ओर से सामुदायिक भागीदारी की कमी के कारण हो सकता है। इसलिए, छात्र-अध्यापकों को सामुदायिक अनुभव प्रदान करने की आवश्यकता है। ताकि वे समाज से जुड़े सामाजिक-सांस्कृतिक, शैक्षणिक,

और आर्थिक मुद्दों एवं समस्याओं से स्वयं को अवगत करा सकें और अध्यापक-अभ्यासकर्ता बनने के लिए स्वयं को तैयार कर सकें।

बी.एससी.-बी.एड. और बी.ए.-बी.एड. तीसरे सेमेस्टर के कुल 120 छात्रों ने इस पाँच दिवसीय सामुदायिक कार्यक्रम में भाग लिया, जो 2–6 जनवरी, 2023 तक आस-पास के गाँवों अर्थात मिंडोरी, मिंडोरा, इंतखेड़ी, जाटखेड़ी, रातीबढ़ और नीलबढ़ में आयोजित किया गया था। विद्यार्थियों ने आँगनवाड़ियों, स्कूल छोड़ने वालों, गाँव की बुनियादी संरचना, गाँव की अर्थव्यवस्था आदि का अध्ययन प्रकरण किया। उन्होंने गाँव के सरपंच, किसानों , महिला किसानों, अध्यापकों, डॉक्टरों, आँगनवाड़ी कार्यकर्ताओं आदि का भी साक्षात्कार लिया। विद्यार्थियों ने 'स्वस्थ भारत, स्वच्छ भारत', बालिका सुरक्षा, बालिका शिक्षा, अंधविश्वास उन्मूलन, शिक्षा का अधिकार, स्वास्थ्य एवं स्वच्छता, पोषण, स्वच्छता और दहेज के लिए जागरूकता अभियान चलाया। छात्रों ने जिन गाँवों का दौरा किया, वहाँ जागरूकता अभियान चलाया। छात्रों ने विभिन्न विषयों पर जागरूकता फैलाने के लिए गाँवों में नुक्कड़ नाटक और प्रेरक गीत भी प्रस्तुत किए।

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस उत्सव

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 22 अप्रैल, 2022 से 21 जून, 2022 तक मनाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य स्वस्थ और तनावमुक्त जीवन के लिए योग अभ्यास को बढ़ावा देना था। 22 अप्रैल, 2022 को डी.सी.जी.सी. के छात्रों के लिए मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य तथा आधारभूत योग अभ्यासों पर योग के प्रभाव विषय पर योग पर व्याख्यान-सह-कार्यशाला का आयोजन किया गया था जैसे कि शारीरिक मुद्राओं और व्यायामों (आसनों) की सापेक्ष सामग्री, साँस लेने की तकनीकें (प्राणायाम), गहन विश्राम और ध्यान अभ्यास भी आयोजित किए गए।

सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. और क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के माध्यम से पी.एम. ई-विद्या की एक पहल 'योग शरीर और मन को संतुलित करने का उपकरण' विषय पर एक पैनल परिचर्चा 13 मई, 2022 को आयोजित की गई थी। योग पर पैनलिस्टों द्वारा विचार-विमर्श को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2022' की गतिविधियों के तहत शामिल किया गया था, जिसमें पैनलिस्टों/विशेषज्ञों ने छात्रों, अध्यापकों, स्कूल अधिकारियों और अन्य हितधारकों के लाभ के लिए योग अभ्यासों की अवधारणा, लाभ और कार्यान्वयन के बारे में विस्तार से बताया।

प्रशिक्षित योग विशेषज्ञ के माध्यम से सामान्य योग प्रोटोकॉल (सी.वाई.पी.) पर प्रशिक्षण कार्यक्रम 17 मई, 2022 से 31 मई, 2022 तक संस्थान में आयोजित किया गया था। प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान योग अभ्यास स्थल के आस-पास योग चार्ट और स्टैंडीज प्रदर्शित किए गए थे। आर.आई.ई., भुवनेश्वर द्वारा 30 मई से 3 जून, 2022 तक सहयोग कार्यक्रम के माध्यम से योग पर लाइव ऑनलाइन बातचीत का आयोजन किया गया। 'स्वयं की देखभाल के लिए योग', 'योग से तनावमुक्ति' चर्चा के विषय थे, कैसे योग बच्चों को थकान या घबराहट के क्षणों में आराम महसूस करा सकता है, याददाश्त में सुधार, शैक्षणिक प्रदर्शन और उनकी अपनी भावनाओं, 'योग के माध्यम से सकारात्मक विचारों' की आदत और 'योग और शारीरिक कल्याण' के बारे में जागरूकता बढ़ा सकता है। 21 जून, 2022 को सामान्य योग प्रोटोकॉल पर योगाभ्यास हुआ। अंततः 21 जून, 2022 को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस 2022 मनाया गया जिसका उद्घाटन पी.सी. अग्रवाल, *प्रधानाचार्य*, आर.आई.ई., भुवनेश्वर की परिचयात्मक टिप्पणी के साथ किया गया और संस्थान के 200 से अधिक छात्रों और कर्मचारियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया।

हर घर तिरंगा अभियान

आजादी का अमृत महोत्सव के तत्वावधान में 11–17 अगस्त, 2022 के दौरान 'हर घर तिरंगा अभियान' आयोजित किया गया था। निर्देशानुसार 'क्रिएटिव' को संस्थान की वेबसाइट और ट्विटर अकाउंट पर डाउनलोड और अपलोड

किया गया है। स्वतंत्रता दिवस समारोह सप्ताह के दौरान अपने-अपने घरों पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने की दृष्टि से संस्थान और डी.एम. स्कूल के छात्रों और कर्मचारियों को हर घर तिरंगा अभियान के बारे में जागरूक किया गया और उन्हें अपने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म और हर घर तिरंगा वेबसाइट पर झंडे के साथ सेल्फी प्रदर्शित करने की सलाह दी गई। संस्थान के सभी आधिकारिक भवनों, छात्रावासों और स्टाफ सदस्यों के घरों में 11 अगस्त से 17 अगस्त, 2022 के दौरान राष्ट्रीय ध्वज फहराया गया। विभाजन विभीषिका स्मरण दिवस की पूर्व संध्या पर 14 अगस्त, 2022 को एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। 'हर घर तिरंगा अभियान' के तत्वावधान में 15 अगस्त, 2022 को संस्थान और प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय के लगभग 230 छात्रों और कर्मचारियों की भागीदारी के साथ 'प्रभात फेरी' आयोजित की गई।

फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0

फिट इंडिया फ्रीडम रन 3.0 का आयोजन 2–31 अक्तूबर, 2022 के दौरान 'आजादी के 75 साल, फिटनेस रहे बेमिसाल' थीम के साथ 'आजादी का अमृत महोत्सव' मनाने के लिए किया गया था। गांधी जयंती के अवसर पर 2 अक्तूबर, 2022 को 100 प्रतिभागियों (छात्रों और कर्मचारियों) की भागीदारी के साथ संस्थान परिसर में प्लॉग रन का आयोजन किया गया था। बाई-साइकिलिंग का कार्यक्रम 12 अक्तूबर, 2022 को आयोजित किया गया था, जिसमें लगभग 80 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। दौड़ कार्यक्रम 20 दिसंबर, 2022 को आयोजित किया गया था, जिसमें 200 प्रतिभागियों ने भाग लिया था। दौड़ कार्यक्रम 31 अक्तूबर, 2022 को 200 प्रतिभागियों के साथ यूनिटी रन के रूप में आयोजित किया गया था। कार्यक्रमों का उद्घाटन पी.सी. अग्रवाल, *प्रधानाचार्य*, आर.आई.ई., भुवनेश्वर ने किया। दौड़ की थीम 'आजादी के 75 साल, फिटनेस रहे बेमिसाल' को सभी प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह और जोश के साथ इन विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से पूरा किया।

जनजातीय गौरव दिवस

15 नवंबर, 2015 को भगवान बिरसा मुंडा की जयंती को 'जनजातीय गौरव दिवस' के रूप में मनाया गया। पुस्तकों, संदर्भों का प्रदर्शन— आदिवासी नेताओं जैसे बिरसा मुंडा, तिलका मांझी, सिद्धू कान्हू मुर्मू, वीर सुरेंद्र साई, रानी गाइदिन्ल्यू, तिरोट सिंग, गोविंद गुरु, लक्ष्मण नायक, नारायण सिंह, अल्लूरी सीताराम राजू के साथ-साथ अन्य गुमनाम नायकों की विरासत संस्थान के पुस्तकालय में पुस्तकों और पोस्टरों के प्रदर्शन के माध्यम से जनजाति समुदायों का प्रचार-प्रसार किया गया है। 'स्वतंत्रता संग्राम में जनजाति नायकों का योगदान' विषय पर वाद-विवाद प्रतियोगिता आयोजित की गई।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का उत्सव

राष्ट्रीय विज्ञान सप्ताह के लिए छात्रों को विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जोड़ने तथा प्रेरित करने की गतिविधियों के साथ 28 फरवरी, 2022 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इस अवसर पर वेंकट राव, *प्रमुख सामुदायिक चिकित्सा*, एस.ओ.ए. विश्वविद्यालय मुख्य अतिथि थे, जिन्होंने कोविड-19 के महामारी विज्ञान अध्ययन और टीका परीक्षण में शानदार काम किया है, उन्होंने छात्रों और संकाय सदस्यों को कोविड-19 की रोकथाम और इसके महामारी विज्ञान अध्ययन पर संबोधित किया।

विस्तार व्याख्यान शृंखला

इस विस्तार कार्यक्रम का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण मुद्दों पर छात्रों और अध्यापकों को जागरूक करना और प्रख्यात शिक्षाविदों के साथ शैक्षणिक बातचीत के लिए छात्रों और कर्मचारियों को एक मंच प्रदान करना है। इसके अलावा, कार्यक्रम में शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्तियों के अनुभवों को साझा करके प्रशिक्षुओं और संकाय सदस्यों के ज्ञान और समझ को समृद्ध करने में मदद मिली। वर्ष के दौरान निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए गए।

क्र.सं.	विषय	वक्ता का नाम	दिनांक
1.	21वीं सदी में अध्यापक शिक्षा	बी.पी. भारद्वाज, जी. बिस्वनाथाप्पा, एन. प्रधान और एम.ए. खादर	17 अक्तूबर, 2022
2.	राष्ट्रीय एकता दिवस 2022 का उत्सव	प्रवत कुमार राउल	31 अक्तूबर, 2022
3.	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती)	नीलिमा गुप्ता	11 नवंबर, 2022
4.	राष्ट्रीय संविधान दिवस	निरंजन बारिक	26 नवंबर, 2022
5.	'नगर निगम की भूमिका' पर बातचीत	विजय अमृता कुलंगे, आई.ए.एस	15 दिसंबर, 2022

अभिव्यक्ति शृंखला

प्रख्यात हस्तियों पर अभिव्यक्ति शृंखला आयोजित करने का विशिष्ट उद्देश्य राष्ट्र की सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देना, संरक्षित करना और छात्रों के बीच उनकी मनन कौशल को बढ़ाने, उनकी रचनात्मक अभिव्यक्ति को सामने लाने और संवैधानिक मूल्यों को बढ़ावा देने के लिए साक्षरता गतिविधियों को बढ़ावा देना है। वर्ष के दौरान, निम्नलिखित व्याख्यान आयोजित किए गए।

क्र.सं.	विषय	दिनांक
1.	भारत रत्न बाबा साहब भीमराव अंबेडकर की 131वीं जयंती	14 अप्रैल, 2022
2.	21वीं सदी में अध्यापक शिक्षा	17 अक्तूबर, 2022
3.	राष्ट्रीय एकता दिवस 2022 का उत्सव	31 अक्तूबर, 2022
4.	राष्ट्रीय शिक्षा दिवस (मौलाना अबुल कलाम आजाद की जयंती)	11 नवंबर, 2022
5.	राष्ट्रीय संविधान दिवस	26 नवंबर, 2022
6.	'नगर निगम की भूमिका' पर चर्चा	15 दिसंबर, 2022
7.	पराक्रम दिवस (सुभाष चंद्र बोस की 126वीं जयंती)	23 जनवरी, 2023

आर.आई.ई., भुवनेश्वर के सेवा-पूर्व अध्यापक शिक्षा (बी.एड.) कार्यक्रम में स्कूल इंटर्नशिप

इंटर्नशिप तीन स्तरों, जैसे— प्री-इंटर्नशिप, इंटर्नशिप और पोस्ट इंटर्नशिप में आयोजित की गई थी। सहयोग करने वाले स्कूल प्रमुखों, अध्यापक, छात्र-अध्यापकों और संस्थान संकाय सदस्यों के लिए प्री-इंटर्नशिप सम्मेलन 9–13 सितंबर, 2023 को आयोजित किया गया था। स्कूल प्रमुखों और अध्यापकों का सहयोग करते हुए छात्र-अध्यापकों को स्कूल इंटर्नशिप के तौर-तरीकों पर उन्मुख किया गया। वर्तमान सत्र के दौरान बी.एड. के 107 छात्र-अध्यापकों को 16 सितंबर, 2022 से 10 जनवरी, 2023 तक बिहार, झारखंड, ओडिशा और पश्चिम बंगाल के 15 जवाहर नवोदय विद्यालय (जे.एन.वी.) में रखा गया। छात्र अध्यापक विभिन्न गतिविधियों, जैसे— सहयोगी अध्यापक की ऑनलाइन कक्षाओं का अवलोकन, ऑनलाइन सहकर्मी अवलोकन, इकाई योजना और शिक्षण योजना, पाठों का अंतरण, क्रियात्मक अनुसंधान करना, ई-सामग्री/सामग्री और उपलब्धि परीक्षण विकसित करना तथा चिंतनशील डायरी लिखना आदि में शामिल थे। छात्र-अध्यापकों के नवाचारों, चुनौतियों और अनुभवों को साझा करने के लिए संस्थान में 18–19 जनवरी, 2023 को पोस्ट इंटर्नशिप सम्मेलन आयोजित किया गया था। भविष्य के स्कूल इंटर्नशिप कार्यक्रमों की योजना बनाने के लिए ये विचार उपयोगी होंगे। 19 जनवरी, 2023 को छात्र-अध्यापकों द्वारा स्कूल इंटर्नशिप के दौरान उपयोग किए गए दो सर्वोत्तम शिक्षण संसाधनों को प्रदर्शित करते हुए एक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया था।

बी.एड. छात्रों का स्कूल एक्सपोजर और बहुसांस्कृतिक नियोजन कार्यक्रम

बी.एड. के लिए बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम दो वर्षीय (द्वितीय सेमेस्टर) छात्र-अध्यापकों का आयोजन छात्र-अध्यापकों को स्कूलों की कार्यप्रणाली, अध्यापकों और मुख्य अध्यापकों की भूमिका, स्कूल की गतिविधियों, सहकर्मी शिक्षण और कार्रवाई अनुसंधान की प्रक्रिया से परिचित कराने के लिए किया गया था। यह कार्यक्रम दो स्तरों में; स्कूल प्रदर्शन और बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करके किया गया था। कार्यक्रम का पहला स्तर 5–9 दिसंबर, 2022 तक भुवनेश्वर स्थित विभिन्न स्कूलों में आयोजित किया गया था। कार्यक्रम का दूसरा स्तर 20 फरवरी से 4 मार्च 2023 तक तालचेर, अंगुल में स्थित विभिन्न स्कूलों में आयोजित किया गया है। इस पहल के लिए राज्य सरकार के स्कूल, डी.ए.वी. स्कूल, श्री अरविंद इंटीग्रल एजुकेशन सेंटर, सरस्वती शिशु विद्या मंदिर जैसे विभिन्न प्रकार के स्कूलों का चयन किया गया। छात्रों को स्तरबद्ध तरीके से विभिन्न प्रकार के स्कूलों में रखा गया ताकि सभी छात्रों को विविध अनुभवात्मक शिक्षा मिल सके। आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 6 मार्च, 2023 को आयोजित पोस्ट कॉन्फ्रेंस में छात्र-अध्यापकों ने बहुसांस्कृतिक कार्यक्रम से अपने संतोषजनक सीखने के अनुभव को व्यक्त किया। अंगुल जनपद के क्षेत्र दौरे के दौरान 24 फरवरी, 2022 से 06 मार्च, 2023 तक बी.ए. बी.एड. छठे सेमेस्टर के छात्रों के बहुसांस्कृतिक नियोजन से संबंधित सभी गतिविधियाँ पूरी की गई। बी.एससी. बी.एड. छठे सेमेस्टर के छात्रों के बहुसांस्कृतिक नियोजन से संबंधित सभी गतिविधियाँ 24 फरवरी–07 मार्च, 2023 तक ढेंकनाल जिले के क्षेत्र दौरे के दौरान पूरी की गई।

दो वर्षीय बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर के लिए समुदाय के साथ कार्य करना

स्कूल और समुदाय के बीच सुसंगत और अनुकूल संबंध बनाए रखने के मूल्य को ध्यान में रखते हुए, समुदाय के साथ फील्ड वर्क (एफ.डब्ल्यू.सी.) कार्यक्रम क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर के दो वर्षीय बी.एड. पाठ्यक्रम का एक अभिन्न अंग है। इसका उद्देश्य शैक्षिक कार्यक्रमों में सामुदायिक भागीदारी के विभिन्न पहलुओं के बारे में अंतर्दृष्टि विकसित करना और स्कूल के लिए सामुदायिक समर्थन प्राप्त करने और राष्ट्र के विकास में योगदान करने की उनकी क्षमता को बढ़ाना है। इसका उद्देश्य छात्र-अध्यापकों को इनमें सक्षम बनाना है— (1) समाज, समुदाय के भीतर काम करने वाले कारकों से परिचित होना अर्थात सामाजिक वास्तविकताओं का ज्ञान; (2) छात्र-अध्यापकों के बीच श्रम की गरिमा विकसित करना; (3) देश के सामाजिक और आर्थिक पुनर्निर्माण में उनकी रुचि जगाना; (4) छात्र-अध्यापक को समाज की शैक्षिक समस्याओं एवं आवश्यकताओं से अवगत कराना; (5) सतत विकास के लिए सेवा-पूर्व अध्यापकों को तैयार करना; और (6) सामुदायिक सेवा के माध्यम से छात्र-अध्यापक के व्यक्तित्व का विकास करना। उपरोक्त उद्देश्यों को सामने रखते हुए, ओडिशा के अंगुल जिले में बी.एड. चतुर्थ सेमेस्टर के छात्रों के लिए 10 दिवसीय सामुदायिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों ने सभी 10 दिनों में अलग-अलग गतिविधियाँ कीं। वे गाँव/समुदाय का शैक्षिक सर्वेक्षण (जेंडर, पर्यावरण, स्वास्थ्य और स्वच्छता, आर.टी.ई. अधिनियम, 2009 पर जागरूकता, सामुदायिक संसाधनों का उपयोग आदि) जैसी गतिविधियों में लगे हुए थे। इसके अलावा, छात्र-अध्यापकों ने योग, शारीरिक व्यायाम, विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर नुक्कड़ नाटक, 'स्वच्छ भारत अभियान' आदि को बढ़ावा देना, सामाजिक मुद्दों के बारे में जागरूकता पैदा करने के लिए रैली, सांस्कृतिक आदान-प्रदान कार्यक्रम आयोजित किए। ओडिशा के अंगुल जिले में 26 फरवरी, 2022 से 04 मार्च, 2023 तक बी.ए. बी.एड. आठवें सेमेस्टर के छात्रों के लिए सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था और 9–14 मार्च, 2023 तक ओडिशा के ढेंकनाल जिले में बी.एससी. बी.एड. आठवें सेमेस्टर के छात्रों के लिए सामुदायिक कार्यक्रम आयोजित किया गया था।

प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालय में प्री-स्कूल केंद्र

कार्यक्रम का उद्देश्य विद्यालय-पूर्व बच्चों के लिए विकासात्मक रूप से उपयुक्त अभ्यासों की योजना बनाना और व्यवस्थित करना था। लोअर प्री-प्राइमरी और अपर प्री-प्राइमरी में प्रत्येक में पच्चीस छात्रों को यादृच्छिक चयन के आधार पर प्रवेश दिया गया था। साक्षात्कार के माध्यम से दो अध्यापकों और दो महिला सहायिकाओं का चयन किया गया। अध्यापकों को विकासात्मक रूप से उपयुक्त अभ्यासों और मूलभूत वर्षों पर एन.ई.पी. 2020 के दृष्टिकोण और सिफारिशों पर उन्मुख किया गया था। कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए साप्ताहिक कार्य योजना और संबंधित गतिविधियाँ अर्थात शारीरिक विकास, भाषा विकास, सामाजिक-भावनात्मक और संज्ञानात्मक विकास विकसित किए गए। विद्यालय-पूर्व बच्चों की विकासात्मक विशेषताओं को दर्शाने वाले छात्रों के विकासात्मक प्रोफाइल का एक प्रारूप आंतरिक स्तर पर विकसित किया गया था। खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र पर 23–24 नवंबर, 2022 को कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें 50 अभिभावकों और अध्यापकों ने भाग लिया। माता-पिता का विद्यालय-पूर्व बच्चों पर होने वाले दबाव, घर पर सक्षम वातावरण को बढ़ावा देने, खेल और प्रारंभिक शिक्षा, छोटे बच्चों का मूल्यांकन और अन्य संगत क्षेत्रों पर अभिमुखीकरण किया गया था। कार्यक्रम का मूल्यांकन अभिभावकों, टीम के सदस्यों और बच्चों से प्रतिक्रिया एकत्र करके किया गया। अभिभावकों, अध्यापकों और टीम के सदस्यों के विचारों से अधिक सुविधाओं और संसाधनों के प्रावधान का पता चला।

गणित शिक्षा पर राष्ट्रीय सम्मेलन

महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन की जयंती के उपलक्ष्य में 21–22 दिसंबर, 2022 को आर.आई.ई., भुवनेश्वर में गणित शिक्षा पर 11वाँ राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया था। यह सम्मेलन एन.ई.पी. 2020 की विभिन्न सिफारिशों पर और स्कूली गणित में सुधार के लिए सिफारिशों को शामिल करने के विभिन्न तरीकों का पता लगाने पर केंद्रित था। यह सम्मेलन गणित शिक्षा के क्षेत्र में काम करने वाले सभी हितधारकों को अपने अनुभव, शोध, नवीन अभ्यासों और गणित शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार में उनके प्रभाव को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करता है। इस सम्मेलन में देश के विभिन्न 18 राज्यों से आए 61 प्रतिभागियों ने अपने शोध पत्र प्रस्तुत किए।

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत गतिविधियाँ

आजादी का अमृत महोत्सव के तहत संस्थान में विभिन्न गतिविधियों का आयोजन किया गया—

- 31 जनवरी, 2023 को 'एक भारत, श्रेष्ठ भारत' थीम पर एक पोस्टर निर्माण कार्यक्रम आयोजित किया गया था। बी.एससी. बी.एड., बी.ए. बी.एड. और बी.एड. प्रोग्राम के छात्रों ने पोस्टर निर्माण में भाग लिया और थीम से संबंधित अपने रचनात्मक विचारों को पोस्टर के रूप में प्रदर्शित किया।
- 27 फरवरी, 2023 को 'मानसिक स्वास्थ्य' पर एक वेबिनार आयोजित किया गया। आई.पी. गौरम्मा, *प्रोफेसर*, आर.आई.ई., भुवनेश्वर वेबिनार के वक्ता थे।
- अभिजीत पात्रों द्वारा विकसित संथालों पर एक नृवंशविज्ञान वृत्तचित्र 22 मार्च, 2023 को प्रदर्शित किया गया था। सभी संकाय सदस्य और छात्र एक चिंतनशील सत्र के बाद कार्यक्रम में शामिल हुए। संस्थान के संकाय सदस्यों और छात्रों ने प्रदर्शित वृत्तचित्र के आधार पर आदिवासी सशक्तीकरण पर अपने विचार व्यक्त किए।
- परिचर्चा और सहयोग— छात्रों के मानसिक सामाजिक समर्थन और मानसिक कल्याण के लिए शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की मनोदर्पण पहल द्वारा लाइव सत्र आयोजित किया गया।

परिचर्चा	
दिनांक	**विषय**
07/01/2022	मानसिक कल्याण के लिए साझा करना और देखभाल करना आवश्यक है
18/02/2022	स्कूल में किशोरों के बीच मादक द्रव्यों के सेवन की रोकथाम करना
01/04/2022	मादक द्रव्यों के सेवन के उपचार में परिवर्तन के लिए प्रेरणा बढ़ाना
13/05/2022	योग शरीर और मन को संतुलित करने का साधन है
24/06/2022	बच्चों की सामाजिक दुनिया
05/08/2022	समकालीन जीवन-शैली में शारीरिक शिक्षा की आवश्यकता
16/09/2022	किशोर और जिम्मेदार निर्णय लेने का कौशल
28/10/2022	किशोरों में आई.सी.टी. का उपयोग और मानसिक स्वास्थ्य
09/12/2022	परीक्षा के तनाव से निपटने का कौशल

सहयोग	
दिनांक	**विषय**
24/01/2022	स्वयं सहायता सबसे अच्छी सहायता है
25/01/2022	ऑनलाइन शिक्षण की चुनौतियों का समाधान करना
26/01/2022	ऑनलाइन शिक्षण का समर्थन करना
27/01/2022	विपत्ति के दौरान आशीर्वाद की गिनती
28/01/2022	ऑनलाइन शिक्षण की भविष्य की संभावनाएँ
07/03/2022	मादक द्रव्यों का सेवन— रुकने का समय
08/03/2022	मादक द्रव्यों का सेवन— युवाओं पर हानिकारक प्रभाव
09/03/2022	नशीली दवाओं के संपर्क में आना— विकल्पों का प्रश्न
10/03/2022	अपने शरीर के साथ तालमेल बिठाएँ— बहुत जरूरी है
11/03/2022	मादक द्रव्यों का सेवन— क्यों और क्यों नहीं
18/04/2022	खाली समय का उपयोग और किशोर मानसिक कल्याण
19/04/2022	स्कूल वापस जाएँ और परिवर्तनों के साथ बने रहें
20/04/2022	जीवन कौशल शिक्षा— छात्रों में नैतिकता को बढ़ाने का तरीका
21/04/2022	आत्म जागरूकता— स्वयं को जानें
22/04/2022	स्व-प्रबंधन-अपने लक्ष्य पर केंद्रित रहें
30/05/2022	स्वयं की देखभाल के लिए योग
31/05/2022	योग से तनाव मुक्त रहें
01/06/2022	शैक्षणिक प्रदर्शन को बढ़ाने के लिए योग
02/06/2022	योग के माध्यम से सकारात्मक विचारों की आदत
03/06/2022	योग एवं शारीरिक कल्याण
11/07/2022	आत्म अनुशासन और मानसिक स्वास्थ्य पर इसका प्रभाव
12/07/2022	तनाव से निपटने के लिए कार्य करें

13/07/2022	सकारात्मक शारीरिक छवि निर्माण
14/07/2022	सौहार्दपूर्ण जीवन के लिए दृढ़ता
15/07/2022	विद्यार्थियों में रचनात्मकता का विकास करना
22/08/2022	बाल मनोविज्ञान पर पर्यावरणीय प्रभाव
23/08/2022	किशोरों के करियर चयन पर साथियों के दबाव का प्रभाव
24/08/2022	एक सकारात्मक शारीरिक छवि का विकास करना
25/08/2022	चुनौतियों को सीखने के अनुभवों में बदलना
26/08/2022	'मदद मांगना एक ताकत है'— मानसिक कल्याण
03/10/2022	मानसिक कल्याण की उन्नति के लिए गतिविधियों का महत्व
04/10/2022	किशोरों की समस्याएँ और उनका प्रबंधन
05/10/2022	किशोरों में संघर्ष
06/10/2022	भावनाओं का प्रबंधन— मनोवैज्ञानिक प्राथमिक चिकित्सा की आवश्यकता और सार
07/10/2022	किशोरों में नेतृत्व कौशल का विकास
14/11/2022	स्वयं को जानना— दूसरों के प्रति अपनी समझ को कैसे सुधारें
15/11/2022	किशोरों के कल्याण के लिए नींद का महत्व
16/11/2022	सॉफ्ट कौशलों का निर्माण
17/11/2022	स्वस्थ संबंध का विकास करना
18/11/2022	तनाव और चिंता की बदलती गतिशीलता— सोशल मीडिया का प्रवेश

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

स्वतंत्रता दिवस समारोह

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, 15 अगस्त, 2022 को वाई. श्रीकांत, *प्रधानाचार्य*, आर.आई.ई., मैसूरु ने मुख्य अतिथि के रूप में छात्रों से गार्ड ऑफ ऑनर लिया। राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद उन्होंने छात्रों को संबोधित किया और भारतीय सैनिकों तथा भारत के स्वतंत्रता सेनानियों के सर्वोच्च बलिदान के बारे में बताया। उन्होंने विविधता में एकता के बारे में भी बात की जो भारत का मूलभूत मूल्य है। आर.आई.ई., मैसूरु और डी.एम.एस. के छात्रों ने क्षेत्रीय भाषाओं में देशभक्ति प्रस्तुत किए।

आर.आई.ई., मैसूरु में स्वतंत्रता समारोह का आयोजन

गणतंत्र दिवस समारोह

26 जनवरी, 2022 को गणतंत्र दिवस मनाया गया। *प्रधानाचार्य* वाई. श्रीकांत मुख्य अतिथि थे। उन्होंने डी.एम.एस. और आर.आई.ई. मैसूरु के छात्रों से गार्ड ऑफ ऑनर लिया। राष्ट्रीय ध्वज फहराने के बाद उन्होंने छात्रों को संबोधित किया और भारत की गणतांत्रिक संरचना के महत्व और राज्यों के संविधान और संघीय ढांचे के महत्व के बारे में बताया। आर.आई.ई. और डी.एम.एस. के छात्रों ने क्षेत्रीय भाषा में देशभक्ति गीत प्रस्तुत किए।

विज्ञान दिवस समारोह

स्थायी भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी के एकीकरण पर एक पैनल चर्चा के साथ 28 फरवरी, 2022 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। कार्यक्रम में 200 छात्रों, आंतरिक संकाय सदस्यों और 2 बाहरी संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया था।

राष्ट्रीय कला दिवस समारोह

राष्ट्रीय कला दिवस 9 नवंबर, 2022 को 'वंदे भारत' थीम के साथ मनाया गया और कला समेकित शिक्षण अर्थात विज्ञान, कला, गणित, पर्यावरण विज्ञान और कला प्रदर्शनी पर संगीत, नृत्य, पेंटिंग आदि प्रतियोगिताओं, कौशल और डेमो का आयोजन किया गया।

इंटर्नशिप कार्यक्रम

वर्ष 2022 के लिए शिक्षण में इंटर्नशिप 11वें सेमेस्टर एम.एससी.एड. (भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित); सातवें सेमेस्टर बी.एससी. बी.एड. (पी.सी.एम. और सी.बी.जे.ड.), बी.ए. बी.एड. और एम.एससी. एड. (भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित), तृतीय सेमेस्टर बी.एड. के छात्रों के लिए आयोजित की गई थी। 11वें सेमेस्टर के लिए एम.एससी. एड. (भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित) इंटर्नशिप तीन सप्ताह की अवधि के लिए है, सातवें सेमेस्टर बी.एससी. बी.एड. (पी.सी.एम. और सी.बी.जेड.), बी.ए. बी.एड. और एम.एससी. एड. (भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित) के लिए आठ सप्ताह की अवधि के लिए है और तीसरे सेमेस्टर बी.एड. छात्रों के लिए यह 16 सप्ताह का है। इस उद्देश्य के लिए आस-पास के 33 सहकारी विद्यालयों का चयन किया गया। 21–22 अक्तूबर, 2022 को दो दिवसीय प्री-इंटर्नशिप सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें लगभग 50 सहकारी अध्यापकों ने भाग लिया। इस दौरान सहयोगी अध्यापकों को छात्रों की इंटर्नशिप गतिविधियों और पाठों का पर्यवेक्षण और मूल्यांकन करने के बारे में उन्मुख किया गया। एम.एससी. एड. के 11वें सेमेस्टर (भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित) के लिए तीन सप्ताह की इंटर्नशिप 27 अक्तूबर, 2022 को शुरू हुई और 19 नवंबर, 2022 को समाप्त हुई।

बी.एससी. बी.एड. सातवें सेमेस्टर (पी.सी.एम. और सी.बी.जेड.), बी.ए. बी.एड. और एम.एससी.एड. (भौतिकी, रसायन विज्ञान और गणित) के लिए आठ सप्ताह की इंटर्नशिप 27 अक्तूबर, 2022 को शुरू हुई और 17 दिसंबर, 2022 को समाप्त हुई। 3वें सेमेस्टर बी.एड. के लिए आठ सप्ताह की इंटर्नशिप का पहला स्तर 4 नवंबर, 2022 को शुरू हुआ और 23 दिसंबर, 2022 को समाप्त हुआ। आठ सप्ताह का दूसरा स्तर 1 जनवरी, 2023 को शुरू हुआ और 28 फरवरी, 2023 को समाप्त हुआ।

समुदाय के साथ कार्य करना

बी.एड. तीसरे सेमेस्टर के छात्रों के लिए सामुदायिक गतिविधि का आयोजन किया गया। यह गतिविधि 50 बी.एड. छात्रों द्वारा की गई थी। इसमें वे अपने पड़ोस के समुदाय में स्थानीय समुदाय, स्कूली बच्चों के माता-पिता, अध्यापकों और छात्रों के साथ बातचीत करते हैं। बी.एड. छात्रों ने निम्नलिखित क्षेत्रों पर सर्वेक्षण किया है— (क) बच्चों के लिए महामारी अवधि के दौरान ऑनलाइन स्कूली शिक्षा कैसे संचालित की गई और बच्चों की शिक्षा प्रगति के संदर्भ में ऑनलाइन शिक्षा कितनी प्रभावी है। (ख) माता-पिता द्वारा बच्चों के लिए ऑनलाइन शिक्षा की सुविधा

कैसे प्रदान की गई और छात्रों, अभिभावकों तथा अध्यापकों की कौन-सी समस्याएँ और चुनौतियाँ हैं। छात्र ने आस-पास में कोविड-19 से जागरूकता और रोकथाम तथा उपायों पर समुदाय के छह सदस्यों (दो महिलाओं) का साक्षात्कार लेने के बाद रिपोर्ट तैयार की। गतिविधि रिपोर्ट का मूल्यांकन शिक्षा विभाग में संकाय द्वारा किया गया था।

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.), उमियम

स्कूली पाठ्यक्रम में फोकस को संदर्भ आधारित से योग्यता आधारित शिक्षा की ओर स्थानांतरित करने पर राष्ट्रीय संगोष्ठी

राष्ट्रीय संगोष्ठी 2–3 फरवरी, 2023 को एन.ई.आर.आई.ई., उमियम में आयोजित की गई थी। संगोष्ठी का उद्देश्य एन.ई.पी. 2020 की पृष्ठभूमि में स्कूली शिक्षा में चर्चा, विचारों के प्रसार, अनुभवों को साझा करने के लिए एक मंच तैयार करना था। निम्नलिखित विषय-वस्तु/उप-विषयों का चयन किया गया— (1) स्कूली शिक्षा में प्रतिमान बदलना (2) स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों में योग्यता आधारित पाठ्यक्रम (3) स्कूली शिक्षा के विभिन्न स्तरों में शैक्षणिक अभ्यास (4) एन.ई.पी. 2020 और अंतर-पाठ्यचर्या शैक्षणिक दृष्टिकोण। मुख्य अतिथि आई.आई.एम., शिलांग के *निदेशक* डी.पी. गोयल ने उद्घाटन भाषण दिया और गुवाहाटी विश्वविद्यालय की *एमेरिटस प्रोफेसर* नीलिमा भगवती ने मुख्य व्याख्यान दिया। शरद सिन्हा, *अध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली ने स्कूली शिक्षा में बदलाव लाने में रा.शै.अ.प्र.प. की भूमिका पर प्रकाश डाला।

दो वर्ष के बी.एड. पाठ्यक्रम विद्यार्थियों के लिए इंटर्नशिप कार्यक्रम

पाठ्यक्रम के अनुसार, शिलांग शहर और उसके आस-पास के 10 स्कूलों में 12 सप्ताह की इंटर्नशिप की गई, जहाँ इनमें से प्रत्येक स्कूल में अधिकतम 5 छात्र-प्रशिक्षु (46 छात्र) जुड़े हुए थे। इससे पहले, संस्थान में प्री-इंटर्नशिप की जाती थी, जिसमें छात्रों को शिक्षण अभ्यासों के साथ तैयार किया जाता था और चयनित विद्यालयों में की जाने वाली अन्य गतिविधियों हेतु 29 मार्च, 2022 को सभी सहयोगी विद्यालयों के प्रधानों के साथ अभिविन्यास-सह-बैठक का आयोजन किया गया। इस बैठक में, स्कूल के प्रतिनिधि को विभिन्न गतिविधियों के बारे में जानकारी दी गई, जिन्हें छात्र प्रशिक्षुओं को अपने स्कूलों में करने की आवश्यकता है और छात्र प्रशिक्षुओं को स्कूलों से जिस सहायता की आवश्यकता है, उसके बाद यदि कोई समस्या हो तो उसे दूर करने के उपायों को साझा किया गया। यह इस अभिविन्यास कार्यक्रम का हिस्सा है कि छात्र प्रशिक्षुओं को उन स्कूलों से मिलने और बातचीत करने का भी मौका मिलता है जहाँ उन्हें नियुक्त किया गया था। इस इंटर्नशिप का उद्देश्य प्रभावी शिक्षण के लिए विभिन्न शिक्षण कौशल विकसित करना, कक्षा संचालन के लिए दक्षताएँ विकसित करना, विभिन्न प्रकार की शिक्षण सहायता तैयार करने में अभ्यास प्राप्त करना और अध्यापकों को उनके दिन-प्रतिदिन के काम की डायरी तैयार करना आदि था। स्कूल इंटर्नशिप 4 अप्रैल से 10 जून, 2022 तक शुरू हुई। इस अवधि के दौरान प्रशिक्षु छात्रों ने 60 पाठ (प्रत्येक विषयों से 30), 15 सहकर्मी अवलोकन पाठ, 2 समालोचना पाठ पूरे किए। अन्य गतिविधियाँ जैसे समय-सारिणी, पोर्टफोलियो, स्कूल असेंबली, अध्यापक डायरी, अध्यापक बैठक के मिनट आदि की तैयारी भी छात्रों द्वारा की गई।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का समारोह

रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाई पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान ने 21 जून, 2022 को सुबह 8.45 बजे से 10.00 बजे तक सभागार में आठवाँ अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया। इस समारोह की शुरुआत एन.ई.आर.आई.ई. के *प्रधानाचार्य* बी. बारठाकुर ने योग विशेषज्ञ केरलिन राजी और कार्यक्रम में भाग लेने वाले सभी संकाय सदस्यों, कर्मचारियों, छात्रों और परिवार के सदस्यों के स्वागत के साथ की। बी. बारठाकुर ने योग के महत्व पर प्रकाश डाला और कहा कि 11 दिसंबर, 2014 को संयुक्त राष्ट्र ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषित किया और उसके बाद 21 जून को दुनियाभर में प्रतिवर्ष अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाने लगा। कार्यक्रम समन्वयक

बसांसी खार्लुखी ने योग प्रशिक्षक का परिचय सदन में कराया और उन्हें योग के लाभों और योग कैसे व्यक्तियों की मदद कर सकता है, के बारे में एक संक्षिप्त वक्तव्य के लिए आमंत्रित किया। केरलिन राजी ने सदन को बताया कि योग शरीर, मन और सांस के बीच संबंध बनाने पर आधारित है। यह हमारे अपने शरीर में रहने के लिए बाधाओं से मुक्त स्थान बनाने और शरीर से नकारात्मकताओं को मुक्त करने के बारे में है।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस समारोह

भारत में हर वर्ष 28 फरवरी को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस नोबेल पुरस्कार विजेता सी. वी. रमन की जन्मतिथि 28 फरवरी को मनाया जाता है। इसे रमन प्रभाव की ऐतिहासिक खोज की स्मृति में मनाया जाता है, जिसके लिए उन्हें बाद में 1930 में भौतिकी में नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया था। हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी 28 फरवरी, 2023 को पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग, मेघालय में बड़े उत्साह के साथ राष्ट्रीय विज्ञान दिवस मनाया गया। इस वर्ष राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम 'ग्लोबल साइंस फॉर ग्लोबल वेल बीइंग' है।

29वें एन.ई.आर.आई.ई. स्थापना दिवस का समारोह

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.) ने 21 मार्च, 2023 को एन.ई.आर.आई.ई., रा.शै.अ.प्र.प., शिलांग में अपना 29वाँ स्थापना दिवस मनाया। स्वागत भाषण शतरूपा पालित, *एसोसिएट प्रोफेसर*, एन.ई.आर.आई.ई. ने दिया। एफ.जी. दखार, *प्रभारी प्राचार्य,* एन.ई.आर.आई.ई. की भूमिका और कार्य। सी.डी. लिंगवा, *निदेशक,* डी.ई.आर.टी., मेघालय सरकार और हमारे मुख्य अतिथि बी.डी.आर. तिवारी, आई.ए.एस. (*आयुक्त* एवं *सचिव*, शिक्षा, मेघालय सरकार)। इस समारोह के दौरान डॉक्यूमेंट्री स्क्रीनिंग, पुरस्कार वितरण और सांस्कृतिक कार्यक्रम जैसे कई अन्य कार्यक्रम आयोजित किए गए। उत्सव का समापन एन.ई.आर.आई.ई. की *सहायक प्रोफेसर* सीमा आर. के धन्यवाद प्रस्ताव के साथ हुआ।

एन.ई.आर.आई.ई. में 62वें रा.शै.अ.प्र.प. स्थापना दिवस का समारोह

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.) ने 1 सितंबर, 2022 को 62वाँ रा.शै.अ.प्र.प. का स्थापना दिवस मनाया। उत्सव की मुख्य अतिथि एस.सी.पी.सी.आर., मेघालय की *पूर्व अध्यक्ष* मीना खरकोंगर और विशिष्ट अतिथि डी.पी. गोयल, *निदेशक,* आई.आई.एम. शिलॉन्ग थे। बी.आर. दखार ने समारोह की मेजबानी की। एफ.जी. दखार, *प्रभारी प्रधानाचार्य* ने स्वागत भाषण दिया और रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा वर्षों के दौरान सामना की गई चुनौतियों और उपलब्धियों पर अपने विचार साझा किए।

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (मातृभाषा दिवस) का समारोह

21 फरवरी, 2023 को एन.ई.आर.आई.ई. सभागार में अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (मातृभाषा दिवस) मनाया गया। इस अवसर के मुख्य अतिथि जे.एन.यू के *सेवानिवृत्त प्रोफेसर* अजीत मोहंती थे। वे जे.एन.यू., नई दिल्ली में पूर्व प्रोफेसर और आई.सी.एस.एस.आर. *नेशनल फेलो*, *मुख्य सलाहकार*, एन.एम.आर.सी. भी हैं। कार्यक्रम ऑनलाइन मोड पर आयोजित किया गया था, जिसमें संकाय सदस्य, कर्मचारी और छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम की शुरुआत सरस्वती वंदना के साथ हुई, जिसके बाद *प्रभारी प्रधानाचार्य,* एफ.जी. दखार का स्वागत भाषण, शतरूपा पालित का संक्षिप्त परिचय और एम.जी. वालांग का धन्यवाद ज्ञापन हुआ। मोहंती ने भाषा के महत्व के बारे में बात की कि कैसे एक बच्चा घरेलू भाषा से बहुभाषावाद की संकेंद्रित परत की ओर चला गया, प्रारंभिक शिक्षा के लिए मातृभाषा का महत्व और मातृभाषा से दूसरी भाषा की ओर कैसे बढ़ा। अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के महत्व को मनाते हुए छात्रों के लिए भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। पुरस्कार विजेताओं को नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र के साथ-साथ प्रतिभागियों को भी प्रमाणपत्र दिया गया।

7. रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा चलाई जा रही शिक्षा मंत्रालय की प्रमुख योजनाएँ

रा.शै.अ.प्र.प. स्कूल और अध्यापक शिक्षा में गुणवत्ता सुधार के लिए विभिन्न अनुसंधान, विकास, प्रशिक्षण और विस्तार कार्यक्रम चलाती है। इन कार्यक्रमों को मंजूरी देने वाली परिषद् की सर्वोच्च शैक्षणिक समिति कार्यक्रम सलाहकार समिति (पी.ए.सी.) है। इनके अलावा, शिक्षा मंत्रालय परिषद् को अपनी विभिन्न योजनाओं/परियोजनाओं को कार्यान्वित करने का कार्य सौंपता है जो शिक्षा मंत्रालय के कार्यक्रम अनुमोदन बोर्ड (पी.ए.बी.) द्वारा अनुमोदित स्कूल और अध्यापक शिक्षा से संबंधित हैं। इस योजना को प्रभावी तरीके से कार्यान्वित करने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के विभिन्न घटकों को जिम्मेदारियाँ सौंपी गई हैं। वर्ष 2022–23 के दौरान परिषद् ने निम्नलिखित योजनाएँ कार्यान्वित कीं।

समग्र शिक्षा के तहत प्रमुख कार्यक्रम— स्कूली शिक्षा के लिए समेकित योजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना

राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना 36 राज्य/संघ राज्य क्षेत्र और 4 आर.आई.ई. में कार्यान्वित की जा रही है। कार्यान्वयन करने वाले सभी राज्य/संघ राज्य क्षेत्रों और रा.शै.अ.प्र.प. के आर.आई.ई. द्वारा की जाने वाली विभिन्न गतिविधियों में सामग्री विकास, समर्थन, प्रशिक्षण, पाठ्यचर्या संबंधी गतिविधियाँ, अनुसंधान और मूल्यांकन, प्रकाशन/प्रलेखन और निगरानी शामिल हैं।

स्वास्थ्य और कल्याण पर ई-सामग्री और छोटी अवधि के 11 ई-पाठ्यक्रम

स्कूल के स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम के 11 मॉड्यूल को ई-पाठ्यक्रम सामग्री में परिवर्तित किया गया। आयुष्मान भारत स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण कार्यक्रम के 11 मॉड्यूल अर्थात स्वास्थ्य को बढ़ावा; भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य; पारस्परिक संबंध; नैतिकता और जिम्मेदार नागरिकता; जेंडर की समानता; पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता; मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम और प्रबंधन; स्वस्थ जीवनशैली को बढ़ावा देना; प्रजनन स्वास्थ्य और एच.आई.वी. की रोकथाम; हिंसा और चोटों के खिलाफ बचाव और सुरक्षा; और इंटरनेट के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देना; गैजेट्स तथा मीडिया; को 13–17 फरवरी, 2023 और 27 फरवरी से 3 मार्च, 2023 तक डी.ई.एस.एस. सम्मेलन कक्ष, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली में आयोजित दो कार्यशालाओं के दौरान विशेषज्ञों द्वारा की गई चर्चा और सुझावों के अनुसार ई-पाठ्यक्रम सामग्री में परिवर्तित किया गया। इन कार्यशालाओं में विश्वविद्यालयों, रा.शै.अ.प्र.प., सरकारी संस्थानों, मंत्रालय, संयुक्त राष्ट्र एजेंसियों और गैर-सरकारी संगठनों के कुल 47 प्रतिभागियों/संसाधन व्यक्तियों/संकाय सदस्यों ने भाग लिया।

एन.पी.ई.पी. के तहत स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत प्रशिक्षण कार्यक्रम

क्र.सं.	कार्यक्रम का शीर्षक	स्थान और दिनांक
1.	अंतरक्रियात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम	रा.शै.अ.प्र.प., दिल्ली, 9–12 जनवरी, 2023
2.	स्कूल स्वास्थ्य कार्यक्रम के तहत एस.आर.पी. के लिए अंतरक्रियात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम	आर.आई.ई., भुवनेश्वर, 6–9 फरवरी, 2023
3.	राज्य/संघ राज्य क्षेत्र और आर.आई.ई. के एस.आर.पी. के लिए अंतरक्रियात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रम	पुरी, ओडिशा, 10–12 सितंबर, 2022

एन.पी.ई.पी. के प्रमुख क्षेत्रों में जनसंख्या शिक्षा और किशोरावस्था शिक्षा का समेकन, किशोरों के बीच जीवन कौशलों के विकास पर ध्यान देने के साथ सामग्री में पहले से ही समेकित तत्वों का सुदृढ़ीकरण और स्कूली शिक्षा और अध्यापक शिक्षा की प्रक्रिया शामिल हैं। किशोरावस्था शिक्षा में विशेष रूप से जीवन कौशल विकास पर केंद्रित कार्यनीतियों पर विशेष जोर दिया जाता है। जीवन कौशल विकास आधारित गतिविधियों के प्रभावी संगठन को सुनिश्चित करने के लिए, शिक्षकों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है, जिसके लिए संबंधित राष्ट्रीय एजेंसी/राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र से लिए गए संसाधन व्यक्तियों को स्कूल स्वास्थ्य और कल्याण, किशोरावस्था शिक्षा और जनसंख्या शिक्षा जैसे विषयों में प्रशिक्षित किया जाता है।

अंतरक्रियात्मक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में इन मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है, जैसे स्वस्थ तरीके से बड़ा होना; भावनात्मक कल्याण और मानसिक स्वास्थ्य; पारस्परिक संबंध; नैतिकता और नागरिकता; जेंडर समानता; पोषण, स्वास्थ्य और स्वच्छता; मादक द्रव्यों के दुरुपयोग की रोकथाम और प्रबंधन; स्वस्थ जीवन शैली को बढ़ावा; प्रजनन स्वास्थ्य और एच.आई.वी. की रोकथाम; सुरक्षा और हिंसा और चोटों के खिलाफ सुरक्षा; इंटरनेट और सोशल मीडिया व्यवहार के सुरक्षित उपयोग को बढ़ावा देना।

राष्ट्रीय परियोजना प्रगति समीक्षा (पी.पी.आर.) राष्ट्रीय जनसंख्या शिक्षा परियोजना (एन.पी.ई.पी.) की कार्यशालाएँ

राष्ट्रीय परियोजना प्रगति समीक्षा की बैठक 11–14 मार्च, 2023 के दौरान कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, एम.पी.सी.ई.आर.टी., उज्जैन के सहयोग से मध्य प्रदेश के उज्जैन में आयोजित की गई थी। परियोजना प्रगति समीक्षा बैठक 11–14 मार्च, 2023 के दौरान उज्जैन में आयोजित की गई थी। इस बैठक में आठ राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र के एस.सी.ई.आर.टी. निदेशक और 65 परियोजना अधिकारी शामिल हुए। इस बैठक में आर.आई.ई. के सभी अधिकारी भी शामिल हुए। कार्यक्रम का उद्घाटन रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने किया और रा.शै.अ.प्र.प. के सचिव प्रत्यूष कुमार मंडल ने इस अवसर पर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। समापन समारोह में, रा.शै.अ.प्र.प. के संयुक्त निदेशक श्रीधर श्रीवास्तव ने परियोजना कार्यान्वयन के महत्व के बारे में दर्शकों को संबोधित किया।

मध्य प्रदेश के उज्जैन और ओडिशा के पुरी में परियोजना प्रगति समीक्षा बैठक के अधिकारी

मध्यावधि समीक्षा बैठक 10–14 सितंबर, 2022 के दौरान पुरी, ओडिशा में आयोजित की गई थी। इस बैठक में 36 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और 4 आर.आई.ई. से कुल 70 अधिकारियों ने भाग लिया। इस बैठक का उद्देश्य संबंधित राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और आर.आई.ई. द्वारा 1 अप्रैल से 5 सितंबर, 2022 तक संचालित अनुमोदित गतिविधियों की प्रगति की समीक्षा करना और इसके कार्यान्वयन के संबंध में आने वाले मुद्दों और चुनौतियों पर विचार-विमर्श करना था। कार्यक्रम का उद्घाटन रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी द्वारा किया गया।

राष्ट्रीय भूमिका निर्वहन एवं लोक नृत्य प्रतियोगिता

रा.शै.अ.प्र.प., दिल्ली में 6–9 दिसंबर, 2022 के बीच राष्ट्रीय भूमिका निर्वहन और लोक नृत्य प्रतियोगिता आयोजित की गई थी। इस कार्यक्रम में 27 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों और 5 डी.एम.एस. के छात्रों ने भाग लिया है। इस कार्यक्रम का उद्घाटन रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने किया। विजेता टीमों को मंजूषा के साथ विशेष योग्यता प्रमाणपत्र और अन्य छात्रों को भागीदारी प्रमाणपत्र दिए गए। इस कार्यक्रम का उद्देश्य भूमिका निर्वहन और लोक नृत्य प्रतियोगिता के माध्यम से जीवन-कौशल प्रदान करना था। भूमिका निर्वहन और लोक नृत्य की राष्ट्रीय योजना में विभिन्न विषय शामिल हैं। समापन समारोह में एन.एस.डी., दिल्ली के निदेशक रमेश चंद्र गौड़ ने छात्रों को शुभकामनाएँ दीं और विभिन्न नाटकों और अभिनय का सुझाव दिया जो स्कूली शिक्षा और कॉलेज के दौरान उनके जीवन का हिस्सा हो सकते हैं। उन्होंने पुरानी परंपरा, संस्कृति, लोक, खेल, नाटक को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर भी प्रकाश डाला और बेहतर जीवनशैली और समग्र स्वास्थ्य के लिए नुक्कड़ नाटक को महत्व दिया जा सकता है।

मनोदर्पण प्रकोष्ठ

स्कूली छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण, 2022

स्कूली छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण, 2022 का आयोजन जनवरी, 2022 से मार्च, 2022 के बीच 28 राज्यों और 8 संघ राज्य क्षेत्रों के विभिन्न प्रकार के स्कूलों के कक्षा 6वीं से 12वीं तक के 3,79,842 छात्रों पर आयोजित किया गया था। यह सर्वेक्षण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के संबंध में उनकी धारणा का पता लगाने के लिए किया गया था। सर्वेक्षण द्विभाषी (हिंदी और अंग्रेजी) गूगल फॉर्म के माध्यम से आयोजित किया गया था। सर्वेक्षण के निष्कर्षों से पता चला कि अधिकांश छात्रों ने आम तौर पर खुशी का अनुभव किया और स्कूली जीवन से संतुष्टि व्यक्त की, जो माध्यमिक स्तर पर पहुँचने के साथ कम हो गई। छात्रों द्वारा अध्ययन, परीक्षाओं और परिणामों को चिंता का कारण बताया गया। योग और ध्यान, अपने सोचने के तरीके को बदलने का प्रयास करना और पत्रिकाएँ लिखना तनाव से निपटने के लिए छात्रों द्वारा अक्सर अपनाई जाने वाली कार्यनीतियों के रूप में बताया गया। सर्वेक्षण छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के क्षेत्र में महत्वपूर्ण नेतृत्व प्रदान करता है जो स्कूली पाठ्यक्रम, अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम और बच्चों की शिक्षा से संबंधित अन्य क्षेत्रों में संबंधित कार्य करने का आधार हो सकता है। सर्वेक्षण रिपोर्ट शिक्षा मंत्रालय द्वारा 6 सितंबर, 2022 को जारी की गई थी।

एस.सी.ई.आर.टी./डी.ई.ओ./सी.बी.एस.ई./के.वी.एस./एन.वी.एस. के लिए 'स्कूली छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण' और स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप पर अभिविन्यास कार्यक्रम

राज्य और जिला स्तर पर हितधारकों को मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण के निष्कर्षों के प्रति उन्मुख करने के प्रयास में, एस.सी.ई.आर.टी./डी.ई.ओ./सी.बी.एस.ई./के.वी.एस./एन.वी.एस. के लिए 'स्कूली छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य

और कल्याण— एक सर्वेक्षण' पर एक अभिविन्यास कार्यक्रम और प्रारंभिक पर एक हैंडबुक स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की पहचान और हस्तक्षेप का आयोजन किया गया। इसका उद्देश्य हितधारकों को मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित चिंताओं और मुद्दों के प्रति संवेदनशील बनाना है। लाइव स्ट्रीम किए गए इस कार्यक्रम में लगभग 500 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित पाठ्यचर्या और आकलन सुधारों पर स्कूल शिक्षा बोर्डों की परामर्श बैठक। 'स्कूली छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण' पर सत्र और स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के लिए प्रारंभिक पहचान और हस्तक्षेप पर हैंडबुक

एन.ई.पी. में की गई परिकल्पना के अनुसार पाठ्यक्रम और आकलन सुधारों पर स्कूल शिक्षा बोर्डों की एक परामर्श बैठक 2020 में "स्कूली छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण" और स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप पर सत्र आयोजित किया गया था, जिसमें विभिन्न बोर्डों के लगभग 40 प्रतिभागियों ने भाग लिया था।

क्र.सं.	कार्यक्रम	स्थल एवं दिनांक
1.	एस.सी.ई.आर.टी./डी.ई.ओ./सी.बी.एस.ई./के.वी.एस./एन.वी.एस. के लिए 'स्कूली छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण' पर अभिविन्यास कार्यक्रम और स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप पर हैंडबुक	14 अक्तूबर, 2022 को (ऑनलाइन मोड), 'रा.शै.अ.प्र.प. इवेंट्स' यूट्यूब चैनल पर लाइव-स्ट्रीम किया गया
2.	एन.ई.पी. 2020 में परिकल्पित पाठ्यचर्या और आकलन सुधारों पर स्कूल शिक्षा बोर्डों की परामर्श बैठक। 'स्कूली छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण— एक सर्वेक्षण' पर सत्र और स्कूल जाने वाले बच्चों में मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं की शीघ्र पहचान और हस्तक्षेप पर हैंडबुक	पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 8 नवंबर, 2022

'स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण और स्कूल प्रशासकों की भूमिका' पर राष्ट्रीय सम्मेलन

यह सम्मेलन 10–11 अक्तूबर 2022 को आर.आई.ई., भोपाल, रा.शै.अ.प्र.प. में मिश्रित मोड में आयोजित किया गया था और 'रा.शै.अ.प्र.प. आधिकारिक' यूट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया था। इस सम्मेलन का उद्देश्य छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के बारे में स्कूल प्रशासकों और अन्य हितधारकों के बीच जागरूकता पैदा करना और मानसिक स्वास्थ्य अग्रणियों के रूप में स्कूल प्रशासकों के कामकाज को बढ़ावा देना था। इन सम्मेलन सत्रों में स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण, इसके कार्यान्वयन में बाधाएँ, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों की रोकथाम और हस्तक्षेप, शिक्षकों, अभिभावकों और स्कूल कर्मचारियों के मानसिक स्वास्थ्य और स्कूल में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने में स्कूल प्रशासकों की भूमिका के व्यापक विषयों को शामिल किया गया। इसका उद्घाटन भाषण एल.एस. चांगसन आई.ए.एस. (*अपर सचिव* (संस्थान), डी.ओ.एस.ई. एवं एल., शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा दिया गया, और श्रीधर श्रीवास्तव (*संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प.), अंजुम सिबिया (*प्रभारी*, मनोदर्पण प्रकोष्ठ और *डीन (अकादमिक)*, रा.शै.अ.प्र.प.), जयदीप मंडल (*प्रधानाचार्य*, आर.आई.ई., भोपाल), शेखर शेषाद्रि (*पूर्व वरिष्ठ प्रोफेसर*, बाल एवं किशोर मनोचिकित्सा विभाग, निमहांस और *सलाहकार*, संवाद), निधि पांडे (*आयुक्त*, के.वी.एस.) और ज्ञानेंद्र कुमार (*संयुक्त आयुक्त* (शिक्षाविद), एन.वी.एस.) द्वारा सम्मानित किया गया। इस दो दिवसीय सम्मेलन में सत्र और चर्चा शामिल थी कि स्कूल प्रशासक अपने छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों के लिए एक स्वस्थ और समावेशी वातावरण किस तरह प्रदान कर सकते हैं।

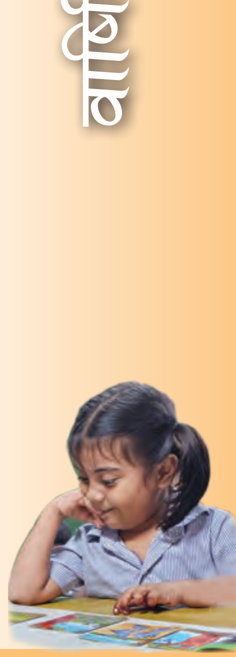

'स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को बढ़ावा देने के लिए शिक्षकों का सशक्तीकरण करने' पर राष्ट्रीय सम्मेलन

यह सम्मेलन 14–16 दिसंबर, 2022 तक एन.ई.आर.आई.ई., उमियाम (मेघालय) में मिश्रित विधि में आयोजित किया गया था और 'रा.शै.अ.प्र.प. आधिकारिक' यूट्यूब चैनल पर सीधा प्रसारण किया गया था। इस सम्मेलन का उद्देश्य छात्रों के बीच मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा करना और छात्रों की मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं को दूर करने के लिए शिक्षकों को प्रथम स्तर के परामर्शदाता के रूप में कार्य करने के लिए संवेदनशील बनाना था। इस सम्मेलन में मानसिक स्वास्थ्य नीतियों और दृष्टिकोण, स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण को समझने, संपूर्ण स्कूल दृष्टिकोण, स्कूलों में मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देने के लिए शिक्षक सशक्तीकरण, छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य में शिक्षकों की भूमिका, शिक्षक के मानसिक स्वास्थ्य, शिक्षकों को प्रथम स्तर के परामर्शदाताओं के रूप में और मादक द्रव्यों के सेवन पर समझाने जैसे विषयों को शामिल किया गया। उद्घाटन भाषण एल.एस. चांगसन, आई.ए.एस., (*अपर सचिव* (संस्थान), डी.ओ.एस.ई. एवं एल., शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार) द्वारा दिया गया और दिनेश प्रसाद सकलानी, (*निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प.), अंजुम सिबिया, (*प्रभारी*, मनोदर्पण प्रकोष्ठ, रा.शै.अ.प्र.प.), फ्लोरेट जी. दखार, (*प्रधानाचार्य*, एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय)), आर.सी. त्रिपाठी, और केसांग यांगज़ोम शेरपा, *आई.आर.एस.*, (*सदस्य सचिव*, एन.सी.टी.ई.) द्वारा सम्मानित किया गया)। तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन से जो कुछ सिफारिशें सामने आईं— मनोदर्पण की समर्थन को मजबूत करना, शिक्षक क्षमता कार्यक्रम आयोजित करना, शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य सर्वेक्षण करना, सेवा पूर्व और सेवा स्तर पर औपचारिक तरीके से अध्यापक शिक्षा पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य की स्थिति बनाना, विभिन्न स्तरों पर में स्कूली शिक्षा पाठ्यक्रम में मानसिक स्वास्थ्य घटकों को समेकित करना, संपूर्ण-विद्यालय दृष्टिकोण पर ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित पहलुओं को नई पाठ्यक्रम संरचना में शामिल किया जाना चाहिए।

समग्र विकास के लिए ज्ञान का प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और विश्लेषण (पी.ए.आर.ए.के.एच. परख)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने भारत के पहले राष्ट्रीय आकलन नियामक, परख (समग्र विकास के लिए ज्ञान का प्रदर्शन आकलन, समीक्षा और विश्लेषण) को अधिसूचित किया है। रा.शै.अ.प्र.प.में एक स्वतंत्र घटक केंद्र के रूप में परख की स्थापना एन.ई.पी.2020 के पैरा 4.41 द्वारा अनिवार्य अन्य कार्यों के साथ-साथ मानदंडों, मानकों, दिशानिर्देशों को स्थापित करने और छात्र आकलन से संबंधित गतिविधियों को कार्यान्वित करने के बुनियादी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए की गई है।

परख के तहत निम्नलिखित गतिविधियाँ शुरू की गई हैं— (क) बड़े पैमाने पर उपलब्धि सर्वेक्षणों में निम्नलिखित शामिल हैं : (i) एन.ए.एस. 21 और एफ.एल.एस. 22 का प्रसार और अनुवर्ती कार्य; (ii) पी.एम. श्री स्कूलों में उपलब्धि सर्वेक्षण करना; (iii) एन.ए.एस. 2024 और एफ.एल.एस. 2024 की तैयारी; (ख) स्कूल बोर्डों की समकक्षता के लिए मानक प्रोटोकॉल/दिशानिर्देशों का विकास; और (ग) योग्यता आधारित आकलन और सभी कक्षाओं में समग्र प्रगति कार्ड (एच.पी.सी.) पर बल देने के साथ स्कूल आधारित आकलन में हितधारकों की क्षमता निर्माण। राष्ट्रीय उपलब्धि सर्वेक्षण (एन.ए.एस.) 2024 के परिचालन के लिए, आकलन रूपरेखा, नमूना रूपरेखा और विश्लेषण रूपरेखा पर निम्नलिखित रूपरेखाओं पर काम किया जा रहा है।

'बोर्डों की समतुल्यता' के अध्ययन की निरंतरता में एक प्रश्न पत्र विश्लेषण टेम्पलेट तैयार किया गया है और बोर्डों के कार्य की विस्तृत समझ को सक्षम बनाने के लिए एक प्रश्नावली भी डिजाइन की गई है। उपरोक्त दो उपकरणों का उपयोग करके प्राप्त आंकड़ों के विश्लेषण के आधार पर, स्कूल बोर्डों की समकक्षता के लिए एक मानक प्रोटोकॉल/दिशानिर्देश का मसौदा तैयार किया जाएगा।

स्कूल पर आधारित आकलन में हितधारकों की क्षमता निर्माण में, बुनियादी स्तर पर एच.पी.सी. के विकास के लिए, निम्नलिखित गतिविधियाँ 31 मार्च, 2023 तक आयोजित की गईं— (क) विभिन्न हितधारकों के साथ समग्र प्रगति कार्ड के विकास के लिए परामर्श बैठक; (ख) समग्र प्रगति कार्ड के विकास के लिए कार्यशालाएँ; (ग) एच.पी.सी. के लिए योग्यता आधारित आकलन में क्षमता विकास; (घ) राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र में समग्र प्रगति कार्ड का परिचालन; (ङ) एच.पी.सी. के बाद इसकी प्रायोगिक प्रतिक्रिया; और (च) एच.पी.सी. के लिए बुनियादी स्तर के लिए योग्यता आधारित आकलन के क्षेत्र में क्षमता निर्माण।

राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र (सी.एन.सी.एल.) प्रकोष्ठ

विद्यार्थियों के लिए 'उजास' प्रवेशिका

प्रवेशिका उजास, मूलतः, एक संसाधन सामग्री है जिससे उन विद्यार्थियों को पढ़ना, लिखना और मूलभूत गणितीय अवधारणाओं को सिखाने के लिए एक उपयुक्त और अनुकूल वातावरण बनाया जा सके जो विभिन्न कारणों से अपने प्रारंभिक वर्षों में इसे हासिल करने में सक्षम नहीं हो सके हैं। इसे विद्यार्थियों और स्वयंसेवी शिक्षकों दोनों के लिए चार खंडों में विकसित किया गया है। इससे दो प्राथमिक उद्देश्यों को पूरा किया जाता है— विद्यार्थियों को पढ़ना और लिखना सीखने के लिए सामग्री प्रदान करना और 'सभी के लिए शिक्षा' के मुख्य उद्देश्य को समझने और इसे प्राप्त करने में उनकी सहायता करने के लिए स्वयंसेवी शिक्षकों का मार्गदर्शन करना।

देश में विविधता के कारण, उजास को मुख्य रूप से हिंदी भाषा में डिजाइन किया गया है, ताकि राज्यों द्वारा इसे अपने संबंधित संदर्भ और क्षेत्रीय भाषाओं में अपनाने और अनुकूलित करने के लिए एक उदाहरण के रूप में उपयोग किया जा सके। इस प्रवेशिका के 4 खंडों में कुल 13 विषयों को शामिल किया गया है जैसे कि परिवार और पड़ोस, बातचीत, वित्तीय साक्षरता, कानूनी जानकारी, आपदा प्रबंधन आदि। यह महत्वपूर्ण जीवन कौशल के माध्यम से मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता को मजबूत करने पर केंद्रित है।

प्रवेशिका को 23 क्षेत्रीय भाषाओं, जैसे— तमिल, पंजाबी, बंगाली, तेलुगु, बोडो, उड़िया आदि में विकसित किया गया है, इसके लिए हिंदी भाषा के उदाहरण को आधार बनाया गया है।

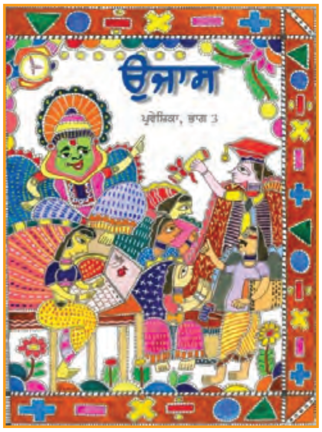

प्रवेशिका उजास को दीक्षा पोर्टल पर https://diksha.gov.in/play/collection/do_31362032576267878414091?contentType=TextBook लिंक का उपयोग करके देखा जा सकता है।

स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए मार्गदर्शिका

मार्गदर्शिका एक मार्गदर्शक पुस्तिका है जिसे स्वयंसेवी शिक्षकों के लिए विकसित किया गया है ताकि प्रवेशिका का उपयोग करने के तरीके को समझकर विद्यार्थियों के साथ अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया को प्रभावी तरीके से चलाने के संदर्भ में उनका मार्गदर्शन किया जा सके। इसमें प्रवेशिका उजास के विकास के मुख्य बिंदु, हिंदी भाषा और गणितीय अवधारणाओं के संदर्भ में विद्यार्थियों से अपेक्षाएँ, प्रत्येक चित्र के आस-पास होने वाली बातचीत, प्रत्येक अभ्यास का औचित्य, अभ्यास करने के संभावित तरीके, विस्तार से पढ़ना, लिखना और अंकगणित सीखने के बुनियादी सिद्धांत शामिल हैं। मार्गदर्शिका को https://diksha.gov.in/play/collection/do_31362032576267878414091?contentType=TextBook लिंक का उपयोग करके दीक्षा पोर्टल पर देखा जा सकता है।

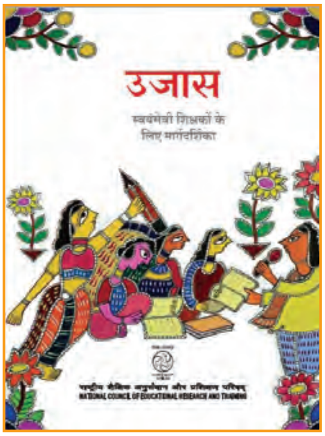

कार्यपत्रक— मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए कार्यपत्रक

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता पर ध्यान केंद्रित करते हुए विद्यार्थियों के साथ-साथ स्वयंसेवी शिक्षकों/प्रशिक्षकों दोनों के लिए कार्यपत्रक विकसित किए गए हैं। ये कार्यपत्रक प्रवेशिका उजास के अध्यायों में शामिल सामग्री पर आधारित हैं। इनसे दो प्राथमिक उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है, विद्यार्थियों ने जो कुछ भी सीखा है उसका अभ्यास करके अपने पढ़ने, लिखने और संख्यात्मक कौशल का स्व-आकलन करने में मदद करना; और स्वयंसेवी शिक्षकों/प्रशिक्षकों को अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया को प्रभावी बनाने की आवश्यकता को समझने में मदद करना।

दोनों कार्यपत्रकों, साक्षरता (140) और संख्यात्मकता (100) को दीक्षा पोर्टल पर https://diksha.gov.in/play/collection/do_31362032576267878414091?contentType=TextBook और https://diksha.gov.in/play/collection/do_31339162185892659212479?contentType=TextBook लिंक पर देखा जा सकता है।

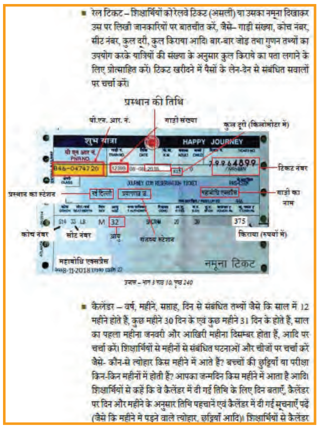

मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के लिए आकलन वस्तुएँ

विद्यार्थियों का आकलन करने और उन्हें साक्षरता प्राप्त करने के अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में मदद करने के उद्देश्य से आकलन मद विकसित किए गए हैं। इसमें वे प्रश्न शामिल हैं जिनमें से प्रत्येक के लिए अंक दर्शाए गए हैं। मूलभूत साक्षरता (111) और संख्यात्मकता (100) के लिए आकलन मद को https://diksha.gov.in/play/collection/do_31339162845099622412484?contentType=TextBook लिंक का उपयोग करके दीक्षा पोर्टल पर देखा जा सकता है।

आकलन पत्र (परीक्षण पत्र)

आकलन परीक्षण पत्रों को राज्यों के लिए उनके विशिष्ट संदर्भों को ध्यान में रखते हुए उनकी संबंधित क्षेत्रीय भाषाओं में विकसित करने के लिए उदाहरण के रूप में विकसित किया गया है। प्रत्येक परीक्षण पत्रों में पढ़ना, लिखना और संख्यात्मकता के 3 खंड होते हैं और प्रत्येक के लिए 50 अंक आवंटित होते हैं। नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के तहत मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता के आकलन के लिए प्रकोष्ठ द्वारा राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एन.आई.ओ.एस.) के सहयोग से आकलन परीक्षण पत्र विकसित किए गए हैं। परीक्षा 19 मार्च, 2023 को देश के 10 राज्यों में आयोजित की गई थी।

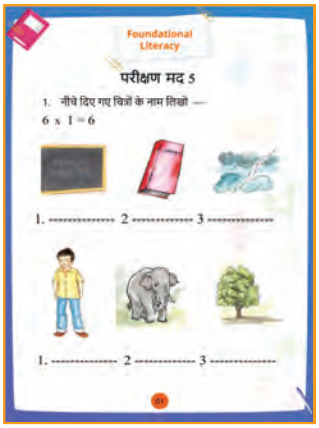

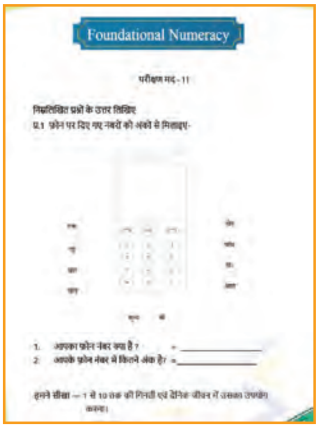

ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम

निरक्षर विद्यार्थियों और स्वयंसेवी शिक्षकों/अध्यापक प्रशिक्षकों के लिए ऑडियो-वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए हैं। कार्यक्रम मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता की योग्यताओं पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो विद्यार्थियों की वास्तविक जीवन की स्थिति को दर्शाते हैं और महत्वपूर्ण जीवन कौशल को समेकित तरीके से पूरा करते हैं।

(क) ऑडियो कार्यक्रम— इन कार्यक्रमों को डिजिटल साक्षरता, वित्तीय साक्षरता, सभी के लिए शिक्षा के महत्व आदि जैसे विभिन्न विषयों पर विद्यार्थियों को ज्ञान और जागरूकता प्रदान करने के उद्देश्य से विकसित किया गया है। प्रकोष्ठ में 18 ऑडियो और परवरिश वीडियो कार्यक्रम विकसित किए गए हैं।

(ख) वीडियो कार्यक्रम— साक्षरता की डगर पर नाम से प्रकोष्ठ द्वारा 15 वीडियो कार्यक्रमों की एक शृंखला विकसित की गई है। ये कार्यक्रम प्रवेशिका उजास में शामिल सामग्री पर आधारित हैं, जो विद्यार्थियों को अंतरक्रियात्मक तरीके से अवधारणाओं को समझने में मदद करते हैं। उन्हें https://diksha.gov.in/play/collection/do_3133916362426859521249 2?contentType=TextBook लिंक का उपयोग करके दीक्षा पोर्टल पर देखा जा सकता है।

सभी के लिए शिक्षा पर प्रचार सामग्री – सी.एन.सी.एल. द्वारा सूचना ग्राफिक पोस्टर, फ्लायर्स, जिंगल, वृत्तचित्र इत्यादि जैसी विभिन्न समर्थन सामग्री विकसित की गई है। इन सभी को विद्यार्थियों के विभिन्न संदर्भों को ध्यान में रखते हुए, उनकी विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में संसाधन सामग्री के आगे विकास हेतु राज्यों के लिए एक उदाहरण के रूप में हिंदी भाषा में विकसित किया गया है। इन्हें https://diksha.gov.in/play/collection/do_31362032774588006414094?contentType=TextBook लिंक की सहायता से पोर्टल पर देखा जा सकता है।

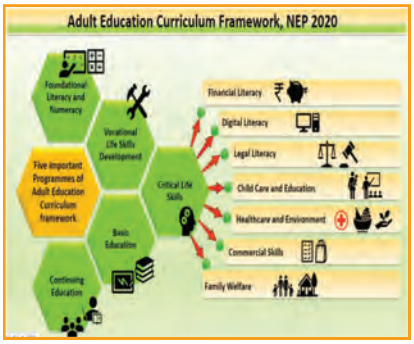

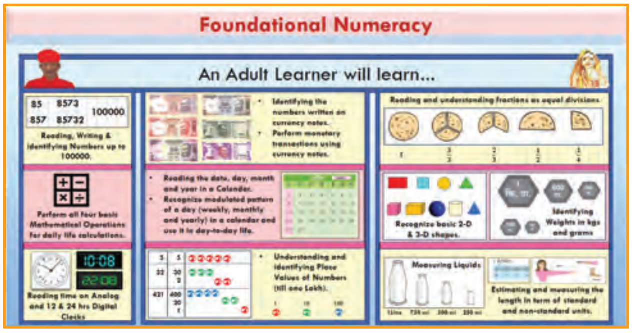

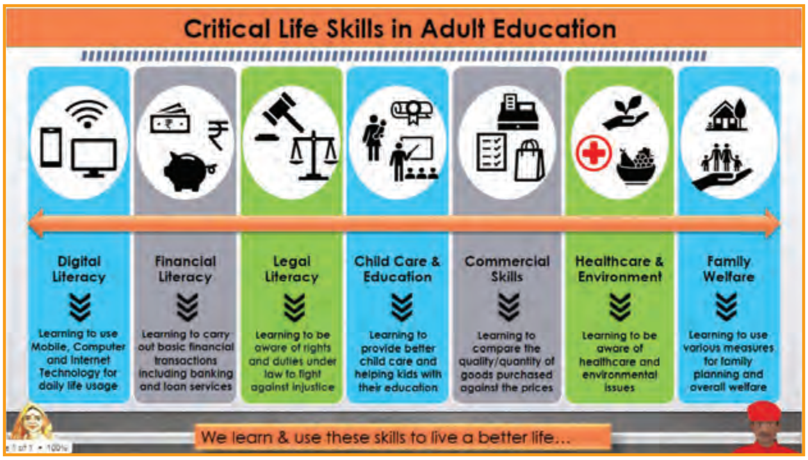

रा.शै.अ.प्र.प.

दीक्षा पोर्टल

केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.) ने दीक्षा पोर्टल विकसित किया है। यह सी.एन.सी.एल., रा.शै.अ.प्र.प. और अन्य संगठनों द्वारा विकसित संसाधन सामग्री खोजने के लिए एक पोर्टल है। प्रकोष्ठ द्वारा विकसित सभी संसाधन और प्रचार सामग्री को सभी के उपयोग के लिए पोर्टल के 'सभी के लिए शिक्षा' अनुभाग पर अपलोड किया गया है और इसे लिंक https://diksha.gov.in/adult-education.html पर देखा जा सकता है।

क्र.सं.	आयोजन/सम्मेलन/प्रदर्शनी का नाम/विवरण	स्थान और दिनांक
1.	समर्थन और जागरूकता सृजन सामग्री के विकास के लिए सहयोगात्मक अभिसरण	सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. 28–30 जून, 2022
2.	समर्थन और जागरूकता सृजन सामग्री के विकास के लिए सहयोगात्मक अभिसरण	सम्मेलन कक्ष 202, सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. 11–15 जुलाई, 2022
3.	अंतरराष्ट्रीय साक्षरता दिवस 2022 का उत्सव	राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र (सी.एन.सी.एल.), राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.), राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एन.आई.ओ.एस.) 8 सितंबर, 2022
4.	नव भारत साक्षरता कार्यक्रम आकलन	उत्तर प्रदेश राजस्थान, पंजाब 19 मार्च, 2023

निष्ठा

यह स्कूल के विभिन्न स्तरों पर शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए एक राष्ट्रव्यापी पहल है। पाठ्यक्रम को दोबारा चलाने के लिए एन.ई.पी. 2020 के आलोक में निष्ठा प्राथमिक के अठारह पाठ्यक्रमों की समीक्षा की गई। निष्ठा माध्यमिक के 12 सामान्य पाठ्यक्रम और निष्ठा एफ.एल.एन. के बारह पाठ्यक्रम 21 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र में फिर से चलाए गए। निष्ठा माध्यमिक के लिए शिक्षणशास्त्र पाठ्यक्रमों का विकास प्रक्रियाधीन है। निष्ठा ई.सी.सी.ई. 29 जुलाई, 2022 को आरंभ किया गया था और बैचों में छह पाठ्यक्रम प्रस्तुत किए जाते हैं। इसका प्रशिक्षण 30 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र में शुरू कर दिया गया है और लगभग 60,000 प्रतिभागियों ने नामांकन कराया है और लगभग 14,000 प्रतिभागियों ने पाठ्यक्रम पूरा कर लिया है। दूसरा चरण प्रक्रियाधीन है। बेशक, निष्ठा एजुकेटर्स और निष्ठा वोकेशनल के डेवलपर्स का अभिविन्यास पूरा हो चुका है और पाठ्यक्रम विकास की प्रक्रिया में हैं। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र के समन्वयकों को कार्यान्वयन कार्यनीतियों और डेटा प्रबंधन में प्रशिक्षित किया जाता है।

निष्ठा के संबंध में, 2019 से अब तक निष्ठा प्राथमिक, एफ.एल.एन., माध्यमिक और ई.सी.सी.ई. के लिए चार श्रेणियों के तहत कार्यक्रम शुरू किए गए हैं। वर्ष 2022–23 में लगभग 7.5 लाख माध्यमिक स्तर के शिक्षकों द्वारा निष्ठा (माध्यमिक) को पूरा किया गया। ई.सी.सी.ई. के लिए निष्ठा 29 जुलाई, 2022 को आरंभ किया गया था और इसमें बी.आर.सी./सी.आर.सी. और अन्य प्रमुख संसाधन व्यक्तियों ने भाग लिया था। वरिष्ठ माध्यमिक स्तर, स्कूल प्रशासकों और व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित निष्ठा के मॉड्यूल तैयारी की प्रक्रिया में हैं।

निष्ठा 6.0 के माध्यम से स्कूल प्रशासकों के अभिविन्यास के लिए मॉड्यूल

एन.ई.पी. 2020 में विभिन्न शैक्षिक सुधारों की बात की जाती है जो संरचनात्मक, शैक्षणिक और आकलन उन्मुख हैं। वैश्वीकरण और प्रौद्योगिकियों के विकास के कारण तेजी से बदलती स्थितियों के कारण ये सुधार एक आवश्यकता बन गए हैं। ये परिवर्तन शैक्षिक प्रणालियों के साथ-साथ संस्थानों के दृष्टिकोण और कार्यप्रणाली को प्रभावित करते हैं। इन लक्ष्यों के अनुरूप, निष्ठा परियोजना को रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा शुरू की गई समग्र शिक्षा के तहत शिक्षा मंत्रालय के एक प्रमुख कार्यक्रम के रूप में लिया गया था। निष्ठा 6.0 का उद्देश्य नीति द्वारा परिकल्पित विभिन्न शैक्षिक सुधारों पर स्कूल प्रशासकों की क्षमता निर्माण करना है। निष्ठा 6.0 के लिए पाँच मॉड्यूल— एन.ई.पी. 2020 पर मॉड्यूल 1 (डी.टी.ई.), एक अकादमिक पारिस्थितिकी तंत्र (पाठ्यचर्या और शैक्षणिक नेतृत्व) विकसित करने पर मॉड्यूल 2 (नीपा), स्कूल प्रशासन और स्कूल-समुदाय संबंधों पर मॉड्यूल 3 (आर.आई.ई., मैसूरु), समावेशी विकास और न्यायसंगत स्कूल प्रणाली पर मॉड्यूल 4 (आई.ई.एस.एस., डी.ई.जी.एस.एन.), प्रभावी स्कूल प्रशासन के लिए पहल पर मॉड्यूल 5 (सी.आई.ई.टी.) और स्कूलों के लिए साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने पर मॉड्यूल 6 (ई.एस.डी.) को विकसित और दीक्षा प्रारूप में परिवर्तित किया जा रहा है।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा

विभाग ने एन.ई.पी. 2020 के विकास की प्रक्रिया, स्कूली शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा, बुनियादी स्तर, अध्यापक शिक्षा और वयस्क शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा के विकास की प्रक्रिया शुरू की है।

बुनियादी स्तर से मिली प्रतिक्रिया के आधार पर, रा.शै.अ.प्र.प. ने विभिन्न विश्वविद्यालयों के सहयोग से 12 परामर्श आयोजित किए हैं। इन परामर्शों में कुलपतियों, संकाय सदस्यों और छात्रों, अभिभावकों और नागरिक समाज समूह के सदस्यों ने भाग लिया। देशभर में आयोजित 12 परामर्शों में लगभग 8000 प्रतिभागियों ने भाग लिया और ई.सी.सी.ई., स्कूली शिक्षा, अध्यापक शिक्षा और वयस्क शिक्षा के लिए प्रतिक्रिया प्रदान किया। रा.शै.अ.प्र.प. ने मूल्यांकन और परीक्षा में इनपुट प्राप्त करने के लिए स्कूल शिक्षा बोर्डों के साथ परामर्श भी किया है।

एन.एस.सी. के लिए गठित राष्ट्रीय संचालन समिति को राष्ट्रीय फोकस समूहों के कुल 25 आधार पत्र प्रस्तुत किए गए थे। चरणवार समूहों एवं समेकन समूह की कई बैठकें आयोजित की गईं। शिक्षा मंत्रालय द्वारा बुनियादी स्तर के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 20 अक्तूबर, 2022 को जारी की गई है। एन.सी.एफ.-एफ.एस. के अनुवर्ती कार्रवाई के रूप में, विभिन्न प्रकार की अधिगम-शिक्षण सामग्री एकत्र की गई और 'जादुई पिटारा' नामक यह संग्रह 20 फरवरी, 2023 को शिक्षा मंत्रालय द्वारा लोकार्पित किया गया था। वर्ष 2022–23 में राष्ट्रीय संचालन समिति की छह बैठकें आयोजित की गईं।

राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा—तकनीकी मंच

विभिन्न हितधारकों की राय और प्राथमिकताओं और बॉटम-अप दृष्टिकोण को सुविधाजनक बनाने के लिए, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एन.सी.एफ.) के विकास के लिए एक तकनीकी मंच डिजाइन किया गया था। इसलिए एक विस्तृत डैशबोर्ड विकसित किया गया और प्रयोक्ताओं के लिए लाइव प्रसारित किया गया। 32 राज्यों ने 3,000 मोबाइल सर्वेक्षण के आधारभूत लक्ष्य को सफलतापूर्वक पूरा किया और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र में कुल मिलाकर 1,36,010 सर्वेक्षण पूरे किए गए। 32 राज्यों ने पहल की, और 27 राज्यों ने जिला परामर्श रिपोर्ट (डी.सी.आर.) को सफलतापूर्वक पूरा किया। प्रस्तुत राज्य डी.सी.आर. की कुल संख्या 1,531/1,608 थी। 29 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में राज्य फोकस समूह के निर्माण की शुरुआत की गई और 28 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में सफलतापूर्वक सदस्य सचिवों को शामिल किया गया। 26 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों में राज्य संचालन समिति का गठन शुरू किया गया और 22 राज्यों में राज्य संचालन समिति/सदस्य सचिवों को शामिल करने का काम पूरा कर लिया गया। एक सौ छप्पन

(156/188) राष्ट्रीय डी.सी.पी. सफलतापूर्वक प्रस्तुत किए। एन.सी.एफ. टेक प्लेटफॉर्म पर 25 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र द्वारा राज्य फोकस समूह आधार पेपर के 579 पी.डी.एफ. अपलोड किए गए थे। राज्यों/संघ राज्य क्षेत्रों द्वारा 699 राज्य आधार पत्र ई-टेम्प्लेट प्रस्तुत किए गए। मंत्रालयों/सहायक समूहों से 28 इनपुट प्राप्त और अपलोड किए गए। ई-पाठशाला एप्लिकेशन में सक्रिय प्रयोक्ताओं को 5.75 करोड़ पुश नोटिफिकेशन भेजे गए। राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के लिए डिजिटल सर्वे (DiSaNC) आउटरीच कार्यनीति के तहत लगभग 12,64,266 प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुई हैं, इलेक्ट्रॉनिकी और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय के संपर्क डेटाबेस में प्रयोक्ताओं को 28 करोड़ ई-मेल भेजे गए हैं और एन.आई.सी. डेटाबेस में मोबाइल नंबरों पर 10 करोड़ एस.एम.एस. भेजे गए हैं। पोर्टल पर वर्कफ्लो की नियमित निगरानी की जा रही है।

प्रारंभिक चरण में वंचित समूहों और कमजोर बच्चों की जरूरतों को पूरा करने के लिए अधिगम परिणाम आधारित संसाधन

इस कार्यक्रम की शुरुआत उन वंचित वर्गों की जरूरतों को पूरा करने की दृष्टि से की गई थी, जो महामारी के कारण पिछड़ गए थे और उन्हें समग्र तरीके से विभिन्न पाठ्यचर्या क्षेत्रों के सीखने के परिणामों को प्राप्त करने में सक्षम बनाया गया था। कार्यक्रम के अंतर्गत कुल 14 कार्यक्रम विकसित किए गए हैं। पांडुलिपि विकसित की गई, समीक्षा और अंतिम रूप दिया गया। अंग्रेजी, हिंदी और सांकेतिक भाषा में लिपियों के लिए संगत चित्रण, ग्राफिक्स, वॉयस ओवर शामिल किया गया। एन.ई.पी. 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार गणित, भाषा, कला शिक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक शिक्षा, मूल्यों और भारतीय ज्ञान प्रणालियों को समेकित करने वाले एनिमेटिड शिक्षण परिणाम-आधारित संसाधन बनाए गए थे।

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय का राष्ट्रीय मूल्यांकन अध्ययन (के.जी.बी.वी. 2022–23)

कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) का लक्ष्य वंचित समूहों की लड़कियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करना और सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों (एस.ई.डी.जी.) की लड़कियों को मुख्यधारा में लाने के लिए है। के.जी.बी.वी. को जवाहर नवोदय विद्यालयों के बराबर लाने की संसदीय स्थायी समिति की सिफारिश के आधार पर, 2022 में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय (के.जी.बी.वी.) का तृतीय पक्ष राष्ट्रीय मूल्यांकन अध्ययन का कार्य शिक्षा मंत्रालय द्वारा रा.शै.अ.प्र.प. को दिया गया था। वर्तमान अध्ययन एक मिश्रित विधि दृष्टिकोण का उपयोग करते हुए किया जाने वाला एक सर्वेक्षण है जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों डेटा एकत्र और विश्लेषण किया गया था। अन्य विभागों और संगठनों के विशेषज्ञों के सहयोग से 11 अनुसंधान उपकरण विकसित किए गए। इस अध्ययन के लिए 30 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र को कवर करने वाले 254 के.जी.बी.वी. को नमूने के रूप में चुना गया था। उत्तर प्रदेश के दो के.जी.बी.वी. में एक प्रायोगिक अध्ययन आयोजित किया गया था। इसके बाद पाँच आर.आई.ई. और जे.एन.वी. के सहयोग से सभी 30 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र में डेटा संग्रह किया गया, जिन्होंने डेटा प्रविष्टि के लिए टेम्पलेट्स के आधार पर डेटा प्रविष्टि की प्रक्रिया पूरी कर ली है। देशभर के विभिन्न के.जी.बी.वी. के दौरे के दौरान क्षेत्रीय अन्वेषकों के विचारों पर एक ऑनलाइन राष्ट्रीय वेबिनार भी आयोजित किया गया था। राष्ट्रीय कोर टीम ने डेटा विश्लेषण पूरा कर लिया है और वर्तमान में अध्ययन की एक मसौदा राष्ट्रीय रिपोर्ट के विकास पर काम कर रही है।

राष्ट्रीय योग ओलंपियाड

राष्ट्रीय योग ओलंपियाड का उद्घाटन 18 जून, 2022 को माननीय *शिक्षा मंत्री* श्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा किया गया। उन्होंने रा.शै.अ.प्र.प. और मेगा इवेंट में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों की सराहना की। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि

व्यक्ति को अपने जीवन में योग की भागीदारी से आगे बढ़कर अभ्यास करने की आवश्यकता है। माननीय *शिक्षा राज्यमंत्री* डॉ. सुभाष सरकार ने महामारी के बाद राष्ट्रीय योग ओलंपियाड के उत्सव के प्रयासों और मध्य और माध्यमिक स्तर के छात्रों की भागीदारी की सराहना की। रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी ने आजादी का अमृत महोत्सव के तहत राष्ट्रीय योग ओलंपियाड 2022 के जश्न पर ध्यान केंद्रित किया। उन्होंने बच्चों के मानसिक, शारीरिक, मनोवैज्ञानिक विकास के लिए रोजमर्रा की जिंदगी में योग के महत्व को बताया। रा.शै.अ.प्र.प. के *संयुक्त* निदेशक श्रीधर श्रीवास्तव ने 2016 में अपनी शुरुआत के बाद से राष्ट्रीय योग ओलंपियाड की पिछली सफलताओं पर प्रकाश डाला। रा.शै.अ.प्र.प. के सचिव प्रत्यूष कुमार मंडल ने सम्मानित अतिथियों के बुद्धिमत्तापूर्ण व्याख्यान और समय देने के लिए उनकी सराहना की। कार्यक्रम में एस्कॉर्ट शिक्षकों सहित 600 से अधिक छात्रों ने भाग लिया।

राष्ट्रीय योग ओलंपियाड, 2022 में योग करते प्रतिभागी

राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह (आर.ए.एस.), 2022

डी.ई.एस.एम. ने खोजबीन की भावना को बढ़ावा देने और वैज्ञानिक सोच विकसित करने के लिए, देश के विभिन्न राज्यों और संघ राज्य क्षेत्र के स्कूलों में 'स्टडी ऑफ सॉइल हेल्थ' विषय पर 2022–23 के दौरान राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह का आयोजन किया है। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विज्ञान के बारे में जागरूकता और उत्साह पैदा करना और मध्य और माध्यमिक स्तर पर स्कूली छात्रों के बीच प्रयोग और अन्वेषण को प्रोत्साहित करना है ताकि वे प्रेरित हों और विज्ञान अधिगम में संलग्न हों। एन.ई.पी. 2020 के दृष्टिकोण के अनुसार, इस प्रयास के तहत सुझाई गई गतिविधियाँ एक ओर अनुभवात्मक शिक्षा की भावना और दूसरी ओर उन्हें कुछ सामान्य मुद्दों और स्थानीय समस्याओं के प्रति संवेदनशील बनाने में सहायक होंगी।

'स्टडी ऑफ सॉइल हेल्थ' विषय का चयन कृषि मिट्टी की गुणवत्ता में सुधार लाने और किसानों को उनके कृषि क्षेत्र के लिए मृदा स्वास्थ्य कार्ड रखने के लिए प्रोत्साहित करके मिट्टी की गुणवत्ता के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने पर भारत सरकार के फोकस को ध्यान में रखते हुए किया गया था। मिट्टी के स्वास्थ्य का आकलन करने के कई

मानक हैं जिनमें मैक्रो न्यूट्रिएंट्स और माइक्रो न्यूट्रिएंट्स की उपस्थिति शामिल है। स्कूल स्तर की प्रयोगशाला की सीमाओं और मध्य स्तर से माध्यमिक स्तर तक छात्रों की भागीदारी को ध्यान में रखते हुए, देशभर में प्रत्येक ब्लॉक के कुछ स्कूलों के छात्रों द्वारा आयोजित की जाने वाली कुल छह गतिविधियों का चयन किया गया है। विभाग द्वारा विस्तृत दिशानिर्देश विकसित किए गए और रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट पर अपलोड किए गए। इन गतिविधियों का प्रदर्शन राज्य के पदाधिकारियों के समक्ष भी किया गया।

सभी छात्रों के लिए अध्ययन की गतिविधियाँ इस प्रकार थीं—

- मिट्टी के नमूनों की बनावट का निर्धारण किया गया;
- यह निर्धारित करना कि मिट्टी की प्रकृति अम्लीय, मध्यसिलिक या क्षारीय है;
- मिट्टी की जलधारण क्षमता का निर्धारण; तथा
- मिट्टी के भारी घनत्व का निर्धारण मध्य स्तर के छात्रों के लिए किया गया था। माध्यमिक स्तर के छात्रों के लिए, गतिविधियों में मिट्टी में कार्बनिक सामग्री का निर्धारण और विभिन्न मिट्टी के लिए जल अंतःस्यंदन की दर शामिल थी।

रा.शै.अ.प्र.प. की वेबसाइट www.ncert.nic.in. के माध्यम से राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह 2022–23 के लिए एक विस्तृत दिशानिर्देश विकसित और प्रसारित किया गया। उक्त दिशानिर्देशों में उपरोक्त सभी गतिविधियों का विस्तृत प्रोटोकॉल वर्णित किया गया था। इसके अलावा, राज्यों और संघ राज्य क्षेत्र के अधिकारियों के लिए राष्ट्रीय आविष्कार सप्ताह के उपलक्ष्य में अभिविन्यास कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रयोग के परिचालन का एक वीडियो भी तैयार किया गया और इसे व्यापक प्रसार के लिए रा.शै.अ.प्र.प. वेबसाइट पर अपलोड किया गया। परिणाम की रिपोर्ट करने के लिए दिशानिर्देशों के साथ एक ऑनलाइन गूगल फॉर्म विकसित किया गया और हितधारकों के साथ साझा किया गया। देशभर के स्कूलों से लगभग 1400 प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हुईं।

कला उत्सव

कला उत्सव स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय (एम.ओ.ई.), भारत सरकार का एक प्रमुख कार्यक्रम है जिसका शुभारंभ भारत के माननीय प्रधानमंत्री द्वारा 2015 में स्कूली शिक्षा के माध्यमिक स्तर पर बच्चों की कलात्मक प्रतिभा का पोषण और प्रदर्शन करके, शिक्षा में कला को बढ़ावा देने के लिए किया था। यह वर्ष 2022–23 के लिए समग्र शिक्षा के तहत एक पी.ए.बी. अनुमोदित कार्यक्रम है। एन.ई.पी. 2020 की सिफारिशों के आधार पर, इसमें पूरे भारत में समृद्ध पारंपरिक और सांस्कृतिक मूल्यों के एकीकरण की अवधारणा पर जोर दिया जाता है जिसके परिणामस्वरूप छात्रों का समग्र और संतुलित विकास होता है और स्कूल स्तर पर "एक भारत श्रेष्ठ भारत" की सच्ची भावना का अभ्यास किया जाता है।

आर.आई.ई., भुवनेश्वर, ओडिशा (रा.शै.अ.प्र.प.) परिसर में 3–7 जनवरी, 2023 तक 8वाँ राष्ट्रीय स्तर का कला उत्सव, 2022 आयोजित किया गया था, जिसमें 703 छात्रों (350 पुरुषों और 353 महिलाओं) ने भाग लिया। कुल 36 राज्यों और संघ राज्य क्षेत्रों, के.वी.एस. और एन.वी.एस. के 703 बच्चों में से 7 दिव्यांग प्रतिभागी थे। इसमें 10 श्रेणियाँ थीं जिनमें प्रतियोगिताएँ आयोजित की गईं— (i) स्वर संगीत-शास्त्रीय, (ii) स्वर संगीत-पारंपरिक लोक, (iii) वाद्य संगीत-वाद्य, (iv) वाद्य संगीत-मधुर, (v) नृत्य- शास्त्रीय, (vi) नृत्य- लोक, (vii), दृश्य कला (द्वि-आयामी), (viii) दृश्य कला (3-आयामी), (ix) स्वदेशी खिलौने और खेल, तथा (x) नाटक-एकल अभिनय। इस कला उत्सव में प्रतियोगिताओं का मूल्यांकन कला रूपों के संबंधित क्षेत्र से प्रतिष्ठित जूरी (30 की टीम) की एक टीम द्वारा किया गया था।

कला उत्सव का उद्घाटन समारोह 3 जनवरी 2023 को आयोजित किया गया था और इसमें धर्मेंद्र प्रधान, माननीय *शिक्षा और कौशल विकास और उद्यमशीलता मंत्री*, भारत सरकार और संजय कुमार, *सचिव*, डी.एस.ई. एंड एल., शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार उपस्थित थे। माननीय मंत्री ने राष्ट्रीय हर्बल पार्क का भी उद्घाटन किया, जिसमें कला उत्सव के प्रतिभागियों द्वारा अपने-अपने राज्यों से लाए गए पौधे लगाए। उन्होंने इस सकारात्मक पहल के लिए कला उत्सव आयोजकों की इस सकारात्मक पहल की सराहना की। माननीय मंत्री ने दो वर्ष की महामारी अवधि के बाद इस तरह के मेगा कार्यक्रम के आयोजन के लिए रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी और टीम रा.शै.अ.प्र.प. के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कला उत्सव के विजेताओं को 26 जनवरी की परेड और 'परीक्षा पे चर्चा 2023' में भाग लेने के लिए विशेष निमंत्रण की घोषणा की। कला उत्सव का समापन सह पुरस्कार समारोह 7 जनवरी, 2023 को आयोजित किया गया था और अन्नपूर्णा देवी, *राज्य मंत्री*, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, सुभाष सरकार, *राज्य मंत्री*, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार और राजकुमार रंजन सिंह, *राज्य मंत्री*, शिक्षा और विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा सम्मानित किया गया। कला उत्सव 2022 के पुरुष और महिला वर्ग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले सभी 60 विजेताओं को ट्रॉफी, पदक और नकद पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कला उत्सव 2022 के विजेताओं को विशेष रूप से 'परीक्षा पे चर्चा 2023' में भाग लेने के लिए आमंत्रित किया गया था, जहाँ कला उत्सव प्रदर्शन कला श्रेणियों के विजेताओं ने अपनी पारंपरिक राज्य पोशाक में 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' की अवधारणा को प्रदर्शित करने वाली कोरियोग्राफी प्रस्तुत की। कोरियोग्राफी की तैयारी में बच्चों को सम्मानित करने के लिए मशहूर कोरियोग्राफरों की एक टीम नियुक्त की गई थी। दृश्य कला श्रेणी के इन सभी विजेताओं की पेंटिंग, मूर्तियाँ, स्वदेशी खिलौने और खेलों की एक प्रदर्शनी भी स्टेडियम की लॉबी में आयोजित की गई जहाँ विजेताओं को स्वयं प्रधानमंत्री को अपनी रचना समझाने का अवसर मिला। कार्यक्रम के बाद सभी बच्चों को राष्ट्रीय महत्व के स्थानों, गणतंत्र दिवस परेड और बीटिंग द रिट्रीट आदि का भ्रमण करने का अवसर दिया गया।

सहकर्मी शिक्षण के लिए दिशानिर्देश

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में कक्षाओं में साथियों के साथ सीखने की आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया। हितधारकों के सुझावों को ध्यान में रखते हुए, सहकर्मी शिक्षण के लिए इन दिशानिर्देशों में सहकर्मी शिक्षण में आई.सी.टी. के समेकन और अधिगम-शिक्षण स्थितियों में सहकर्मी अधिगम/शिक्षण गतिविधियों को कार्यान्वित करने के लिए समुदाय की भागीदारी जैसी नवीन कार्यनीतियाँ शामिल हैं। इनसे समावेशी और प्रभावी शिक्षण स्थितियों को बढ़ावा मिलता है। दिशानिर्देशों में यथार्थवादी उदाहरण भी शामिल हैं जो शिक्षकों, मुख्य शिक्षकों और अन्य हितधारकों को सहकर्मी सीखने के लिए नवीन कार्यनीतियों को कार्यान्वित करने में सहायता करेंगे।

इन दिशानिर्देशों में साथियों के साथ सीखने की अवधारणाओं, विभिन्न नीति दस्तावेज़ों में उल्लिखित इसके महत्व और 21वीं सदी के कौशल को बढ़ावा देने वाली कार्यनीति के रूप में इसके व्यावहारिक निहितार्थ को शामिल किया गया है। इससे योजना, कार्यान्वयन और आकलन के संबंध में अपने कार्यों को और विस्तृत किया जाता है। अब जबकि कक्षाएँ समावेशी प्रकार की होती हैं और आई.सी.टी. का उपयोग कई गुना बढ़ गया है, दिशानिर्देशों में समावेशी कक्षा में इसके समेकन पर जोर दिया गया है। दिशानिर्देशों में उदाहरण भी दिए गए हैं। दिशानिर्देशों में अधिगम-शिक्षण की प्रक्रिया में हितधारकों की भूमिकाओं का भी उल्लेख किया गया है।

समग्र शिक्षा के सामाजिक लेखा परीक्षण पर मॉड्यूल

एन.ई.पी. 2020 के मूलभूत सिद्धांतों में से एक जिसमें बड़े पैमाने पर शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ इसके अंदर के व्यक्तिगत संस्थानों का मार्गदर्शन किया जाएगा। यह एक 'हल्की लेकिन सख्त' नियामक रूपरेखा है। यह

स्वायत्तता, सुशासन और सशक्तीकरण के माध्यम से नवाचार और दायरे से बाहर (आउट-ऑफ-द-बॉक्स) विचारों को प्रोत्साहित करते हुए लेखा परीक्षण और सार्वजनिक प्रकटीकरण के माध्यम से शैक्षिक प्रणाली की अखंडता, पारदर्शिता और संसाधन दक्षता सुनिश्चित करने के लिए है।

इस संदर्भ में, स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय द्वारा कुछ महत्वपूर्ण मामलों, विशेष रूप से वित्तीय ईमानदारी, सुशासन में प्रभावी परिणाम का आकलन करने के लिए सुविधाजनक तरीके से विनियमित करने के लिए और सभी वित्त, लेखा परीक्षण, प्रक्रियाओं, बुनियादी रूपरेखा, संकाय/कर्मचारी, पाठ्यक्रम और शैक्षिक परिणामों का पूर्ण ऑनलाइन और ऑफलाइन सार्वजनिक स्व-प्रकटीकरण 'समग्र शिक्षा योजना का सामाजिक लेखा परीक्षण' स्थापित किया है।

इस योजना में क्षेत्र-स्तरीय चुनौतियों को प्रकाश में लाने का समर्थन किया जाता है जो अन्यथा दिखाई नहीं दे सकती हैं और सुधारात्मक उपाय करने में मदद मिलती है। यह व्यापक रूप से मान्यता प्राप्त है कि योजना की निगरानी में लोगों की भागीदारी सुनिश्चित करने के लिए सामाजिक लेखा परीक्षण एक शक्तिशाली उपकरण है और इससे कार्यान्वयन में सुधार होता है। छात्रों की समग्र सुरक्षा, जैसे बुनियादी रूपरेखा की सुरक्षा, मानसिक-सामाजिक सुरक्षा, स्वास्थ्य और शारीरिक सुरक्षा और साइबर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भी सामाजिक लेखा परीक्षण की आवश्यकता है। विभिन्न हितधारकों अर्थात बच्चों, माता-पिता और समुदाय को सुरक्षा और संरक्षा के विभिन्न पहलुओं के बारे में जागरूक बनाना महत्वपूर्ण है। भौतिक, सामाजिक-भावनात्मक, संज्ञानात्मक आयाम जो प्राकृतिक आपदाओं के लिए भी विशिष्ट हैं। सामाजिक लेखा परीक्षण अभ्यास का एक प्रमुख उद्देश्य स्कूलों में बच्चों की सुरक्षा की बात आने पर किसी भी व्यक्ति या प्रबंधन की ओर से किसी भी लापरवाही के खिलाफ 'शून्य सहनशीलता नीति' पर जोर देना है।

समग्र शिक्षा योजना के कार्यक्रम संबंधी और वित्तीय मानदंडों में कहा गया है कि योजना की निगरानी स्कूल स्तर से शुरू होगी। समग्र शिक्षा के हस्तक्षेपों के कार्यान्वयन की जाँच, निगरानी और सत्यापन को सामाजिक लेखा परीक्षण द्वारा सुगम बनाया जाएगा। सामाजिक लेखा परीक्षण समुदाय और संपूर्ण ग्राम सभा द्वारा स्थानीय प्राधिकरण (एल.ए.), एस.एम.सी. सदस्यों, एस.एच.जी., युवा क्लबों आदि जैसे हितधारकों की मदद से किया जाता है। मानदंडों में भी सामाजिक लेखापरीक्षण की रिपोर्ट के माध्यम से योजना में जेंडर और सामाजिक समावेशन के प्रावधानों की सावधानीपूर्वक निगरानी पर जोर दिया जाता है। तीन प्रशिक्षण मॉड्यूल विकसित किए गए हैं। 1. स्कूली शिक्षा में पहल, 2. समग्र शिक्षा के सामाजिक लेखा परीक्षण की प्रक्रिया, और 3. सामाजिक लेखापरीक्षा के संचालन में शामिल कार्मिकों के लिए उपकरण और रिपोर्टिंग प्रारूप, जैसे— मास्टर ट्रेनर/क्लस्टर सोशल ऑडिटर (सी.एस.ए.)/ सामाजिक लेखा परीक्षण सुविधा टीम (एस.ए.एफ.टी.)।

पी.एम. ई-विद्या का प्रबंधन

पी.एम. ई-विद्या, कोविड-19 महामारी के दौरान शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा शुरू की गई एक व्यापक पहल है। इसमें विभिन्न माध्यमों यानी रेडियो, टेलीविजन और इंटरनेट-आधारित दीक्षा प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप के माध्यम से ई-कंटेंट का प्रसार शामिल है। पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों के लिए कुल 6,789 वीडियो तैयार किए गए और हिंदी, अंग्रेजी और आई.एस.एल. में 'वन क्लास वन चैनल' पहल के तहत 12 बजे ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों पर नियमित रूप से प्रसारित किए गए। दीक्षा पर हिंदी और अंग्रेजी दोनों माध्यमों में पी.एम. ई-विद्या (वीडियो कार्यक्रम) का कवरेज 100 प्रतिशत था। उर्दू माध्यम में वीडियो का विकास कार्य प्रगति पर है। चैनल विभिन्न विषयों पर विशेषज्ञों के साथ लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र भी प्रसारित करते हैं।

पाठ्यचर्या आधारित लाइव सत्र

कक्षा 1–10 के लाइव कार्यक्रम 30 मिनट के 2,643 लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र कक्षा आधारित चैनलों (1–10) पर प्रसारित किए गए हैं। इसमें लगभग 1,321.5 घंटे का प्रसारण कवर किया गया। कक्षा 11 और 12 के लाइव कार्यक्रम कक्षा आधारित चैनलों (11 और 12) के आधार पर 60 मिनट के 262 लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र प्रसारित किए गए हैं। इसमें लगभग 262 घंटे का प्रसारण शामिल था।

मनोदर्पण लाइव अंत:क्रियात्मक सत्र

पी.एम. ई-विद्या चैनल #6 से #12 पर 153 घंटे के 103 वेबिनार सत्र प्रसारित किए गए हैं।

योग शृंखला

आयुष मंत्रालय और मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान के सहयोग से एक लाइव योग शृंखला पी.एम. ई-विद्या चैनल #06 से #12 पर 268.5 घंटे (प्रत्येक 45 मिनट) को कवर करते हुए 358 लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र प्रसारित किए गए हैं।

वेबिनार शृंखला

सुनकर सीखें— 52 लाइव राष्ट्रीय छात्र आउटरीच कार्यक्रम सत्र पी.एम. ई-विद्या चैनलों #09/ #10, #11 और #12 पर प्रसारित किए गए हैं, जो 52 घंटे के हैं। एन.सी.एस.एल. और एन.आई.ई.पी.ए. के सहयोग से स्कूल नेतृत्व पर लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र। स्कूल नेतृत्व पर 83 लाइव अंतरक्रियात्मक सत्र पी.एम. ई-विद्या चैनल #06, 09 और 12 पर प्रसारित किए गए हैं, जो 42.5 घंटे के हैं। मनोदर्पण पहल के तहत, सहयोग लाइव सत्र निम्नलिखित विषयों पर आयोजित किए गए—

- आर.आई.ई., भुवनेश्वर, रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से 23 मार्च, 2023 को 'सकारात्मक मानसिक स्वास्थ्य के लिए खुशी पैदा करना'
- आर.आई.ई., भुवनेश्वर, रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से 24 मार्च, 2023 को 'आत्म-स्वीकृति, अच्छे मानसिक स्वास्थ्य और कल्याण के लिए आगे का कदम'
- आर.आई.ई., मैसूरु, रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से 27 मार्च, 2023 को 'परीक्षा के दौरान तनाव प्रबंधन के लिए शारीरिक फिटनेस का महत्व'
- आर.आई.ई., मैसूरु, रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से 28 मार्च, 2023 को 'परीक्षा के दौरान सकारात्मक मानसिकता का महत्व'
- आर.आई.ई., मैसूरु, रा.शै.अ.प्र.प. के सहयोग से 29 मार्च, 2023 को 'शैक्षणिक विफलताओं के प्रति लचीलापन विकसित करना'
- 'सहयोग— बच्चों के मानसिक कल्याण के लिए मार्गदर्शन' परामर्श के 781 लाइव सत्र लगभग 390.5 घंटे प्रसारित किए गए हैं।

अब 12 टी.वी. चैनल जियो टी.वी. मोबाइल ऐप पर भी उपलब्ध हैं, दिसंबर 2022 तक जियो टी.वी. मोबाइल ऐप पर इसकी दर्शकों की संख्या 1,02,49,217 थी। इन डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों के लिए एक प्रतिक्रिया तंत्र भी विकसित किया गया है जिसमें आई.वी.आर.एस. और ई-मेल शामिल हैं। पहले प्रयास के तहत मार्च, 2023 तक कुल 43,275 कॉल और बाद में 1,205 ई-मेल प्राप्त हुए और उनका उत्तर दिया गया। रेडियो पी.एम. ई-विद्या का दूसरा पहलू है। कक्षा 1–12 के लिए पाठ्यक्रम-आधारित रेडियो कार्यक्रमों के कुल लगभग 4,000 कार्यक्रम 398 रेडियो स्टेशनों (11 ज्ञानवाणी एफ.एम. रेडियो स्टेशन, 255 सामुदायिक रेडियो स्टेशन 132 ऑल इंडिया रेडियो स्टेशन) और आई-रेडियो और जियो सावन मोबाइल ऐप पर पॉडकास्ट के माध्यम से प्रसारित किए गए थे। आई-रेडियो पर कुल 2,757 लाइव सत्र भी प्रसारित किए गए।

वर्ष 2022 की बजट घोषणा में, भारत सरकार ने राज्यों/ संघ राज्य क्षेत्र और स्वायत्त निकायों (ए.बी.) के लिए इन 12 पी.एम ई-विद्या डी.टी.एच. चैनलों को 200 चैनलों तक विस्तारित करने की घोषणा की। वर्ष 2023 की बजट घोषणाओं में भी यही बात दोहराई गई। इन चैनलों का लक्ष्य पूरे देश में कई भारतीय भाषाओं और राज्य पाठ्यक्रम के अनुसार विद्यार्थियों की जरूरतों को पूरा करना है। इसके लिए 10 सदस्यीय शैक्षणिक सलाहकार समिति (ए.ए.सी.) का गठन कर अनुमोदन किया गया। इन 200 चैनलों के लिए ई-सामग्री के विकास और खरीद के लिए अनिल सहस्त्रबुद्धे की अध्यक्षता में एक अलग शैक्षणिक सलाहकार समिति भी गठित की गई है। इस समिति की दो बैठकें क्रमशः 17 जनवरी और 21 फरवरी, 2023 को आयोजित की गईं। 33 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र और 168 प्रतिभागियों को शामिल करते हुए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र/ए.ओ. के लिए अभिविन्यास के दो चरण और प्रशिक्षण के पाँच चरण पूरे किए गए। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा आकर्षक ई-सामग्री बनाने के लिए एस.ओ.पी. और दिशानिर्देश विकसित किए गए थे और राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र के साथ साझा किए गए थे। ई-कंटेंट के निर्माण के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र के साथ नियमित अनुवर्ती कार्रवाई की जा रही है और इसके लिए 22 दिसंबर, 2022 को एक ऑनलाइन बैठक आयोजित की गई थी। 200 डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों के लिए चैनल आबंटन की सूची को अंतिम रूप दिया गया। पी.एम. ई-विद्या की मौजूदा पाठ्यक्रम ई-सामग्री को 13 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र/संगठनों के साथ हिंदी और अंग्रेजी माध्यम में साझा किया गया था। 12 पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों का विश्लेषण करने के लिए एक डिपस्टिक सर्वेक्षण शुरू किया गया था जिसका उद्देश्य 200 चैनलों को चलाने में मदद करना है।

दीक्षा— एक राष्ट्र, एक डिजिटल प्लेटफार्म

एन.आई.सी. द्वारा दीक्षा प्लेटफार्म के प्रबंधन की तैयारी की गई। प्रबंधित सेवा प्रदाता (एम.एस.पी.) की ऑनबोर्डिंग और प्रसंस्करण चरण के लिए डी.आई.सी. द्वारा प्रस्ताव के लिए अनुरोध तैयार और प्रकाशित किया गया था। एन.डी.ई.ए.आर. दीक्षा पी.एम.यू. की स्थापना रा.शै.अ.प्र.प. में की गई थी (दीक्षा के लिए 13 संसाधन और एन.डी.ई.ए.आर. के लिए पाँच संसाधन)। एन.डी.ई.ए.आर. अनुरूप विद्या समीक्षा केंद्र (पूर्व में सी.सी.सी.) की स्थापना सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. में की गई थी, जिसके डैशबोर्ड के लिए एकस्टेप द्वारा विकसित सीक्यूब सॉफ्टवेयर का उपयोग किया जा रहा है। इसके अतिरिक्त, वी.एस.के. की परिकल्पना राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के लिए की गई थी और इसे पूरे भारत में स्थापित किया जा रहा था। 29 से अधिक राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र और 5 स्वायत्त निकायों ने एन.वी.एस.के. के लिए हस्ताक्षर किए हैं और 13 राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र ने पहले ही सेट-अप शुरू कर दिया है।

दीक्षा पर राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र की 6,632 सक्रिय पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध थीं जिनमें रा.शै.अ.प्र.प. की 369 ई.टी.बी., 41 व्यावसायिक शिक्षा ई.टी.बी. और 126 अन्य रा.शै.अ.प्र.प. ई.टी.बी. (भाषा संगम और कॉमिक पुस्तकें) शामिल थीं; दीक्षा पर 36 भाषाओं में 3,16,614 ई-सामग्री उपलब्ध कराई गई; 3,830 ऑडियोबुक अध्याय विकसित किए गए और दीक्षा पर अपलोड किए गए। एफ.एल.एन. पोर्टल के लिए 2,000 से अधिक संसाधन अपलोड किए गए थे। लगभग 30 दीक्षा राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र की समन्वय बैठकें आयोजित की गईं। पूरे देश में 600 से अधिक प्रतिभागियों के लिए ई-सामग्री विकास के लिए ऑनलाइन प्रशिक्षण के चार चरण आयोजित किए गए। दीक्षा पर वर्चुअल लैब के लिए लाइव प्रशिक्षण सत्र पी.एम. ई-विद्या डी.टी.एच. टी.वी. चैनलों पर आयोजित किए गए। 185 से अधिक संगठनों की भागीदारी के साथ 5 पारिस्थितिकी तंत्र सक्षमता कार्यशालाएँ आयोजित की गईं। 150 से अधिक संगठनों/तकनीकी उद्यमियों ने एन.डी.ई.ए.आर. सैंडबॉक्स पर पंजीकरण कराया। अखिल भारतीय एन.आई.सी.एन.डी.ई. ए.आर. के अनुरूप समाधान कार्यक्रम का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया।

आभासी प्रयोगशाला

वर्ष 2022 की बजट घोषणा के अनुसार, व्यावसायिक शिक्षा की सुविधा और विज्ञान प्रयोगों की समझ को बढ़ाने के लिए रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा आभासी और कौशल प्रयोगशालाएँ विकसित करने का निर्णय लिया गया। रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा 100 आभासी प्रयोगशाला की एक सूची की पहचान की गई और प्राथमिकता के आधार पर आभासी प्रयोगशाला के विकास के लिए अमृता विश्वविद्यालय को सौंपी गई, जिसके बाद 218 वर्चुअल लैब विकसित किए गए और एक अलग पोर्टल के तहत दीक्षा प्लेटफॉर्म पर अपलोड किए गए। इन प्रयोगशालाओं को जुलाई 2022 में लॉन्च किया गया था। लॉन्च के बाद कुल 13 नई प्रयोगशालाएँ विकसित की गईं। 170 आभासी प्रयोगशालाओं की समीक्षा की गई है।

व्यावसायिक शिक्षा

राज्यों के लिए समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए क्षेत्रीय परामर्श बैठक-सह-कार्यशाला

संस्थान ने दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वोत्तर क्षेत्रों और उत्तरी, पश्चिमी और मध्य क्षेत्रों के लिए समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए दो क्षेत्रीय परामर्श बैठकें-सह-कार्यशालाएँ आयोजित कीं। बैठकों में स्कूल शिक्षा निदेशालय, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पश्चिमी, मध्य और उत्तरी क्षेत्र के राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र के राज्य अधिकारियों सहित लगभग 67 प्रतिभागियों ने भाग लिया। बैठक में प्रतिभागियों ने व्यावसायिक शिक्षा की स्थिति, सर्वोत्तम अभ्यासों और चुनौतियों को साझा किया। स्किल ऑन व्हील, हब एंड स्पोक मॉडल, स्किल हब पहल, करियर प्रोग्रेसन सेल, ऑटोमोटिव लैब्स को पुराने सरकारी वाहन उपलब्ध कराना राज्यों द्वारा साझा की गई कुछ सर्वोत्तम अभ्यास हैं। नैसकॉम, कृषि, सौंदर्य और कल्याण, लॉजिस्टिक्स, टेलीकॉम, इंस्ट्रुमेंटेशन और ऑटोमेशन, जल प्रबंधन और प्लंबिंग और पावर जैसी क्षेत्र कौशल परिषदों के प्रतिनिधियों ने प्रशिक्षुता कार्यक्रम पर विशेष जोर देते हुए अपनी पहल साझा की। पी.एस.एस.सी.आई.वी., भोपाल के संकाय सदस्यों और वर्चुअल बैठक में उपस्थित प्रतिनिधियों ने स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए विभिन्न मुद्दों के समाधान पर विचार-विमर्श किया।

यह बैठक स्कूलों में शिक्षा के व्यावसायीकरण के कार्यान्वयन की स्थिति की समीक्षा करने और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए एक कार्य योजना विकसित करने के लिए आयोजित की गई थी। सभी राज्य प्रतिनिधियों ने व्यावसायिक शिक्षा से संबंधित विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतीकरण दिया। बैठक के दौरान, समग्र शिक्षा के तहत स्कूली शिक्षा के व्यावसायीकरण पर संकाय सदस्यों द्वारा व्याख्यान दिए गए— प्राथमिकताएँ और चुनौतियाँ, व्यावसायिक शिक्षा की योजना बनाना और कार्यान्वित करना, कक्षा 6–8 से पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा शुरू करना और व्यावसायिक शिक्षा में रोजगार योग्यता कौशल को समेकित करना। कार्यक्रम के दौरान अतिथि वक्ताओं ने समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा में उभरती प्राथमिकताओं और कौशल की मैपिंग प्रस्तुति और व्यावसायिक शिक्षा के प्रबंधन और निगरानी उद्योग संबंधों, प्रशिक्षुता प्रशिक्षण, मान्यता, वी.ई.टी. में उभरती भविष्य की दिशाओं— उद्योग 4.0, कृत्रिम बुद्धिमत्ता आदि के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने जैसे विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतियाँ दीं।

राज्यों के लिए समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए राष्ट्रीय परामर्श बैठक-सह-कार्यशाला

पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल में समग्र शिक्षा के तहत स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा के कार्यान्वयन के लिए 27–28 फरवरी, 2023 को राष्ट्रीय परामर्श बैठक-सह-कार्यशाला आयोजित की गई थी। बैठक में स्कूल शिक्षा

निदेशालय, व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण निदेशालय, राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, केंद्रीय और राज्य बोर्ड, गैर सरकारी संगठनों आदि के राज्य अधिकारियों सहित 49 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यक्रम की शुरुआत 27 फरवरी, 2023 को उद्घाटन सत्र के साथ हुई थी और परिचयात्मक टिप्पणी दीपक पालीवाल, *संयुक्त निदेशक*, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल द्वारा दी गई थी और मुख्य अतिथि, दिनेश प्रसाद सकलानी, *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली द्वारा संबोधन दिया गया था, जो आभासी तरीके से बैठक में शामिल हुए। दो दिवसीय कार्यक्रम में विभिन्न विषयों पर प्रस्तुतियाँ दी गईं, एन.ई.पी. 2020— समग्र शिक्षा के तहत व्यावसायिक शिक्षा का सुदृढ़ीकरण और विस्तार, स्कूलों में अच्छी वी.ई.टी. अभ्यासों को साझा करना और कार्यक्रम के *समन्वयक* वी.एस. मेहरोत्रा, आर.एन.टी.यू. के सिद्धार्थ चतुर्वेदी, लाही के राज गिल्डा, एन.सी.वी.ई.टी. के हरीश चंदर ने राष्ट्रीय क्रेडिट रूपरेखा का परिचय दिया। दोनों दिन तकनीकी सत्रों में विभिन्न मुद्दों पर पैनल चर्चा भी हुई जैसे गुणवत्तापूर्ण वी.ई.टी. और शिक्षक तैयारी के लिए स्कूल-उद्योग सहयोग का निर्माण, 360 डिग्री आकलन और मूल्यांकन, भारत में वी.ई.टी.— हरित, डिजिटल और अभिनव होना, लचीले भविष्य के लिए कौशल विकास— आगे बढ़ने के तरीके और उच्च शिक्षा में व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण की मान्यता। सत्रों के बाद 27 फरवरी, 2023 को एक सांस्कृतिक संध्या का भी आयोजन किया गया।

समन्वयकों द्वारा क्षेत्रीय परामर्श बैठकों की सिफारिशें 28 फरवरी, 2023 को प्रस्तुत की गईं। प्रस्तुतियों और पैनल चर्चाओं के बाद निकले कुछ प्रमुख संदेश इस प्रकार हैं— (i) सामुदायिक आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से व्यावसायिक शिक्षा के लिए अधिक छात्रों को आकर्षित करना और माता-पिता, शिक्षकों, छात्रों और समाज के वंचित वर्गों के बीच व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाना; (ii) किसी भूमिका में सक्षम रूप से प्रदर्शन करने के लिए आवश्यक कौशल, ज्ञान और क्षमताओं को मैप करने के लिए कौशल मानचित्रण के लिए उद्योग की भागीदारी सुनिश्चित करें, जो कौशल की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर को कम करने और व्यावसायिक शिक्षा की समग्र गुणवत्ता को बढ़ाने के लिए बहुत आवश्यक है; (iii) आभासी कौशल प्रयोगशाला उन विषय क्षेत्रों में बनाई जा सकती हैं जहाँ स्कूल-उद्योग का जुड़ाव संभव नहीं है या इसमें खतरनाक गतिविधियाँ शामिल हैं, ताकि छात्रों को नौकरी पर किए जाने वाले विभिन्न कार्यों से अवगत कराया जा सके; (iv) विभिन्न क्षेत्रों की विभिन्न कार्यभूमिकाओं में डिजिटल कौशल के उपयोग में वृद्धि के साथ, कोडिंग, कृत्रिम बुद्धिमत्ता, इंटरनेट ऑफ थिंग्स, डिजिटल डिजाइन और उत्पाद, डिजिटल व्यवसाय विश्लेषण, डिजिटल मार्केटिंग, संवर्धित वास्तविकता, आभासी वास्तविकता आदि महत्वपूर्ण होते जा रहे हैं; (v) व्यावसायिक शिक्षकों की कमी, जिसके लिए कई कारक जिम्मेदार हो सकते हैं, जैसे कम वेतन, प्रतिष्ठा की कमी और उद्योगों से अनुभव वाले चिकित्सकों की कमी आदि को राष्ट्रीय और राज्य स्तर पर संबोधित करने की आवश्यकता है; (vi) व्यावसायिक शिक्षकों/प्रशिक्षकों का क्षमता निर्माण और व्यावसायिक विकास पेशेवर मानकों पर किया जाना चाहिए ताकि वे व्यावसायिक पाठ्यक्रम को प्रभावी तरीके से प्रदाय करने में सक्षम हो सकें; (vii) शिक्षण और प्रशिक्षण के इनपुट के साथ आउटपुट को संरेखित करने के लिए योग्यता-आधारित आकलन प्रणाली और विशिष्ट ज्ञान और कौशल की निपुणता प्रदर्शित करने की क्षमता के आधार पर छात्र अधिगम का 360 डिग्री आकलन और मूल्यांकन शुरू करने की आवश्यकता है; (viii) रोजगार मेलों/मेलों, करियर मेलों और करियर वार्ताओं को अधिक बार आयोजित किया जाना चाहिए और प्रभावी तरीके से प्रचारित किया जाना चाहिए, ताकि युवाओं के बीच वी.ई.टी. के महत्व के बारे में जागरूकता और संवेदनशीलता में तेजी लाई जा सके; और (ix) स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा की गतिविधियों का समर्थन करने और मौजूदा संसाधनों के इष्टतम उपयोग के लिए राज्यों/संघ राज्य क्षेत्र में विभिन्न विभागों की सरकारी योजनाओं का पता लगाया जा सकता है।

स्कूलों में व्यावसायिक शिक्षा का नवोन्मेषी मॉडल

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में सिफारिश की गई है कि राज्य कला, विज्ञान, मानविकी, भाषा, खेल और व्यावसायिक विषयों में व्यापक लचीलेपन और व्यापक विषयों के अनुभव और आनंद के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नवीन तरीकों पर गौर कर सकते हैं। पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.) अजमेर, भोपाल, भुवनेश्वर और मैसूरु में स्थित रा.शै.अ.प्र.प. के चार प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूलों (डी.एम.एस.) और व्यावसायिक शिक्षा में नवीन पद्धतियाँ स्थापित करने के लिए मध्य प्रदेश, त्रिपुरा, मेघालय, राजस्थान, कर्नाटक और ओडिशा के राज्य बोर्डों से संबद्ध छह स्कूलों में पी.ए.बी. (एस.एस.) अनुमोदित परियोजना कार्यान्वित कर रहा है। वर्ष 2022–2023 के दौरान, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. ने परियोजना की प्रगति की समीक्षा करने तथा भविष्य की योजना और कार्यान्वयन के लिए इनपुट प्रदान करने के लिए स्कूलों के प्रमुखों और व्यावसायिक शिक्षकों के साथ बैठक की, स्कूलों के प्रमुखों को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की सिफारिशों को कार्यान्वित करने के लिए आवश्यक तैयारी करने की सलाह दी गई, जिसमें छात्रों को व्यावसायिक अनुभव प्रदान करने के लिए बैग रहित दिवसों और पूर्व-व्यावसायिक शिक्षा और इंटर्नशिप की गतिविधियाँ शामिल हैं। पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई. द्वारा परियोजना की प्रगति की समीक्षा करने तथा भविष्य की योजना और कार्यान्वयन के लिए इनपुट प्रदान करने के लिए स्कूलों के प्रमुखों और व्यावसायिक शिक्षकों के साथ बैठक आयोजित की जाती हैं।

8. रा.शै.अ.प्र.प. में आने वाले अतिथि और अंतरराष्ट्रीय सहयोग

रा.शै.अ.प्र.प. में आने वाले अतिथि

रा.शै.अ.प्र.प. में कोरिया गणराज्य के दूतावास के राजदूत की सौजन्य यात्रा

कोरिया गणराज्य के दूतावास के राजदूत जे-बोक चांग ने 10 मई, 2022 को अपने सहयोगियों, कांग येओनसू, द्वितीय सचिव और वूचन चांग, निदेशक, कोइका, कोरिया गणराज्य के साथ रा.शै.अ.प्र.प. में सौजन्य यात्रा की। रा.शै.अ.प्र.प. के वरिष्ठ अधिकारियों श्रीधर श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.; पी.के. मंडल, सचिव, रा.शै.अ.प्र.प. और अनुपम अहूजा, प्रोफेसर एवं प्रमुख, अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. ने बैठक में भाग लिया और जारी परियोजनाओं की प्रगति पर चर्चा की।

ऑस्ट्रेलियाई प्रतिनिधिमंडल का दौरा

ऑस्ट्रेलियाई प्रतिनिधिमंडल ने 16 फरवरी, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया और निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. और प्रमुख, अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग के साथ बातचीत की। प्रतिनिधियों ने बताया कि ऑस्ट्रेलियाई शिक्षा मंत्री भारतीय विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग की तलाश करने के लिए ऑस्ट्रेलिया के चुनिंदा विश्वविद्यालयों के कुलपतियों के साथ भारत का दौरा कर रहे हैं। अध्यापक शिक्षा में प्रमुख चुनौतियाँ अध्यापकों की गुणवत्ता और उनके विकास के लिए संस्थागत समर्थन तथा अध्यापकों का निरंतर व्यावसायिक विकास हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति द्वारा परिकल्पित अध्यापक विकास और उसे साकार करने के तरीकों और साधनों पर समूह द्वारा विचार-विमर्श किया जाता है। आवश्यकतानुसार अध्यापक विकास और प्रौद्योगिकी उन्नति आदि के क्षेत्र में शैक्षणिक सहयोग का पता लगाया जा सकता है। अतिथियों ने आशा व्यक्त की है कि बातचीत जारी रहेगी और आगे सहयोग किया जाएगा। यह सुझाव दिया गया और सहमति व्यक्त की गई कि दोनों देश अध्यापकों के व्यावसायिक विकास और संस्थागत तंत्र के क्षेत्रों में सहयोग की संभावनाएँ तलाश करेंगे।

न्यूजीलैंड, जी2जी के कार्यकारी निदेशक का दौरा

न्यूजीलैंड, जी2जी की कार्यकारी निदेशक मिशा मानिक्स-ओपी ने 17 फरवरी, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया और दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. एवं पी.के. मंडल, प्रमुख, अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग और सचिव, रा.शै.अ.प्र.प. के साथ बातचीत की। उनके साथ रजनी सचदेव, बिजनेस डेवलपमेंट मैनेजर, जी2जी, न्यूजीलैंड उच्चायोग, नई दिल्ली भी थीं। मिशा मनिक्स-ओपी ने उस तरीके की खोज की जिसमें न्यूजीलैंड और भारत अध्यापक विकास और मूलभूत साक्षरता एवं संख्यात्मकता में पारस्परिक अधिगम और लाभ के लिए

मिलकर काम कर सकते हैं। रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक, दिनेश प्रसाद सकलानी ने प्रतिनिधियों को मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा के क्षेत्र में वर्तमान कार्यों के बारे में जानकारी दी। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.), 2020 और मूलभूत साक्षरता पाठ्यक्रम के प्रारूप में व्यक्तिगत, सामाजिक और राष्ट्रीय संदर्भों के संदर्भ में महामारी के बाद के विकास को ध्यान में रखते हुए नए दृष्टिकोण को लाया गया है और इसके तहत स्कूल में बच्चों के समग्र विकास के भाग के रूप में बच्चों के बीच सीखने को बढ़ावा दिया जाता है। उन्होंने आगे उल्लेख किया कि शुरुआती वर्षों से विद्यालय में अधिगम की गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए खिलौना आधारित शिक्षणशास्त्र और तीसरे वर्ष से बच्चे को विद्यालय लाने जैसे नवाचार किस प्रकार प्रस्तावित किए गए हैं। प्रोफेसर मंडल ने अपनी चर्चा में समूह का ध्यान उन मुद्दों पर आकर्षित किया जो अध्यापक विकास, प्रारंभिक बाल्यावस्था शिक्षा और मूलभूत साक्षरता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण हैं। रा.शै.अ.प्र.प. के प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.) में प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा की एसोसिएट प्रोफेसर रोमिला सोनी ने दोनों देशों में साक्षरता शिक्षा में समानताओं और विशिष्टता पर चर्चा की। उन्होंने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) के कार्यान्वयन के भाग के रूप में 'निष्ठा— विद्यालय प्रमुखों और अध्यापकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल' के बड़े पैमाने पर ऑनलाइन कार्यक्रमों के माध्यम से अध्यापकों के व्यावसायिक विकास में रा.शै.अ.प्र.प. के वर्तमान प्रयासों का भी उल्लेख किया जो विभिन्न कार्यक्रमों के साथ विभिन्न स्तरों पर अध्यापकों के लिए चलाया गया है।

- जी.आई.एन.टी.एल. और ई.डी.यू.एफ.आई., फिनलैंड के प्रतिनिधियों ने व्यावसायिक शिक्षा और प्रशिक्षण में अध्यापक शिक्षा के लिए इंडो-फिनिश परियोजना पर एक सहयोगात्मक बैठक और कार्यशाला के लिए 25 अगस्त, 2022 को पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल का दौरा किया। यह केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, आई.सी.टी. और नवीन अध्यापन-अधिगम में प्रशिक्षण के माध्यम से व्यावसायिक अध्यापकों के व्यावसायिक विकास में गुणात्मक परिवर्तन लाने के लिए इंडो-फिनिश परियोजना का नेतृत्व करेगा।
- भारत सरकार के पूर्व कैबिनेट मंत्री सुब्रमण्यम स्वामी ने 1 अगस्त, 2022 को 60वें स्थापना दिवस के अवसर पर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु का दौरा किया। मैसूरु राजघराने के यदुवीर कृष्णदत्त चामराजा वाडियार ने 7 नवंबर, 2022 को 67वें कन्नड़ राज्योत्सव समारोह के अवसर पर आर.आई.ई.एम. का दौरा किया। शारदा श्रीनिवासन, *प्रोफेसर*, नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस्ड स्टडीज (एन.आई.ए.एस.), बेंगलुरु ने 8 मार्च, 2022 को महिला दिवस समारोह के अवसर पर संस्थान का दौरा किया।
- पद्मश्री मंजम्मा जोगाथी ने 11 मार्च, 2022 को महिला दिवस समारोह के एक भाग के रूप में एक विस्तार व्याख्यान देने के लिए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु का दौरा किया।
- चिल्ड्रेन्स यूनिवर्सिटी के 53 संकाय सदस्यों ने 19 और 20 सितंबर, 2022 को रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य विश्वविद्यालय के संकाय सदस्यों को रा.शै.अ.प्र.प. की भूमिका और कार्यों के बारे में जागरूक करना था। उन्हें विद्यालयी शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न एन.आई.ई. विभागों और सी.आई.ई.टी. द्वारा की गई महत्वपूर्ण गतिविधियों के बारे में संक्षिप्त जानकारी से भी अवगत कराया गया।
- चिल्ड्रेन्स यूनिवर्सिटी, गाँधीनगर, गुजरात से एम.एड. के 50 विद्यार्थियों ने अपने अध्यापकों के साथ 20 सितंबर, 2022 को शैक्षिक किट प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया। भारत नेशनल पब्लिक स्कूल, राम विहार, कड़कड़डूमा, दिल्ली के 10 अध्यापकों ने 22 सितंबर, 2022 को शैक्षिक किट प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प.

का दौरा किया। प्रकाश कुमार ने डिजाइन विभाग, शिव नादर विश्वविद्यालय, दादरी, उत्तर प्रदेश के पाँच विद्यार्थियों के साथ 27 सितंबर, 2022 को शैक्षिक किट प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया।

- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल के 13 एम.एड. विद्यार्थियों ने 1 नवंबर, 2022 को शैक्षिक किट प्रभाग का दौरा किया। लक्ष्मी शर्मा और जी.एल.टी. सरस्वती बिरला मंदिर सीनियर सेकेंडरी स्कूल, नेहरू नगर, नई दिल्ली से पाँच अध्यापकों ने 12 जनवरी, 2023 को शैक्षिक किट प्रभाग का दौरा किया। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु के दो एम.एड. विद्यार्थियों ने 3 फरवरी, 2023 को शैक्षिक किट प्रभाग का दौरा किया। श्यामल उदय हांडा और एन.ई.पी.एस. मायापुरी के तीन अध्यापकों ने 16 मार्च, 2023 को शैक्षिक किट प्रभाग का दौरा किया।
- शिक्षा मंत्रालय, मालदीव के संसाधन व्यक्तियों ने क्षमता निर्माण के लिए मार्गदर्शन और समर्थन हेतु 14 मार्च, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया।

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय सदस्यों द्वारा विदेशी दौरे

- सी.वी. शिमरे, *एसोसिएट प्रोफेसर*, डी.ई.एस.एम. को यू.के. फॉरेन, कॉमनवेल्थ और डेवलपमेंट ऑफिस द्वारा वित्तपोषित शेवनिंग रिसर्च, साइंस एंड इनोवेशन लीडरशिप फेलोशिप (सी.आर.आई.एस.पी.) से सम्मानित किया गया। सी.आर.आई.एस.पी. कार्यक्रम की मेजबानी अप्रैल से जून, 2022 तक सेंट क्रॉस कॉलेज, यूनिवर्सिटी ऑफ ऑक्सफोर्ड द्वारा की गई थी। कार्यक्रम में प्रख्यात वैज्ञानिकों, सरकारी प्रतिनिधियों और नवाचारी प्रवर्तकों के साथ व्याख्यान और परस्पर अंतरक्रिया से विज्ञान, नवाचार और नेतृत्व के क्षेत्र में ज्ञान को समृद्ध करने का एक अनूठा अवसर प्रदान किया गया। उन्होंने विभिन्न संस्थानों और नवाचार केंद्रों, जैसे ऑक्सफोर्डशायर में हार्वेल साइंस एंड इनोवेशन कैंपस, ऑक्सफोर्ड में बेगब्रोक साइंस पार्क, स्कॉटिश संसद और स्कॉटिश सरकार, यूनिवर्सिटी ऑफ एडिनबर्ग, यूनिवर्सिटी ऑफ कैंब्रिज आदि का दौरा किया।
- वी.एस. मेहरोत्रा, *प्रोफेसर* और *प्रमुख*, सी.डी.ई.सी., पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, ने कोरियाई अध्ययन अकादमी (ए.के.एस.), कोरिया गणराज्य और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, भारत के बीच समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) पर हस्ताक्षर करने के बाद 31 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2022 तक ए.के.एस., सियोल में आयोजित छठवीं संयुक्त कार्य समिति (जे.डब्ल्यू.सी.) की बैठक में भाग लिया। दोनों संगठनों के बीच शैक्षणिक जुड़ाव और आपसी परामर्श के लिए द्विपक्षीय समझौते के भाग के रूप में समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए थे। इस सहयोग में पाँच क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है— (i) पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक विकास; (ii) सूचना और संचार प्रौद्योगिकी तथा शैक्षिक प्रौद्योगिकी; (iii) व्यावसायिक शिक्षा; (iv) शारीरिक शिक्षा, योग और खेल; और (v) विशेष आवश्यकता वाले समूहों की शिक्षा। इस समझौता ज्ञापन का उद्देश्य संयुक्त अनुसंधान और शैक्षणिक आदान-प्रदान के लिए देशों के बीच सहयोग को बढ़ावा देना है जिसमें संगोष्ठी, सम्मेलन, कार्यशालाएँ, शैक्षणिक दस्तावेज़ों और प्रकाशनों का आदान-प्रदान, संबंधित संस्थानों के साथ नेटवर्क निर्माण और सहयोग के अन्य तरीके शामिल होंगे। सियोल में प्रायोगिक बहुउद्देशीय स्कूल, भोपाल में सौंदर्य और कल्याण तथा मेक्ट्रोनिक्स कार्यक्षेत्रों में पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान और क्रिवेट द्वारा संयुक्त परियोजना के तहत कार्यान्वित किए जा रहे व्यावसायिक पाठ्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आगे बढ़ने के तरीकों पर एक चर्चा आयोजित की गई।

- दीपक पालीवाल, संयुक्त निदेशक, पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल ने सिंगापुर में आई.टी.ई. एजुकेशन सर्विसेज (आई.टी.ई.ई.एस.) द्वारा 7–9 मार्च, 2023 तक आयोजित 'रीथिंकिंग टी.वी.ई.टी. एक्सीलेंस फॉर ट्रांसफॉर्मेशन एंड सस्टेनेबल इम्पैक्ट' पर सिंगापुर सहयोग कार्यक्रम में व्यक्तिगत रूप से भाग लिया। यह व्यक्तिगत पाठ्यक्रम सिंगापुर सहयोग कार्यक्रम प्रशिक्षण पुरस्कार (एस.सी.पी.टी.ए.) के तत्वावधान में आयोजित किया जाता है। इस पाठ्यक्रम में स्थायी तरीके से टी.वी.ई.टी. उत्कृष्टता प्राप्त करने के लिए आवश्यक रूपरेखा और ज्ञान पर विस्तार से बताया जाता है और इस क्षेत्र में सिंगापुर के अनुभव को साझा किया जाता है।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग

रा.शै.अ.प्र.प. और कोरियाई अध्ययन अकादमी (ए.के.एस.) के बीच समझौता ज्ञापन का नवीनीकरण

रा.शै.अ.प्र.प. और कोरियाई अध्ययन अकादमी, सियोल, दक्षिण कोरिया के बीच समझौता ज्ञापन (एम.ओ.यू.) के नवीनीकरण की आवश्यकता को पारस्परिक रूप से स्वीकृति दी गई। शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार से औपचारिक अनुमोदन के बाद, रा.शै.अ.प्र.प. और ए.के.एस. के बीच समझौता ज्ञापन 14 जून, 2027 तक बढ़ा दिया गया है।

रा.शै.अ.प्र.प. और ई.डी.यू.एफ.आई. तथा जी.आई.एन.टी.एल., फिनलैंड के बीच पहली संयुक्त कार्य समिति की बैठक

फिनिश नेशनल एजेंसी फॉर एजुकेशन (ई.डी.यू.एफ.आई.), फिनलैंड और राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, भारत के बीच पहली संयुक्त कार्य समिति की बैठक 21–23 नवंबर, 2022 तक हेलसिंकी, फिनलैंड में हाइब्रिड मोड में आयोजित की गई। बैठक में फिनलैंड के शिक्षा और संस्कृति मंत्रालय (जी.आई.एन.टी.एल.) द्वारा वित्तपोषित ग्लोबल इनोवेशन नेटवर्क ऑफ टीचिंग एंड लर्निंग के साथ-साथ ई.डी.यू.एफ.आई. और रा.शै.अ.प्र.प. के सदस्यों ने भाग लिया। इसमें भारत और फिनलैंड के 20 विशेषज्ञों का एक प्रतिनिधिमंडल शामिल था। रा.शै.अ.प्र.प. के पाँच विशेषज्ञों का नेतृत्व दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प. ने किया; जिन्होंने अनुपम आहूजा, प्रमुख, अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग और सुनीति सनवाल, प्रमुख, प्रारंभिक शिक्षा विभाग के साथ बैठक में भाग लिया। विनय स्वरूप मेहरोत्रा, प्रोफेसर, पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल और वाई. श्रीकांत, प्रोफेसर एवं प्रधानाचार्य, क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु, इस बैठक में वर्चुअल रूप से शामिल हुए। ई.डी.यू.एफ.आई. और जी.आई.एन.टी.एल. के 15 विशेषज्ञों की एक समिति ने बैठक में भाग लिया, जहाँ दस विशेषज्ञ व्यक्तिगत रूप से संयुक्त कार्य समिति की बैठक में शामिल हुए और पाँच वर्चुअल रूप से ऑनलाइन मोड के माध्यम से शामिल हुए। बैठक के नतीजों में शामिल थे—

(क) ई.सी.सी.ई. के क्षेत्र में वेबिनार आयोजित करना जिससे संयुक्त अनुसंधान हो सके;

(ख) स्कूलों में एक ऐसा वातावरण बनाना जहाँ अध्यापक उद्यमशीलता के विचारों को अपनाने के लिए तैयार हों;

(ग) इंडो-फिनिश शैक्षिक नेताओं के लिए सहयोगात्मक रूप से विकसित कार्यक्रम; और

(घ) स्कूल प्रधानाचार्य के सेवाकालीन प्रशिक्षण के लिए ऑनलाइन पाठ्यक्रमों की संभावना तलाशना।

रा.शै.अ.प्र.प. और ए.के.एस., कोरिया गणराज्य के बीच संयुक्त कार्य समिति की छठवीं बैठक

कोरियाई अध्ययन अकादमी (ए.के.एस.), कोरिया गणराज्य और रा.शै.अ.प्र.प., भारत के बीच समझौता ज्ञापन के तहत संयुक्त कार्य समिति की छठवीं बैठक 31 अक्तूबर से 4 नवंबर, 2022 तक ए.के.एस., सियोल में आयोजित

रा.शै.अ.प्र.प. और ई.डी.यू.एफ.आई., हेलसिंकी, फिनलैंड के बीच संयुक्त कार्य समिति की पहली बैठक

की गई थी। इस बैठक में रा.शै.अ.प्र.प. के प्रतिनिधिमंडल में दिनेश प्रसाद सकलानी, निदेशक; श्रीधर श्रीवास्तव, संयुक्त निदेशक; अनुपम आहूजा, प्रमुख, अंतरराष्ट्रीय संबंध प्रभाग; इंदु कुमार, प्रोफेसर, सी.आई.ई.टी.; विनय स्वरूप मेहरोत्रा, प्रोफेसर, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.; और पूरबी पटनायक, वरिष्ठ सलाहकार, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने भाग लिया। प्रतिनिधिमंडल ने कोरिया गणराज्य में अपने प्रवास के दौरान स्कूलों और संस्थानों का भी दौरा किया। बैठक से निम्नलिखित बिंदु उभरकर सामने आए— (क) भारत और दक्षिण कोरिया में राष्ट्रीय सरोकारों और वर्तमान पाठ्यचर्या परिवर्तनों के अनुरूप सुलभ गुणवत्ता वाले अध्यापन-अधिगम (डिजिटल और प्रिंट) के विकास को बढ़ावा देना; (ख) ऑनलाइन, हाइब्रिड और आमने-सामने के तरीकों के माध्यम से दोनों देशों में अध्यापक शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार की योजना बनाना; (ग) हिंदी सहित विभिन्न विषयों में प्रकाशनों और साहित्य को साझा करके दोनों देशों में पाठ्यक्रम और पाठ्यपुस्तक विकास प्रक्रिया का समर्थन करना; और (घ) दोनों देशों की विद्यालयी शिक्षा में सर्वोत्तम अभ्यासों का अध्ययन करना।

31 अक्तूबर, 2022 को ए.के.एस., सियोल में संयुक्त कार्य समिति की छठवीं बैठक

भारत और कोरिया के स्कूलों के बीच अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी विनिमय कार्यक्रम

भारत और कोरिया के स्कूलों के बीच वर्चुअल मोड में एक अंतरराष्ट्रीय विद्यार्थी विनिमय कार्यक्रम की योजना बनाई गई थी। इसे इंचियोन और बुसान शिक्षा कार्यालय, सियोल, कोरिया गणराज्य द्वारा एक प्रस्ताव के रूप में शुरू किया गया था, जिसे स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, भारतीय दूतावास, सियोल को भेजा गया था। सियोल स्थित भारतीय दूतावास ने रा.शै.अ.प्र.प. से भारत और कोरिया के स्कूलों के बीच विनिमय कार्यक्रम की योजना बनाने और समन्वय करने का अनुरोध किया। इसका उद्देश्य दोनों देशों के विद्यार्थियों के बीच भारतीय और कोरियाई संस्कृतियों के बारे में अधिक परिचित होना और उनकी सराहना करना था। आपसी सहमति से यह निर्णय लिया गया कि यह कार्यक्रम सी.आई.ई.टी., नई दिल्ली के सहयोग से भोपाल, अजमेर, भुवनेश्वर और मैसूरु के प्रायोगिक बहुउद्देशीय विद्यालयों (डी.एम.एस.) में आयोजित किया जाएगा। इस योजना प्रक्रिया में भारत के स्कूलों को कोरिया के स्कूलों के साथ जोड़ना शामिल था। आभासी बैठकों के दौरान सहयोग पर विस्तृत चर्चा की गई।

इसके अतिरिक्त 29 मार्च, 2022 को इंचियोन शिक्षा कार्यालय और विद्यालयों के प्रतिनिधियों के लिए स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र द्वारा 'भारत में स्कूल : इंचियोन स्कूलों के अध्यापकों के लिए अभिविन्यास सत्र' विषय पर एक अभिविन्यास सत्र आयोजित किया गया। संयुक्त निदेशक, सी.आई.ई.टी. ने अपने आभासी उद्घाटन भाषण में सभी प्रतिभागियों का स्वागत किया। प्रमुख, आई.आर.डी. ने अभिविन्यास के दौरान 'भारत में स्कूल' पर एक आभासी प्रस्तुति दी।

इंचियोन शिक्षा कार्यालय और विद्यालयों के प्रतिनिधियों के लिए ऑनलाइन अभिविन्यास सत्र

जी.आई.एन.टी.एल. और रा.शै.अ.प्र.प. के बीच इंडो-फिनिश पर एक सहयोगात्मक बैठक और कार्यशाला

ग्राहम बर्न्स की जी.आई.एन.टी.एल. टीम के साथ 22 अगस्त, 2022 को एक कार्यशाला आयोजित की गई थी और एन.आई.ई., दिल्ली में जे.ए.एम.के., फिनलैंड के जुहा हौटेनन ने जारी इंडो-फिनिश प्रोजेक्ट 'टीचर एजुकेशन इन वोकेशनल एजुकेशन एंड ट्रेनिंग बिटवीन ग्लोबल इनोवेशन नेटवर्क फॉर टीचिंग एंड लर्निंग (जी.आई.एन.टी.एल.)' पर चर्चा के लिए 24–27 अगस्त, 2022 तक पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल में चार दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। व्यावसायिक अध्यापकों के व्यावसायिक विकास पर संयुक्त रूप से एक परियोजना प्रस्ताव विकसित किया गया। परियोजना का समग्र उद्देश्य जे.ए.एम.के. यूनिवर्सिटी ऑफ एप्लाइड

साइंसेज और पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान, भोपाल में व्यावसायिक अध्यापक शिक्षा के विद्यालय के बीच सहयोगात्मक संबंध बनाना और विकसित करना है।

कार्यशालाओं में रा.शै.अ.प्र.प. और फिनिश नेशनल एजेंसी ऑफ एजुकेशन (ई.डी.यू.एफ.आई.) के बीच आगामी संयुक्त कार्य समिति की बैठक की योजना भी बनाई गई।

जी.आई.एन.टी.एल. और रा.शै.अ.प्र.प. के बीच इंडो-फिनिश पर सहयोगात्मक बैठक और कार्यशाला के सदस्य

जी.आई.एन.टी.एल., फिनलैंड के प्रतिनिधिमंडल के साथ बैठक

रा.शै.अ.प्र.प. और ई.डी.यू.एफ.आई., फिनलैंड के बीच हस्ताक्षरित समझौता ज्ञापन के तहत गतिविधियों के भाग के रूप में जी.आई.एन.टी.एल., फिनलैंड के 10 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल ने 19 सितंबर, 2022 को रा.शै.अ.प्र.प. का दौरा किया। इस दौरे का उद्देश्य रा.शै.अ.प्र.प. के कार्यों और जारी गतिविधियों को समझना तथा प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा, अध्यापक शिक्षा, शैक्षिक नेतृत्व, प्रौद्योगिकी शिक्षा, सतत शिक्षा और पाठ्यक्रम

जी.आई.एन.टी.एल., फिनलैंड के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत करते हुए रा.शै.अ.प्र.प. के निदेशक दिनेश प्रसाद सकलानी

विकास के क्षेत्र में काम करने वाले संगत व्यावसायिक कार्मिकों से मिलना था। इस दौरान संयुक्त कार्य समूह आगामी पहली बैठक की योजनाओं को कार्यान्वित करने और समझौता ज्ञापन के तहत आगे के सहयोग पर भी चर्चा हुई।

अन्य द्विपक्षीय गतिविधियाँ

अंग्रेजी भाषा पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम

होआंग ले खा गिफ्टेड हाई स्कूल, ताई निन्ह प्रांत, वियतनाम में नौ मास्टर प्रशिक्षुओं के लिए एक ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम, 'कामकाजी पेशेवरों के लिए अंग्रेजी में संचार', 12 अप्रैल से 9 सितंबर, 2022 तक आयोजित किया गया। यह द्विपक्षीय गतिविधि भारत के महावाणिज्य दूतावास, हो ची मिन्ह सिटी, वियतनाम के अनुरोध पर की गई थी। कार्यक्रम से पहले, रा.शै.अ.प्र.प. और होआंग ले खा गिफ्टेड हाई स्कूल एवं शिक्षा और प्रशिक्षण विभाग के बीच क्रमशः 29 जून, 2021 और 3 दिसंबर, 2021 को दो आभासी योजना बैठकें आयोजित की गईं। वर्चुअल रूप से सहभागिता और आपसी परामर्श की रचनात्मक प्रक्रिया के माध्यम से, ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम की रूपरेखा तैयार की गई। पाठ्यक्रम का उद्देश्य विभिन्न शैक्षणिक और व्यावसायिक संदर्भों में कार्यात्मक संचार के संदर्भ में अध्यापकों की अंग्रेजी भाषा दक्षता को बढ़ाना था। अध्यापकों को वर्चुअल विधि से पूर्णता प्रमाणपत्र दिए गए।

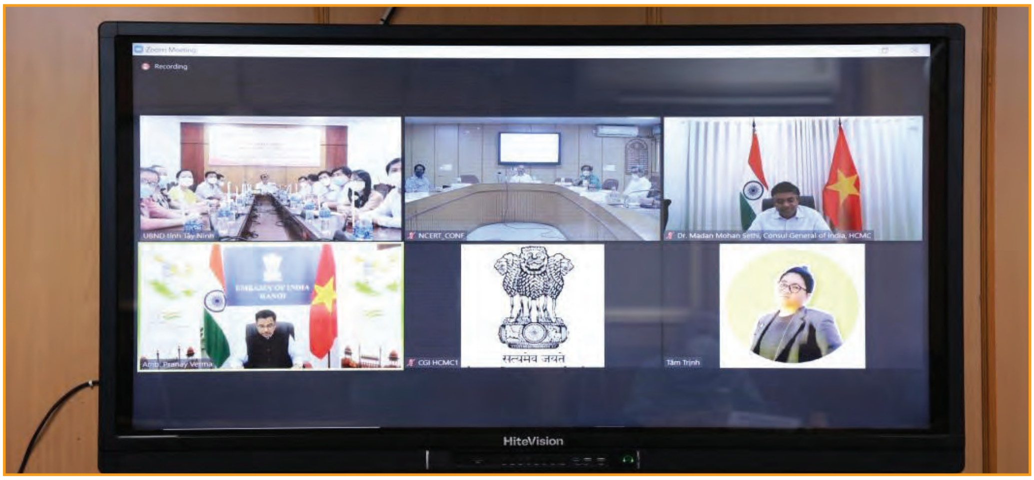

होआंग ले खा गिफ्टेड हाई स्कूल, ताई निन्ह प्रांत, वियतनाम में मास्टर प्रशिक्षुओं के लिए अंग्रेजी भाषा पर ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्घाटन समारोह

परिशिष्ट

परिशिष्ट I

रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशन और प्रस्तुतीकरण

परिशिष्ट II

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के पर्यवेक्षण के तहत वर्ष के दौरान प्रदान की गई एम.फिल. एवं पीएच.डी. डिग्रियाँ

परिशिष्ट III

पुरस्कार और अध्येतावृत्तियाँ

परिशिष्ट IV

वर्ष 2022–23 के लिए बहिर्नियमावली में उल्लिखित रा.शै.अ.प्र.प. की समितियों का विवरण

परिशिष्ट V

31 मार्च, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. के समेकित संस्वीकृत पदों की संख्या और आरक्षण की स्थिति

परिशिष्ट VI

31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के दौरान प्राप्तियाँ और भुगतान लेखा

परिशिष्ट VII

वर्ष 2022–23 के दौरान जारी किए गए प्रकाशन

परिशिष्ट VIII

प्रकाशन प्रभाग और इसके क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र

परिशिष्ट IX

रा.शै.अ.प्र.प. के संघटक और संकाय

रा.शै.अ.प्र.प. के संकाय सदस्यों द्वारा प्रकाशन और प्रस्तुतीकरण

प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

शोधपत्र/लेख

संगाई, एस. (2022). 'टूवर्ड्स कॉम्पिटेंसी-बेस्ड एजुकेशन— नेशनल पॉलिसी ऑन एजुकेशन 2020'. *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन*, 47(2), पृ. 7–13.

सोनी, आर. (2022). 'हेल्दी, स्किल्ड एंड कॉम्पीटेंट फ्यूचर जनरेशन— एन.ई.पी. 2020— द वे फॉरवर्ड'. *नवतिका*, 12(2), पृ. 7–11.

पुस्तक अध्याय

संगाई, एस. (2022). 'इफेक्टिव टीचर प्रिपरेशन फॉर स्ट्रॉन्ग फाउंडेशंस ऑफ यंग चिल्ड्रेन'. अहमद, जे. और जहूर, एन. (सं.) *एजुकेशन फॉर इंक्लूशन एंड इक्विटी— इशूज़, कंसंर्स एंड कंटेम्परारी रिसर्च.* (पृ. 152–158). वी.एल. मीडिया सॉल्यूशंस, नई दिल्ली.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

शर्मा, के. (2022). 'द एन.ई.पी. 2020 विज़न— करिकुलम फॉर नॉलेज'. *फ्यूचर रेडी स्कूल्स— ए स्टेप-अप फॉर ए सस्टेनेबल प्लैनेट*, डब्ल्यू.डब्ल्यू.एफ., नई दिल्ली, 2 दिसंबर को कॉन्क्लेव में आमंत्रित वक्ता के रूप में प्रस्तुत शोधपत्र.

सोनी, आर. (2022). 'यंग चिल्ड्रेन एंड प्ले इन द डिजिटल एरा'. *पॉपुलेशन एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में सत्र की अध्यक्षता, आर.आई.ई., अजमेर, 16 नवंबर.

विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

शोधपत्र/लेख

सिंह, वी.के. (2021). 'सुविधा वंचित समूह एवं दिव्यांग बच्चों की शिक्षा पर कोविड 19 वैश्विक महामारी का प्रभाव'. *प्राथमिक शिक्षक*, 54(2), पृ. 18–30.

———. (2022). दिव्यांग एवं सुविधा वंचित समूहों के बच्चों की समग्र शिक्षा. *ज्ञान गरिमा सिंधु*, 75, पृ. 20–22.

पुस्तकें

सिंह, वी.के. (2022). *ए स्टडी ऑफ चिल्ड्रेन विद मेंटल रिटारडेटेशन इन रिलेशन टू देयर डिग्री ऑफ डिसेबिलिटी.* यू.एस.ए. : एम.आई.

———. (2022). *एन इनवेस्टिगेशन इनटू स्टडी हैबिट्स ऑफ स्टूडेंट्स विद विजुअल इम्पेयरमेंट इन रिलेशन टू देयर अकेडमिक अचीवमेंट्स.* यू.एस.ए. : एम.आई.

पुस्तक अध्याय

यादव, एम. (2023). 'सोशल मूवमेंट्स इन इंडिया लेड बाय वूमन', इन सिन्हा, पवन. (सं.) *इंडियन थ्रू ऑन फेमिनिज्म.* (पृ. 16–27). इंस्टीट्यूट फॉर रिसर्च इन इंडियन विज़डम, गाजियाबाद.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

सिंह, वी.के. (2022). 'द नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 एंड एक्विटेबल एंड इंक्लूसिव एजुकेशन'. *एजुकेशन ऑफ चिल्ड्रेन विद डिसेबिलिटीज़ इन इंक्लूसिव क्लास रूम्स* पर 16 सितंबर को राज्य शिक्षा केंद्र, ए.आई.सी.यू.एफ., भोपाल में आयोजित राज्य स्तरीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

शोधपत्र/लेख

ओझा, सीमा एस. (2022). 'अंडरस्टैंडिंग पब्लिक डिस्कोर्स ऑन हिस्ट्री टेक्स्टबुक्स इन इंडिया— वॉइसेस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स'. *वॉयस ऑफ टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स*, 11(1), पृ. 28–38.

खोबुंग, वी. (2023). 'ए जर्नल कर्सरी व्यू ऑन जेंडर पर्सपेक्टिव इन द नेशनल एजुकेशन पॉलिसीज़ विद स्पेशल फोकस ऑन नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020'. *जर्नल ऑफ रिसर्च इन ह्यूमैनिटीज एंड सोशल साइंस*, 11(3), पृ. 308–312.

पुस्तकें

श्रीनिवासन, एम.वी. और मेघनाथन, आर. (2022). *एजुकेशन, नॉलेज, एंड करिकुलम* (प्रथम संस्करण). पियर्सन एजुकेशन, नोएडा.

श्रीवास्तव, जी. (2022). *एपिडेमिक्स इन इंडिया— ए जर्नी ऑफ एक्सपीरियंस, पास्ट, प्रेजेंट एंड फ्यूचर.* मित्तल प्रकाशन, नई दिल्ली.

पुस्तक अध्याय

खोबुंग, वी. और पोउ, ख. (2023). 'फिनॉमेनन इश्यूइंग मार्जिनलाइजेशन ऑफ ट्राइबल्स इन मणिपुर'. किखी, के., और गौतम, डी.आर., (सं.) *मार्जिनेलिटी इन इंडिया— पर्सपेक्टिव्स ऑफ मार्जिनेलाइजेशन फ्रॉम* द *नॉर्थ ईस्ट.* रूटलेज, लंदन. डी.ओ.आई.— 10.4324/9781003279679.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

सिंह, जे. (2022). 'रेलिवेंस ऑफ टेक्टाइल ग्राफ फॉर टीचिंग लर्निंग ऑफ इकोनॉमिक्स टू द लर्नर्स विद विजुअल इम्पेयरमेंट'. 6–8 मई को जामिया, नई दिल्ली में *आउटकम बेस्ड करिकुलम एंड पेडागॉजिकल डिमांड्स इन द पोस्ट कोविड एरा* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन प्रस्तुत शोधपत्र.

श्रीनिवासन, एम.वी. (2022). 'इंडियाज़ चैलेंजेस इन अचीविंग सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स— ए मिड टर्म असेसमेंट'. 29–30 सितंबर को स्कूल ऑफ मैनेजमेंट, पांडिचेरी विश्वविद्यालय में *एजुकेशन एंड सस्टेनेबल डेवलपमेंट गोल्स* सम्मेलन पर प्रस्तुत शोधपत्र.

श्रीनिवासन, एम.वी. (2022). 'वेयर इज़ इंडिया इन अचीविंग इन एजुकेशनल सस्टेनेबल डेवपलमेंट गोल्स?' 16 नवंबर को एस.आर.एम. इंस्टीट्यूट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी, कट्टनकुलथुर, तमिलनाडु में *क्वालिटी एजुकेशन इन इंडिया— इशूज़ एंड स्ट्रेटिजीस एट कॉलेज ऑफ साइंस एंड ह्यूमैनिटीज* विषय पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

श्रीवास्तव, जी. (2022). 'डेमोग्राफी डिवाइड एंड चैलेंजेस— फुटप्रिंट्स फॉर रोड अहेड'. 15–17 नवंबर को आर.आई.ई., अजमेर *में पॉपुलेशन एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य संबोधन.

———. (2022). 'प्रमोटिंग ए कंड्यूसिव एनवायरमेंट फॉर होलिस्टिक डेवलपमेंट'. 11 अक्तूबर को आर.आई.ई., भोपाल में *मेंटल हेल्थ एंड वेल बीइंग इन स्कूल्स एंड द रोल ऑफ स्कूल एडमिनिस्ट्रेशन* पर संगोष्ठी में सत्र की अध्यक्षता.

विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

शोधपत्र/लेख

वर्मा आर. और सत्संगी, एम. (2023). 'इफेक्टिवनेस ऑफ आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग एड्रेसिंग द इशूज़ एंड कंर्सस ऑफ एडोलसेंस'. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी*, 5(1), पृ. 112–121.

पुस्तकें

शिमरे, चोंग., ओ डोनोग्यू, रोब., हेन्ज़, क्रिस्टा., साराभाई, कार्तिकेय वी., रिवेरा, जुआन., कार्लोस, ए. और सैंडोवल. (2022). *हैंडप्रिंट्स फॉर चेंज ए टीचर एजुकेशन हैंडबुक— एक्टिवेटिंग हैंडप्रिंट लर्निंग एक्शंस इन प्राइमरी स्कूल्स एंड बियोंड*. पर्यावरण शिक्षा केंद्र, अहमदाबाद.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

शिमरे, चोंग. (2022). 'ग्लोबल चैलेंजेस एंड एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवपलमेंट'. 14–15 दिसंबर को भारती विद्यापीठ इंस्टीट्यूट ऑफ एनवायरमेंट एजुकेशन रिसर्च, पुणे में *एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (ई.एस.डी.)— पुटिंग ई.एस.डी. इनटू एक्शन* विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन में सत्र की अध्यक्षता.

शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

शोधपत्र/लेख

सिंह, वी.पी., और हुसैन, ए. (2022). 'हैंड्स-ऑन एक्टिविटीज़ वर्सेस मल्टी मीडिया कंटेंट इन साइंस इन डेवपलपिंग प्री-सर्विस टीचर्स' कॉम्पिटेंस'. *स्कूल साइंस*, 55 (2–3), पृ. 98–103.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

सिंह, वी.पी. (2022). 'एनालसिस ऑफ स्कूल साइंस करिकुलम टू विद ए व्यू टू सी द इंटीग्रेशन ऑफ एडोलसेंट एजुकेशन एंड पॉपुलेशन एजुकेशन एक्टिविटीज़ एंड एक्सप्लोरिंग द पेडागोजिकल स्ट्रेटिजीस एडॉप्टिड बाय द टीचर्स'. 15–17 नवंबर को आर.आई.ई., अजमेर में *पॉपुलेशन एजुकेशन* (एन.एस.पी.ई. 2022) पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य संबोधन.

सिंह, वी. पी. (2022). 'ए ग्रीनर अप्रोच टूवर्ड्स केमिस्ट्री लेबोरेटी एक्सपेरिमेंट्स'. 13–15 अक्टूबर को एसोसिएशन ऑफ केमिस्ट्री टीचर्स (ए.सी.टी.) और एस.वी.वी.वी., इंदौर में *केमिस्ट्री एंड केमिस्ट्री एजुकेशन* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य संबोधन.

मनोदर्पण प्रकोष्ठ

पुस्तकें

सिबिया, ए., चक्रवर्ती, एस. और शुक्ला, आर. (2022). *मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग ऑफ स्कूल*. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली.

शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

शोधपत्र/लेख

पजंकर, विशाल डी. (2022). 'आइटम एनालसिस ऑफ ए जनरल मैनेजमेंट अवेयनेंस/लर्निंग असेसमेंट टेस्ट इन बिजनेस स्कूल फॉर इट्स डिफिकल्टी इंडेक्स, डिस्क्रिमिनेशन इंडैक्स एंड डिस्ट्रैक्टर एनालसिस'. *आई.आई.टी.एम. जर्नल ऑफ बिजनेस मैनेजमेंट*, 10(1), पृ. 253–265.

पुस्तकें

पजंकर, विशाल डी. और श्रीवास्तव, श्रीधर. (2022). *प्रोजेक्शन एंड ट्रेंड ऑफ स्कूल एनरोलमेंट*. एन.सी.ई.आर.टी. नई दिल्ली.

पुस्तक अध्याय

पजंकर, विशाल डी. (2021). 'असेसमेंट ऑफ स्टूडेंट्स' लर्निंग इन डिफरेंट लेवल्स ऑफ ग्रेड्स'. सावित्री मिश्रा, संजीत विश्वास और ए.सी. दास (सं.), *एजुकेशनल सिस्टम— इंडिया* (पृ. 273–291), मित्तल प्रकाशन, नई दिल्ली.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

नूना, अनीता. (2023). 'चेंजिंग पैराडाइम्स इन स्कूल एजुकेशन'. 2–3 फरवरी को एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) में *शिफ्टिंग फोकस इन स्कूल करिकुलम— फ्रॉम कंटेट बेस्ड लर्निंग टू कॉम्पिटेंसी बेस्ड लर्निंग* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में सत्र की अध्यक्षता.

———. (2023). 'पेडागॉजिक प्रैक्टिसेस एट वरियस स्टेजेस ऑफ स्कूल'. 2–3 फरवरी को एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय) में *शिफ्टिंग फोकस इन स्कूल करिकुलम— फ्रॉम कंटेट बेस्ड लर्निंग टू कॉम्पिटेंसी बेस्ड लर्निंग* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में सत्र की अध्यक्षता.

भारद्वाज, बी.पी. (2023). 'एन.ई.पी. 2020— रिफ्लेक्शन इन हायर एजुकेशन'. 13 फरवरी को शिक्षा संकाय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय, अमरकंटक, मध्य प्रदेश में *ड्रीम्स एंड अपॉर्चुनिटीज़ इन हायर एजुकेशन पर* आई.सी.एस.एस.आर. प्रायोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में पैनल चर्चा की अध्यक्षता.

———. (2023). 'आत्मनिर्भर भारत'. 24 फरवरी को स्कूल ऑफ एजुकेशन, श्री लालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली में *आत्मनिर्भर भारत— इन पर्सपेक्टिव ऑफ नेशनल एजुकेशन पर पॉलिसी 2020* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में पैनल चर्चा की अध्यक्षता.

अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

शोधपत्र/लेख

पाटीदार, जितेंद्र कुमार. (2022). 'नेटवर्किंग अमंग टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस/सेंटर्स इन मध्य प्रदेश'. *यूनिवर्सिटी न्यूज़— ए वीकली जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन*, 60(23, 24), पृ. 9–19.

विजयन. के. और अलका, बांकरा. (प्रकाशनाधीन). 'एनालिसिस ऑफ आर्टिकल्स पब्लिश्ड इन जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (2015–2020)', *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन*, 48(2).

पुस्तक अध्याय

पाटीदार, जितेंद्र कुमार और माहेश्वरी, कीर्ति. (2022). 'व्हाय नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020 रिकमेंडेड 50 आवर्स ऑफ कंटीन्यूअस प्रोफेशनल डेवलपमेंट?' जायसवाल, विजय और शर्मा, वैभव (सं.) *टीचर एजुकेशन इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी. 2020* (पृ. 66–92). ए.बी.एस. बुक्स, दिल्ली.

विजयन. के. (2022). 'डेटा एंड देयर रिप्रेजेंटेशन'. बोर्ड ऑफ ओपन स्कूलिंग एंड स्किल एजुकेशन (बी.ओ.एस.एस.ई.) *मैथेमेटिक्स फॉर सेकेंडरी लेवल*, 48(1), बी.ओ.एस.एस.ई., सिक्किम.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

पाटीदार, जितेंद्र कुमार. (2022). 'ट्रांसफॉर्मिंग विज़न ऑफ एन.ई.पी. 2020 थ्रू टीचर एजुकेशन' 7 मई को एस.वी.बी. सरस्वती कॉलेज ऑफ एजुकेशन एंड रिसर्च, डोंबिवली (पूर्व), ठाणे, महाराष्ट्र में *एन.ई.पी. 2020— इट्स इम्प्लीकेशन इन टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशंस* पर राष्ट्रीय वेबिनार में प्रस्तुत शोधपत्र.

विजयन. के. (2022). 'कॉम्पिटेंसी बेस्ड एजुकेशन एंड असेसमेंट'. 14–18 नवंबर को फैकल्टी डेवलपमेंट एंड रिसर्च सेंटर (एफ.डी.आर.सी.), आर्मी वेलफेयर एजुकेशन सोसाइटी (ए.डब्ल्यू.ई.एस.), दिल्ली में *कॉम्पेटेंसी बेस्ड एजुकेशन एंड असेसमेंट* पर आर्मी पब्लिक स्कूल में राष्ट्रीय वेबिनार में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2023). 'आर वी लूजिंग ऑब्जेक्टिवली इन एवेल्यूएशन एंड असेसमेंट'. 18 जनवरी को राजगिरि मीडिया में *असेसमेंट सिम्प्लीफाइड— हाउ टू एक्सिस माइंडसेट डेवलपमेंट* पर 90वें राजगिरि गोलमेज सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2023). *इक्विटेबल एजुकेशन इन द पोस्ट-मॉर्डन वर्ल्ड*. 16–17 मार्च को बैंकॉक, थाईलैंड में *एजुकेशन 2023* विषय पर द इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ नॉलेज मैनेजमेंट (टी.आई.आई.के.एम.) में 9वें अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में सत्र की अध्यक्षता.

———. (2023). 'ए क्रिटिकल एनालिसिस ऑफ डी.एल.एड. करिकुलम ऑफ असम विद स्पेशल रेफरेंस टू इंटीग्रेशंस ऑफ ई.एस.डी. एंड जी.सी.ई.डी'. 2–3 फरवरी को पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, उमियम (मेघालय) में *शिफ्टिंग फोकस इन स्कूल करिकुलम— फ्रॉम कंटेंट बेस्ड लर्निंग टू कॉम्पीटेंसी बेस्ड लर्निंग* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2023). 'कंटेंम्परारी असेसमेंट मेथड्स' 1–2 फरवरी को कपिला खंडवाला कॉलेज ऑफ एजुकेशन, मुंबई, महाराष्ट्र में *अलाइंग असेसमेंट टू एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय वेबिनार में प्रस्तुत शोधपत्र.

सिन्हा, शरद. (2023). 'एन.ई.पी. 2020— 'करिकुलम एंड पेडागॉजी ट्रांसफॉर्मेशन इन टीचर एजुकेशन'. 9–10 फरवरी को एस.सी.ई.आर.टी., गोवा में *क्वालिटी इम्प्रूव्मेंट ऑफ टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2023). 'प्रोफेशनल एंड डिसिप्लिनरी डिक्टॉमी इन आई.टी.ई.पी. इन एन.ई.पी. 2020 रेग्मी'. 9–10 फरवरी को एस.सी.ई.आर.टी., पोरवोरिम, गोवा में *क्वालिटी इम्प्रूवमेंट ऑफ टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में सत्र की अध्यक्षता.

———. (2023). 'मेकिंग ऑफ रिकमंडेशंस फॉर क्वालिटी इम्प्रूवमेंट ऑफ टीचर एजुकेशन इन एन.ई.पी. 2022 रेग्मी'. 9–10 फरवरी को एस.सी.ई.आर.टी., गोवा पोरवोरिम, गोवा में *क्वालिटी इम्प्रूव्मेंट ऑफ टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टैक्स्ट ऑन एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में पैनल चर्चा की अध्यक्षता.

पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

शोधपत्र/लेख

जैन, पी. और मीरा. (2022). 'ए बिबिलोमेट्रिक एनालिसिस ऑफ रिसर्च आउटपुट ऑफ नेशनल काउंसिल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च एंड ट्रेनिंग'. *आई.ए.एस.एल.आई.सी. बुलेटिन*, 67(3), पृ. 131–145.

सामंतराय, एम. (2022). 'आधुनिक समाज में पुस्तकालय का महत्त्व'. *प्राथमिक शिक्षक*, 46(1), पृ. 14–20.

———. (2022). 'प्रोफेशनलिज्म इन लाइब्रेरी एडमिनिस्ट्रेशन'. *जर्नल ऑफ एडवांसेज इन लाइब्रेरी एंड इंफॉर्मेशन साइंस*, 11(4), 357–364. (http://www.jalis.in/pdf/11-4/ से लिया गया।)

———. (2022). 'स्कूल लाइब्रेरियनशिप एंड नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020'. *आई.ए.एस.एल.आई.सी. बुलेटिन*, 67(2), पृ. 99–108.

पुस्तक अध्याय

जैन, पी. (2022). 'डिजिटल कंटेंट डिसमिनेशन थ्रू पी.एम. ई-विद्या पोर्टल. सिंह एवं अन्य (सं.) *प्रोसीडिंग्स ऑफ द इंटरनेशनल कॉन्फ्रेंस ऑन इंफ्रास्ट्रक्चर, इंफॉर्मेशन एंड इनोवेशन फॉर बिल्डिंग न्यू भारत.* (पृ. 236–242). ए.के. एस. पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली.

———. (2022). 'डिजिटल कंटेंट डिस्सैमिनेशन थ्रू पी.एम. ई-विद्या— ऐन ओवरव्यू'. 10–12 नवंबर को सम्मेलन केंद्र, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में *इंफ्रास्ट्रक्चर, इंफॉर्मेशन एंड इनोवेशन— बिल्डिंग न्यू भारत* पर चौथे डी.एल.ए.-एस.आर.एफ.एल.आई.एस. अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2022). 'फाइव आर'स फॉर अकेडमिक रिसर्चर— ए पर्सपेक्टिव. 22 मई को *10वें इंटरनेशनल लाइब्रेरी प्रोफेशनल समिट (आई.-एल.आई.पी.एस.),* इंस्टीट्यूट ऑफ इकोनॉमिक ग्रोथ (आई.ई.जी.), दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली में प्रस्तुत शोधपत्र.

——— और विश्वकर्मा, एस. (2022). 'फाइव आर'स फॉर एकेडमिक रिसर्चर— ए पर्सपेक्टिव'. बब्बर (सं.) *रिसाइलेंस, रिफ्लेक्शन एंड इनोवेशन इन लाइब्रेरी सर्विसेज़ एंड प्रैक्टिसेज़* (पृ. 478–484). बुकवेल, दिल्ली.

सामंत राय, एम. (2022). 'डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन— एक्सिलेरेटिंग द लाइब्रेरी सर्विसेज़, धनवंदन, एस. (सं.) *इनोवेटिव लाइब्रेरियनशिप: इम्पेटस टू डिजिटल कन्वर्जेन्स* (पृ. 35–43). टुडे एंड टुमोरो'स प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली.

———. (2022). 'डिजिटल ट्रांसफॉर्मेशन— एक्सिलिरेटिंग द लाइब्रेरी सर्विसेज़'. 9–10 जून को सी.यू.टी.एन., तिरुवरूर, तमिलनाडु में *इनोवेटिव लाइब्रेरियनशिप— एक्सेलेरेटिंग ओपन एंड डिजिटल कन्वर्जेंस* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2023). इनोवेट! डोंट इमिटेट इन लाइब्रेरी प्रैक्टिसेज़'. धनवंदन एस. (सं.) *इंजिनियस लाइब्रेरियनशिप— इमर्जिंग सेल्फ रेलियंस.* (पृ. 35–41). टुडे एंड टुमारो'स प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली.

———. (2023). 'रोल ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. इन ऑप्टिमाइजिंग वर्चुअल लर्निंग एनवायरमेंट इन रियलाइजिंग एन.ई.पी. 2020'. रथ, पी., कुमार, ए. और सिंह, एम. (सं.) *नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020— ए फॉरवर्ड लुकिंग विज़न फॉर एल.आई.एस. एजुकेशन एंड सर्विसेज़.* (पृ. 43–53). टुडे एंड टुमारो'स प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स, नई दिल्ली.

———. (2023). 'रोल ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. इन ऑप्टिमाइजिंग वर्चुअल लर्निंग एनवायरमेंट इन रियलाइजिंग एन.ई.पी. 2020'. 1–3 मार्च को एल.आई.एस. विभाग, एम.जेड.यू., आइजोल, मिजोरम में *एन.ई.पी. 2020— ए फारवर्ड लुकिंग विज़न फॉर एल.आई.एस. एजुकेशन एंड सर्विसेज़* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र.

योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

पुस्तक अध्याय

रवीन्द्रन, अशिता, सुभाष, पी.डी., नारंग, शिल्पा अरोड़ा और शर्मिष्ठा, एस. (2022). 'इनविजिनिंग डिलाइट इन स्कूल एजुकेशन सर्विस— ऑब्जर्वेशंस फ्रॉम इम्प्लीमेंटेशन ऑफ ग्लोबल सिटिज़नशिप एजुकेशन (जी.सी.ई.डी.) इन इंडियन स्कूल्स'. शर्मिष्ठा, एस. और नेहा, गुप्ता (सं.) *हैंडबुक ऑफ रिसर्च ऑन द इंटरप्ले बिटवीन सर्विस क्वालिटी एंड कस्टमर डिलाइट* (पृ. 167–187). आई.जी.आई. ग्लोबल, यू.एस.ए.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

रवीन्द्रन, अशिता. (2022). 'एस.डी.जी. 4.7 इन इंडिया— स्टेट्स एंड आइडियाज़ फॉर एक्शन'. 3 जून को भारती विद्यापीठ डीम्ड विश्वविद्यालय, पर्यावरण शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (बी.वी.आई.ई.ई.आर.), पुणे, *सस्टेनेबिलटी इन स्कूल्स— लीडिंग द वे— एक्शन फॉर एजुकॉन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता.

———. (2022). 'रि-इमेजिंग एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ एस.डी.जी. 4.7— इंटिग्रेशन ऑफ एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट (ई.एस.डी.) एंड ग्लोबल सिटिज़नशिप एजुकेशन (जी.सी.ई.डी.) इन करिकुलम'. 14–15 दिसंबर 2022 को भारती विद्यापीठ डीम्ड यूनिवर्सिटी, पर्यावरण शिक्षा और अनुसंधान संस्थान (बी. वी.आई.ई.ई.आर.), पुणे, एंगेजमेंट ग्लोबल, जर्मनी और ई.एस.डी. एक्सपर्ट नेट इंडिया में *एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट— पुटिंग ई.एस.डी. इनटू एक्शन* विषय पर राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता.

सुभाष, पी.डी. (2022). 'स्ट्रक्चरल एंड फंक्शनल चेंजेस इन एजुकेशन'. 4 अप्रैल को मदर टेरेसा कॉलेज ऑफ टीचर एजुकेशन, पेरम्बरा, कोझिकोड में *ट्रांसफॉर्मिंग इंडियन हायर एजुकेशन फॉर ए न्यू वर्ल्ड ऑर्डर— एनविज़ंस, रोडमैप्स एंड इम्प्लीमेंटेशन* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में आमंत्रित वक्ता.

राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र हेतु प्रकोष्ठ (सी.एन.सी.एल.)

पुस्तक अध्याय

शर्मा, उषा. (2023). 'एजुकेशन एंड जेंडर सेंसिटाइजेशन'. सिन्हा, पवन (सं.), *इंडियन थ्रू ऑन फेमिनिज्म* (पृ. 163–180). इंटीट्यूट फॉर रिसर्च इन इंडियन विजडम, गाजियाबाद.

पं. सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.)

शोधपत्र/लेख

मेहरोत्रा, विनय स्वरूप. (2022). 'एन.ई.पी. 2020— 'रिइमेजिंग एंड स्ट्रटेजीस टू इम्पावरिंग वोकेशनल एजुकेशन', *शिक्षा सारथी*, 9–10, पृ. 22–29.

वीरैया पी., सुनील एस., देसाई और तोमर, गीता. (2020). 'स्किल डेवपलमेंट एंड वोकेशनल एजुकेशन प्रोग्राम्स एन्हांसेस द इम्प्लॉयमेंट ऑपर्च्युनिटीज इन इंडिया— ए स्टडी'. *इंडियन जर्नल ऑफ वोकेशनल एजुकेशन*, 26–28, पृ. 135–151.

शुद्धलवार, दीपक और शर्मा, मयंक. (2023). 'साइबर अटैक्स इन आई.ओ.टी. एनेबल्ड होम एपलाइंसेस'. *रिसर्च इनोवेशंस इन आई.सी.टी. एंड कम्प्यूटिंग टेक्नोलॉजीस (एन.सी.आर.आई.आई.सी.टी. 2023)* नागपुर, महाराष्ट्र में 27–28 मार्च को राष्ट्रीय सम्मेलन की कार्यवाही.

——— और सिंह, मनु प्रताप. (2023). 'सॉफ्टवेयर रिलायबिलिटी मॉडलिंग यूजिंग न्यूरल नेटवर्क टेक्नीक'. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स (आई.जे.सी.आर.टी.)*, 11(3), पृ. डी808–डी818. (www.ijcrt.org)

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

मेहरोत्रा वी.एस. (2023). 'कंटीन्यूअस प्रोफेशनल डेवपलमेंट एंड टीचर एजुकेशन पोस्ट इम्प्लीमेंटेशन ऑफ एन.ई.पी. 2020'. *क्वालिटी इम्प्रूवमेंट ऑफ टीचर एजुकेशन इन द कॉन्टेक्स्ट ऑफ एन.ई.पी. 2020,* राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, पोरवोरिम, गोवा में 9 और 10 फरवरी को राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित व्याख्यान.

शुद्धलवार, दीपक. (2023). 'ई-लर्निंग इन ग्लोबल सिनेरियो'. संदीपनि अकादमी, पेंड्री, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ में 5 मार्च को *ई-लर्निंग इन ग्लोबल सिनेरियो* पर आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन में मुख्य वक्ता.

———. (2023). 'वी.ई.टी. इन इंडिया— गोइंग ग्रीन, डिजिटल एंड इनोवेटिव मॉडरेटर'. *इम्प्लीमेंटेशन ऑफ वोकेशनलाइजेशन ऑफ सेकेंडरी एजुकेशन,* भोपाल में 2–28 फरवरी को राष्ट्रीय परामर्श बैठक में पैनलिस्ट.

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

शोधपत्र/लेख

कपूर, एस. और जेना, बिदिशा. (2022). 'न्यूमेरिकल फॉरकास्टिंग ऑफ कोविड 19 एपिडेमिक इन ओडिशा यूजिंग एस.आई.आर मॉडल— ए केस स्टडी'. *जर्नल ऑफ ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी*, 10(2), पृ. 95–116. डी.ओ.आई.— 10.13052/जे.जी.ई.यू.0975–1416.1023.

——— और नायक, रोशनी. (2022). 'यूजिंग एस.आई.आर. मॉडल एंड रिकरेंस फॉर्मूला टू प्रीडिक्ट द स्प्रेड ऑफ कोविड 19 इन संबलपुर— ए मैथमेटिकल स्टडी'. *जर्नल ऑफ ग्राफिक एरा यूनिवर्सिटी*, 9(2), पृ. 231–256. डी.ओ.आई.— 10.13052/jgeu0975–1416.928.

कुमार, ए. और पांडा, बी.एन. (2022). 'ट्रांसफॉर्मिंग एकेडमिक इंस्टीट्यूशन्स एज लर्निंग ऑर्गनाइजेशन्स— रिफ्लेक्शन फ्रॉम पास्ट रिसर्चेस'. *स्टाफ एंड एजुकेशनल डेवलपमेंट इंटरनेशनल*, 25(1), पृ. 199–208.

———. (2022). 'हायर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्स ट्रांसफॉर्मेशन इनटू लर्निंग ऑर्गनाइजेशन्स — लेसन्स फ्रॉम कोविड पैन्डेमिक'. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ ट्रेंड इन साइंटिफिक रिसर्च एंड डेवलपमेंट*, 6(2), पृ. 211–216.

कुमारी, प्रीति और सेठी, आर. (2023). 'क्वेश्चनायर फॉर सर्वे— द नॉलेज ऑफ वैदिक बिलीफ्स'. *जर्नल ऑफ इमर्जिंग टेक्नोलॉजीस एंड इनोवेटिव रिसर्च.* 10(3), पृ. 248–264.

———. (2023). 'क्वेश्चनायर फॉर सर्वे— द नॉलेज ऑफ वैदिक बिलीफ्स'. *वैदिक फिलॉस्फी एंड टीचर एजुकेशन*, 9(4), पृ. 263–267.

कोइरेंग, आर.आर., अग्रवाल, पी.सी. और गोखरू, ए. (2022). 'कम्प्यूटेशनल ऑफ स्ट्रक्चर एंड इलेक्ट्रिकल रेसिस्टिविटी ऑफ लिक्विड एन.ए.-आर.बी. एलॉय'. *ईस्ट यूरो जर्नल ऑफ फिजिक्स*. 1. पृ. 66–69.

गंगमेई, ई. और गुप्ता, आर. (2022). 'इफेक्टिवनेस ऑफ इंस्ट्रक्शन ऑन प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स एचीवमेंट— एन एक्सपेरिमेंटल स्टडी यूजिंग आई.सी.टी. इंटीग्रेटेड 7ई इंस्ट्रक्शनल एप्रो'. *आयुषी इंटरनेशनल इंटरडिसिप्लिनरी रिसर्च जर्नल (ए.आई.आई.आर.जे.)*, 15, पृ. 374–378.

——— और तनवीर, ए. (2022). 'स्टेट्स ऑफ गवर्नमेंट प्रोग्राम एंड स्कीम्स इम्प्लीमेंटेड इन मदरसा ऑफ ओडिशा'. *अरहट मल्टीडिसिप्लिनरी इंटरनेशनल एजुकेशन रिसर्च जर्नल*, 10(3), पृ. 287–298.

——— और सरकार, एम. (2022). 'पर्सपेक्टिव ऑफ प्री-सर्विस सेकेंडरी टीचर्स एजुकेटर्स ऑन एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवपलमेंट— एन एक्सप्लोरेशन'. *आई.जे.आर.ए.आर.*, 9(2), पृ. 923–936.

——— और सिंह, वी. (2022). 'सोशल मीडिया एंड एकेडमिक परफॉर्मेंस ऑफ स्टूडेंट्स एट ग्रेजुएशन लेवल'. *द रेवेन्शॉ जर्नल ऑफ एजुकेशनल स्टडीज़*, 6(1 और 2), पृ. 50–64.

जमालुद्दीन, पांडा, बी.एन. और अग्रवाल, पी.सी. (2023). 'आई कैन नाउ डिटेक्ट एंड रेक्टिफाई माई एरर.— न्यू जनरेशन नाइंथ-ग्रेड लर्नर प्रॉब्लम-सॉल्विंग स्किल ड्यूरिंग एक्सपेरिमेंट्स इन फिजिक्स थ्रू मेटाकॉग्निटिव ब्रेनस्टॉर्मिंग स्ट्रेटिजीस'. *फिजिक्स एजुकेशन*. 58(3), 035023–035034. डी.ओ.आई.— 10.1088/1361–6552/एसीसी296. आई.ओ.पी. यू.के.

नंदा, एन. और बेहेरा, एल. (2022). 'इक्लूजन ऑफ डिसएबिलिटीज इन एलीमेंटरी स्कूल्स— ए परेंटल मेटाफोरिक एनालिसिस'. *पेडागॉजी ऑफ लर्निंग*, 8(2), पृ. 09–16.

———. (2022). 'कंसेप्शन एंड मिस्कंसेप्शन ऑफ एलीमेंटरी स्कूल टीचर्स अबाउट इंक्लूजन' *लर्निंग कम्युनिटी*, 13(2), पृ. 01–11.

पांडा, बी.एन. और भट्टाचार्य, दीपक. (2022). 'ए कंसेप्चुअल अंडरस्टैंडिंग ऑफ कंटेंट एनालिसिस'. *यूनिवर्सिटी न्यूज़— ए वीकली जर्नल ऑफ हायर एजुकेशन*, 60(24), पृ. 18–21.

प्रतिमा, ए. और पांडा, बी.एन. (2022). 'मल्टीपल इंटेलिजेंस थ्योरी एज ए पेडागॉजिकल प्रोसेस एंड इट्स रेलीवेंस इन एन.ई.पी. 2020'. *एडुट्रैक*, 21(6), पृ. 33–36.

बरुआ, एस. और मोहालिक, आर., (2022). 'स्टेट्स ऑफ आई.सी.टी. इंटीग्रेशन इन टीचर एजुकेशन इंस्टीट्यूशन्स ऑफ असम— एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी'. *इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल टेक्नोलॉजी*, 4(1), पृ. 85–95.

बागुई. डी. (2022).'ए वर्ल्ड व्हेयर ''द वेटनेस ऑफ टीयर्स ऑर द ड्रायनेस ऑफ वर्डस होल्ड्स नो मीनिंग''— टू स्टोरीज ऑफ इंकार्सेरेशन'. *एपिटोम*, 8(7), पृ. 24–31.

भौमिक, एस., भट्टाचार्य, डी. और मोहलिक, आर. (2022). 'इम्प्लीमेंटेशन ऑफ एन.ई.पी. 2020 एंड कैपेसिटी बिल्डिंग ऑफ टीचर्स एट फाउंडेशन स्टेज— एन एनालिसिस विद इम्पीरिकल एविडेंसेस'. *एजुकेशन इंडिया जर्नल*, 11(1), पृ. 1–11.

मोहालिक, आर. और शिवम, पी.के. (2022). 'इफेक्टिवनेस ऑफ आई.सी.टी. इंटीग्रेटेड 5ई लर्निंग मॉडल ऑन हायर ऑर्डर थिंकिंग स्किल्स इन बायोलॉजी एट सेकेंडरी लेवल'. *करंट रिसर्च जर्नल ऑफ सोशल साइंसेज़ एंड ह्यूमेनिटीस,* 5(1), पृ. 34–41.

साहा, ए.के., होता, एम.के. और मोहंती, पी.के. (2022). 'एप्रोक्सिमेट इवॉल्यूशन ऑफ कॉम्प्लेक्स हायर सिंगुलर इंटीग्रल'. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ स्टैटिस्टिक्स एंड एप्लाइड मैथमेटिक्स*. 1(5), पृ. 54–58.

———. (2022). 'क्वाड्रेचर रुल्स फॉर एप्रोक्सिमेट एवाल्यूशन ऑफ कौची टाइप इंटीग्रल्स विद पीरियोडिक वेट फंक्शन्स'. *पॉज़िटिफ़ जर्ना*, 22(8), पृ. 139–150.

———. (2022). 'नॉन-क्लासिकल क्वाड्रेचर स्कीम्स फॉर द एप्रोक्सिमेशन ऑफ कौची टाइप ओसिलेटरी एंड सिंगुलर इंटीग्रल्स इन कॉम्प्लेक्स प्लेन'. *मलेशियन जर्नल ऑफ मैथेमेटिकल साइंसेज़*, 16(1), पृ. 11–23.

———, रॉय. जी. और रॉय, ए. (2022). 'द मिस्टरी बिहाइंड व्हाट वी सी! साइंस हॉरिजन'. *ओडिशा विज्ञान अकादमी*, 7(1), पृ. 7–11.

पुस्तकें

अग्रवाल, पी.सी. और दास, एस.के. (2023). *एजुकेशनल रिर्सोसेस-हर्बल गार्डन*, संसाधन केंद्र, थीम पार्क.क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर. रा.शै.अ.प्र.प.

अग्रवाल, पी.सी., पांडा, बी.एन. और दास, एस.के. (2023). *इम्प्लीमेंटेशन ऑफ एन.सी.ई.आर.टी. इंटरवेंशन्स एट स्कूल स्टेज— ए जर्नी ऑफ रिसर्च इन चिलिका ब्लॉक, ओडिशा*, भुवनेश्वर. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प.

मोहालिक, आर. और रॉय, एस. (2023). *ट्रांसफॉर्मेशन ऑफ एजुकेशन इन द लाइट ऑफ एन.ई.पी. 2020*. दिशा इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस, ग्रेटर नोएडा.

पुस्तक अध्याय

मोहराना, पी. और बेहेरा, एल. (2022). 'होलिस्टिक एजुकेशन ऑफ शेड्यूल्ड ट्राइब्स इन कलिंग— कलिंग इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस (के.आई.एस.एस.)— ए केस स्टडी'. मित्रा, एन. और भट्ट, आर.सी. (सं.) *केस स्टडी रिसर्च इन डिफरेंट डिस्प्लिंस— जनरल एंड पेडागॉजिकल अप्रोचेस*. पृ. 1–24. कुणाल बुक्स, नई दिल्ली.

शोधपत्र प्रस्तुतीकरण

अग्रवाल, पी.सी. (2022). एन.ई.आर.आई.ई., उमियम में 17 फरवरी को *इंटीग्रेशन एंड इंडिजिनस नॉलेज इन स्कूल एंड करिकुलम— प्रॉस्पेक्ट्स एंड चैलेंजेस* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में पैनलिस्ट.

———. (2022). मेटालिक ग्लासेस— इमर्जिंग मटीरियल्स. एस.ई.आर.बी., डी.एस.टी. भारत सरकार, जी.आई.ई.टी. विश्वविद्यालय, गुनुपुर ओडिशा में 16 अप्रैल को *एडवांस्ड रिसर्चेस ऑन मटीरियल साइंस एंड इंजीनियरिंग 2021* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में आमंत्रित वार्ता.

———. (2022). 'रेगुलेशन, करिकुलम एंड पेडागॉजी'. आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 26–28 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में सत्र की अध्यक्षता.

कृष्णन, डी. (2022). 'परसेप्शन एंड एवेयरनेस फॉर प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स ऑन यूज ऑफ आर्टिफिशल इंटेलीजेंस इन पेडागॉजिकल प्रोसेस ऑफ फिजिक्स'. आर.आई.ई., अजमेर में 27–28 फरवरी को *इमर्जिंग ट्रेंड्स इन फिजिक्स एंड फिजिक्स एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

गंगमेई, ई. गुप्ता, आर. और अग्रवाल, पी.सी. (2022). 'एटीट्यूड एंड नॉलेज प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स अबाउट इंक्लूजन ऑफ स्टूडेंट्स विद डिसएबिलिटीज इन ए जनरल क्लासरूम'. आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

——— और सरकार, एम. (2022). 'प्री-सर्विस टीचर्स परस्पेक्टिव ऑन एजुकेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट— ऐन एनालिसिस'. आई.ए.एस.ई. और एस.सी.ई.आर.टी., त्रिपुरा सरकार द्वारा 15–-16 मार्च को *टीचर एजुकेशन इन द पर्सपेक्टिव ऑफ एन.ई.पी. 2020* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र.

——— और सोम, एम. (2022).'ए क्रॉस नेशनल रिव्यू ऑन टीचर एजुकेशन प्रोग्राम फॉर प्रिपेयरिंग फॉर इंक्लूसिव एजुकेशन'. आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

गौरम्मा, आई.पी. (2022). 'इनोवेशन्स इन टीचर एजुकेशन'. आर.आई.ई. भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020 टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनल चर्चा की अध्यक्षता.

गौरम्मा, आई.पी. और भवानी, एस. (2022). 'टीचर्स एज चेंज एजेंट्स— मल्टीकेस एनालिसिस ऑफ टीचर एजुकेटर्स इंसिडेंटल रिस्पोंसेस टू सेक्सुअल हैरेसमेंट'. आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

——— और साहू, पी.आर. (2022). 'एकेडमिक लैंग्वेज ऑफ साइंस— रिफ्लेक्शन्स फ्रॉम ए साइंस क्लासरूम डिस्कोर्स'. आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

पांडा, बी.एन. और कुमार, ए. (2022). 'सस्टेनिंग लर्निंग इंटरेस्ट इन फिजिक्स— एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी'. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर में 27–28 फरवरी को *इमर्जिंग ट्रेंड्स इन फिजिक्स एंड फिजिक्स एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

——— और जमालुद्दीन. (2022). 'इफेक्ट ऑफ मेटाकॉग्निटिव स्कैफोल्डिंग ऑन द लर्निंग अचीवमेंट एंड द रिएक्शन ऑफ सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट इन फिजिकल साइंस'. सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ गुजरात में 23–25 जून को *नेशनल रिसर्च कॉन्क्लेव* पर प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2022). 'कोरिलेशन बिटवीन मेटाकॉग्निटिव स्ट्रेटेजीस एंड लर्निंग आउटकम इन फिजिकल साइंस एट सेकेंडरी लेवल ड्यूरिंग द लॉकडाउन पीरियड ऑफ कोविड 19 पैन्डेमिक'. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

पांडा, बी.एन. और दास, सब्यसाची. (2022). 'इंटीग्रेटिंग इंडिजीनस नॉलेज इनटू सोशल साइंस टीचिंग इन सेकेंडरी स्कूल्स ऑफ कंधमाल डिस्ट्रिक्ट ऑफ ओडिशा— ए एक्सप्लोरेटरी स्टडी'. नॉर्थ ईस्ट रीजनल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन (एन.ई.आर.आई.ई.), रा.शै.अ.प्र.प., उमियम, मेघालय में 17–18 फरवरी को *इंटिग्रेशन ऑफ इंडिजियस नॉलेज इन द स्कूल करिकुलम— प्रोस्पेक्ट्स एंड चैलेंजेस* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2022). 'इफेक्टिवनेस ऑफ टीचिंग सोशल साइंस विद प्रॉब्लम बेस्ड लर्निंग फॉर डेवलपिंग प्रोफेशनल कम्पेटेंसी एंड हायर ऑर्डर थिंकिंग प्रोसेस— एन ओवरव्यू'. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2022). 'द पी.एम. ई-विद्या स्कीम एज एन ऑनलाइन टीचिंग प्लेटफॉर्म्स एंड टूल्स इन इंडिया ड्यूरिंग एंड आफ्टर द कोविड 19 पैन्डेमिक— एन ओवरव्यू. गांधीनगर में 25–26 मार्च को *वन इयर इम्प्लीमेंटेशन ऑफ पी.एम. ई-विद्या फॉर इंश्योरिंग इक्विटेबल एजुकेशन— इशूज़, चैलेंजेस एंड कंसर्नस, इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रस्तुत शोधपत्र.

पांडा, बी.एन. और प्रतिमा, ए. (2022). 'एक्सपीरिएंशियल लर्निंग इन टीचर एजुकेशन प्रोग्राम— ए सिस्टमेटिक रिव्यू'. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

———. (2022). 'मल्टीपल इंटेलिजेंस थ्योरी ऑरिएंटेड एक्सपीरिएंशियल लर्निंग एप्रोच— ए पेडागॉजी टू एन्हांस टीचिंग लर्निंग प्रोसेस. सेंट्रल यूनिवर्सिटी ऑफ गुजरात में 23–25 जून को, *नेशनल रिसर्च कॉन्क्लेव* पर प्रस्तुत शोधपत्र.

बेहरा, एल. (2022). 'इनोवेशन्स इन टीचर एजुकेशन'.आर.आई.ई. भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020 टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में पैनल चर्चा की अध्यक्षता.

———. (2022). ‘टीचर्स एजुकेशन एज इनविजिन्ड इन एन.ई.पी 2020— प्रैक्टिसेस एंड प्रियॉरिटीस’. बी.डब्ल्यू. टी.टी.सी., रांची में 7 मई को *ट्रांसफॉर्मिंग विज़न इनटू एक्शन इन हायर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुख्य वक्ता.

रामुलु, चौ.ए. और कुमार, मनीष. (2023). ‘मेडिसिनल प्लांट्स कंर्जवेशन ऑफ थ्रू इंस्टीट्यूट हर्बल गार्डन’. जैव प्रौद्योगिकी विभाग, तेलंगाना विश्वविद्यालय, निज़ामाबाद, तेलंगाना में 21–23 फरवरी को *इनोवेशन इन बायोलॉजी एंड मेडिसिन* पर अंतरराष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

सेठी, आर. (2022). ‘प्रॉब्लम फेस्ड बाय सेकेंडरी स्कूल टीचर्स ड्यूरिंग इन-सर्विस टीचर एजुकेशन प्रोग्राम (आई. एस.टी.ई.पी.) इन ओडिशा’. आर.आई.ई., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

त्रिपाठी, कुमार, मारुति, दास, शुभश्री और पांडा, भुजेंद्र नाथ. (2022). ‘टीचर एजुकेटर प्रीपेरेशन कंसर्निंग एन.ई.पी. 2020— एन एनालिसिस ऑफ द प्रैक्टिकम एंड इट्स अल्टर्नेटिव्स एमिड कोविड 19 आउटब्रेक’. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, रा.शै.अ.प्र.प., भुवनेश्वर में 24–26 फरवरी को *एन.ई.पी. 2020— टूवर्ड्स ट्रांसफॉर्मिंग टीचर एजुकेशन* पर राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुत शोधपत्र.

परिशिष्ट II

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय के पर्यवेक्षण के तहत वर्ष के दौरान प्रदान की गई एम.फिल. एवं पीएच. डी. डिग्रियाँ

क्र.सं.	अध्ययन का शीर्षक	पर्यवेक्षक का नाम	अनुसंधान अध्येता का नाम	रा.शै.अ.प्र.प. की घटक इकाई	विश्वविद्यालय का नाम	वर्ष
1.	*इन विट्रो कल्चर स्टडीज़ ऑफ थनबर्गिया स्पीशीज़*	जयदीप मंडल	नरपतपाल खिची	आर.आई. ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
2.	*रिलेटिव इफेक्टिवनेस ऑफ कंस्ट्रक्टिविस्ट एप्रोच एंड ट्रेडिशनल एप्रोच फॉर द प्रमोशन ऑफ लर्निंग आउटकम्स इन साइंस एट अपर प्राइमरी स्कूल लेवल*	सौरभ कुमार	कीर्ति चड़ार	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
3.	सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी आधारित हिंदी भाषा शिक्षण का कक्षा 9 के विद्यार्थियों में उनके भाषा कौशल, आत्मविश्वास एवं शैक्षणिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन (भोपाल जिले के संदर्भ में)	रत्नमाला आर्य	राहुल तिवारी	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
4.	*कंटीन्युअस एंड को-प्रेज़ेंस इवैल्युएशन— ए कंपेरिटिव स्टडी ऑफ द इम्प्लीमेंटेशन एट सेकेंडरी लेवल इन डिफरेंट टाइप्स ऑफ सी.बी.एस.ई. स्कूल ऑफ भोपाल डिस्ट्रिक्ट*	रमाकर रायज़ादा	मीनाक्षी भार्गव	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022

5.	*एजुकेशनल एस्पिरेशन ऑफ ट्राइबल स्टूडेंट्स इन रिलेशन टू टीचर्स पर्सपेक्टिव्स एंड स्कूल कल्चर*	रमेश बाबू	चंद्र कुमार बनकर	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
6.	*स्टडी ऑफ फीडबैक लेवल ऑफ मोटीवेशन एंड एचीवमेंट इन लैंग्वेज लर्निंग ऑफ एलिमेंटरी ग्रेड स्टूडेंट्स ऑफ विदिशा डिस्ट्रिक्ट*	के.के. खरे	महाश्वेता मिश्रा	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
7.	*कंपेरिटिव स्टडी ऑफ सिलेक्टेड लाइफ एक्सपीरिएंस एंड एनवायरमेंटल लिटरेसी ऑफ ट्राइबल एंड नॉन ट्राइबल स्टूडेंट्स*	के.के. खरे	मिताली खरे	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
8.	*रिफ्लेक्टिव प्रैक्टिसेज़ एमंग द प्रॉसपेक्टिव टीचर्स ऑफ मध्य प्रदेश*	नित्यानंद प्रधान	दीपा गुप्ता	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
9.	*इंगलिश लैंग्वेज लर्निंग प्रोग्रेशन ऑफ हायर सेकेंडरी स्टूडेंट्स ऑफ मध्य प्रदेश*	एन.सी. ओझा	दीप्ति यादव	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
10.	*इफेक्टिवनेस ऑफ इनोवेटिव स्ट्रेटजी फॉर डेवलपिंग थिंकिंग एमंग एलिमेंटरी स्टूडेंट्स ऑफ सी.बी.एस.ई. इन टर्म्स ऑफ सिलेक्टेड कॉग्निटिव एंड एफेक्टिव वैरिएबल्स*	रत्नमाला आर्य	अमिता धनखड़	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
11.	माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की अस्पष्टता की सहनशीलता एवं इतिहास विषय में उनकी उपलब्धि पर शिक्षा के रचनावादी उपागम के प्रभाव का अध्ययन	रत्नमाला आर्य	मो. काशिफ़ तौफ़ीक	आर.आई.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2023

12.	सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों का वित्तीय मूल्यांकन (भारतीय स्टेट बैंक भोपाल संभाग के विशेष संदर्भ में)	पूनम वीरैया	हेमलता शाक्य	पी.एस.सी.सी.आई.वी.ई., भोपाल	बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	2022
13.	*इफेक्ट ऑफ ग्रोथ सब्स्टेंसेज़ एंड ऑर्गनिक मैन्योर ऑन ग्रोथ, फ्लॉवरिंग बिहेवियर, इल्ड एंड क्वालिटी एट्रिब्यूट्स ऑफ बॉटल गार्ड (लेगेनेरिया सिसेरिया एल.)*	आर.के. पाठक	वर्षा उइके	पी.एस.सी.सी.आई.वी.ई., भोपाल	कृषि विज्ञान विद्यापीठ, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू	2022
14.	*इफेक्ट ऑफ ऑर्गनिक मीडिया, प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर्स एंड डिफरेंट कलर्स ऑफ रैपर्स ऑन सक्सेस एंड सर्वाइवल ऑफ एयर लेयरिंग ऑफ गुआवा (सिडियम ग्वाजावा एल.)*	आर.के. पाठक	प्रवीण बर्डे	पी.एस.सी.सी.आई.वी.ई., भोपाल	कृषि विज्ञान विद्यापीठ, डॉ.बी.आर. अम्बेडकर सामाजिक विज्ञान विश्वविद्यालय, महू	2022
15.	*ए स्टडी ऑफ द इम्प्लीमेंटेशन ऑफ राइट टू एजुकेशन एक्ट 2009 इन उत्तर प्रदेश*	मीनाक्षी एम.	मुजम्मिल हसन	आर.आई.ई., अजमेर	एम.डी.एस. विश्वविद्यालय, अजमेर	2022
16.	*एजुकेशन एंड सोशियो-इकोनॉमिक पर्सपेक्टिव्स ऑफ ट्रांसजेंडर कम्युनिटी इन वेस्ट बंगाल— एन एक्सप्लोरेटरी स्टडी*	मोहालिक, आर.	श्रीमोई पोद्दार	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	उत्कल विश्वविद्यालय, ओडिशा	2022
17.	*इफेक्टिवनेस ऑफ डिजिटल माइंड मैपिंग टीचिंग स्ट्रेटजी ऑन हायर ऑर्डर थिंकिंग स्किल्स इन जियोग्राफी एट अपर प्राइमरी लेवल*	आर. मोहालिक	दीपक भट्टाचार्य	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	उत्कल विश्वविद्यालय, ओडिशा	2022

18.	*टीचिंग एफिशियंसी, एकाउंटेबिलिटी एंड लीडरशिप रोल ऑफ सेकेंडरी स्कूल टीचर्स*	लक्ष्मीधर बेहरा	पी.पी. बेहरा	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	उत्कल विश्वविद्यालय, ओडिशा	2022
19.	*साइंस टीचर्स बिलीफ्स ऑन इनक्वायरी इन क्लास रूम प्रैक्टिसेज़*	लक्ष्मीधर बेहरा	एस. भोई	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	उत्कल विश्वविद्यालय, ओडिशा	2022
20.	*इफेक्ट्स ऑफ स्ट्रेटजीज़ फॉर रिड्यूसिंग द बर्डन ऑफ लर्निंग ऑन एकेडमिक एचीवमेंट्स एंड एटीट्यूड टूवर्ड्स सोशल साइंसेज़ एमंग स्टूडेंट्स*	कल्पना वेणुगोपाल	अनिता रवीन्द्र जी.आर.	आर.आई.ई., मैसूरु	मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूरु	2022
21.	*पर्सपेक्टिव्स ऑफ स्टेक होल्डर्स ऑन प्री वोकेशनल एजुकेशन इनविसेज्ड इन नेशनल एजुकेशन पॉलिसी 2020*	लक्ष्मीधर बेहरा	टी.पी. सेठी (एम.फिल.)	आर.आई.ई., भुवनेश्वर	उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	2022

पुरस्कार और अध्येतावृत्तियाँ

रा.शै.अ.प्र.प. डॉक्टोरल अध्येतावृत्ति 2022

क्र.स.	डॉक्टरेट अध्येताओं का नाम और पता	शोध प्रबंध का शीर्षक
1.	श्रुति एस. केरल	*एजुकेशनल एस्पिरेशन इन रिलेशन टू होम एनवायरमेंट, सेल्फ रेगुलेशन एंड जेंडर सेंसिटिविटी ऑफ तमिल लिंगुइस्टिक माइनॉरिटी स्टुडेंट्स ऑफ केरल*
2.	भारती भारद्वाज उत्तर प्रदेश	*एकेडमिक प्रोक्रेस्टिनेशन, इमोशनल मैच्योरिटी एंड सेल्फ एफिकेसी एज डिटरमिनेंट्स ऑफ एकेडमिक अचीवमेंट ऑफ सीनियर सेकेंडरी स्कूल स्टुडेंट्स*
3.	स्वाति मिश्रा बिहार	*क्लस्टर रिसोर्स सेंटर (सी.आर.सी.) इन गवर्नमेंट स्कूल्स एंड इट्स इंफ्लुएंस ऑन देयर इंस्टीट्यूशनल मैनेजमेंट— ए स्टडी ऑफ पटना डिस्ट्रिक्ट इन बिहार*
4.	सलोनी उत्तर प्रदेश	उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों के सृजनात्मक चिंतन, विज्ञान के प्रतिभाभिवृत्ति एवं शैक्षिक उपलब्धि पर मस्तिष्क आधार अधिगम-व्यूह रचना के प्रभाव का अध्ययन
5.	अथिरा ओ.एस केरल	*टेक्नोलॉजी रिलेटिड टू फिजियोलॉजी*
6.	रंजना पवार मध्य प्रदेश	*स्टडी ऑफ लीडरशिप बिहेवियर ऑफ स्कूल हेड्स, स्कूल क्लाइमेट एंड इम्प्लीमेंटेशन ऑफ गवर्नमेंट प्रोग्राम्स इन एलिमेंटरी स्कूल ऑफ मध्य प्रदेश*
7.	हेमंत यादव उत्तर प्रदेश	सेकेंडरी स्तर के छात्रों की संवेगात्मक बुद्धि एवं तनाव में उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन
8.	आशीष कुमार बिहार	*इफेक्टिवनेस ऑफ वैदिक मैथमेटिक्स स्ट्रैटेजीस फॉर एन्हान्सिंग प्रॉबल्म सॉल्विंग स्किल्स इन कैमिस्ट्री ऑफ हायर सेकेंडरी स्कूल स्टूडेंट्स*
9.	नीतू सिंह उत्तर प्रदेश	माध्यमिक स्तर पर शैक्षिक उपलब्धि, अभिरुचि और संज्ञानात्मक संबंध पर टेक्नो-पेडागॉजिकल स्किल्स के प्रयोग के प्रभाव का अध्ययन
10.	सुनीता एम.एस. केरल	*इंफ्लुएंस ऑफ सेल्फ एफिकेसी एंड टेक्नो-पेडागॉजिकल कंटेंट नॉलेज (टी.पी.ए.सी.के.) ऑन सॉफ्ट एंड फिजियोलॉजिकल वेल बीइंग ऑफ प्रॉस्पेक्टिव टीचर्स*

वर्ष 2022–23 के लिए बहिर्नियमावली में उल्लिखित रा.शै.अ.प्र.प. की समितियों का विवरण

- महानिकाय
- कार्यकारिणी समिति
- वित्त समिति
- स्थापना समिति
- भवन और सन्निर्माण समिति
- कार्यक्रम सलाहकार समिति
- शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति
- राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.) की शैक्षणिक समिति
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) अजमेर की प्रबंध समिति
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) भोपाल की प्रबंध समिति
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) भुवनेश्वर की प्रबंध समिति
- क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (आर.आई.ई.) मैसूरु की प्रबंध समित
- पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (एन.ई.आर.आई.ई.) उमियम (मेघालय) की प्रबंध समिति

महानिकाय

(i) शिक्षा मंत्री *अध्यक्ष (पदेन)*	1. माननीय *शिक्षा मंत्री* शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(ii) *अध्यक्ष*, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग *(पदेन)*	2. *अध्यक्ष* विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली – 110002
(iii) *सचिव*, शिक्षा मंत्रालय (पदेन)	3. *सचिव* विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(iv) भारत सरकार द्वारा नामित प्रत्येक क्षेत्र के विश्वविद्यालयों से चार कुलपति	4. सिकंदर कुमार *कुलपति* हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय ज्ञान पथ, समर हिल, शिमला – 171005 हिमाचल प्रदेश (प्राधिकारियों के साथ प्रतिस्थापन विचारधीन)
	5. रजनीश कुमार शुक्ल *कुलपति* महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा गाँधी हिल्स, पोस्ट – हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा – 442001 महाराष्ट्र
	6. एच.सी.एस. राठौड़ *कुलपति* दक्षिण बिहार केंद्रीय विश्वविद्यालय बी.आई.टी. कैंपस, बी.वी. कॉलेज पटना – 800014 बिहार (प्राधिकारियों के साथ प्रतिस्थापन विचारधीन)

7. गुरमीत सिंह
कुलपति
पॉन्डिचेरी विश्वविद्यालय
भारत रत्न डॉ. बी.आर. अम्बेडकर
प्रशासनिक भवन
आर.वी. नगर, कालापेट
पुदुच्चेरी – 605014

(v) प्रत्येक राज्य सरकार और विधान सभा वाले संघ राज्य-क्षेत्र का एक-एक प्रतिनिधि, जो राज्य/संघ राज्य-क्षेत्र का शिक्षा मंत्री (अथवा उसका प्रतिनिधि) हो और दिल्ली के मामले में दिल्ली का मुख्य कार्यकारी पार्षद (अथवा उसका प्रतिनिधि)

8. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
आंध्र प्रदेश सरकार
आंध्र प्रदेश सचिवालय भवन
हैदराबाद – 500022

9. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
अरुणाचल प्रदेश सरकार
ईटानगर – 791111
अरुणाचल प्रदेश

10. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
असम सरकार
जनता भवन, दिसपुर – 781006
असम

11. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
बिहार सरकार
नया सचिवालय भवन
पटना – 800015
बिहार

12. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
छत्तीसगढ़ सरकार
रायपुर – 492007
छत्तीसगढ़

13. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
गोवा सरकार
गोवा सचिवालय
पणजी – 403001
गोवा

14. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
गुजरात सरकार
ब्लॉक नंबर 1, सचिवालय
गाँधी नगर – 382010
गुजरात

15. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
हरियाणा सरकार
हरियाणा सिविल सचिवालय
चंडीगढ़ – 160001
हरियाणा

16. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
हिमाचल प्रदेश सरकार
शिमला – 171002
हिमाचल प्रदेश

17. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
झारखंड सरकार
राँची – 834004
झारखंड

18. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
कर्नाटक सरकार
विधानसभा सौंध
बेंगलूरु – 560001
कर्नाटक

19. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
केरल सरकार
अशोक नंथेनकोडे
तिरुवनंतपुरम – 695001
केरल

20. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
मध्य प्रदेश सरकार
भोपाल – 462001
मध्य प्रदेश

21. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
महाराष्ट्र सरकार
मंत्रालय मुख्य
मुंबई – 400032
महाराष्ट्र

22. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
मणिपुर सरकार
मणिपुर सचिवालय
इंफाल – 795001
मणिपुर

23. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
मेघालय सरकार
मेघालय सचिवालय
शिलांग – 793001
मेघालय

24 माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
मिजोरम सरकार
आइजोल – 796001
मिजोरम

25. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
नागालैंड सरकार
कोहिमा – 797001
नागालैंड

26. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
ओडिशा सरकार
ओडिशा सचिवालय
भुवनेश्वर – 751001
ओडिशा

27. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
पंजाब सरकार
चंडीगढ़ – 160017
पंजाब

28. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
राजस्थान सरकार
सरकारी सचिवालय
जयपुर – 302001
राजस्थान

29. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
सिक्किम सरकार
सिक्किम सचिवालय, ताशिलिंग
गंगटोक – 737101
सिक्किम

30. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
तमिलनाडु सरकार
फोर्ट सेंट जॉर्ज
चेन्नई – 600009
तमिलनाडु

रा.शै.अ.प्र.प.

31. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
तेलंगाना सरकार
तेलंगाना सचिवालय
हैदराबाद – 500022
तेलंगाना

32. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
त्रिपुरा सरकार
सिविल सचिवालय
अगरतला – 799001
त्रिपुरा

33. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
उत्तर प्रदेश सरकार
लखनऊ – 226001
उत्तर प्रदेश

34 माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
उत्तराखंड सरकार
देहरादून – 248008
उत्तराखंड

35. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
पश्चिम बंगाल सरकार
विकास भवन
साल्ट लेक
कोलकाता – 700001
पश्चिम बंगाल

36. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
जम्मू और कश्मीर सरकार
श्रीनगर – 180001
जम्मू और काश्मीर

37. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
पुदुच्चेरी सरकार
मुख्य सचिवालय
विक्टर सिमोनल स्ट्रीट,
पुदुच्चेरी – 605001

38. माननीय *विद्यालय शिक्षा मंत्री*
राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र
दिल्ली सरकार
दिल्ली सचिवालय
आई.पी. एस्टेट
नई दिल्ली – 110002

(vi) कार्यकारिणी समिति के वे सभी सदस्य जो ऊपर दी गई सूची में सम्मिलित नहीं हैं

39. माननीय *राज्य शिक्षा मंत्री*
शिक्षा मंत्रालय
शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

40. दिनेश प्रसाद सकलानी
निदेशक
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

41. जे.एस. राजपूत
पूर्व निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.
ए-16, सेक्टर पी-7, मित्रा एन्क्लेव
ग्रेटर वैली स्कूल के सामने,
ग्रेटर नोएडा – 201308,
उत्तर प्रदेश

42. चंद किरण सलूजा
अकादमिक निदेशक
संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन
11204/5 मंदिर मार्ग
गौशाला मार्ग, डोरीवालान
नई दिल्ली – 110006

43. कृष्ण मोहन त्रिपाठी
सदस्य, एन.ई.पी. मसौदा समिति
पूर्व निदेशक, विद्यालय शिक्षा
सी-448, पनकी, कानपुर
उत्तर प्रदेश – 208020

44. बी.आर. कुकरेती
पूर्व डीन और विभागाध्यक्ष
महात्मा ज्योतिबा फुले रोहिलखंड
विश्वविद्यालय
सी-46/47, नीलकंठ
सुरेश शर्मा नगर,
बरेली – 243006
उत्तर प्रदेश

45. कौस्तुभ चंद्र जोशी
प्रधानाचार्य
एस.के.एस.जी.आई.सी. पत्थर खानी
पी.ओ. – बिलोई, ब्लॉक – मुनाकोट
पिथौरागढ़ – 262520
उत्तराखंड

46. बी. उषारानी
प्रधानाचार्य
श्री राम दयाल खेमका
विवेकानंद विद्यालय
नंबर 9 एलायम्मन कोइल स्ट्रीट
तिरुवोट्टियूर, चेन्नई – 19
तमिलनाडु

47. श्रीधर श्रीवास्तव
संयुक्त निदेशक
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

48. शंकर शरण
सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

49. प्रकाश चंद्र अग्रवाल
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (रा.शै.अ.प्र.प.)
भुवनेश्वर
सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर – 751022

50. इंद्राणी भादुड़ी
शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

51. *संयुक्त सचिव (संस्थान)*
शिक्षा मंत्रालय
(विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग)
शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

52. *संयुक्त सचिव* और *वित्तीय सलाहकार*
शिक्षा मंत्रालय
(विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग)
शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

(vii) (क) *अध्यक्ष*
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड,
दिल्ली
(पदेन)

53 *अध्यक्ष*
केंद्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड
शिक्षा सदन – 17
राउज़ एवेन्यू, संस्थागत क्षेत्र
बाल भवन के पास
नई दिल्ली – 110001

(ख) *आयुक्त* केंद्रीय विद्यालय संगठन नई दिल्ली (पदेन)	54. आयुक्त केंद्रीय विद्यालय संगठन 18, इंस्टीट्यूशनल एरिया शहीद जीत सिंह मार्ग नई दिल्ली – 110 016
(ग) *निदेशक* केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो नई दिल्ली (पदेन)	55. निदेशक केंद्रीय स्वास्थ्य शिक्षा ब्यूरो (डी.जी.एच.एस.) स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय कोटला रोड नई दिल्ली – 110002
(घ) *उप महानिदेशक* प्रभारी, कृषि शिक्षा आई.सी.ए.आर., कृषि मंत्रालय नई दिल्ली (पदेन)	56. *उप महानिदेशक* प्रभारी, कृषि शिक्षा आई.सी.ए.आर., कृषि अनुसंधान भवन पूसा, नई दिल्ली – 110012
(ड.) *प्रशिक्षण निदेशक* प्रशिक्षण और रोज़गार महानिदेशालय श्रम मंत्रालय नई दिल्ली (पदेन)	57. *प्रशिक्षण निदेशक* प्रशिक्षण और महानिदेशालय श्रम रोजगार मंत्रालय, एक्सचेंज भवन पूसा (आई.टी.आई.), राजेंद्र प्लेस मेट्रो स्टेशन के पास पूसा रोड, नई दिल्ली
(च) *प्रतिनिधि*, शिक्षा प्रभाग योजना आयोग नई दिल्ली (पदेन)	58. *शिक्षा सलाहकार* नीति आयोग योजना भवन नई दिल्ली – 110001
(viii) भारत सरकार द्वारा मनोनीत अधिक से अधिक छह व्यक्ति, जिनमें कम-से-कम चार स्कूल के अध्यापक हों	59 कुलदीप चंद अग्निहोत्री *कुलपति* हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला, कैंप कार्यालय के पास एच.पी.सी.ए. क्रिकेट स्टेडियम कांगड़ा हिमाचल प्रदेश – 176215 (प्राधिकरण के साथ प्रतिस्थापन विचाराधीन)
	60. मणि मेकलाई मोहन *प्रबंध न्यासी* श्री सरस्वती विद्या मंदिर ग्रुप ऑफ स्कूल एस.एफ. नंबर 72/2 वैगई नगर पट्टनम, सिंगनल्लूर से वेल्लोर रोड कोयंबटूर तमिलनाडु – 641016

61. जया भारद्वाज
प्रधानाचार्य
हंसराज पब्लिक स्कूल
सेक्टर-6, पंचकुला – 134109
हरियाणा

62. अनीता शर्मा
प्रधानाचार्य
सनातन धर्म पब्लिक स्कूल
बी.यू. ब्लॉक, पीतमपुरा
दिल्ली – 110034

63. डिंटो के.पी.
प्रधानाचार्य
विद्याधिराज विद्यापीठम सेंट्रल स्कूल
मवेलिकारा, अलाप्पुझा
केरल – 690101

64. शैलेंद्र सिंह भंडारी
प्रधानाचार्य
ऋषिकेश पब्लिक स्कूल
ऋषिकेश – 249201
उत्तराखंड

(ix) विशेष आमंत्रित

65. *सचिव*
भारतीय स्कूल प्रमाण-पत्र परीक्षा परिषद्
प्रगति भवन, तीसरी मंजिल
47, नेहरू प्लेस
नई दिल्ली – 110019

(x) संयोजक

66. *सचिव*
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016

कार्यकारिणी समिति

(i) परिषद् के *अध्यक्ष* जो कार्यकारिणी समिति के *पदेन अध्यक्ष* होंगे	1. माननीय *शिक्षा मंत्री* शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(ii) (क) शिक्षा मंत्रालय के राज्य मंत्री जो कार्यकारिणी समिति के *पदेन* उपाध्यक्ष होंगे	2. *राज्य मंत्री* विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(ख) परिषद् के *अध्यक्ष* द्वारा मनोनीत शिक्षा उप मंत्री	————
(ग) परिषद् के निदेशक	3. दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
(घ) *सचिव*, शिक्षा मंत्रालय *पदेन*	4. *सचिव* विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(iii) *अध्यक्ष*, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (पदेन सदस्य)	5. *अध्यक्ष* विश्वविद्यालय अनुदान आयोग बहादुरशाह जफर मार्ग नई दिल्ली – 110002
(iv) *अध्यक्ष* द्वारा मनोनीत विद्यालय शिक्षा में रुचि रखने वाले छह जाने-माने शिक्षाविद (जिनमें से दो स्कूल के अध्यापक हों)	6. जे.एस. राजपूत *पूर्व निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. ए-16, सेक्टर पी-7, मित्रा एन्क्लेव ग्रेटर वैली स्कूल के सामने ग्रेटर नोएडा – 201308 उत्तर प्रदेश
	7. चंद किरण सलूजा *अकादमिक निदेशक* संस्कृत प्रमोशन फाउंडेशन 11204/5 मंदिर मार्ग, गौशाला मार्ग डोरीवालान, नई दिल्ली – 110006

8. कृष्ण मोहन त्रिपाठी
   सदस्य, एन.ई.पी. मसौदा समिति
   पूर्व निदेशक, विद्यालय शिक्षा
   सी-448 पनकी
   कानपुर – 208020
   उत्तर प्रदेश

9. बी.आर. कुकरेती
   पूर्व डीन और *विभागाध्यक्ष*
   महात्मा ज्योतिबा फुले रोहेलखंड
   विश्वविद्यालय
   नीलकंठ, सी-46/47
   सुरेश शर्मा नगर
   बरेली – 243006
   उत्तर प्रदेश

10. कौस्तुभ चंद्र जोशी
    प्रधानाचार्य
    एस.के.एस.जी.आई.सी, पत्थर खानी
    पी.ओ. – बिलोई, ब्लॉक – मुनाकोट
    पिथौरागढ़ – 262520
    उत्तराखंड

11. बी. उषारानी
    प्रधानाचार्य
    राम दयाल खेमका
    विवेकानंद विद्यालय
    नंबर 9 एलायम्मन कोइल स्ट्रीट
    तिरुवोट्टियूर, चेन्नई
    तमिलनाडु – 19

(v) परिषद् के संयुक्त निदेशक

12. श्रीधर श्रीवास्तव
    संयुक्त निदेशक
    रा.शै.अ.प्र.प.
    नई दिल्ली – 110016

(vi) *अध्यक्ष* द्वारा मनोनीत परिषद् के संकाय के तीन सदस्य जिनमें कम-से-कम दो सदस्य प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष के स्तर के हों

13. शंकर शरण
    सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग
    रा.शै.अ.प्र.प.
    नई दिल्ली – 110016

14 प्रकाश चंद्र अग्रवाल
   प्रधानाचार्य
   क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (रा.शै.अ.प्र.प.)
   भुवनेश्वर
   सचिवालय मार्ग
   भुवनेश्वर –751022

	15. इंद्राणी भादुड़ी शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
(vii) शिक्षा मंत्रालय का एक प्रतिनिधि; और	16. *संयुक्त सचिव* (संस्थान) शिक्षा मंत्रालय (विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001
(viii) वित्त मंत्रालय का एक प्रतिनिधि जो परिषद् का वित्तीय सलाहकार होगा	17. *संयुक्त सचिव* और *वित्तीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(ix) परिषद् के सचिव कार्यकारी समिति के सचिव होंगे	18. *सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016

वित्त समिति (रा.शै.अ.प्र.प. के नियम 62 के अंतर्गत)

(i) निदेशक रा.शै.अ.प्र.प. (पदेन)	*अध्यक्ष*	1. दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
(ii) वित्तीय सलाहकार शिक्षा मंत्रालय (पदेन)	सदस्य	2. *संयुक्त सचिव (संस्थान) और वितीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001
	सदस्य	3. *संयुक्त सचिव (संस्थान)* शिक्षा मंत्रालय (विद्यालयी शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001 (07-07-2021 से प्रभावी)
	सदस्य	4. पवन कुमार शर्मा (सेवानिवृत्त) *प्रोफेसर*, प्रबंधन 664-ए, आर.के.पुरम वर्धमान महावीर ओपन यूनिवर्सिटी कोटा, राजस्थान – 324005 (07-07-2021 से प्रभावी)
	सदस्य	5. पवन कुमार तोमर *लेखक*, लोक नीति एवं शासन, दिल्ली 31बी/4, राजपुर रोड, सिविल लाइंस दिल्ली – 110054 (07-07-2021 से प्रभावी)
सचिव रा.शै.अ.प्र.प.	सदस्य-संयोजक	6. *सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016

स्थापना समिति

(i) परिषद् के निदेशक *पदेन (अध्यक्ष)*	1. दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
(ii) *संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. (पदेन)	2. श्रीधर श्रीवास्तव *संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
(iii) *अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा शिक्षा मंत्रालय से नामिती	3. लमचानघोई स्वीटी चांगसन *संयुक्त सचिव* (संस्थान) शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन, नई दिल्ली – 110001
(iv) *अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा मनोनीत चार शिक्षाविद जिनमें कम से कम एक वैज्ञानिक हो	4. रवींद्र कान्हेरे समिति (प्रवेश और शुल्क नियामक समिति) मध्य प्रदेश टैगोर छात्रावास संख्या टी-2 जी-फ्लोर, लेफ्ट विंग, श्यामला हिल्स भोपाल – 462002
	5. मनरूप सिंह मीणा *पूर्व प्रधानाचार्य* राजकीय महिला महाविद्यालय गुरुद्वारा, पटियाला बाग पैलेस रोड धौलपुर, राजस्थान – 328001
	6. नचिकेता तिवारी मैकेनिकल इंजीनियरिंग विभाग, एन.एल.-201ए, आई.आई.टी. कानपुर, कानपुर – 208016
	7. दिनेश कांबले (सेवानिवृत्त) *पूर्व रजिस्ट्रार*, मुंबई विश्वविद्यालय, महाराष्ट्र कृष्णा गैलेक्सी, सी 201/202 वीवा वृंदावन टाउनशिप, न्यू वीवा कॉलेज के पास विरार पश्चिम, तालुका – वसई पालघर – 401303

(v)	*अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा मनोनीत किए गए क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान से एक प्रतिनिधि	8	प्रकाश चंद्र अग्रवाल *प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान (रा.शै.अ.प्र.प.) भुवनेश्वर सचिवालय मार्ग, भुवनेश्वर – 751022
(vi)	*अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा मनोनीत किए गए राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान, दिल्ली से एक प्रतिनिधि	9	ज्योत्सना तिवारी कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प. श्री अरबिंदो मार्ग, नई दिल्ली – 110016
(vii)	परिषद् के विनियमों के परिशिष्ट में निर्दिष्ट श्रेणी, दो निर्वाचित प्रतिनिधि (नियमित शैक्षिक और गैर-शैक्षिक कर्मचारियों में प्रत्येक में से एक)	10	हरीश कुमार मीणा (निर्वाचित प्रतिनिधि, शैक्षणिक कर्मचारी) डी.ई.एस.एस., रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
		11	दिनेश कुमार मीणा (निर्वाचित प्रतिनिधि, गैर-शैक्षणिक कर्मचारी) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
(viii)	*वित्तीय सलाहकार* रा.शै.अ.प्र.प.	12.	*संयुक्त सचिव* और *वित्तीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110 001
(ix)	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. सदस्य-संयोजक	13.	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016

भवन सन्निर्माण समिति

(i)	*निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. *अध्यक्ष*, पदेन	दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली – 110016
(ii)	*संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. उपाध्यक्ष, पदेन	श्रीधर श्रीवास्तव *संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016
(iii)	*मुख्य अभियंता*, सी.पी.डब्ल्यू.डी. या उनके नामित (सदस्य)	*अधीक्षण अभियंता* दिल्ली सर्कल – 6, सी.पी.डब्ल्यू .डी. सी.विंग, चौथा तल आई.पी. भवन, आई.टी.ओ. नई दिल्ली
(iv)	शहरी विकास (कार्य) मंत्रालय के एक प्रतिनिधि	*निदेशक* (आई.एफ.डी.) शहरी विकास मंत्रालय वित्त प्रभाग निर्माण भवन नई दिल्ली – 110001
(v)	रा.शै.अ.प्र.प. के परामर्शदाता वास्तुकार	*मुख्य वास्तुकार* (एन.डी.आर.) सी.पी.डब्ल्यू.डी. 303, 'ए' विंग निर्माण भवन मौलाना आजाद रोड नई दिल्ली – 110011
(vi)	परिषद् के वित्त सलाहकार या उनके नामांकित व्यक्ति	*संयुक्त सचिव और वित्तीय सलाहकार* शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001
(vii)	शिक्षा मंत्रालय के नामांकित व्यक्ति	लामचोंघोई स्वीटी चांगसन *संयुक्त सचिव* (संस्थान) शिक्षा मंत्रालय (स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग) शास्त्री भवन नई दिल्ली – 110001

(viii)	ख्यातिलब्ध इंजीनियर (*अध्यक्ष* द्वारा नामांकित)	मुकुल चंद्र बोरा *निदेशक* डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय इंजीनियरिंग और प्रौद्योगिकी संस्थान डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय असम, भारत
(ix)	जाने-माने इलेक्ट्रिकल इंजीनियर (*अध्यक्ष* द्वारा नामांकित)	अशोक कुमार शर्मा *एसोसिएट प्रोफेसर* और *पूर्व विभागाध्यक्ष* विद्युतीय अभियांत्रिकी विभाग यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ इंजीनियरिंग राजस्थान टेक्निकल यूनिवर्सिटी कोटा – 324010
(x)	कार्यकारी समिति के एक सदस्य (*अध्यक्ष* द्वारा नामांकित)	बी.आर. कुकरेती *प्रोफेसर*, शिक्षा और संबद्ध विज्ञान संकाय रोहेलखंड विश्वविद्यालय, बरेली (उ.प्र.)
(xi)	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. (सदस्य-संयोजक)	*सचिव* रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली – 110016

कार्यक्रम सलाहकार समिति

(i) दिनेश प्रसाद सकलानी — अध्यक्ष
निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प..

(ii) श्रीधर श्रीवास्तव — उपाध्यक्ष
संयुक्त निदेशक, रा.शै.अ.प्र.प.

(iii) हर्ष कुमार — सदस्य
सचिव, रा.शै.अ.प्र.प.

***अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नामित पाँच प्रोफेसर**

(i) जॉय सेन — सदस्य
प्रोफेसर
वास्तुकला और क्षेत्रीय योजना
आई.आई.टी., खड़गपुर

(ii) के. रामासुब्रमण्यन — सदस्य
प्रोफेसर
संस्कृत में भारतीय विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रकोष्ठ
आई.आई.टी., मुंबई

(iii) विरूपाक्ष वी. जद्दीपाल — सदस्य
सचिव
महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद
विद्या प्रतिष्ठान
उज्जैन

(iv) खेम सिंह डहेरिया — सदस्य
इंदिरा गाँधी नेशनल ट्राइबल यूनिवर्सिटी
अमरकंटक
मध्य प्रदेश

(v) ऋषि गोयल — सदस्य
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
एस.सी.ई.आर.टी., हरियाणा

***अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा मनोनीत सदस्यों के रूप में राज्य शिक्षा संस्थानों एवं राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के पाँच निदेशक**

(i) सर्वेंद्र विक्रम बहादुर सिंह — सदस्य
निदेशक
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), उत्तर प्रदेश

(ii) *निदेशक* — सदस्य
गुजरात शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (जी.सी.ई.आर.टी.),
गुजरात

(iii) *निदेशक* — सदस्य
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), असम

(iv) *निदेशक* — सदस्य
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), कर्नाटक

(v) *निदेशक* — सदस्य
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
(एस.सी.ई.आर.टी.), जम्मू और कश्मीर

रा.शै.अ.प्र.प. के सदस्य

(i) ए.पी. बेहरा — सदस्य
संयुक्त निदेशक
सी.आई.ई.टी,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(ii) इंदु कुमार — सदस्य
प्रोफेसर
सी.आई.ई.टी,
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(iii) दीपक पालीवाल — सदस्य
संयुक्त निदेशक
पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
श्यामला हिल्स, भोपाल – 462013
मध्य प्रदेश

(iv) सौरभ प्रकाश — सदस्य
प्रोफेसर
पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई.
श्यामला हिल्स, भोपाल – 462013
मध्य प्रदेश

(v) एस.वी. शर्मा — सदस्य
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
कैप्टन डी.पी. चौधरी मार्ग
अजमेर – 305004
राजस्थान

(vi) राजेश मिश्रा — सदस्य
अनुदेश संकाय अध्यक्ष
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
कैप्टन डी.पी. चौधरी मार्ग
अजमेर – 305004
राजस्थान

(vii) जयदीप मंडल — सदस्य
प्रभारी प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स
भोपाल – 462013
मध्य प्रदेश

(ix) चित्रा सिंह — सदस्य
संकाय अध्यक्ष, डी.ई.ई.
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
श्यामला हिल्स
भोपाल – 462013
मध्य प्रदेश

(x) पी.सी. अग्रवाल — सदस्य
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर – 751007
ओडिशा

(xi) संध्या रानी साहू — सदस्य
अनुदेश संकाय
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर – 751007
ओडिशा

(xii) वाई. श्रीकांत — सदस्य
प्रधानाचार्य
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मानस गंगोत्री
मैसूरु – 570006
कर्नाटक

(xiii) कल्पना वेणुगोपाल — सदस्य
प्रसार शिक्षा प्रमुख
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मानस गंगोत्री
मैसूरु – 570006
कर्नाटक

(xiv) सी.जी.वेंकटेश मूर्ति — सदस्य
अनुदेश संकाय अध्यक्ष
क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
मानस गंगोत्री
मैसूरु – 570006
कर्नाटक

(xv) ए.जी. डखार — सदस्य
प्रभारी प्रधानाचार्य
पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
उमियम (री-भोई), बारापानी
मेघालय

(xvi) *अनुदेश संकाय अध्यक्ष* — सदस्य
पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान
उमियम (री-भोई), बारापानी
मेघालय

(xvii) सुनीति सनवाल — सदस्य
विभागाध्यक्ष
प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xviii) उषा शर्मा — सदस्य
प्रोफेसर
प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प. नई दिल्ली

(xix) संध्या सिंह — सदस्य
विभागाध्यक्ष
भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xx) के.सी. त्रिपाठी — सदस्य
प्रोफेसर
भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxi) एस.सी. चौहान — सदस्य
विभागाध्यक्ष
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxii) विनय कुमार सिंह — सदस्य
प्रोफेसर
विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxiii) ज्योत्सना तिवारी — सदस्य
विभागाध्यक्ष
जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxiv) मिली रॉय आनंद — सदस्य
प्रोफेसर
जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxv)	गौरी श्रीवास्तव *विभागाध्यक्ष* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxvi)	नीरजा रश्मि *प्रोफेसर* सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxvii)	सुनीता फरक्या *विभागाध्यक्ष* विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxviii)	दिनेश कुमार *प्रोफेसर* विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxix)	रंजना अरोड़ा *विभागाध्यक्ष* पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस.डी.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxx)	आर.आर. कोइरंग *एसोसिएट प्रोफेसर* पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस.डी.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxxi)	पवन सुधीर *विभागाध्यक्ष* कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxxii)	ज्योत्सना तिवारी *प्रोफेसर* कला और सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxxiii)	वी.पी. सिंह *विभागाध्यक्ष* शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य
(xxxiv)	ए.के. श्रीवास्तव *प्रोफेसर* शैक्षिक किट विभाग (डी.ई.के.) रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली	सदस्य

(xxxv) प्रभात के. मिश्रा — सदस्य
विभागाध्यक्ष
शैक्षिक मनोविज्ञान शिक्षा और आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxvi) अंजुम सिबिया — सदस्य
डीन अकादमिक एवं प्रोफेसर
शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxvii) बी.पी. भारद्वाज — सदस्य
विभागाध्यक्ष
शैक्षिक अनुसंधान विभाग (डी.ई.आर.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxviii) अनीता नूना — सदस्य
प्रोफेसर
शैक्षिक अनुसंधान विभाग (डी.ई.आर.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxxix) शरद सिन्हा — सदस्य
विभागाध्यक्ष
अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xl) बी.पी. भारद्वाज — सदस्य
प्रोफेसर
अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xli) इंद्राणी भादुड़ी — सदस्य
विभागाध्यक्ष
शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xlii) सुखविंदर — सदस्य
एसोसिएट प्रोफेसर
शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xliii) पी.के. मंडल — सदस्य
विभागाध्यक्ष
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xliv) सत्य भूषण, — सदस्य
सहायक प्रोफेसर
अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xlv) शिप्रा वैद्य — सदस्य
विभागाध्यक्ष
पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xlvi) एम. सामंतराय — सदस्य
उप पुस्तकालयाध्यक्ष
पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xlvii) दिनेश कुमार — सदस्य
विभागाध्यक्ष
योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xlviii) पी.डी. सुभाष — सदस्य
एसोसिएट प्रोफेसर
योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xlix) अनूप राजपूत — सदस्य
विभागाध्यक्ष
प्रकाशन प्रभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

विशेष आमंत्रित

(i) *संयुक्त सचिव* (अनु. 4)
स्कूली शिक्षा और साक्षरता विभाग
शिक्षा मंत्रालय, शास्त्री भवन
नई दिल्ली – 110001

(ii) *संकाय अध्यक्ष* (अकादमिक)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(iii) *संकाय अध्यक्ष* (अनुसंधान)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(iv) *संकाय अध्यक्ष* (समन्वय)
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(v) अशिता रवींद्रन
एसोसिएट प्रोफेसर
योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

(vi) *मुख्य लेखा अधिकारी*
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

शैक्षिक अनुसंधान और नवाचार समिति

(i)	दिनेश प्रसाद सकलानी *निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प.	अध्यक्ष
(ii)	श्रीधर श्रीवास्तव *संयुक्त निदेशक* रा.शै.अ.प्र.प.	उपाध्यक्ष
(iii)	ए.पी. बेहरा *संयुक्त निदेशक* केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान	सदस्य
(iv)	*संयुक्त निदेशक*, पी.एस.एस.सी.आई.वी.	– तदैव –

बाह्य सदस्य

(v)	जे.वी. मधुसूदन *प्रोफेसर* हैदराबाद विश्वविद्यालय हैदराबाद, तेलंगाना	– तदैव –
(vi)	भरत धोकई *नियामक*, कच्छ कल्याण संघ गाँधीधाम, कच्छ गुजरात	– तदैव –
(vii)	रेणु नंदा *प्रोफेसर* शिक्षा विभाग जम्मू विश्वविद्यालय जम्मू और कश्मीर	– तदैव –
(viii)	बबली चौधरी *प्रोफेसर* अध्यापक शिक्षा विभाग गौहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी असम	– तदैव –
(ix)	प्रेम नारायण सिंह *विभागाध्यक्ष*, शिक्षा विभाग संपूर्णानंद संस्कृत विश्वविद्यालय वाराणसी, उत्तर प्रदेश	– तदैव –
(x)	आर. प्रभाकर राय प्रबंधन अध्ययन विभाग पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुदुचेरी	– तदैव –

(xi) हरमीत सिंह — – तदैव –
राजनीति विज्ञान विभाग
गुरु नानक देव विश्वविद्यालय
अमृतसर

(xii) उमेश अशोक कदम — – तदैव –
स्कूल ऑफ सोशल साइंसेज
जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एस.सी.ई.आर.टी.) के प्रतिनिधि

(xiii) एम. राधा रेड्डी — सदस्य
निदेशक, एस.सी.ई.आर.टी. तेलंगाना
एल.बी. स्टेडियम ई-गेट के सामने
बशीरबाग, हैदराबाद – 500001

(xiv) निरदा देवी — – तदैव –
निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी., कहिलीपारा,
गुवाहाटी – 781019
जिला - कामरूप मेट्रो, असम

रा.शै.अ.प्र.प. संकाय

(xv) अंजुम सिबिया — सदस्य
संकायाध्यक्ष, अकादमिक
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

(xvi) दिनेश कुमार — – तदैव –
संकायाध्यक्ष, अनुसंधान
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली

(xvii) प्रकाश चंद्र अग्रवाल — – तदैव –
प्रधानाचार्य, आर.आई.ई.
सचिवालय मार्ग
भुवनेश्वर – 751022
ओडिशा

(xviii) फ्लोरेट जी. डखार — – तदैव –
प्रभारी प्रधानाचार्य, एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग
उमियम, रीभोई
मेघालय – 793013

(xix) शरद सिन्हा — – तदैव –
विभागाध्यक्ष, अध्यापक शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xx) इंद्राणी भादुड़ी — तदैव —
प्रभागाध्यक्ष, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxi) सुनीता फरक्या — तदैव —
विभागाध्यक्ष, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxii) गौरी श्रीवास्तव — तदैव —
विभागाध्यक्ष, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxii) ज्योत्सना तिवारी — तदैव —
विभागाध्यक्ष, जेंडर अध्ययन विभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

(xxiii) बी.पी. भारद्वाज संयोजक
प्रभागाध्यक्ष, शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान की शैक्षणिक समिति

(i) दिनेश प्रसाद सकलानी
श्रीधर श्रीवास्तव
अंजुम सिबिया — अध्यक्ष
संकाय अध्यक्ष (अकादमिक)

(ii) बाह्य विशेषज्ञ

(क) पूर्णिमा सिंह
प्रोफेसर
मानविकी और सामाजिक विज्ञान विभाग
आई.आई.टी., दिल्ली, हौज़ खास, नई दिल्ली – 110016

(ख) टी.के. वेंकटसुब्रमण्यन
प्रोफेसर (सेवानिवृत्त)
दिल्ली विश्वविद्यालय
टी-150 ई.एम.ए.ए.आर., सेक्टर-65
गुरुग्राम – 122101

(ग) एस.एम. सुनगोह
प्रोफेसर
शिक्षा विभाग
एन.ई.एच.यू., शिलांग, मेघालय – 793022

(घ) शैलेंद्र अमोली
उप निदेशक
एस.सी.ई.आर.टी., उत्तराखंड
(*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रतिनियुक्त)

(ङ) संजय कुमार गुप्ता
प्रोफेसर
बाल विश्वविद्यालय
सेक्टर-20, गाँधीनगर, गुजरात – 382021

(iii) सी.आई.ई.टी., रा.शै.अ.प्र.प. और पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल के संयुक्त निदेशक

ए.पी. बेहरा
संयुक्त निदेशक
सी.आई.ई.टी.
रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली

दीपक पालीवाल
संयुक्त निदेशक
पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल

(iv) एन.आई.ई. विभागों/प्रभागों/प्रकोष्ठों के अध्यक्ष

(क) बी.पी. भारद्वाज, *संकाय अध्यक्ष (अनुसंधान)* और *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक अनुसंधान प्रभाग (डी.ई.आर.)

(ख) गौरी श्रीवास्तव, *संकाय अध्यक्ष, (समन्वय)* और *विभागाध्यक्ष*, सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

(ग) सुनीति सनवाल, *विभागाध्यक्ष*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

(घ) संध्या सिंह, *विभागाध्यक्ष*, भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

(ङ) एस.सी. चौहान, *विभागाध्यक्ष*, विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

(च) ज्योत्सना तिवारी, *विभागाध्यक्ष*, जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

(छ) सुनीता फरक्या, *विभागाध्यक्ष*, विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

(ज) रंजना अरोड़ा, *विभागाध्यक्ष*, पाठ्यचर्या अध्ययन और विकास विभाग (डी.सी.एस. एंड डी.

(झ) पवन सुधीर, *विभागाध्यक्ष*, कला एवं सौंदर्यबोध विभाग (डी.ई.ए.ए.)

(ञ) वी.पी. सिंह, *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

(ट) प्रभात कुमार मिश्रा, *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ.ई.)

(ठ) शरद सिन्हा, *अध्यक्ष*, अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

(ड) इंद्राणी भादुड़ी, *विभागाध्यक्ष*, शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

(ढ) प्रत्यूष कुमार मंडल, *प्रमुख*, अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

(ण) शिप्रा वैद्य, *विभागाध्यक्ष*, पुस्तकालय और प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

(त) दिनेश कुमार, *विभागाध्यक्ष*, योजना और अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

(थ) अनूप कुमार राजपूत, *विभागाध्यक्ष*, प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

(v) एन.आई.ई., सी.आई.ई.टी और पी.एस.एस.सी.आई.वी. के संकाय

(क) उषा शर्मा, *प्रोफेसर*, डी.ई.ई. एवं *प्रभारी*, राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र (एन.सी.एल.)

(ख) कीर्ति कपूर, *प्रोफेसर*, डी.ई.एल.

(ग) विनय कुमार सिंह, *प्रोफेसर*, डी.ई.जी.एस.एन.

(घ) मिली रॉय आनंद, *प्रोफेसर*, डी.जी.एस.

(ङ) शिप्रा वैद्य, *प्रोफेसर*, डी.ई.एस.एस.

(च) के.वी. श्रीदेवी, *सहायक प्रोफेसर*, डी.सी.एस. एंड डी.

(छ) ए.के. वझलवार, *प्रोफेसर*, डी.ई.के.

(ज) श्रद्धा धीवाल, *सहायक प्रोफेसर*, डी.ई.पी.एफ.ई.

(झ) सुखविंदर, *प्रोफेसर*, ई.एस.डी

(ञ) सत्य भूषण, *प्रोफेसर*, आई.आर.डी.

(ट) मूर्तिमति सामंतराय, *उप पुस्तकालयाध्यक्ष*, एल.डी.डी.

(ठ) अशिता रवींद्रन, *एसोसिएट प्रोफेसर*, पी.एम.डी.

(ड) पी.डी. सुभाष, *एसोसिएट प्रोफेसर*, पी.एम.डी.

(ढ) इंदु कुमार, *प्रोफेसर*, सी.आई.ई.टी.

(ण) वी.एस. मेहरोत्रा, *प्रोफेसर*, पी.एस.एस.सी.आई.वी.ई., भोपाल

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर की प्रबंध समिति

(i)	*कुलपति* एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर	अध्यक्ष
(ii)	*प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर	उपाध्यक्ष

प्रत्येक राज्य और क्षेत्र के संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा विभाग से एक नामिती

(iii)	*निदेशक*, एस.पी.डी., समग्र शिक्षा अभियान, राजस्थान	सदस्य
(iv)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., दिल्ली	सदस्य
(v)	*निदेशक*, जम्मू और कश्मीर, माध्यमिक शिक्षा मंडल	सदस्य
(vi)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., निशांत गंज, लखनऊ, उ. प्र.	सदस्य
(vii)	*संयुक्त निदेशक*, उच्च शिक्षा, (सी-1), हिमाचल प्रदेश	सदस्य
(viii)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., उत्तराखंड	सदस्य
(ix)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., पंजाब	सदस्य
(x)	*निदेशक*, माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा सरकार, पंचकुला, हरियाणा	सदस्य
(xi)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., चंडीगढ़	सदस्य
(xii)	*निदेशक*, विद्यालयी शिक्षा, लद्दाख, केंद्रशासित प्रदेश लद्दाख	सदस्य

***अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सदस्यों के रूप में नामित दो विशेषज्ञ**

(xiii)	प्रदीप राव, *प्रधानाचार्य*, महाराणा पी.जी. कॉलेज, गोरखपुर	सदस्य
(xiv)	दिनेश सकलानी, *प्रोफेसर*, इतिहास विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, उत्तराखंड	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नामित आर.आई.ई. के दो विभागों के प्रमुख**

(xv)	*अध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम., आर.आई.ई., अजमेर	सदस्य
(xvi)	*अध्यक्ष*, डी.ई., आर.आई.ई., अजमेर	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प के नामिती**

(xvii)	प्रबंध समिति की बैठक की निर्धारित तिथि प्रधानाचार्य से प्राप्त होने पर निर्णय लिया जाएगा	सदस्य

ऐसे अन्य सदस्य जिन्हें उस विश्वविद्यालय के अनुबंध द्वारा शामिल किया जाना आवश्यक है जिससे संस्थान संबद्ध है

(xviii)	कुलपति, एम.डी.एस. यूनिवर्सिटी, अजमेर के नामिती	सदस्य

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल की प्रबंध समिति

(i) *कुलपति* बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल	अध्यक्ष
(ii) *प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल	उपाध्यक्ष
प्रत्येक राज्य और क्षेत्र के संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा विभाग से एक नामिती	
(iii) *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., भोपाल (मध्य प्रदेश)	सदस्य
(iv) *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., रायपुर (छत्तीसगढ़)	सदस्य
(v) *निदेशक*, एम.एस.सी.ई.आर.टी., पुणे (महाराष्ट्र)	सदस्य
(vi) *निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., गोवा	सदस्य
(vii) *निदेशक*, जी.सी.ई.आर.टी., गाँधीनगर (गुजरात)	सदस्य
(viii) *सहायक निदेशक*, शिक्षा दमन और दीव संघ राज्य, दमन	सदस्य
(ix) *सहायक निदेशक*, शिक्षा दादरा और नगर हवेली संघ राज्य, सिलवासा	सदस्य
***अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सदस्यों के रूप में नामित दो विशेषज्ञ**	
(x) बिपिन बिहारी ब्योहर, पूर्व *अध्यक्ष*, मध्य प्रदेश लोक सेवा आयोग	सदस्य
(xi) वृषभ प्रसाद जैन, *प्रोफ़ेसर* हिंदी विभाग, महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा	सदस्य
***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नामित आर.आई.ई. के दो विभागों के प्रमुख**	
(xii) *विभागाध्यक्ष*, डी.ई.एस.एम., आर.आई.ई., भोपाल	सदस्य
(xiii) *विभागाध्यक्ष*, डी.ई.ई., आर.आई.ई., भोपाल	सदस्य
***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के नामिती**	
(xiv) प्रबंध समिति की बैठक की निर्धारित तिथि प्रधानाचार्य से प्राप्त होने पर निर्णय लिया जाएगा	सदस्य
ऐसे अन्य सदस्य जिन्हें उस विश्वविद्यालय के अनुबंध द्वारा शामिल किया जाना आवश्यक है जिससे संस्थान संबद्ध है	
(xv) कुलपति, बरकतुल्ला विश्वविद्यालय, भोपाल के नामिती	सदस्य

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर की प्रबंध समिति

(i)	*कुलपति* उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर	*अध्यक्ष*
(ii)	*प्रधानाचार्य* क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर	उपाध्यक्ष

प्रत्येक राज्य और क्षेत्र के संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा विभाग से एक नामिती

(iii)	*निदेशक*, टी.ई. और एस.सी.ई.आर.टी.	सदस्य
(iv)	*अध्यक्ष*, पश्चिम बंगाल प्राथमिक शिक्षा बोर्ड साल्ट लेक, कोलकाता – 91	सदस्य
(v)	*प्रधानाचार्य*, राज्य शिक्षा संस्थान पोर्ट ब्लेयर, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	सदस्य
(vi)	*उप निदेशक* प्राथमिक शिक्षा निदेशालय मानव संसाधन विकास विभाग, झारखंड सरकार, रांची	सदस्य
(vii)	*सहायक निदेशक* अनुसंधान एवं प्रशिक्षण निदेशालय शिक्षा विभाग, पटना, बिहार	सदस्य

***अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सदस्यों के रूप में नामित दो विशेषज्ञ**

(viii)	नरेंद्र कुमार सिंह, *प्रोफ़ेसर* (सेवानिवृत्त), मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार	सदस्य
(ix)	हेमलता एस. मोहन, *अध्यक्ष*, सांस्कृतिक स्रोत और प्रशिक्षण केंद्र, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नामित आर.आई.ई. के दो विभागों के प्रमुख**

(x)	*विभागाध्यक्ष*, डी.ई.एस.एस.एच., आर.आई.ई., भुवनेश्वर	सदस्य
(xi)	*विभागाध्यक्ष*, डी.ई., आर.आई.ई., भुवनेश्वर	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के नामिती**

(xii)	प्रबंध समिति की बैठक की निर्धारित तिथि प्रधानाचार्य से प्राप्त होने पर निर्णय लिया जाएगा	सदस्य

ऐसे अन्य सदस्य जिन्हें उस विश्वविद्यालय की व्यवस्था द्वारा शामिल किया जाना आवश्यक है जिससे संस्थान संबद्ध है

(xiii)	कुलपति, उत्कल विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर के नामिती	सदस्य

क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु की प्रबंध समिति

(i)	*कुलपति* मैसूर यूनिवर्सिटी, मैसूरु	*अध्यक्ष*
(ii)	*प्रधानाचार्य* पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान , मैसूरु	उपाध्यक्ष

प्रत्येक राज्य और क्षेत्र के संघ राज्य क्षेत्रों के शिक्षा विभाग से एक नामिती

(iv)	*निदेशक*, डी.एस.ई.आर.टी., बेंगलूरु – 560085, कर्नाटक	सदस्य
(v)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., एल.बी. स्टेडियम के सामने ई-गेट, हैदराबाद – 500001	सदस्य
(vi)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., तेलंगाना, एल.बी. स्टेडियम के सामने, ई-गेट कृषि आयोग का कार्यालय, हैदराबाद	सदस्य
(vii)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., कॉलेज रोड डी.पी.आई. कैंपस, चेन्नई – 600006, तमिलनाडु	सदस्य
(viii)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., विद्याभवन, पूजापुरा, पी.ओ. तिरुवनंतपुरम, केरल – 695012	सदस्य

***अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सदस्यों के रूप में नामित दो विशेषज्ञ**

(ix)	सत्य नारायण, *डीन अकादमिक,* स्नातकोत्तर केंद्र, शारदा विलास कॉलेज, मैसूरु	सदस्य
(x)	के.एन. मधुसूदन पिल्लई, *पूर्व शैक्षणिक सलाहकार*, एन.ए.ए.सी., बेंगलूरु और *डीन अकादमिक*, भारतीय विचार केंद्रम रिसर्च तिरुवनंतपुरम, केरल	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नामित आर.आई.ई. के दो विभागों के प्रमुख**

(xi)	*विभागाध्यक्ष*, शिक्षा विभाग	सदस्य
(xii)	*विभागाध्यक्ष*, विज्ञान और गणित शिक्षा विभाग	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के नामिती**

(xiii)	प्रबंध समिति की बैठक की निर्धारित तिथि प्रधानाचार्य से प्राप्त होने पर निर्णय लिया जाएगा	सदस्य

ऐसे अन्य सदस्य जिन्हें उस विश्वविद्यालय के अनुबंध द्वारा शामिल किया जाना आवश्यक है जिससे संस्थान संबद्ध है

(xiv)	कुलपति, मैसूर विश्वविद्यालय, मैसूरु के नामिती	सदस्य

पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, उमियम (मेघालय) की प्रबंध समिति

(i)	*कुलपति* नॉर्थ ईस्ट हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग	*अध्यक्ष*
(ii)	*प्रधानाचार्य* पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग	उपाध्यक्ष

क्षेत्र के प्रत्येक राज्य और संघ राज्य क्षेत्र के शिक्षा विभाग से एक नामित व्यक्ति

(iii)	*निदेशक*, डी.एच.आर.टी., शिलांग	सदस्य
(iv)	*निदेशक*, स्कूली शिक्षा, ईटानगर,	सदस्य
(v)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., असम	सदस्य
(vi)	*निदेशक*, एच.आर.डी.डी. (स्कूली शिक्षा), सिक्किम	सदस्य
(vii)	*निदेशक*, स्कूली शिक्षा, त्रिपुरा	सदस्य
(viii)	*निदेशक*, स्कूली शिक्षा, मिजोरम	सदस्य
(ix)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., मणिपुर	सदस्य
(x)	*निदेशक*, एस.सी.ई.आर.टी., नागालैंड	सदस्य

***अध्यक्ष*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सदस्यों के रूप में नामित दो विशेषज्ञ**

(xi)	बबली चौधरी, *प्रोफेसर*, शिक्षा विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, असम	सदस्य
(xii)	ताना शोरेन, *प्रोफेसर*, इतिहास विभाग, राजीव गाँधी विश्वविद्यालय, अरुणाचल प्रदेश	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा नामित आर.आई.ई. के दो विभागों के प्रमुख**

(xiii)	*विभागाध्यक्ष*, डी.ई.ई., एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग	सदस्य
(xiv)	*विभागाध्यक्ष*, डी.ई.एल.एस.एस., एन.ई.आर.आई.ई., शिलांग	सदस्य

***निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के नामिती**

(xv)	प्रबंध समिति की बैठक की निर्धारित तिथि प्रधानाचार्य से प्राप्त होने पर निर्णय लिया जाएगा	सदस्य

ऐसे अन्य सदस्य जिन्हें उस विश्वविद्यालय के अनुबंध द्वारा शामिल किया जाना आवश्यक है जिससे संस्थान संबद्ध है

(xvi)	कुलपति, नॉर्थ ईस्ट हिल यूनिवर्सिटी, शिलांग के नामिती	सदस्य

31 मार्च, 2023 को रा.शै.अ.प्र.प. के समेकित संस्वीकृत पदों की संख्या और आरक्षण की स्थिति

समूह	स्वीकृत पद	पदों की संख्या	अनु. जाति	अनु. जाति के कर्मचारियों का प्रतिशत	अनु. जनजाति	अनु. जनजाति के कर्मचारियों का प्रतिशत	अन्य पिछड़ा वर्ग	अन्य पिछड़ा वर्ग के कर्मचारियों का प्रतिशत	दिव्यांग	दिव्यांग कर्मचारियों का प्रतिशत
क	651	274	51	18.61%	20	7.30%	33	12.04%	3	1.09%
ख	696	343	64	18.66%	42	12.24%	63	18.37%	8	2.33%
ग और घ	1478	395	16	4.05%	52	13.16%	53	13.42%	12	3.04%
कुल	**2825**	**1012**	**131**	**12.94%**	**114**	**11.26%**	**149**	**14.72%**	**23**	**2.27%**

परिशिष्ट VI

31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के दौरान प्राप्तियाँ और भुगतान लेखा

प्राप्तियाँ	चालू वर्ष 2022–23	पिछला वर्ष 2021–22	भुगतान	चालू वर्ष 2022–23	पिछला वर्ष 2021–22
1. आरंभिक शेष			1. व्यय		
क) नकद शेष			क) स्थापना व्यय	2,51,25,42,339	2,19,83,56,325
ख) बैंक में शेष			ख) अकादामिक व्यय	3,02,34,79,570	1,76,04,78,321
(i) चालू खातों में	57,400	24,351	ग) प्रशासनिक व्यय	1,49,10,20,528	1,45,74,56,216
(ii) जमा खातों में	18,076	18,075	घ) परिवहन व्यय	1,36,38,822	53,25,032
(iii) बचत खातों में	55,86,20,931	1,14,93,70,496	ङ) मरम्मत एवं रख-रखाव व्यय	28,78,60,637	33,82,95,638
			च) पूर्व अवधि व्यय	–	–
2. प्राप्त अनुदान					
क) भारत सरकार से	3,98,29,60,705	3,19,74,16,739	2. निश्चित/अक्षय निधि के लिए भुगतान	–	–
ख) भारत के राज्य सरकार से					
ग) अन्य स्रोतों से (यू.एन.एफ.पी.ए./ए.ई.पी. से प्रतिपूर्ति की गई राशि)			3. प्रायोजित परियोजनाओं/योजनाओं के लिए भुगतान	3,17,60,44,578	85,57,42,156
पूँजीगत एवं राजस्व व्यय के लिए अनुदान (यदि उपलब्ध हो तो पृथक दर्शाया जाएगा)					
			4. प्रायोजित अध्येतावृत्तियों/छात्रवृत्तियों के लिए भुगतान	1,31,05,836	50,37,793

3. अकादमिक प्राप्तियाँ	11,29,51,518	8,03,64,441			
			5. किए गए निवेश और जमा		
4. निश्चित/अक्षय निधि के लिए प्राप्तियाँ			क) निश्चित/अक्षय निधियों से		
			ख) स्व निधि से (अन्य निवेश)		
5. प्रायोजित परियोजनाओं/योजनाओं के लिए प्राप्तियाँ	3,09,81,71,514	68,04,22,639			
			6. अनुसूचित बैंकों में सावधि जमा	11,82,00,00,000	11,51,99,95,000
6. प्रायोजित अध्येतावृत्तियों और छात्रवृत्तियों के लिए प्राप्तियाँ					
			7. स्थायी परिसंपत्तियों और चालू कार्य पूँजी पर व्यय		
7. निवेश पर आय			क) स्थायी परिसंपत्तियाँ	36,44,71,543	23,92,18,337
क) निश्चित/अक्षय निधि	–	–	ख) चालू कार्य पूँजी		
ख) अन्य निवेश	5,69,81,360	5,64,07,966			
			8. सांविधिक भुगतानों सहित अन्य भुगतान	1,03,73,92,505	75,26,74,732
8. प्राप्त ब्याज					
क) बैंक जमा	28,30,55,637	22,04,68,577	9. अनुदानों की वापसी		
ख) ऋण और अग्रिम	6,34,459	9,33,883			
ग) बचत बैंक खाते	2,05,50,597	2,69,39,578	10. जमा और अग्रिम	3,87,89,155	40,50,107
घ) बैंक गारंटी	–	7,13,903			
9. नकदीकृत निवेश		–	11. अन्य भुगतान	11,83,07,60,702	7,46,99,51,787
10. अनुसूचित बैंकों में सावधि जमा नकदीकृत	11,77,00,00,000	9,33,00,00,000	12. अंत: शेष	–	–
			क) हस्तगत नकद	–	–

11. अन्य आय (पूर्व-अवधि आय सहित)	3,74,80,36,559	3,29,19,25,664	ख) बैंक शेष	–	–
			(i) चालू खाते में	43,300	57,400
12. जमा और अग्रिम	1,88,36,516	3,35,39,019	(ii) बचत खाते में	1,16,26,85,435	55,86,20,931
			(iii) जमा खाते में	18,101	18,076
13. सांविधिक प्राप्तियों सहित विविध प्राप्तियाँ	7,43,85,57,092	4,07,10,11,899			
14. कोई अन्य प्राप्ति	5,68,24,20,688	5,02,57,20,623			
कुल	**36,77,18,53,052**	**27,16,52,77,852**	**कुल**	**36,77,18,53,052**	**27,16,52,77,852**

हस्ताक्षरित
मुख्य लेखाधिकारी
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

हस्ताक्षरित
सचिव
रा.शै.अ.प्र.प.
नई दिल्ली – 110016

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् के लेखा पर 31 मार्च 2023 को समाप्त वर्ष के लिए भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक की पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट*

1. हमने राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली की 31 मार्च, 2023 को समाप्त वर्ष के संलग्न तुलन-पत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा की नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (कर्तव्य, शक्तियाँ और सेवा शर्तें) अधिनियम, 1971 की धारा 20 (1) के अंतर्गत लेखा परीक्षा की है। इस लेखा परीक्षा रिपोर्ट को वर्ष 2027–28 तक की अवधि के लिए सौंपा गया है। इन वित्तीय विवरणों में परिषद् के 12 एककों का लेखा शामिल है। इनमें से तीन एककों के लेखा की लेखा परीक्षा की गई तथा रिपोर्ट में टिप्पणियों पर विचार किया गया। इन वित्तीय विवरणों की जिम्मेदारी परिषद् के प्रबंधन की है। हमारी जिम्मेदारी लेखा परीक्षा के आधार पर इन वित्तीय विवरणों पर राय व्यक्त करना है।
2. इस पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट में वर्गीकरण, श्रेष्ठ लेखा रीतियों, लेखाकरण मानकों और प्रकटीकरण प्रतिमानकों आदि से अनुरूपता के संबंध में लेखा विधियों पर भारत के नियंत्रक और महालेखा परीक्षक (सी.ए.जी.) की टिप्पणियाँ समाविष्ट हैं। कानून, नियमों और विनियमों (स्वामित्व एवं नियमितता) के अनुपालन और कौशल-सह-निष्पादन पहलुओं आदि से संबंधित वित्तीय लेन-देन पर यदि कोई लेखा परीक्षा टिप्पणियाँ हों, तो वे निरीक्षण रिपोर्टो/नियंत्रक और महालेखा परीक्षक की लेखा परीक्षा रिपोर्टों द्वारा पृथक रूप से प्रतिवेदित किए गए हैं।
3. हमने भारत में सामान्य रूप से स्वीकार्य लेखा परीक्षा मानकों के अनुसार लेखा परीक्षा संचालित की है। इन मानकों की अपेक्षा है कि हम लेखा परीक्षा की योजना और निष्पादन में यथोचित रूप से सुनिश्चित करें कि क्या वित्तीय विवरण आर्थिक गलत बयानी से मुक्त हैं। लेखा परीक्षा के अंतर्गत परीक्षण के आधार पर, वित्तीय विवरणियों में धनराशियों एवं प्रकटीकरण के समर्थन में साक्ष्यों की जाँच शामिल हैं। प्रबंधन द्वारा प्रयोग किए गए लेखा सिद्धांतों और महत्वपूर्ण प्राक्कलनों के निर्धारण के साथ-साथ वित्तीय विवरणों के संपूर्ण प्रस्तुतीकरण का मूल्यांकन भी इस लेखा परीक्षा में शामिल है। हमें विश्वास है कि यह लेखा परीक्षा, हमारे विचारों को उचित आधार प्रदान करती है।
4. अपनी लेखा परीक्षा के आधार पर, हम रिपोर्ट करते हैं कि—
   - (i) हमने रिपोर्ट में दी गई टिप्पणी के अधीन सभी सूचनाएँ और स्पष्टीकरण प्राप्त कर लिए हैं, जो हमारी सर्वोत्तम जानकारी और विश्वास के अनुसार लेखा परीक्षा के प्रयोजन के लिए आवश्यक थी।
   - (ii) इस रिपोर्ट में उल्लिखित तुलन-पत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थूल रूप से विनिर्धारित प्रपत्र में बनाए गए हैं।
   - (iii) हमारी राय में रिपोर्ट की टिप्पणी के अधीन इन बहियों की जाँच करने पर यह प्रतीत होता है कि परिषद् द्वारा लेखा बही एवं अन्य संगत अभिलेखों का समुचित रख-रखाव किया गया है।
   - (iv) हम यह भी रिपोर्ट करते हैं कि—

---

*प्रस्तुत रिपोर्ट मूल रूप से अंग्रेज़ी में तैयार की गई लेखा परीक्षा रिपोर्ट का हिंदी अनुवाद है। यदि इसमें कोई विसंगति परिलक्षित होती है, तो अंग्रेज़ी रूपांतरण ही मान्य होगा।

क. सामान्य

क.1 लेखा का समेकन

रा.शै.अ.प्र.प. के सभी संघटक एकक प्रत्येक माह प्राप्ति एवं भुगतान लेखा तैयार करते हैं और रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय को समेकन के लिए भेजते हैं। सभी एककों से प्राप्त प्राप्ति एवं भुगतान लेखा के आधार पर, रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय में वित्तीय वर्ष के अंत में प्राप्ति एवं भुगतान लेखा, तुलन-पत्र और आय एवं व्यय लेखा तैयार किए जाते हैं। वित्तीय वर्ष के अंत में सभी संघटक एककों को लेखा का पूर्ण सेट अर्थात प्राप्ति एवं भुगतान लेखा, आय एवं व्यय लेखा और तुलन-पत्र तैयार करना चाहिए जिससे रा.शै.अ.प्र.प. के लेखा की बेहतर रिपोर्ट के लिए रा.शै.अ.प्र.प.मुख्यालय में समेकित लेखा तैयार किया जा सके। इस पर 2014–15 से बारंबार ध्यान दिलाया जा रहा है परंतु रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा अगले वर्ष अनुपालन कर दिया जाएगा, इस आश्वासन के सिवाय कोई उपचारी कार्रवाई नहीं की गई है।

ख. सहायता अनुदान

वर्ष 2022–23 के दौरान रा.शै.अ.प्र.प. को 399.83 करोड़ रुपये (पूँजीगत : 36.27 करोड़ रुपये और राजस्व : 363.56 करोड़ रुपये) का सहायता अनुदान प्राप्त हुआ जिसमें से 118.13 करोड़ रुपये (पूँजीगत : 18.52 करोड़ रुपये और राजस्व : 99.61 करोड़ रुपये) की अनुदान राशि मार्च, 2023 में प्राप्त हुई थी। दिनांक 01 अप्रैल, 2022 को इसका आदि शेष 24.76 करोड़ रुपये (पूँजीगत : शून्य और राजस्व : 24.76 करोड़ रुपये) की आंतरिक प्राप्ति थी। इसने 424.59 करोड़ रुपये की कुल उपलब्ध निधि में से 394.30 करोड़ रुपये (पूँजीगत : 35.76 करोड़ रुपये और राजस्व : 358.54 करोड़ रुपये) का उपयोग किया। रा.शै.अ.प्र.प. ने 31.03.2023 को 5.33 करोड़ रुपये वापसी और 1.54 करोड़ रुपये का अभ्यर्पण कर दिया और 31 मार्च 2023 तक 23.42 करोड़ रुपये की अव्ययित शेष राशि छोड़ दी।

इसको वर्ष के दौरान शिक्षा मंत्रालय और अन्य एजेंसियों से प्रायोजित/विशिष्ट परियोजनाओं हेतु 316.86 करोड़ रुपये (309.82 करोड़ + 7.04 करोड़ टी.डी.एस. रिफंड) का अनुदान भी प्राप्त हुआ और इन परियोजनाओं में इसका 10.41 करोड़ रुपये का आदि शेष था। कुल 327.27 करोड़ रुपये के अनुदान में से परिषद् ने इन परियोजनाओं पर वर्ष के दौरान 320.25 करोड़ रुपये का व्यय किया जिससे 31 मार्च 2023 को 7.02 करोड़ रुपये शेष बचा।

ग. प्रबंधन-पत्र

(i) लेखा परीक्षा रिपोर्ट में जिन कमियों को शामिल नहीं किया गया है, उन्हें सुधारक/उपचारी कार्रवाई के लिए एक पृथक रूप से जारी प्रबंधन पत्र द्वारा *निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के संज्ञान में लाया गया है।

(ii) पिछले अनुच्छेदों में की गई अपनी टिप्पणियों के अधीन, हम सूचित करते हैं कि इस रिपोर्ट में उल्लिखित तुलन-पत्र, आय एवं व्यय लेखा तथा प्राप्ति एवं भुगतान लेखा, लेखा बहियों के अनुरूप हैं।

(iii) हमारी राय में और सर्वोत्तम जानकारी तथा हमें दिए गए स्पष्टीकरण के अनुसार, कथित वित्तीय विवरणों को लेखा नीतियों और लेखा टिप्पणियों के साथ तथा इसमें उल्लिखित महत्वपूर्ण मामलों के अधीन और इस लेखा परीक्षा रिपोर्ट के संलग्नक में उल्लिखित अन्य महत्वपूर्ण मामलों में भारत में सामान्यत: स्वीकृत लेखा सिद्धांतों के अनुरूप यह लेखा परीक्षा रिपोर्ट सत्य और उचित परिदृश्य प्रस्तुत करती है।

क. जहाँ तक इसका तुलन-पत्र से संबंध है, यह राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली की 31 मार्च, 2023 की कार्य स्थिति को दर्शाता है; और

ख. जहाँ तक इसका आय एवं व्यय लेखा से संबंध है, यह उपर्युक्त तारीख पर वर्ष के अंत में अधिशेष को दर्शाता है।

भारत के नियंत्रक और महालेखापरीक्षक के लिए और उनकी ओर से

स्थान – नई दिल्ली
दिनांक – 21.11.2023

हस्ताक्षर
***महानिदेशक,* लेखा परीक्षा**
(केंद्रीय व्यय)

पृथक लेखा परीक्षा रिपोर्ट का अनुलग्नक

1. आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली की पर्याप्तता

रा.शै.अ.प्र.प. का एक आंतरिक लेखा परीक्षा स्कंध है, तथापि रा.शै.अ.प्र.प. की आंतरिक लेखा परीक्षा प्रणाली को निम्नानुसार सुदृढ़ करने की आवश्यकता है —

- वर्ष 2022–23 के दौरान सभी 12 एककों की आंतरिक लेखा परीक्षा की योजना की गई थी, परंतु 2022–23 के दौरान किसी भी एकक की लेखा परीक्षा नहीं की गई।
- रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय की लेखा परीक्षा आज तक संचालित नहीं की गई है।
- आपत्तियों के निपटान हेतु समुचित अनुवर्ती कार्रवाई नहीं की गई, चूँकि 31.03.2023 को 486 आंतरिक लेखा परीक्षा पैरा बाकी थे।

2. आंतरिक नियंत्रण प्रणाली की अपर्याप्तता

रा.शै.अ.प्र.प. की आंतरिक नियंत्रण प्रणाली पर्याप्त नहीं है क्योंकि —

- व्यय नियंत्रण रजिस्टर और अनुबंधों के रजिस्टर का रख-रखाव न करना।
- कुछ परियोजनाएँ पिछले तीन वर्षों से गतिविधिहीन हैं।
- प्रकाशन प्रभाग के खाता संख्या 10137881342 और रा.शै.अ.प्र.प. मुख्यालय खाता संख्या 10137881331 के बैंक समाधान विवरण में भारी मात्रा में असमाधानित राशि है।
- अचल संपत्तियों और माल-सूची का नियमित भौतिक सत्यापन न करना।

3. स्थायी परिसंपत्तियों के प्रत्यक्ष सत्यापन की प्रणाली

- रा.शै.अ.प्र.प. (मुख्यालय) की भूमि एवं भवन का प्रत्यक्ष सत्यापन मार्च, 2022 तक किया जा चुका है।
- रा.शै.अ.प्र.प. (मुख्यालय) की अन्य स्थायी परिसंपत्तियों का प्रत्यक्ष सत्यापन 2016–17 तक किया जा चुका है
- रा.शै.अ.प्र.प. (मुख्यालय) के पुस्तकालय का प्रत्यक्ष सत्यापन मार्च, 2022 तक किया गया है और 178 पुस्तकों के गुम होने की सूचना है।
- रा.शै.अ.प्र.प. की शेष 12 इकाइयों के प्रत्यक्ष सत्यापन के संबंध में सूचना लेखा परीक्षा को प्रस्तुत नहीं की गई थी।

4. वस्तु सूची के प्रत्यक्ष सत्यापन की प्रणाली

- रा.शै.अ.प्र.प. (मुख्यालय) की स्टेशनरी और उपभोग्य सामग्रियों का प्रत्यक्ष सत्यापन अगस्त, 2021–22 तक किया गया था।
- रा.शै.अ.प्र.प. (प्रकाशन) की पुस्तकालय पुस्तकों का प्रत्यक्ष सत्यापन सितंबर, 2022 तक आयोजित किया गया था।

5. सांविधिक देय के भुगतान में नियमितता

दिनांक 31.03.2023 को वैधानिक बकाया के संबंध में छह महीने से अधिक का कोई भुगतान बकाया नहीं था।

वर्ष 2022–23 के दौरान जारी किए गए प्रकाशन

पाठ्यपुस्तकें

कक्षा 1

- *रिमझिम – 1*
- *मैथ-मैजिक – 1*
- *गणित का जादू – 1*
- *मैरीगोल्ड – 1*
- *रेनड्रॉप्स बुक-I (विशेष शृंखला)*

कक्षा 2

- *रिमझिम – 2*
- *मैथ-मैजिक – 2*
- *गणित का जादू – 2*
- *मैरीगोल्ड – 2*
- *रेनड्रॉप्स बुक – II (विशेष शृंखला)*

कक्षा 3

- *रिमझिम – 3*
- *मैथ-मैजिक – 3*
- *गणित का जादू – 3*
- *मैरीगोल्ड – 3*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*
- *लुकिंग अराउंड (ई.वी.एस.)*

कक्षा 4

- *रिमझिम – 4*
- *मैरीगोल्ड – 4*
- *मैथ-मैजिक – 4*
- *गणित का जादू – 4*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*
- *लुकिंग अराउंड (ई.वी.एस.)*

कक्षा 5

- *रिमझिम – 5*
- *मैरीगोल्ड – 5*
- *मैथ-मैजिक – 5*
- *गणित का जादू – 5*
- *आस-पास (ई.वी.एस.)*
- *लुकिंग अराउंड (ई.वी.एस.)*

कक्षा 6

- *वसंत – 1*
- *दूर्वा – 1*
- *रुचिरा, भाग – 1*
- *बाल राम कथा (हिंदी पूरक पठन)*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *साइंस*
- *विज्ञान*
- *हनीसकल (इंग्लिश रीडर)*
- *ए पैक्ट विद दि सन (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *दि अर्थ—अवर हैबिटेट*
- *पृथ्वी—हमारा आवास*
- *सोशल एंड पॉलिटिकल लाइफ*
- *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन*
- *अवर पास्ट्स – 1*
- *हमारे अतीत – 1*

कक्षा 7

- *वसंत – 2*
- *बाल महाभारत कथा (हिंदी पूरक पठन)*
- *दूर्वा – 2 (द्वितीय भाषा)*
- *रुचिरा, भाग – 2*
- *हनीकॉम्ब (इंग्लिश टेक्स्टबुक)*
- *ऐन ऐलियन हैंड (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *साइंस*
- *विज्ञान*
- *अवर पास्ट्स – 2*

- *हमारे अतीत – 2*
- *अवर एनवायरमेंट*
- *हमारा पर्यावरण*
- *सोशल एंड पॉलिटिकल लाइफ – 2*
- *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – 2*

कक्षा 8

- *वसंत – 3*
- *भारत की खोज (हिंदी पूरक पठन)*
- *दूर्वा – 3*
- *रुचिरा – 3*
- *हनीड्यू*
- *इट सो हैपिंड (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *साइंस*
- *विज्ञान*
- *रिसोर्सेज एंड डेवलपमेंट*
- *संसाधन और विकास*
- *सोशल एंड पॉलिटिकल लाइफ – 3*
- *सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन – 3*
- *अवर पास्ट्स – 3*
- *हमारे अतीत – 3*

कक्षा 9

- *क्षितिज, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *कृतिका, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *स्पर्श, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *संचयन, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *बीहाइव (इंग्लिश टेक्स्टबुक, इलेक्टिव कोर्स)*
- *मोमेंट्स (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर)*
- *शेमुषी, भाग – 1*
- *अभ्यासवान् भव, अभ्यास पुस्तिका*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *साइंस*
- *विज्ञान*
- *इकोनॉमिक्स*
- *अर्थशास्त्र*
- *डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स*
- *लोकतांत्रिक राजनीति*
- *इंडिया एंड दि कंटेंपरेरी वर्ल्ड – 1*
- *भारत और समकालीन विश्व – 1*
- *कंटेंपररी इंडिया – 1*
- *समकालीन भारत – 1*
- *वर्ड एंड एक्सप्रेशंस – 1(वर्क बुक इन इंग्लिश)*
- *हेल्थ एंड फिजिकल एजुकेशन*
- *इंफॉर्मेशन एंड कम्यूनिकेशन टेक्नोलॉजी*

कक्षा 10

- *क्षितिज, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *कृतिका, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *स्पर्श, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *संचयन, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *फर्स्ट फ्लाइट (इंग्लिश टेक्स्टबुक, इलेक्टिव कोर्स)*
- *फुटप्रिंट्स विदाउट फीट (इंग्लिश सप्लीमेंटरी रीडर, इलेक्टिव कोर्स)*
- *शेमुषी, भाग – 2*
- *व्याकरणवीथि: (कक्षा 9–10, संस्कृत व्याकरण)*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *साइंस*
- *विज्ञान*
- *इंडिया एंड दि कंटेंपरेरी वर्ल्ड – 2*
- *भारत और समकालीन विश्व – 2*
- *डेमोक्रेटिक पॉलिटिक्स – 2*
- *लोकतांत्रिक राजनीति – 2*
- *कंटेंपररी इंडिया – 2*
- *समकालीन भारत – 2*
- *अंडरस्टैंडिंग इकोनॉमिक डेवलपमेंट*
- *आर्थिक विकास की समझ*
- *वर्ड एंड एक्सप्रेशंस,*

- *हेल्थ एंड फिजिकल एजुकेशन*
- *इंफार्मेशन एंड कम्युनिकेशन टेक्नोलॉजी*

कक्षा 11

- *आरोह, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *वितान, भाग – 1 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)*
- *अंतरा, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *अंतराल, भाग – 1 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)*
- *वोवन वड्‍ र्स (इंग्लिश इलेक्टिव कोर्स)*
- *भाष्वती, भाग – 1*
- *शाश्वती, भाग – 1*
- *अभ्यासवान् भव, अभ्यास पुस्तिका*
- *मैथमैटिक्स*
- *गणित*
- *बायोलॉजी*
- *जीवविज्ञान*
- *केमिस्ट्री, पार्ट – 1*
- *केमिस्ट्री, पार्ट – 2*
- *रसायन विज्ञान, भाग – 1*
- *रसायन विज्ञान, भाग – 2*
- *फिजिक्स, पार्ट – 1*
- *फिजिक्स, पार्ट – 2*
- *भौतिकी, भाग – 1*
- *भौतिकी, भाग – 2*
- *थीम्स ऑफ वर्ल्ड हिस्ट्री*
- *विश्व इतिहास के कुछ विषय*
- *फंडामेंटल्स ऑफ फिजिकल जियोग्राफी*
- *भौतिक भूगोल के मूल सिद्धांत*
- *इंडिया : फिजिकल एनवायरमेंट*
- *भारत : भौतिक पर्यावरण*
- *प्रैक्टिकल वर्क इन जियोग्राफी, पार्ट – 1*
- *भूगोल में प्रयोगात्मक कार्य, भाग – 1*
- *स्टैटिस्टिक्स टू इकोनॉमिक्स*
- *अर्थशास्त्र में सांख्यिकी*
- *इंडियन इकोनॉमिक डेवलपमेंट*
- *भारतीय अर्थव्यवस्था का विकास*
- *इंडियन कांस्टीट्यूशन एट वर्क*
- *भारत का संविधान : सिद्धांत और व्यवहार*
- *पॉलिटिकल थ्योरी – 2*
- *राजनीति सिद्धांत – 2*
- *इंट्रोड्यूसिंग सोशियोलॉजी*
- *समाजशास्त्र का परिचय*
- *अंडरस्टैंडिंग सोसायटी*
- *समाज का बोध*
- *बिजनेस स्टडीज*
- *व्यावसायिक अध्ययन*
- *एकाउंटेंसी, पार्ट – 1*
- *लेखाशास्त्र, भाग –1*
- *एकाउंटेंसी, पार्ट – 2*
- *लेखाशास्त्र, भाग – 2*
- *अभिव्यक्ति और माध्यम*
- *साइकोलॉजी*
- *मनोविज्ञान का परिचय*
- *सृजन – 1 (टेक्स्टबुक इन क्रिएटिव राइटिंग एंड ट्रांसलेशन)*
- *लिविंग क्राफ्ट ट्रेडिशन ऑफ इंडिया (टेक्स्टबुक इन हेरिटेज क्राफ्ट्स)*
- *द स्टोरी ऑफ ग्राफिक डिजाइन*
- *भारतीय हस्तकला की परंपराएँ*
- *एक्सप्लोरिंग द क्राफ्ट ट्रेडिशन इन इंडिया*
- *ग्राफिक डिजाइन : एक कहानी*
- *भारतीय हस्तकला परंपराओं की खोज*
- *एन इंट्रोडक्शन टू इंडियन आर्ट*
- *ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंस, पार्ट – 1*
- *ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंस, पार्ट – 2*
- *मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 1*
- *मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 2*
- *इंफॉर्मेशन प्रैक्टिसेस, कक्षा 11*
- *बायोटेक्नोलॉजी, कक्षा 11*
- *कंप्यूटर साइंस, कक्षा 11*

- हेल्थ एंड फिजिकल एजुकेशन, कक्षा 11
- संगीत— तबला एवं पखावज, कक्षा 11

कक्षा 12

- आरोह, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)
- वितान, भाग – 2 (हिंदी कोर पाठ्यक्रम)
- अंतरा, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)
- अंतराल, भाग – 2 (हिंदी इलेक्टिव पाठ्यक्रम)
- फ्लोमिंगो (इंगलिश कोर कोर्स)
- विसटास (इंगलिश कोर कोर्स)
- कैलाइडोस्कोप (इंगलिश इलेक्टिव कोर्स)
- भाष्वती, भाग – 2
- शाश्वती, भाग – 2
- मैथेमैक्टिस, पार्ट – 1
- मैथेमैक्टिस, पार्ट – II
- गणित, भाग – 1
- गणित, भाग – 2
- बायोलॉजी
- जीवविज्ञान
- केमिस्ट्री, पार्ट – 1
- केमिस्ट्री, पार्ट – 2
- रसायन विज्ञान, भाग – 1
- रसायन विज्ञान, भाग – 2
- फिजिक्स, पार्ट – 1
- फिजिक्स, पार्ट – 2
- भौतिकी, भाग – 1
- भौतिकी, भाग – 2
- थीम्स इन इंडियन हिस्ट्री, पार्ट – 1
- थीम्स इन इंडियन हिस्ट्री, पार्ट – 2
- थीम्स इन इंडियन हिस्ट्री, पार्ट – 3
- भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग – 1
- भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग – 2
- भारतीय इतिहास के कुछ विषय, भाग – 3
- फंडामेंटल ऑफ फिजिकल जियोग्राफी
- मानव भूगोल के मूल सिद्धांत
- प्रैक्टिकल वर्क इन जियोग्राफी, पार्ट – 2
- भूगोल में प्रयोगात्मक कार्य, भाग – 2
- इंट्रोडक्टरी माइक्रोइकोनॉमिक्स
- व्यष्टि अर्थशास्त्र : एक परिचय
- इंट्रोडक्टरी माइक्रोइकोनॉमिक्स
- समष्टि अर्थशास्त्र : एक परिचय
- कंटेंपरेरी वर्ल्ड पॉलिटिक्स
- समकालीन विश्व राजनीति
- पॉलिटिक्स इन इंडिया सिंस इंडिपेंडेंस
- स्वतंत्र भारत में राजनीति
- सोशल चेंज एंड डेवलपमेंट इन इंडिया
- भारत में सामाजिक परिवर्तन और विकास
- इंडियन सोसायटी
- भारतीय समाज
- बिजनेस स्टडीज, पार्ट – 1
- बिजनेस स्टडीज, पार्ट – 2
- व्यावसायिक अध्ययन, भाग – 1
- व्यावसायिक अध्ययन, भाग–2
- एकाउंटेंसी 1 — नॉट फॉर प्रॉफिट आर्गेनाइजेशन एंड पार्टनरशिप एकाउंट्स
- लेखाशास्त्र 1 — अलाभकारी संस्थाएँ एवं साझेदारी खाते
- एकाउंटेंसी 2 — कंपनी एकाउंट्स एंड एनालिसिस ऑफ फाइनेंशियल स्टेटमेंट्स
- लेखाशास्त्र 2 — कंपनी खाते एवं वित्तीय विवरणों का विश्लेषण
- साइकोलॉजी
- मनोविज्ञान का परिचय
- एकाउंटेंसी — कंप्यूटराइज्ड एकाउंटेंसी सिस्टम
- क्राफ्ट ट्रेडिशन ऑफ इंडिया (टेक्स्टबुक इन हेरिटेज क्राफ्ट)
- ग्राफिक डिजाइन
- सृजन – 2 (टेक्स्टबुक इन क्रिएटिव राइटिंग एंड ट्रांसलेशन)
- टूवर्ड्स ए न्यू एज ऑफ ग्राफिक डिजाइन

- ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंसेज, पार्ट – 1
- ह्यूमन इकोलॉजी एंड फैमिली साइंसेज, पार्ट – 2
- मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 1
- मानव पारिस्थितिकी एवं परिवार विज्ञान, भाग – 2
- सूक्ष्म रसायन प्रयोगशाला किट निर्देशिका
- कंप्यूटर साइंस, कक्षा 12
- एन इंट्रोडक्शन ऑफ इंडियन आर्ट – 2 कक्षा 12
- इंफॉर्मेटिक्स प्रैक्टिसेस, कक्षा 12
- बायोटेक्नोलॉजी, कक्षा XII

उर्दू की पाठ्यपुस्तकें

कक्षा 1

- रियाज़ी का जादू – 1
- इब्तेदाई उर्दू – 1

कक्षा 2

- रियाज़ी का जादू – 2
- इब्तेदाई उर्दू – 2

कक्षा 3

- रियाज़ी का जादू – 3
- आस-पास (ई.वी.एस.)
- इब्तेदाई उर्दू – 3

कक्षा 4

- रियाज़ी का जादू – 4
- इब्तेदाई उर्दू – 4
- आस-पास (ई.वी.एस.)

कक्षा 5

- रियाज़ी का जादू – 5
- इब्तेदाई उर्दू – 5
- आस-पास (ई.वी.एस.)

कक्षा 6

- अपनी ज़बान – 1
- उर्दू गुलदस्ता (सप्लीमेंटरी रीडर)
- हिसाब
- साइंस
- जमीन हमारा मस्कन
- हमारे माज़ी – 1
- समाजी और सियासी ज़िंदगी – 1
- जान-पहचान (दूसरी भाषा)

कक्षा 7

- अपनी ज़बान – 2
- उर्दू गुलदस्ता (सप्लीमेंटरी रीडर)
- हिसाब
- साइंस
- हमारे माज़ी – 2
- समाजी और सियासी ज़िंदगी
- जान-पहचान, (दूसरी भाषा)
- दूर-पास (तीसरी भाषा)
- हमारा माहौल (भूगोल)

कक्षा 8

- अपनी ज़बान
- उर्दू गुलदस्ता (सप्लीमेंटरी रीडर)
- साइंस
- हिसाब
- वसाइ और तरक्की (ज्योग्राफी)
- समाजी और सियासी ज़िंदगी
- हमारे माज़ी – 3
- जान-पहचान (दूसरी भाषा)
- दूर-पास (तीसरी भाषा)

कक्षा 9

- नवा-ए-उर्दू
- गुलज़ार-ए-उर्दू (सप्लीमेंटरी रीडर)
- रियाज़ी
- साइंस
- जम्हूरी सियासत – 1
- असरी हिंदुस्तान – 1
- हिंदुस्तान और असरी दुनिया – 1
- इल्म-ए-माशियात (इकोनॉमिक्स)

- जान-पहचान (दूसरी भाषा)
- दूर-पास (तीसरी भाषा)
- सब रंग

कक्षा 10

- नवा-ए-उर्दू
- गुलज़ार-ए-उर्दू (सप्लीमेंटरी रीडर)
- रियाज़ी
- साइंस
- हिंदुस्तान और असरी दुनिया –2
- जम्हूरी सियासत – 2
- माशी तरक्की की समझ
- जान-पहचान (दूसरी भाषा)
- दूर-पास (तीसरी भाषा)
- सब रंग
- असरी हिंदुस्तान – 2

कक्षा 11

- गुलिस्तान-ए-अदब
- ख्याबान-ए-उर्दू (सप्लीमेंटर रीडर)
- रियाज़ी
- तबीयात, भाग –1
- तबीयात, भाग – 2
- शुमारियात बराए माशियात
- हिंदुस्तानी तबाई माहौल
- हिंदुस्तान की माशी तरक्की
- समाजियत का तआर्रूफ़
- हिंदुस्तानी आईना – उसूल और काम
- सियासी नज़रिया
- कारोबारी उलूम
- नफ़सीयात का तआर्रूफ़
- तबाई जुगराफ़िया के मुबादियात
- जुगराफ़िया में अमली काम
- तारीख-ए-अलम पर माबनी मौज़ूआत (हिस्ट्री)
- समाजियत का तआरुफ़
- मुताला-ए- मुआशिरा
- कीमिया, भाग – 1
- कीमिया, भाग – 2
- हयातियात, भाग –1
- हयातियात, भाग – 2
- खातादारी, भाग – 1
- खातादारी, पार्ट – 2
- धनक (सप्लीमेंटर रीडर)
- नई आवाज़ (कोर उर्दू टेक्स्टबुक)
- हिंदुस्तान में दस्तकारी की ज़िंदा रिवायत
- इंसानी माहौलियात और उलूम खानदानदारी, भाग –1
- इंसानी माहौलियात और उलूम खानदानदारी, भाग – 2
- तखलीकी जौहर – 1

कक्षा 12

- गुलिस्तान-ए-अदब
- खयाबान-ए-उर्दू (सप्लीमेंटरी रीडर)
- रियाज़ी, भाग –1
- रियाज़ी, भाग – 2
- तबीयात, भाग – 1
- तबीयात, भाग – 2
- कीमिया, भाग – 1
- कीमिया, भाग – 2
- हयातियात
- तारीख-ए-हिंद के मौज़ूआत, भाग – 1
- तारीख-ए-हिंद के मौज़ूआत, भाग – 2
- तारीख-ए-हिंद के मौज़ूआत, भाग – 3
- खातादारी, भाग – 1
- खातादारी, भाग – 2
- कुल्ली माशीयत का तआरुफ़
- जुजवी माशीयुित का तआरुफ़
- धनक (सप्लीमेंटरी रीडर)
- इंसानी जुगराफ़िया के बुनियादी उसूल
- जुगराफ़िया में अमली काम
- हिंदुस्तान— अवाम और मुआशियत
- हिंदुस्तान में समाजी तब्दीली और तरक्की
- इंसानी जुगराफ़िया के मुबादियात

- *असरी आलमी सियासत*
- *आज़ादी के बाद हिंदुस्तानी सियासत*
- *हिंदुस्तानी समाज*
- *कारोबारी उलूम, भाग – 1*
- *कारोबारी उलूम, भाग – 2*
- *नफ़सियात*
- *नई आवाज़ (कोर उर्दू टेक्स्टबुक)*
- *उर्दू कवायद और इंशा (माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए)*
- *उर्दू ज़बान-ओ अदब की तारीख (माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए)*
- *उर्दू की अदबी असनाफ़ (माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए)*
- *उर्दू कवायद और इंशा (माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए)*
- *उर्दू की अदबी असनाफ़ (माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक स्तर के लिए)*
- *तखलीकी जौहर – 2*

व्यावसायिक शिक्षा की पुस्तकें

- *डोमेस्टिक डाटा एंट्री ऑपरेटर, कक्षा 12*
- *फूड एंड बेवरेज सर्विस ट्रेनी, कक्षा 11*
- *एम्प्लॉयबिलिटी स्किल्स , कक्षा 11*
- *स्टोर ऑपरेशन्स असिस्टेंट, कक्षा 9*
- *जनरल ड्यूटी असिस्टेंट, कक्षा 12*
- *वाहन सेवा तकनीशियन, कक्षा 9*
- *रोजगार क्षमता कौशल, कक्षा-9*
- *नि:शस्त्र सुरक्षा गार्ड, कक्षा 9*
- *एम्प्लॉयबिलिटी स्किल्स, कक्षा 9*
- *एम्प्लॉयबिलिटी स्किल्स, कक्षा 10*
- *एम्प्लॉयबिलिटी स्किल्स, कक्षा 12*
- *हस्त कशीदाकार (अड्डावाला), कक्षा 9*
- *सूक्ष्म सिंचाई तकनीशियन कक्षा, 11*
- *सहायक सौंदर्य थेरेपिस्ट, कक्षा 9*
- *डोमेस्टिक डाटा एंट्री ऑपरेटर, कक्षा 10*
- *एम्प्लॉयबिलिटी स्किल्स, कक्षा 9*

सेतु पाठ्यक्रम की पुस्तकें

- *प्लेइंग विद् नंबर्स, लेवल-2*
- *प्लेइंग विद् नंबर्स, लेवल-3*
- *नवारंभ, भाग – 2, स्तर-1*

उदाहरणात्मक समस्याएँ और प्रयोगशाला पुस्तिका

- *मैनुअल ऑफ मैथेमेटिक्स टीचिंग एड्स फॉर प्राइमरी स्कूल्स*
- *मैनुअल ऑफ अपर प्राइमरी मैथमेटिक्स किट*
- *गणित किट, निर्देश पुस्तिका (उच्चतर माध्यमिक)*
- *लैबोरेटरी मैनुअल मैथेमेटिक्स, कक्षा 1–8*
- *भौतिकी प्रयोगशाला पुस्तिका, कक्षा 12*
- *लैबोरेटरी मैनुअल कैमिस्ट्री, कक्षा 12*
- *फिजिक्स एक्जेम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 12*
- *विज्ञान प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 9*
- *लैबोरेटरी मैनुअल फिजिक्स, कक्षा 12*
- *बायोलॉजी एक्जेम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 11*
- *बायोलॉजी एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 12*
- *मैथेमेटिक्स एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 9*
- *मैनुअल फॉर जियोग्राफी किट, कक्षा 6–10*
- *साइंस एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा–8*
- *उच्चतर माध्यमिक भौतिकी प्रयोगशाला किट मैनुअल, कक्षा 11–12*
- *गणित अधिगम किट, कक्षा 1–2*
- *प्रयोगशाला पुस्तिका रसायन, कक्षा 11*
- *लैबोरेटरी मैनुअल साइंस*
- *मैथेमेटिक्स किट*
- *लैबोरेटरी मैनुअल साइंस, कक्षा 9*
- *मैथेमेटिक्स एक्जैम्प्लर, कक्षा 7*
- *प्रयोगशाला पुस्तिका रसायन, कक्षा 12*
- *उच्च प्राथमिक गणित किट, निर्देश पुस्तिका*
- *भौतिकी प्रयोगशाला पुस्तिका, कक्षा 11*
- *लैबोरेटरी मैनुअल मैथमेटिक्स, सेकेंडरी स्टेज*
- *मैनुअल फॉर हायर सेकेंडरी मैथमेटिक्स किट*

- गणित प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 9
- प्रयोगशाला पुस्तिका विज्ञान, कक्षा 9
- विज्ञान प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 10
- प्रयोगशाला पुस्तिका विज्ञान, कक्षा 10
- मैथेमेटिक्स एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 6
- मैथेमेटिक्स एक्जैम्प्लर प्रॉब्लम्स, कक्षा 10
- लैबोरेटरी मैनुअल, बायोलॉजी, कक्षा 12
- गणित प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 10
- रसायन प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 12
- गणित प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 12
- भौतिकी प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 12
- जीव विज्ञान प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 11
- भौतिकी प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 11
- प्रयोगशाला पुस्तिका गणित
- गणित किट, निर्देश पुस्तिका
- प्रयोगशाला पुस्तिका रसायन, कक्षा 11
- गणित प्रश्न प्रदर्शिका, कक्षा 11
- माध्यमिक गणित किट, निर्देश पुस्तिका
- उच्च प्राथमिक विज्ञान किट मैनुअल कक्षा 6,7,8

अनुपूरक पाठमाला

- एनी बेसेंट
- राजा रवि वर्मा
- संगीत का लहराता सागर
- बहुरूप गाँधी
- होमियोपैथी (एन इंट्रोडक्शन फॉर चिल्ड्रेन)
- चलो सर्कस चलें
- ऐसे जमा रेल का खेल
- द एम्प्टी हाउस एंड अदर स्टोरीज (सप्लीमेंट्री रीडर)
- दिस इज जस्ट टू से एंड अदर स्टोरीज (सप्लीमेंट्री रीडर)
- समझ का माध्यम
- आजादी की लड़ाई का सपना
- नई-नई कहानियाँ
- द सेलुलर जेल इन अवर फ्रीडम स्ट्रगल
- सेलुलर जेल और हमारी आजादी की जद्दोजहद
- डिस्कवर्ड क्वेशन्स
- सोलर सिस्टम फॉर एवरीबडी
- मेघनाद साहा
- भारत की खोज
- तारा की अलवर यात्रा
- नन्हा राजकुमार
  एन्टोनी द सेंट एक्सपेरी
- बहादुर दोस्त
- सावन का मेला
- घर की खोज
- कौवे का बच्चा
- मेरा घर
- चिड़ियाघर की सैर
- प्यारे-न्यारे बोल
- सतरंगी गेंद
- हमारी मदद कौन करेगा?

बाल साहित्य

- गिल्ली डंडा
- पफ्ट रोटीस
- पत्तल (द लीफ प्लेट्स)
- वॉव दैट वाज फंक्शनल मोनी
- मुन-मुन और मुन्नू
- आउट
- शरबत
- हाइड एंड सीक
- यम्मी गुलगुले
- द फ्लोरल हेयरक्लिप
- आउट काइट
- मिली बैलन
- रानी टू
- जीत व्हिसल
- द पैरेट

- हिक हिक हिकप्स
- राइस
- ए बॉल ऑफ वूप
- मिठाई
- लेट्स मेक ए व्हिसल
- नानी ग्लासेस
- राइप मैंगो
- कॉर्न
- पीलू कैल्फ गुल्ली
- तबला
- वॉट डू आई गेट फॉर मी?
- मिली की साइकिल
- टी
- गोलगप्पे
- बबली'ज ढोलक
- फन एट द पोंडी
- जस्ट लाइक मी
- स्विंग्स
- मिली हेयर
- तोसिया ड्रीम
- मौसी सॉक
- द हॉपिंग सॉक
- चंदू चाट
- कैच मी इफ यू कैन
- नॉक नॉक
- लोनली गोल्डी
- ग्रम्पी गीता
- हैलो रेन
- वी आर वन
- द मैजिक ऑफ इनोसेंस
- लेजी जीजू
- डकी लिटिल
- ए गजरा फॉर अम्मा
- बेस्ट ऑफ ऑल
- गो ग्रीन

बरखा शृंखला (हिंदी)

- ऊन का गोला
- आउट
- पत्तल
- चिमटी का फूल
- हिच-हिच हिचकी
- जीत की पिपनी
- चावल
- हमारी पतंग
- छुपन छुपाई
- मिठाई
- मुनमुन और मुन्नू
- मोनी
- तोता
- फूली रोटी
- गिल्ली डंडा
- मीठे-मीठे गुलगुले
- मिली का गुब्बारा
- मज़ा आ गया
- शरबत
- रानी भी
- गेहूँ
- मिली के लिए क्या लूँ
- भुट्टा
- बबली का बाजा
- चाय झूला
- मिली की साइकिल
- मेरे जैसी
- चलो पिपनी बनाएँ
- मिली के बाल
- तबला
- गोलगप्पे
- पीलू की गुल्ली
- नानी का चश्मा
- पका आम

- *मौसी की मोज़े*
- *तोसिया का सपना*
- *चुन्नी और मुन्नी*
- *तालाब के मज़े*
- *कूदती जुराबें*
- *पतंग के पेंच*

बरखा शृंखला (उर्दू)

- *चिमटी का फूल*
- *हिच हिच हिचकी*
- *मोनी*
- *चावल*
- *पत्तल*
- *शरबत*

शिक्षक संदर्शिका

- *आर्ट एजुकेशन, टीचर्स हैंडबुक, कक्षा 1*
- *आर्ट एजुकेशन, टीचर्स हैंडबुक, कक्षा 2*
- *आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग, कक्षा 1–5*
- *आर्ट इंटीग्रेटेड लर्निंग, कक्षा 6–8*
- *रेडीनेस इन लैंग्वेज एंड लैंग्वेज टीचिंग बुक – 1*

रिसर्च रिपोर्ट्स/मोनोग्राफ्स

- *असेस्मेंट एंड अप्रेजल इन गाइडेंस एंड काउंसिलिंग, मॉड्यूल-6*
- *स्पेशल कंसंर्स फॉर काउंसलिंग, मॉड्यूल-9*
- *कैरिअर डेवलपमेंट – 1 मॉड्यूल-4*
- *बेसिक स्टेटिस्टिक्स इन गाइडेंस एंड काउंसलिंग – 2 मॉड्यूल-14*
- *असेस्मेंट एंड अप्रेजल इन गाइडेंस एंड काउंसलिंग – 2 मॉड्यूल-13*
- *इंट्रोडक्शन टू गाइडेंस, मॉड्यूल-1*
- *गाइडेंस फॉर ह्यूमन डेवलपमेंट एंड एडजस्टमेंट, मॉड्यूल-3*
- *कैरिअर इंफॉर्मेशन इन गाइडेंस एंड काउंसलिंग – 1, मॉड्यूल-5*
- *डेवलपिंग मेंटल हेल्थ एंड कॉपिंग स्किल्स, मॉड्यूल-10*
- *गाइडेंस फॉर एक्शन, मॉड्यूल-8*
- *कैरिअर डेवलपमेंट – 2, मॉड्यूल-।।*
- *कैरिअर इंफॉर्मेशन इन गाइडेंस एंड काउंसलिंग – 2, मॉड्यूल-12*
- *द काउंसलिंग प्रोसेस एंड स्ट्रेटेजिस, मॉड्यूल-2*
- *विद्या प्रवेश मॉड्यूल (अंगेजी), कक्षा 1–2*
- *विद्या प्रवेश मॉड्यूल, कक्षा 1–2*
- *गाइडलाइन्स फॉर 50 आवर ऑफ कंटीन्युअस प्रोफेशनल डेवलपमेंट फॉर टीचर्स, हेड टीचर्स एंड टीचर एजुकेटर्स, एन.ई.पी. 2020*
- *रेडीनेस एक्टिविटीस फॉर बिगिनर्स – 2*
- *स्कूल करिकुलम स्ट्रक्चर एंड प्रैक्टिस*
- *मेंटल हेल्थ एंड वेल-बीइंग ऑफ स्कूल स्टूडेंट्स, ए सर्वे, 2022*
- *सेलेबस फॉर टू इयर बैचलर ऑफ एजुकेशन बी.एड. कोर्स*
- *वेदपारिजात, उच्चतर माध्यमिक स्तर*
- *सूक्ति सौरभम् प्रथम पुष्पम्, उच्चतर माध्यमिक स्तर*
- *सूक्ति सौरभम् द्वितीय पुष्पम्, उच्चतर माध्यमिक स्तर*
- *सूक्ति सौरभम् तृतीय पुष्पम्, उच्चतर माध्यमिक स्तर*
- *प्रयोगशाला पुस्तिका विज्ञान, कक्षा 9*
- *आधार पत्र 3.5*
- *पर्यावरण शिक्षा— करें, सीखें और बताएँ, कक्षा 9, परियोजना पुस्तिका*
- *कला, संगीत, नृत्य और रंगमंच, आधार पत्र 1.7*
- *अर्थक्वेक*
- *स्वाइन फ्लू*
- *हाउ इट हैपन्ड*
- *लड़कियों की तालीम के लिए बेगमात-ए-भोपाल की खिदमत*
- *प्रोजेक्शन एंड ट्रेंड्स ऑफ स्कूल एनरोलमेंट बाय 2025*

- *डेवलपिंग मेंटल हेल्थ एंड कॉपिंग स्किल्स, मॉड्यूल-10*
- *वर्क एंड एजुकेशन, पोस्टिंग पेपर 3.7*
- *लेट अस रीड एंड अंडरस्टैंड*
- *बेसिक्स इन एजुकेशन, बी.एड. कोर्स*
- *लर्नर एंड लर्निंग, बी.एड. कोर्स*
- *समझ का माध्यम*
- *एनवायरमेंट एजुकेशन, कक्षा 6*
- *एनवायरमेंट एजुकेशन, कक्षा 7*
- *एनवायरमेंट एजुकेशन, कक्षा 8*
- *एनवायरमेंट एजुकेशन, कक्षा 10*
- *भारत— सांस्कृतिक विविधता में एकता*
- *द स्टोरी ऑफ नई तालीम*
- *इमेज ऑफ वुमैन एंड करिकुलम इन मदर टंग*
- *पढ़ना है समझना*
- *नॉर्थ ईस्ट इंडिया— पीपल, हिस्ट्री एंड कल्चर*
- *वीर गाथा*
- *सोशल थिंकर्स ऑफ मॉडर्न इंडिया*
- *वॉटर— एवरी ड्रॉप काउंट्स*
- *लैबोरेटरी मैनुअल मैथमेटिक्स, सेकेंडरी स्टेज*
- *रैनड्रॉप यूजर्स मैनुअल, कक्षा 1–5*
- *पढ़ने की दहलीज पर*
- *लिखने की शुरुआत— एक संवाद*
- *सुनामी*

पत्रिकाएँ

- *प्राथमिक शिक्षक, जनवरी 2022*
- *प्राथमिक शिक्षक, अक्तूबर 2021*
- *स्कूल साइंस, मार्च 2018*
- *स्कूल साइंस, क्वाटर्ली जर्नल, जून–सितंबर, 2017*
- *स्कूल साइंस, क्वाटर्ली जर्नल, मार्च 2017*
- *द प्राइमरी टीचर, जनवरी 2018*
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा, जुलाई 2021*
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा, अक्तूबर 2020*
- *भारतीय आधुनिक शिक्षा, अंक-3, जनवरी 2021*
- *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू, वॉल्यूम 58, जुलाई 2020*
- *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, मई 2021*
- *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन, अगस्त 2021*
- *फिरकी बच्चों की, जून 2022*
- *फिरकी बच्चों की, दिसंबर 2022*

मूल्यरहित प्रकाशन

- *वार्षिक लेखा 2021–22*
- *एनुअल अकाउंट 2021–22*
- *वार्षिक रिपोर्ट 2021–22*
- *एनुअल रिपोर्ट 2021–22*
- *करिकुलम इन फ्रेमवर्क फॉर टीचर एजुकेशन*
- *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क 2005*
- *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज 2022*
- *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005*
- *स्कूल करिकुलम, स्ट्रक्चर एंड प्रैक्टिस*
- *कक्षा 6 की पाठ्यपुस्तकों में पुनर्संयोजित पाठ्य सामग्री की सूची*
- *कक्षा 7 की पाठ्यपुस्तकों में पुनर्संयोजित पाठ्य सामग्री की सूची*
- *कक्षा 8 की पाठ्यपुस्तकों में पुनर्संयोजित पाठ्य सामग्री की सूची*
- *कक्षा 9 की पाठ्यपुस्तकों में पुनर्संयोजित पाठ्य सामग्री की सूची*
- *कक्षा 10 की पाठ्यपुस्तकों में पुनर्संयोजित पाठ्य सामग्री की सूची*
- *कक्षा 11 की पाठ्यपुस्तकों में पुनर्संयोजित पाठ्य सामग्री की सूची*
- *कक्षा 12 की पाठ्यपुस्तकों में पुनर्संयोजित पाठ्य सामग्री की सूची*
- *कला उत्सव 2021: रिपोर्ट*
- *49वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी 2022*
- *राष्ट्रीय अविष्कार सप्ताह 2022–23*
- *एन.सी.ई.आर.टी. की पाठ्यपुस्तकें 2005*
- *एन.सी.ई.आर.टी. के सामान्य प्रकाशन*

प्रकाशन प्रभाग और इसके क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र

क्र.सं.	केंद्र का नाम	शामिल क्षेत्र
1	प्रकाशन प्रभाग रा.शै.अ.प्र.प. परिसर श्री अरबिंदो मार्ग नई दिल्ली – 110 016 फोन – 011-26562708 फैक्स – 011-26851070 ई-मेल – cbm.ncert@nic.in	विदेशी देश, दिल्ली, राजस्थान, जम्मू और कश्मीर, उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, पंजाब, चंडीगढ़, और हिमाचल प्रदेश के भाग तथा उर्दू अकादमी, दिल्ली
2	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. c/o नवजीवन ट्रस्ट बिल्डिंग नवजीवन, अहमदाबाद – 380 014 फोन – 079-27541446	गुजरात, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र और राजस्थान के भाग
3	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. 108, 100 फीट रोड, होस्डेकेरे हेल्ली एक्सटेंशन बनशंकरी फेज-3 बेंगलुरु – 560 085 फोन – 080-26725740	तमिलनाडु, पुदुच्चेरी, केरल, आंध्र प्रदेश, कर्नाटक, लक्षद्वीप, मिनीकॉय और अमिनदिवी द्वीप समूह
4	क्षेत्रीय उत्पादन-सह-वितरण केंद्र प्रकाशन प्रभाग, रा.शै.अ.प्र.प. सी.डब्ल्यू.सी. परिसर (पहला तल) किशोरी मोहन बनर्जी रोड धनकल बस स्टॉप के सामने, पणिहटी कोलकाता – 700 114 फोन – 033-25530454	पश्चिम बंगाल, बिहार, झारखंड, ओडिशा, अंडमान और निकोबार द्वीप समूह और सिक्किम
5	क्षेत्रीय वितरण केंद्र रा.शै.अ.प्र.प., सी.डब्ल्यू.सी. गोडाउन मालीगाँव, गुवाहाटी – 781 011 फोन – 0361-2674869	पूर्वोत्तर राज्य

रा.शै.अ.प्र.प.

परिशिष्ट IX

रा.शै.अ.प्र.प. के संघटक और संकाय

क. राष्ट्रीय शिक्षा संस्थान (एन.आई.ई.)

1. कला एवं सौंदर्यबोध शिक्षा विभाग (डी.ई.ए.ए.)

प्रोफेसर

(i) पवन सुधीर, *विभागाध्यक्ष*
(ii) ज्योत्सना तिवारी

सहायक प्रोफ़ेसर

(iii) शर्बरी बनर्जी

2. प्रारंभिक शिक्षा विभाग (डी.ई.ई.)

प्रोफेसर

(i) सुनीति सनवाल, *विभागाध्यक्ष*
(ii) अनूप कुमार राजपूत
(iii) उषा शर्मा
(iv) संध्या संघई
(v) वीरेंद्र प्रताप सिंह
(vi) पद्मा यादव
(vii) कविता शर्मा
(viii) वरदा मोहन निकल्जे

सह प्रोफेसर

(ix) रमेश कुमार
(x) रोमिला सोनी

सहायक प्रोफेसर

(xi) रीतू चंद्रा (शिक्षा मंत्रालय में प्रतिनियुक्ति पर)
(xii) सरला कुमारी वर्मा

मुख्य अध्यापिका

(xiii) ज्योति कांत प्रसाद

नर्सरी अध्यापिका

(xiv) सुनयना मित्तल
(xv) पूनम

3. विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग (डी.ई.जी.एस.एन.)

प्रोफ़ेसर

(i) एस.सी. चौहान, *विभागाध्यक्ष*
(ii) मोना यादव
(iii) विनय कुमार सिंह

सह प्रोफ़ेसर

(iv) रंजन बिस्वास

4. शैक्षिक मनोविज्ञान और शिक्षा आधार विभाग (डी.ई.पी.एफ़.ई.)

प्रोफ़ेसर

(i) प्रभात कुमार मिश्रा, *विभागाध्यक्ष*
(ii) अंजुम सिबिया, *डीन अकादमिक*

सहायक प्रोफ़ेसर

(iii) श्रद्धा दिलीप धीवाल (09.03.2023 को स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति)
(iv) सुष्मिता चक्रवर्ती
(v) रुचि शुक्ला
(vi) दीपमाला

5. विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एम.)

प्रोफ़ेसर

(i) सुनीता फरक्या, *विभागाध्यक्ष*
(ii) बी.के. त्रिपाठी (31.8.2022 को सेवानिवृत्त)
(iii) दिनेश कुमार
(iv) आर.के. पाराशर
(v) ए.के. वझलवार
(vi) अंजनी कौल
(vii) रचना गर्ग
(viii) रुचि वर्मा
(ix) तिल प्रसाद शर्मा

सह प्रोफ़ेसर

(x) गगन गुप्ता
(xi) सी.वी. शिमरे
(xii) प्रमिला तँवर
(xiii) पुष्पलता वर्मा

6. सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग (डी.ई.एस.एस.)

प्रोफेसर

(i) गौरी श्रीवास्तव, *विभागाध्यक्ष*
(ii) नीरजा रश्मि
(iii) प्रत्यूष कुमार मंडल
(iv) शिप्रा वैद्य
(v) अपर्णा पांडे
(vi) शंकर शरण
(vii) सीमा शुक्ला ओझा
(viii) जया सिंह
(ix) एम.वी. श्रीनिवासन
(x) तनु मलिक

सह प्रोफेसर

(xi) प्रतिमा कुमारी
(xii) बिजय कुमार मलिक

सहायक प्रोफेसर

(xiii) हरीश कुमार मीणा
(xiv) वनथांगपुई खोबुंग

7. भाषा शिक्षा विभाग (डी.ई.एल.)

प्रोफेसर

(i) संध्या सिंह, *विभागाध्यक्ष*
(ii) लालचंद राम
(iii) संजय कुमार सुमन
(iv) के.सी. त्रिपाठी
(v) जतींद्र मोहन मिश्रा
(vi) दीवान हन्नान खाँ
(vii) मो. फारूक अंसारी
(viii) मो. मोअज्जमुद्दीन
(ix) कीर्ति कपूर
(x) आर. मेघनाथन

सह प्रोफेसर

(xi) चमन आरा खान
(xii) नरेश कोहली
(xiii) मीनाक्षी खार

8. जेंडर अध्ययन विभाग (डी.जी.एस.)

प्रोफेसर

(i) ज्योत्सना तिवारी, *विभागाध्यक्ष*
(ii) मिली रॉय आनंद

9. अध्यापक शिक्षा विभाग (डी.टी.ई.)

प्रोफेसर

(i) शरद सिन्हा, *विभागाध्यक्ष*
(ii) ब्रह्म प्रकाश भारद्वाज
(iii) किरण वालिया (16.06.2022 को स्वैच्छिक सेवानिवृत्त)
(iv) मधुलिका एस. पटेल (31.07.2022 को सेवानिवृत्त)

सहायक प्रोफेसर

(v) विजयन के.
(vi) जितेंद्र कुमार पाटीदार

10. पाठ्यचर्या अध्ययन एवं विकास विभाग (डी.सी.एस.डी.)

प्रोफेसर

(i) रंजना अरोड़ा, *विभागाध्यक्ष*

सह प्रोफेसर

(ii) शरद कुमार पांडे
(iii) आर.आर. कोइरेंग

सहायक प्रोफेसर

(iv) के.वी. श्रीदेवी

11. प्रकाशन प्रभाग (पी.डी.)

(i) अनूप कुमार राजपूत, *प्रोफेसर* एवं *अध्यक्ष* (प्रारंभिक शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त)
(ii) विज्ञान सुतार, *प्रभारी मुख्य संपादक*
(iii) अरुण चितकारा, *मुख्य उत्पादन अधिकारी*
(iv) विपिन दीवान, *मुख्य व्यापार प्रबंधक*

12. पुस्तकालय एवं प्रलेखन प्रभाग (एल.डी.डी.)

पुस्तकालयाध्यक्ष

(i) शिप्रा वैद्य, *अध्यक्ष* (सामाजिक विज्ञान शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त)

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(ii) मूर्तिमति सामंतराय

सहायक पुस्तकालयाध्यक्ष

(iii) पूजा जैन

13. अंतर्राष्ट्रीय संबंध प्रभाग (आई.आर.डी.)

प्रोफेसर

(i) अनुपम आहूजा, *अध्यक्ष* (विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त) (30.11.2022 को सेवानिवृत्त)

(ii) प्रत्यूष कुमार मंडल, *अध्यक्ष* (विशेष आवश्यकता समूह शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त) (02.12.2022 से प्रभावी)

सहायक प्रोफेसर

(iii) सत्य भूषण (शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग के कार्यभार के अतिरिक्त)

14. योजना एवं अनुवीक्षण प्रभाग (पी.एम.डी.)

प्रोफेसर

(i) दिनेश कुमार, *अध्यक्ष* एवं *डीन अनुसंधान*)

सह प्रोफेसर

(ii) अशिता रवींद्रन

(iii) पी.डी. सुभाष

15. शैक्षिक अनुसंधान विभाग (डी.ई.आर.)

प्रोफेसर

(i) ब्रह्म प्रकाश भारद्वाज (अध्यापक शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त)

(ii) अनीता नूना

16. शैक्षिक सर्वेक्षण प्रभाग (ई.एस.डी.)

प्रोफेसर

(i) इंद्राणी भादुड़ी, *अध्यक्ष*

(ii) श्रीधर श्रीवास्तव, [प्रतिनियुक्ति पर (*संयुक्त निदेशक*, रा.शै.अ.प्र.प. के पद पर)]

(iii) वाई. श्रीकांत, [प्रतिनियुक्ति पर (*प्राचार्य*, आर.आई.ई. मैसूरु के पद पर)]

सह प्रोफेसर

(iv) सुखविंदर

सहायक प्रोफेसर

(v) सत्य भूषण

(vi) गुलफ़ाम

(vii) विशाल डी. पजनकर

17. शैक्षिक किट प्रभाग (डी.ई.के.)

प्रोफेसर

(i) विजय पाल सिंह, *अध्यक्ष*

सहायक प्रोफेसर

(ii) आशीष के. श्रीवास्तव (विज्ञान एवं गणित शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त)

18. राष्ट्रीय साक्षरता केंद्र प्रकोष्ठ (सी.एन.सी.एल.)

प्रोफेसर

(i) उषा शर्मा, *प्रभारी* (प्रारंभिक शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त)

सह प्रोफेसर

(ii) चमन आरा खान (भाषा शिक्षा विभाग के कार्यभार के अतिरिक्त)

ख. केंद्रीय शैक्षिक प्रौद्योगिकी संस्थान (सी.आई.ई.टी.)

(i) ए.पी. बेहरा, *संयुक्त निदेशक*

प्रोफेसर

(ii) पूनम अग्रवाल (31.01.2023 को सेवानिवृत्त)
(iii) राजेंद्र पाल
(iv) इंदु कुमार
(v) शशि प्रभा

सह प्रोफेसर

(vi) राजेश कुमार निमेश
(vii) भारती

सहायक प्रोफेसर

(viii) एंजेल रत्नाबाई
(ix) मो. मामूर अली (सेवाओं में लियन)
(x) अभय कुमार
(xi) नीलकंठ कुमार
(xii) रिज़ाउल करीम बरभुइया
(xiii) अमित रंजन
(xiv) रिज़वानुल हक

ग. पंडित सुंदरलाल शर्मा केंद्रीय व्यावसायिक शिक्षा संस्थान (पी.एस.एस.सी.आई. वी.ई.), भोपाल

प्रोफेसर

(i) दीपक पालीवाल, *संयुक्त निदेशक*
(ii) सौरभ प्रकाश
(iii) राजीव कुमार पाठक
(iv) वी.एस. मेहरोत्रा
(v) अभिजीत नायक
(vi) पिंकी खन्ना
(vii) पी. वीरैया
(viii) दीपक शुद्धलवार

सह प्रोफेसर

(ix) विपिन कुमार जैन
(x) आर. रविचंद्रन

घ. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान

1. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, अजमेर (आर.आई.ई., अजमेर)

प्रोफेसर

(i) सत्य वीर शर्मा, *प्राचार्य*
(ii) राजेश मिश्रा, *डीन निर्देशन*
(iii) बिद्याधर बरठाकुर
(iv) प्रवीण कुमार चौरसिया
(v) कोंडुरु चंद्रशेखर
(vi) आयुष्मान गोस्वामी
(vii) राम बाबू पारीक
(viii) प्रीतीश चंद्र आचार्य

सह प्रोफेसर

(ix) राम निवास
(x) अल्बर्ट होरो
(xi) आनंद कुमार आर्य
(xii) अनिल कुमार नैनावत

सहायक प्रोफेसर

(xiii) अश्विनी कुमार गुप्ता
(xiv) मीनाक्षी मीणा
(xv) वेद प्रकाश आर्य
(xvi) जय प्रकाश नारायण
(xvii) ओम प्रकाश मीणा
(xviii) राणा प्रताप
(xix) राजेंद्र कुमार शर्मा
(xx) मुजम्मिल हसन
(xxi) पतंजलि शर्मा
(xxii) राजीव रंजन
(xxiii) स्नेह सुधा

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(xxiv) बालेंदु कुमार झा

2. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भोपाल

प्रोफेसर

(i) जयदीप मंडल, *प्रभारी प्राचार्य एवं अनुदेश संकाय अध्यक्ष*
(ii) चित्रा सिंह
(iii) सारिका सी. साजू
(iv) बी. रमेश बाबू
(v) आई.बी. चुगताई
(vi) रत्नमाला आर्य
(vii) निधि तिवारी
(viii) रश्मि सिंघई
(ix) लल्लन कुमार तिवारी

सह प्रोफेसर

(x) संजय कुमार पंडागले
(xi) एन.सी. ओझा
(xii) अश्विनी कुमार गर्ग
(xiii) आर.पी. प्रजापति
(xiv) रश्मि शर्मा

सहायक प्रोफेसर

(xv) सुरेश मकवाना
(xvi) श्रुति त्रिपाठी
(xvii) सोयहुनलो सेबू

(xviii) संगीता पेठिया

(xix) अरुणाभ सौरभ

(xx) गंगा महतो

(xxi) सौरभ कुमार

(xxii) दक्ष एम. परमार

(xxiii) ए.जी. थॉमस

(xxiv) कल्पना मस्की

(xxv) लोकेंद्र सिंह चौहान

(xxvi) शिवालिका सरकार

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(xxvii) पी.के. त्रिपाठी

3. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, भुवनेश्वर

प्रोफेसर

(i) पी.सी. अग्रवाल, *प्राचार्य*

(ii) एस.आर. साहू

(iii) एच.के. सेनापति

(iv) एम. गोस्वामी

(v) बी.एन. पांडा

(vi) एस.के. दास

(vii) डी.एल. दास

(viii) ए. रामुलु

(ix) ऋतांजलि दास

(x) आई.पी. गौरम्मा

(xi) लक्ष्मी धर बेहरा

(xii) आर.के. मोहलिक

सह प्रोफेसर

(xiii) ई. गंगमेई

(xiv) रश्मि रेखा सेठी

(xv) के. केतकी

सहायक प्रोफेसर

(xvi) ए.के. साहा

(xvii) सौरभ कपूर

(xviii) धन्या कृष्णन

(xix) देबब्रत बागुई

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(xx) पी.एल. नेगी

4. क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, मैसूरु

प्रोफेसर

(i) वाई. श्रीकांत, *प्राचार्य*

(ii) सी.जी. वेंकटेश मूर्ति, *डीन निर्देशन*

(iii) मल्ली गाँधी

(iv) गीता प्रसन्नन

(v) ए. सुकुमार

(vi) रामदास वी.

(vii) के. अनिल कुमार

(viii) कल्पना वेणुगोपाल

(ix) वी.एस. प्रसाद

(x) पी.आर. हरिनाथ

(xi) जी. विश्वनाथप्पा

सह प्रोफेसर

(xii) वी. प्रसाद

(xiii) पी. तमिल सेलवन

(xiv) वी. चंद्रन्ना

सहायक प्रोफेसर

(xv) वरिशांग तंगपुई

(xvi) करुणाकरण बी. शाजी

(xvii) शिवानंद चिन्नप्पनवर

(xviii) टी.वी. सोमशेखर

(xix) रानी प्रमिला विनगोलू

(xx) सुजाता बी. हंचिनालकर

(xxi) संतोष कुमार

(xxii) मधु बी.

(xxiii) के. सुरेश कुमार

(xxiv) सर्वेश मौर्य

उप-पुस्तकालयाध्यक्ष

(xxv) एस. नागराज

5. एन.ई.आर.आई.ई., उमियम (मेघालय)

प्रोफेसर

(i) फ्लोरेट जी. डखर, *प्रभारी प्राचार्य एवं अनुदेश संकाय अध्यक्ष*

(ii) सुभाष चंद्र रॉय

(iii) नित्यानंद प्रधान

(iv) बलइदा आर. डखर

सह प्रोफेसर

(v) शतरूपा पालित

(vi) ब्रजयंती देवी

(vii) तूलिका डे

(viii) सीमा सहगल

(ix) चनंबम सरजूबाला देवी

(x) मेलिसा जी. वालेंग

(xi) बसंसी खरलुखी

सहायक प्रोफेसर

(xii) आनंद वाल्मीकि

(xiii) राम अवधेश सिंह

(xiv) टी. न्यूमेई

(xv) प्राची घिल्डियाल

(xvi) अर्नब सेन

(xvii) उमेश कुमार शर्मा

(xviii) सीमा आर.

विद्यया ऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING